किम इल सुंग

विदेशी पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

सारी दुनिया के मजदूरो, एक हो !

किम इल सुंग

विदेशी पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

प्रकाशक
अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ,
नई दिल्ली

हिन्दी संस्करण : जुलाई १९७५

मूल्य : १५ रुपये

मुद्रक : उद्योगशाला प्रेस, किंग्जवे, दिल्ली-११०००९
प्रकाशक : अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ,
एफ ६०, भगतसिंह मार्केट, नई दिल्ली-१



हिन्दी संस्करण : जुलाई १९७५

मूल्य : १५ रुपये

मुद्रक : उद्योगशाला प्रेस, किंग्जवे, दिल्ली-११०००९
प्रकाशक : अखिल भारतीय भारत-कोरिया मैत्री संघ,
एफ ६०, भगतसिंह मार्केट, नई दिल्ली-१



विषय सूची

पांच महाद्वीपों के प्रगतिशील पत्रकारो, अपना शक्तिशाली क्रांतिकारी कलम उठाओ और अमरीकी साम्राज्यवाद की सख्त निंदा करो !

अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण के विरुद्ध संघर्ष में सारी दुनिया के पत्रकारों के कार्यों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया अभिनन्दन भाषण

१८ सितम्बर १९६९

प्रिय प्रतिनिधियो, साथियो और मित्रो,

पत्रकारों के इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन पांचों महाद्वीपों के उन तमाम पत्रकारों की महान आकांक्षाओं और समान अभिलाषाओं का दर्पण है, जो साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोध करते हैं और राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के संघर्ष में लगे हैं। सारी दुनिया के क्रांतिकारी लोगों की इस सम्मेलन में गहरी रुचि है। मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि दुनिया के प्रगतिशील पत्रों के सच्चे प्रतिनिधियों की यह बैठक साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष की क्रांतिकारी पताका के नीचे हमारे देश की राजधानी प्योंगयांग में हो रही है। अपने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार की तरफ से मैं एशिया, अफ्रीका, लातीनी अमरीका, सामुद्रिक और योरुप के प्रगतिशील पत्रकारों के उन प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करता हूं जो इस सम्मेलन में भाग लेने यहां पधारे हैं।

साथियो और मित्रो,

आज हम क्रांतिकारी परिवर्तन के उस शानदार युग में रह रहे हैं जब साम्राज्यवाद की उपनिवेशवादी व्यवस्था टूट कर गिर रही है। अब वह इतनी जर्जर हो चुकी है कि उसे ठीक नहीं किया जा सकता। आज का युग वह महान ऐतिहासिक युग है जब दलित जातियों के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम महान विजय की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आज समाजवाद और साम्राज्यवाद के बीच क्रांतिकारी शक्तियों और प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के बीच भयानक जंग छिड़ी है।

इस जंग में समाजवादी शांतिप्रिय शक्तियां एक के बाद एक मोर्चे पर विजय हासिल कर रही हैं, जबकि आक्रामक साम्राज्यवादी शक्तियां जर्जर हो कर विनाश के गर्त में गिर रही हैं।

वह समय अब लद चुका जब गिनेचुने साम्राज्यवादी करोड़पति धरती पर हुक्म चलाते और शान बघारते हुए, मानव जाति को लूटते हुए, उसका मनचाहा शोषण करते हुए अपनी मनमानी कर सकते थे। दुनिया की शक्ल अब मौलिक रूप से बदल चुकी है।

दुनिया के अखाड़े में समाजवादी देशों की जनता के क्रांतिकारी संघर्ष के साथ-साथ, आज उपनिवेशों और पराधीन देशों की जनता की स्वाधीनता की लड़ाई बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही है। आज एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका के विशाल क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्वाधीनता के क्रांतिकारी आंदोलनों का शक्तिशाली सैलाब अदमनीय ताकत के साथ बढ़ता चला जा रहा है। इन इलाकों के लाखों-करोड़ों लोगों ने जिनका कि साम्राज्यवाद ने सदियों तक दमन और शोषण किया था, उपनिवेशवाद का अभिशप्त जुआ उतार फेंका है। अब इतिहास के इस क्षण वे महान विजेताओं और नायकों के समान शान से सिर उठाए खड़े हैं। साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के जर्जर और पुराने ढांचे को तोड़ गिराने के संग्राम में उन्होंने शानदार जीतें पाई हैं, और अब वे एक नये जीवन का निर्माण कर रहे हैं। जो देश साम्राज्यवादी उपनिवेशवाद के जुए के नीचे अभी तक तड़प रहे हैं, उनकी जनता ने भी अब विदेशी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के खिलाफ हथियार उठा लिये हैं। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलनों की जोरदार चपेट खा कर उपनिवेशवादी गुलामी की जंजीरें हर जगह टूट रही हैं, और वह साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक व्यवस्था जिसने इन्सानियत पर इतनी मुसीबतें और इतनी यातनाएं ढाईं, टूट कर धूल में मिल रही है। आज साम्राज्यवादियों के लिए कहीं ऐसा कोना नहीं बचा है जहां वे शरण ले सकें। साम्राज्यवाद आखिरी सांसें गिन रहा है।

इसके साथ-साथ स्वयं पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग व अन्य कर्मचारियों का क्रांतिकारी संघर्ष—पूंजीवादी दमनचक्र और शोषण के विरुद्ध उनके महत्त्वपूर्ण अधिकारों और जनवादी स्वाधीनता का उनका संघर्ष शक्तिसंग्रह कर रहा है। इस सब के कारण खून के प्यासे साम्राज्यवादी आज चिताकुल हो कर डर से कांप रहे हैं।

साम्राज्यवादी संसार में राजनीतिक और आर्थिक संकट दिन-प्रति-दिन गहरे होते जा रहे हैं, और यही नहीं, साम्राज्यवादी सत्ताओं की बाजारों के लिए आपसी लड़ाई व प्रभाव-क्षेत्रों के लिए उनके आपसी संघर्ष से उभरने वाले अंतर्विरोध पैने होते जा रहे हैं।

अंदर और बाहर से गहरी चोट खाए हुए साम्राज्यवादी अंधी गली में और गहरे धकेले जा रहे हैं।

क्रांति की रात में घटनाचक्र के पेचोखम और सामयिक असफलताओं व रुकावटों के बावजूद समाजवाद के लिए, क्रांति की शक्तियों के लिए सामान्य स्थिति अनुकूल है, और साम्राज्यवादियों व प्रतिक्रियावादी शक्तियों के लिए प्रतिकूल।

लेकिन अमरीकी तथा अन्य साम्राज्यवादी इतिहास के रंगमंच से स्वेच्छापूर्वक हटने वाले नहीं हैं। साम्राज्यवाद अभी तक अपनी विगत स्थिति के सपने देख रहा है, अपने उखड़े हुए पांव जमाने की जीतोड़ कोशिश कर रहा है और अपने आप को विनाश से बचाने के लिए आक्रमण और युद्ध का सहारा ले रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने खुले आम हिंसा का रास्ता अख्तियार किया है: वे समाजवादी देशों के विरुद्ध, स्वाधीन राष्ट्रों के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई कर रहे हैं, वे एशियाई, अफ्रीकी और लातीन अमरीकी जनता के राष्ट्रीय स्वाधीनता के आंदोलनों को बेरहमी से कुचल रहे हैं और दुनिया के हर हिस्से में कुटिलतापूर्वक शांति को भंग कर रहे हैं। कई बरसों से दक्षिण वियतनामी जनता के प्रति अपने पाशविक विध्वंस को जारी रखते हुए, वे अमरीकी साम्राज्यवादी लोग जनवादी गणतंत्र वियतनाम के विरुद्ध दुष्टतापूर्ण आक्रमण में लगे हैं। वे क्यूबा की लोकशाही का गला घोटने के उन्मत्त प्रयास में लगे हैं—उस क्यूब के विरुद्ध जो पश्चिमी गोलार्द्ध में समाजवादी क्रांति लाने वाला पहला देश है और जो लातीन अमरीकी लोगों की आशाओं के लिए दीपस्तंभ बन गया है, अमरीकी साम्राज्यवादी अब लाओस में अपना सशस्त्र हस्तक्षेप तेज कर रहे हैं और मध्य-पूर्व में अरब राष्ट्रों के विरुद्ध जियनवादियों को आक्रमण और युद्ध के लिए लगातार उकसा रहे हैं। जापानी और पश्चिम जर्मन सैन्यवादियों को सशस्त्र करके वे एशिया और यूरोप में नये युद्धों को भड़काने के लिए खतरनाक जमीन तैयार कर रहे हैं।

संयुक्त राज्य अमरीका के नेतृत्व में साम्राज्यवादी शक्तियां ऊपरी तौर पर लोगों की आजादी और स्वाधीनता की पैरवी का ढोंग रचती हैं, लेकिन वास्तव में इस उग्र कोशिश में लगी हैं कि अपना औपनिवेशिक राज्य छिपे तौर पर व अधिक चालाकी के साथ कायम रख सकें; वे नव-स्वाधीन देशों की जनता को नव-उपनिवेशवाद के फंदे में फांसने की मूर्खतापूर्ण कोशिश में लगी हैं।

एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका के अनेक देशों में ये लोग ऐसे दक्षिणपंथी तत्त्वों जैसे उच्चतम सैनिक अधिकारी या कबीलों के शीर्षस्थ प्रतिगामी प्रतिनिधियों को रिश्वत दे कर और भड़का कर औपनिवेशिक दासता की नीति पर अमल कर रहे हैं। अगर वे कठपुतलियां जिन्हें ये लोग गद्दी पर बैठाते हैं, कभी जरा भी इनकी औपनिवेशिक नीति के आड़े आती हैं, तो ये साम्राज्यवादी लोग उनके खिलाफ प्रति-

क्रियावादी सैनिक विप्लव करा देते हैं, फासिस्ट सैनिक तानाशाही की स्थापना करवा देते हैं और खुले आम सशस्त्र हस्तक्षेप करने में भी नहीं हिचकते । ऐसे घृणित कुचक्रों व दांवों का मतलब है एक ऐसी तलवार की धमकी जो नव-स्वाधीन देशों पर लटकती रहती हैं । इन्हीं के कारण अनेक सरकारें साम्राज्यवादियों की औपनिवेशिक मशीनरी में तब्दील हो गई हैं, दक्षिणपंथी हो गई हैं और उनके देश एक बार फिर उपनिवेश या अर्द्ध-उपनिवेश के स्तर तक पहुंच गये हैं ।

विकासशील देशों को आर्थिक रूप से गुलाम बनाने की साम्राज्यवादी नीति नव-उपनिवेशवाद का एक प्रमुख लक्षण है । संयुक्त राज्य का साम्राज्यवाद अपनी 'सहायता' की नीति का उपयोग विदेशों में अपने प्रचार के हथियार के तौर पर करता है और पाखंडपूर्वक इसे 'अविकसित देशों के संयुक्त विकास' का नाम देता है । इसकी 'सहायता' के मतलब हैं एकाधिकारवादी पूंजी की विदेशों में घुसपैठ का रास्ता मजबूत होना । बड़े पैमाने पर पूंजी का निर्यात करके, अनेक प्रकार की औपनिवेशिक सहूलियतें हासिल करके, साम्राज्यवादियों ने दुनिया के कई देशों में अर्थव्यवस्था पर कब्जा करने के साधन हथिया लिए हैं । इस प्रकार साम्राज्यवादी एकाधिकारवादी पूंजी इन देशों के प्रभूत प्राकृतिक स्रोतों और वहां के मेहनती लोगों के श्रम के फलों को बेरहमी से लूटती रहती है । 'आर्थिक सहायता' के नाम पर साम्राज्यवादी सिर्फ पिछड़े हुए देशों के स्वतंत्र राष्ट्रीय आर्थिक विकास को रोक रहे हैं बल्कि उनके आंतरिक मामलों में जघन्य हस्तक्षेप कर रहे हैं और उनकी राजनीतिक स्वाधीनता को केवल नामनिहाद बना रहे हैं ।

आर्थिक घुसपैठ के साथ-साथ, नव-उपनिवेशवाद का एक महत्त्वपूर्ण हथकंडा है सैद्धांतिक और सांस्कृतिक घुसपैठ । 'पीस कोर' 'अफ्रीकन क्रासरोड्स प्रोग्राम' आदि जाली नामों से अनेक देशों में अपने प्रतिक्रियावादी सैद्धांतिक और सांस्कृतिक आक्रमण को तेज करके अमरीकी साम्राज्यवादी लोगों की राष्ट्रीय स्वाधीनता की भावना और उनकी क्रांतिकारी चेतना को कुंद कर रहे हैं, उनमें अमरीका-भक्ति और साम्यवाद-विरोधी विचारों को भर रहे हैं, उनमें राष्ट्रीय शून्यता को जन्म दे रहे हैं, कुत्सित यांकी ब्रांड चरित्रहीनता व भ्रष्टता का प्रसार कर रहे हैं, और 'शांति' की आड़ में देशद्रोही और विनाशपूर्ण गतिविधियों को बढ़ा रहे हैं ।

'साम्यवाद-विरोध' और 'पारस्परिक सुरक्षा' के साइनबोर्डों के नीचे अमरीकी व अन्य साम्राज्यवादियों ने अनेक देशों को आक्रामक सैनिक गठबंधनों और द्वि-देशीय सामरिक समझौतों व संधियों के जाल में फांस लिया है, सैनिक रूप से उन्हें पराधीन बना दिया है और उन्हें औपनिवेशिक सैनिक अड्डों में परिवर्तित कर दिया है ।

इस तरह नव-औपनिवेशिक चालबाजियों के द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अमरीकी साम्राज्यवाद ने पुराने उपनिवेशवादियों से पूंजीवादी दुनिया पर आधिपत्य छीन लिया

और औपनिवेशिक 'सम्राट' के रूप में प्रकट हुआ। इसने आक्रमण के शैतानी पंजे दुनिया के हर हिस्से में गड़ा दिये।

आज इस धरती पर ऐसी कोई जगह नहीं है, चाहे वह एशिया हो, अफ्रीका हो या लातीन अमरीका, जो अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रामक शिकंजों से मुक्त हो और ऐसा छोटा या बड़ा कोई देश नहीं है जो संयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादी आक्रमण की धमकी से अछूता हो।

इस सबसे यही एक बार फिर स्पष्ट होता है कि आधुनिक काल में अमरीकी साम्राज्यवाद सबसे अधिक बर्बर, सबसे अधिक आक्रामक है, यह आक्रमण और युद्ध की प्रमुख शक्ति है, विश्व प्रतिक्रियावाद का नेता है, आधुनिक उपनिवेशवाद की किलेबंदी है, राष्ट्रीय स्वाधीनता और स्वतंत्रता का गला घोटनेवाला है, और विश्व शांति को भंग करनेवाला है।

आज की परिस्थिति की मांग है कि पांचों महाद्वीपों के क्रांतिकारी लोग साम्राज्यवाद के खिलाफ, पुराने और नये उपनिवेशवाद के खिलाफ और भी ज्यादा मजबूती से लड़ें और अपने हमले का केंद्र मुख्यतः अमरीकी साम्राज्यवाद को बनायें। अमरीकी साम्राज्यवाद से लड़े बगैर आज न तो शांति की कल्पना की जा सकती है, न राष्ट्रीय स्वाधीनता की, और न ही जनतंत्र व समाजवाद की विजय की।

दुनिया भर में क्रांतिकारी लोगों को चाहिए कि अमरीकी नेतृत्व वाले साम्राज्यवादियों पर हर तरफ से जोरदार दबाव डालें, उनके हाथ-पांव बांध डालें कि वे अपनी मनमानी न कर सकें।

और सबसे अधिक समाजवादी देशों के लोगों को इसमें बड़ा हिस्सा लेना चाहिए। उन्हें न सिर्फ अपने देशों में समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के काम में तेजी लानी चाहिए, न सिर्फ साम्राज्यवादियों द्वारा और शोषक वर्गों के बचेखुचे तत्वों द्वारा इन देशों के भीतर तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए, बल्कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद की क्रांतिकारी नैतिकता से उद्भूत सिद्धांतों का पालन करते हुए राष्ट्रीय स्वाधीनता के आंदोलनों को अपना अंतर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य समझ कर सक्रिय समर्थन भी देना चाहिए। समाजवादी देश विश्व क्रांति के गढ़ हैं, अतः उन्हें पूरे मनोबल से साम्राज्यवादियों की युद्ध नीति और उनकी लूटमार से भरी औपनिवेशिक नीति का विरोध करना चाहिए। दलित राष्ट्रों के क्रांतिकारी संघर्षों की सहायता भी समाजवादी देशों को पूरी कर्मठता के साथ करनी चाहिए। इससे समाजवादी देशों और अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग की मित्र शक्तियों को बल मिलेगा। इसमें साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी जद्दोजहद की सहविजय शीघ्रता से प्राप्त की जा सकेगी।

समाजवादी देशों के लोगों के साथ-साथ, पूंजीवादी देशों के श्रमिक वर्ग को भी

साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी लड़ाई में तेजी लानी चाहिए और इस प्रकार दलित देशों के स्वाधीनता आंदोलनों को शक्तिशाली समर्थन और प्रोत्साहन देना चाहिए। बड़े राज्यों के मजदूर वर्ग और उपनिवेशों के दलित जन एक ही स्थिति में हैं। औपनिवेशिक और गुलाम देशों की लूटमार और शोषण में वृद्धि करने के लिए साम्राज्यवादी हमेशा यह कोशिश करते हैं कि बड़े देशों के मजदूर वर्ग उपनिवेशों के लोगों से अपने आपको अलग समझें। वे श्रमिक वर्गों के दिमाग हमेशा जातिवाद और संकुचित राष्ट्रीयता से भर देते हैं और उपनिवेशों में कमाये गये अपार लाभ के एक हिस्से से श्रमिक कुलीनों को रिश्वत देकर मजदूर वर्ग के उग्र तत्वों को भीतर से असंगठित कर देते हैं। राज्यों के श्रमिक वर्ग को चाहिए इस छिपी चाल को पूरी तरह नष्ट कर दें और साम्राज्यवादी आक्रमण और उपनिवेशों और पराधीन देशों की लूटमार के विरुद्ध वीरता से लड़ें। उन्हें उपनिवेशों और पराधीन देशों के पूर्ण स्वराज्य के अधिकार का पूरा समर्थन करना चाहिए और पुराने साम्राज्यवादी ढांचे को नष्ट करने की अपनी क्रांतिकारी लड़ाई को और भी तेजी से लड़ना चाहिए। पूंजीवादी देशों के मजदूर वर्ग के पास अपने वर्ग की मुक्ति का और उपनिवेशों के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलनों को योगदान करने का यही रास्ता है।

उपनिवेश साम्राज्यवादियों के जीवन का आसरा है और उनका अंतिम गढ़। साम्राज्यवादी उनका त्याग स्वेच्छा से नहीं करेंगे न ही वे किसी उपनिवेश को स्वतंत्रता की भेंट देने वाले हैं। उपनिवेशों के लोगों को अपनी शक्तियां एकजुट करनी चाहिए और दृढ़ संकल्प होकर साम्राज्यवादियों को फेंक निकालने के लिए व पूर्ण स्वराज्य व स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए करो-या-मरो का संघर्ष करना चाहिए।

जो देश हाल ही में साम्राज्यवादी जूआ उतार फेंकने में सफल हुए हैं उनके सामने भारी जिम्मेदारी है अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा करने की, क्रांति को और आगे ले जाने की, और उन देशों के स्वाधीनता संग्राम को सहायता देने की जो अभी तक साम्राज्यवादी जंजीरों में बंधे हैं। जो देश आजाद हो गये हैं उन्हें साम्राज्यवादियों के साथ की गई वे सब संधियां, समझौते और सैनिक गठबंधन रद्द कर देने चाहिए जो उन्हें बांध कर रखते हैं। उन्हें चाहिए कि वे सब राजनीतिक और आर्थिक आश्रय स्थल नष्ट कर दें जिनका उपयोग विदेशी साम्राज्यवादी और उनके साथी—देशी प्रतिक्रियावादी तत्व—चोरीछिपे उनके विरुद्ध कर सकते हैं। उन्हें तमाम क्रांतिकारी शक्तियों को एकत्रित करना चाहिए ताकि समाज में क्रांतिकारी सुधार किए जा सकें। साम्राज्यवादियों द्वारा राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में बरती जाने वाली नव-उपनिवेशवादी चाल की प्रकृति को उन्हें विशेषकर स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए, पूरी तरह इस नीति का पर्दाफाश करके उसे विफल कर देना चाहिए और दोबारा उसके जाल में नहीं फंसना चाहिए। यही एकमात्र रास्ता है कि

वे अपने क्रांतिकारी लाभों की रक्षा कर सकेंगे, राष्ट्रीय समृद्धि पा सकेंगे और तमाम दुनिया के लोगों के समान उद्देश्य अर्थात् साम्राज्यवाद के पतन में योगदान कर सकेंगे।

आज साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी मोर्चे पर अंतर्राष्ट्रीय जनवादी और शांति आंदोलनों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये आंदोलन दुनिया भर के करोड़ों-अरबों मजदूरों व प्रगतिशील व्यक्तियों को संगठित करते हैं। मानवता के लिए स्थायी शांति और उज्ज्वल भविष्य हेतु और साम्राज्यवादियों की आक्रमण और युद्धनीति को विफल करने हेतु दुनिया भर के शांतिप्रेमियों को और अधिक मजबूती के साथ संघर्ष करना चाहिए।

एक बार तमाम दुनिया की क्रांतिकारी शक्तियां हर मोर्चे पर साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी लड़ाई में पूरी ताकत से जूझ पड़ें तो साम्राज्यवाद हमेशा-हमेशा के लिए मिट जाएगा और हर देश के लोग सच्ची राष्ट्रीय स्वाधीनता व सामाजिक प्रगति प्राप्त कर सकेंगे।

मोननीय प्रतिनिधियो

पत्रकारों का यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ऐसे गंभीर क्षण में हो रहा है जब अमरीकी साम्राज्यवादी अपनी आक्रामक चालों में पूरी तरह कुटिल हो चुके हैं और जब दुनिया के क्रांतिकारी लोग अमरीकी साम्राज्यवाद का पहले से भी अधिक तीव्रता से मुकाबला करने की गंभीर और ऐतिहासिक जिम्मेदारी के समक्ष हैं। जनता के न्यायोचित क्रांतिकारी आंदोलन के लिए लड़ना जो अपना महान कर्त्तव्य समझते हैं, पांच महाद्वीपों के ऐसे पत्रकारों के प्रतिनिधियों के लिए यह अच्छा और सही अवसर है कि आज वे मिल कर बैठें और विचार करें कि अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध लड़ाई कैसे की जाय। यह पूरी तरह दुनिया के क्रांतिकारी लोगों की महत्त्वाकांक्षाओं के अनुरूप है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध लड़ाई में यह सम्मेलन दुनिया भर के प्रगतिशील पत्रकारों की संघर्षशील भूमिका को आगे बढ़ाएगा और इस प्रकार साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी अभियान के प्रति जन समूहों को जगाएगा, और समाजवाद और राष्ट्रीय स्वाधीनता शांति और गणतंत्र के उनके समान उद्देश्यों के विकास में महान योगदान करेगा।

सामाजिक क्रांति और निर्माण में प्रगतिशील पत्रकारों और प्रकाशनों का बड़ा महान और प्रेरक भाग होता है, क्योंकि वे अग्रवर्ती विचारों के पैरोकार और प्रचारक होते हैं, जनता की राय के उद्घोषक और संगठक होते हैं।

सब जानते हैं कि जनता ही इतिहास का निर्माण करती है और उसे आगे धकेलती है। लेकिन इसके यह माने नहीं हैं कि लोग क्रांतिकारी संघर्ष में यूं ही स्वतः

शामिल हो जाते हैं। क्रांतिकारी सजग चेतना से सुसज्जित होकर जब पुराने समाज़ के शासक वर्गों को नष्ट करने के रक्तरंजित संघर्ष में वे अपने आपको जुटा देते हैं, तभी, सिर्फ तभी वे क्रांति की प्रमुख शक्ति, सामाजिक विकास की सशक्त संचालन शक्ति और इतिहास के नये युग के सुयोग्य सृष्टा बन पाते हैं। किसी भी क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने वाले जन समूह की चेतना जितने ऊंचे स्तर की होगी, क्रांतिकारी संघर्ष में उनकी उतनी ही अधिक शक्ति होगी, और उतना ही अधिक निर्णायक उनका भाग होगा। जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रगतिशील तत्वों का काम है कि वे जनता में क्रांति चेतना भर दे और प्रगतिशील विचारों के बारे में उसका ज्ञानवर्द्धन करें। जन समूह के लिए लड़ने वाले प्रगतिशील व्यक्ति जनता को पुरानी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के और नये समाज की रचना करने के क्रांतिकारी विचार से लैस करते हैं, संघर्ष के सही नारे देते हैं, उसका आवाहन करते हैं और कठिन क्रांतिकारी संघर्ष के लिए उसे जगाते हैं।

प्रगतिशील पत्रकार विकसित विचारों के कुशल नायक हैं, वे योद्धा हैं जो न्याय और सत्य के प्रेमी हैं और हर प्रकार के अन्याय और सामाजिक बुराई पर प्रकाश डालते हैं। सामाजिक विकास की यथार्थ आवश्यकताओं को सही तरह समझने में प्रगतिशील पत्रकार कभी नहीं चुके हैं और उन्होंने अपनी क्रांतिकारी लेखनी का उपयोग पूरी सामर्थ्य के साथ प्रगतिशील वर्गों के हितों की रक्षा के लिए किया है। उन्होंने पूरी सख्ती से जर्जरित पुरातन व्यवस्था की निंदा की है और बड़ी बेरहमी से मरणासन्न प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों को सर्वनाश की तरफ धकेला है।

पावन संघर्ष के युद्धक्षेत्र में, प्रतिक्रियावादियों के कुटिल दमन चक्र की परवाह किए बगैर प्रगतिशील पत्रकारों ने काफी खून बहाया है और वीरतापूर्ण लड़ाई की है। जेलों में, फांसी के तख्तों पर वे अंतिम क्षण तक साहसपूर्वक लड़ते रहे हैं और उन्होंने अपने क्रांतिकारी सिद्धांतों को नहीं त्यागा है। पत्रकारों के अमर कारनामें मानव मुक्ति संग्राम के इतिहास में अमिट रहेंगे। मानव मुक्ति के पावन संग्राम में अपना बहुमूल्य रक्त बहाने वाले पत्रकारों को जनता सलाम करती है और उन्हें दीर्घकाल तक याद रखेगी।

आप प्रगतिशील पत्रकारों ने अपने से पहले के पत्रकारों की महान परंपराएं उत्तराधिकार में पाई हैं और अब उस अमरीकी साम्राज्यवाद के अपराधों की कटु निंदा करने की भारी लेकिन महान जिम्मेदारी उठाई है, जो मानव की मुक्ति और आजादी कीराह में रोड़े अटका रहा है। आपने जिम्मेदारी उठाई है दुनिया के लोगों को जगाने की कि वे पूरे साहस से उठें और सारी मानवता के कुटिलतम शत्रु अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ निर्णायक युद्ध में जूझ पड़ें।

दुनिया भर के प्रगतिशील पत्रकारों को चाहिए कि अमरीकी साम्राज्यवाद

की आक्रमण और युद्ध की नीति का पूरी तरह पर्दाफाश कर दें, और इस पाशविक व क्रूर नीति का असली अन्यायपूर्ण रूप सबके सामने उजागर कर दें। इस तरह, दुनिया भर में वे हर जगह विशाल जनमत को अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध कर पाएंगे। अमरीकी साम्राज़्यवाद के बारे में जरा भी शक की गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। इतिहास यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध कर चुका है कि अमरीकी साम्राज्यवाद के बारे में भ्रांतिपूर्ण धारणाओं और उसके साथ सिद्धांतहीन समझौतों का केवलमात्र परिणाम होता है जनता की क्रांतिकारी जागरूकता में तीव्रता की कमी आना, अमरीकी साम्राज्यवादियों का और अधिक अक्खड़, उद्धृत, धृष्ट, प्रचंड और अन्यायी होना, और उनकी आक्रमण तथा युद्ध की योजनाओं को प्रोत्साहन देना। प्रगतिशील पत्रकारों को चाहिए कि वे विशाल जन समूहों में इस नितांत सत्य का प्रचार करें कि साम्राज्यवाद के विरुद्ध युद्ध अंतिम स्थिति तक सुदृढ़तापूर्वक लड़ा जाना चाहिए, कि आक्रमण और युद्ध की साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध पूरे इरादे से अटल युद्ध से ही उपनिवेशों की जंजीरों को तोड़ा जा सकता है, आजादी हासिल की जा सकती है, क्रांति के सुपरिणामों की रक्षा की जा सकती है और स्थायी शांति सुरक्षित की जा सकती है।

इसके साथ-साथ उन्हें जनता को शिक्षित करना चाहिए कि वह अमरीका की पूजा-प्रशंसा, उसके सामने झुक-झुक कर सलाम करने, उससे डरने, दबने या आश्रित होने का विचार तक त्याग दे और जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रति अमिट घृणा से भर देना चाहिए। अमरीकी साम्राज्यवाद के प्रतिक्रियावादी सिद्धांत जनता के सद्धांतिक पतन और राजनीतिक विघटन के हथियार हैं। विकसित विचारों के प्रतिनिधियों को अर्थात् प्रगतिशील पत्रकारों को उनके प्रतिक्रियावादी सैद्धांतिक तथा सांस्कृतिक आक्रमण का लगातार मुकाबला करना चाहिए।

जब सैद्धांतिक मोर्चे पर प्रगतिशील पत्रकारों की उग्र रचनाओं द्वारा जनता की क्रांतिकारी चेतना में वृद्धि होगी, तो वह मानवता के हीनतम शत्रु अमरीकी साम्राज्यवाद को मटियामेट करने के लिए और भी अधिक लगन से लड़ेगी।

अमरीका के नेतृत्व वाली आक्रामक साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध तमाम देशों और तमाम क्षेत्रों के लोगों के संघर्ष को सक्रिय समर्थन देना दुनिया के प्रगतिशील पत्रकारों का एक आवश्यक क्रांतिकारी कर्त्तव्य है।

दुनिया के क्रांतिकारी लोगों पर अमरीका व अन्य साम्राज्यवादियों का आक्रमण उन सब पत्रकारों पर कुटिल आक्रमण और चुनौती है जो मानव मुक्ति के लिए लड़ रहे हैं। अभिव्यक्ति और प्रेस की स्वतन्त्रता और अपने अधिकारों और हितों की सुरक्षा करने के लिए पत्रकारों को उसी हवा में सांस लेना चाहिए, उसी तरह सोचना चाहिए जैसे वियतनाम व दुनिया के अन्य राष्ट्र जो अपने हाथों में हथियार लिये

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण से जूझ रहे हैं, जैसे वे लोग जो विदेशी आक्रमणों और देशी प्रतिक्रियावादियों की विनाशलीला का मुकाबला करते हुए भी अपने लिए नवजीवन के निर्माण में वीरतापूर्वक लगे हैं, जैसे दुनियाभर के श्रमिक जन जो गलियों और कूचों में निकल आये हैं और अमरीकी साम्राज्यवाद की निंदा और सामना कर रहे हैं। इसलिए पत्रकारों द्वारा लिखा गया हर लेख, हर समीक्षा, हर राजनीतिक निबंध अमरीकी साम्राज्यवादियों को इतिहास के कटघरे में खड़ा करने वाले अभियोग-पत्र के तौर पर काम आना चाहिए और एक ऐसा शक्तिशाली सैनिक परचम बन जाना चाहिए जो जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध और राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष करने को प्रेरित करे।

प्रगतिशील पत्रकारों को अपने अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन के सम्यक् विकास और उद्देश्य प्राप्ति के लिए साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष के झंडे तले दृढ़तापूर्वक संगठित होना चाहिए। यह सही है कि हर देश के पत्रकार विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं में रहते हैं, उनके राजनीतिक विचार और संपर्क अलग हैं, उनके रीतिरिवाज और धार्मिक विश्वास जुदा हैं, राष्ट्रीयता और रंग, भाषा, बोलियां और लिपियां भी अलग हैं, पर शान्ति और प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के समान उद्देश्य में, अमरीकी साम्राज्यवाद के विरोध में वे एक ही मोर्चे पर खड़े सैनिक और साथी हैं। साम्राज्यवाद-विरोधी और अमरीका-विरोधी ध्वजा के नीचे ही दुनिया के प्रगतिशील पत्रकार संगठित हो सकते हैं और इसी झंडे के नीचे अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकार आन्दोलन दुनिया के लोगों के लिए न्याय के हक में उग्र क्रांतिकारी आन्दोलन के बतौर योगदान कर सकते हैं। दुनिया के ऐसे तमाम पत्रकारों को अपनी शक्तियां अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष से जोड़ देनी चाहिए और एक आवाज में उसकी निंदा करनी चाहिए।

मुझे पूरा विश्वास है कि प्रतिनिधियों के संयुक्त प्रयासों से, पत्रकारों को यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण का मुकाबला करने के तरीकों के मामले में किसी नतीजे पर जरूर पहुंचेगा, इष्ट परिणाम प्राप्त करेगा, और दुनियाभर के क्रांतिकारी लोगों और प्रगतिशील पत्रकारों की आशाओं और आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा। मुझे आशा है कि साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध पत्रकारों के संघर्ष के इतिहास में यह एक शानदार पृष्ठ लिखेगा।

प्रिय प्रतिनिधियो,

आप, अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध संघर्ष में सारी दुनिया के पत्रकारों के कार्यों पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आये प्रतिनिधि ही नहीं हैं, आप हमारे विशिष्ट मेहमान भी हैं।

हमारे लोगों पर अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण का सीधा खतरा हमेशा

बना रहता है। हमारे देश की राजधानी प्योंगयांग में होने वाले इस सम्मेलन में इतने सारे देशों से साम्राज्यवाद-विरोधी योद्धाओं के आगमन से हमें बड़ा प्रोत्साहन मिलता है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हमारे देश के आधे हिस्से पर २० साल से भी अधिक समय से कब्जा कर रखा है। दक्षिण कोरिया पर उन्होंने अत्यन्त प्रतिक्रियावादी, औपनिवेशिक सैनिक शासन की स्थापना कर रखी है। उन्होंने दक्षिण कोरिया को पूर्ण उपनिवेश में बदल दिया है, पूरे कोरिया, एशिया और इसके बाद सभी समाजवादी देशों पर हमला करने के लिए सैनिक अड्डा बना दिया है। उन्होंने दक्षिण कोरिया के लोगों के मौलिक अधिकारों और उनकी प्रारम्भिक गणतांत्रिक स्वाधीनता को अपने पैरों तले रौंद डाला है और उन्हें दुर्भिक्ष, गरीबी, अत्याचार और खून-खच्चर के जीवित नरक में धकेल दिया है। अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके वफादार गुर्गे—यानी दक्षिण कोरिया की कठपुतली सरकार—कोरिया के विभाजन को स्थायी बनाने की, और पूरे उत्तर व दक्षिण कोरिया के लोगों की पुनरेकीकरण की राष्ट्रीय आकांक्षा का दम घोंटने की हर कुटिल कोशिश कर रहे हैं। दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राजियों का आधिपत्य और उनकी आक्रामक नीति ही हमारे देश की दुर्दशा का मूल कारण है, हमारे देश के पुनरेकीकरण के रास्ते में मुख्य बाधा है, और कोरिया में युद्ध का अनवरत स्रोत है। कोरिया की जनता का महानतम राष्ट्रीय कर्तव्य है : दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक सेनाओं को बाहर खदेड़ना, राष्ट्रीय स्वाधीनता की क्रांति को संपूर्ण करना और देश का पुनरेकीकरण करना।

कोरियाई जनता के न्यायपूर्ण आन्दोलन के प्रति दुनिया के प्रगतिशील पत्रकारों ने, और विशेषकर आपने, हमेशा गहरी समझ और पूरी सहानुभूति का प्रदर्शन किया है और कोरिया प्रायद्वीप पर अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण और युद्ध की नीति की सख्ती से निंदा की है। पूरे कोरिया को हड़पने के लुटेरे इरादों से अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हमें अपनी पितृभूमि की स्वाधीनता का युद्ध लड़ने पर मजबूर किया। हमारे जनगण देश की स्वाधीनता, आजादी, सम्मान और क्रांति की रक्षा के लिए उठ खड़े हुए। उस अवसर पर दुनिया के प्रगतिशील पत्रकारों ने अमरीकी साम्राज्यवादियों के अपराध और अत्याचार की निंदा की थी, और हमारे जनगण को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन दिया था। आज भी प्रगतिशील पत्रकार अपने कलम का इस्तेमाल अमरीकी साम्राज्यवादियों को बाहर खदेड़ने के और कृत्रिम विभाजन को मिटाकर पुनरेकीकरण के कोरियाई जनता के संघर्ष के समर्थन में कर रहे हैं। दुनिया के प्रगतिशील पत्रकारों की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार कामरेड किम जोंग ताए को दिया गया है। कामरेड किम जोंग ताए वीर अजेय क्रांति योद्धा हैं, कोरियाई जनता में जन्में उत्साही पत्रकार हैं। उनको यह पुरस्कार दिया जाना हमारे जनगण की

साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी लड़ाई को आपके समर्थन की अभिव्यक्ति है। कोरिया की तमाम जनता की तरफ से मैं आप के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता का भाव प्रकट करता हूं।

हमारे लोग आपका सच्चे मित्रों की तौर पर, विश्वसनीय साथियों की तौर पर स्वागत करते हैं। आप अपनी यात्रा के दौरान हमारे देश में जहां भी जाएंगे हर जगह आपका गरमजोशी से स्वागत किया जाएगा और हर जगह आप अपनी आंखों में देखेंगें कि हमारे जनगण में सारी दुनिया के क्रांतिकारी लोगों से दृढ़ मैत्री की कितनी जोरदार ख्वाहिश है।

अपनी पिछली अवस्था के कारण और समान उद्देश्यों के कारण, कोरिया के लोग हमेशा दलितों के साथ मजबूती से खड़े रहे हैं, उनकी आजादी और स्वाधीनता की लड़ाई का उन्होंने हमेशा समर्थन किया है। दुनिया के क्रांतिकारी लोगों के साथ हमारे जनगण की दृढ़ मित्रता और एकता आज और दृढ़ हो गई है। हम इसे अपनी क्रांति की सफलता के लिए महत्वपूर्ण गारंटी समझते हैं और भविष्य में भी साम्राज्यवाद-विरोधी अमरीका-विरोधी संघर्ष के मैदान में सब देशों के लोगों से दृढ़ मैत्री की अनथक कोशिश करते रहेंगे।

अन्त में, आप सबका जो यहां मौजूद हैं और मानव-मुक्ति के पावन आंदोलन में पूर्ण श्रद्धा से तन्मयतापूर्वक रत हैं, मैं सैनिक अभिवादन करता हूं और आपके द्वारा तमाम दुनिया के प्रगतिशील पत्रकारों का अभिनंदन करता हूं और क्रांतिकारी पत्रकारों की, जो साम्राज्यवाद-विरोधी राजनीति के उत्साही सक्रिय कार्यकर्ता हैं, उनके हितकर काम में महान सफलता की कामना करता हूं।

एशिया की क्रांतिकारी जनता अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने आम संघर्ष में विजयी होगी

कंबोडिया के राज्याध्यक्ष और कामपूचिया के राष्ट्रीय सयुक्त मोर्चे के अध्यक्ष सामदेच नोरोदम सिहानूक के स्वागत में हुई प्योंगयांग की जनसभा में दिया गया भाषण

६ अगस्त १९७१

माननीय सामदेच नोरोदम सिहानूक और राजकुमारी मोनीक सिहानूक,
कंबोडिया के माननीय एवं विशिष्ट अतिथियो,
साथियो और मित्रो,

आज प्योंगयांग के जीवन के हर क्षेत्र के लोग पूरे हर्ष और उल्लास के साथ यहां एकत्रित हुए हैं—कंबोडिया राज्य के अध्यक्ष और कामपूचिया के राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के नेता सामदेच नोरोदम सिहानूक व अन्य प्रतिष्ठित कंबोडियाई मेहमानों से मिलने के लिए हमारे देश में राजकीय यात्रा पर आये हुए हैं।

सर्वप्रथम मैं कोरियाई मजदूर पार्टी की केन्द्रीय समिति, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और समस्त कोरियाई जनता की ओर से राज्याध्यक्ष सामदेच नोरोदम सिहानूक का एक बार फिर हार्दिक स्वागत करता हूं। सामदेच नोरोदम सिहानूक का, जो कंबोडिया की जनता के उत्कृष्ट नेता हैं, साम्राज्यवाद-विरोधी प्रबल योद्धा हैं और हमारे बहुत घनिष्ठ मित्र हैं—और मैं स्वागत करता हूं राजकुमारी मोनीक सिहानूक का, सामदेच के परिवारजनों और सम्बन्धियों का और अन्य कंबोडियाई मेहमानों का।

मैं आपके द्वारा कंबोडिया की राष्ट्रीय मुक्ति जन सेना और कंबोडिया के समस्त देशभक्त जनगण को उत्साह से भरा, सरगर्म सैनिक सलाम भेजता हूं—आपकी जनसेना और जनगण के नाम जो अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं और उनके गुर्गों के विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

सामदेच राज्याध्यक्ष की यह हमारे देश की दूसरी राजकीय यात्रा है। यह एक और ऐतिहासिक घटना है जिससे कोरिया और कंबोडिया के बीच अटूट सैनिक मित्रता और एकता का प्रमाण मिलता है।

आप जहां-जहां गये हैं हमारे लोगों ने आपका बड़ी गरमजोशी के साथ स्वागत किया है जैसे बड़ी देर के बिछुड़े भाई बड़ी प्रसन्नता के साथ एक दूसरे को मिल रहे हों। सामदेच राजाध्यक्ष के प्रति उच्च सम्मान और युद्धरत कंबोडियाई जनगण के प्रति दृढ़ सैनिक एकता की भावना की यह हमारे लोगों द्वारा स्पष्ट अभिव्यक्ति है।

आज कोरिया और कंबोडिया अपने समान शत्रु अमरीकी-साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक ही युद्ध से संयुक्त हैं।

सामदेच नोरोदम सिंहानूक कोरिया की जनता के लिए कंबोडिया की जनता की बंधुत्वपूर्ण मैत्री का संदेश लाए हैं और लाए हैं अमरीकी आक्रमण के प्रतिरोध और राष्ट्रीय मुक्ति के युद्ध में कंबोडिया की जनता की शानदार जीतों का समाचार। इससे हमारे लोगों को नई और महान प्रेरणा मिली है।

जैसा कि सामदेच राज्याध्यक्ष ने कहा—मुक्ति सेना के अमरीकी-साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों और उनके किराए के पिट्ठुओं से अपने निःस्वार्थ और वीरतापूर्ण सशस्त्र संग्राम के द्वारा अपने देश का दस में से सातवां हिस्सा अबतक पूरी तरह स्वाधीन कर लिया है। इस हिस्से में उनके देश की कुल ७० लाख जनसंख्या में से चालीस लाख लोग रहते हैं। इस विजय का बड़ा राजनीतिक और सैनिक महत्व है। पिछले सूखे (वर्षाहीन) मौसम के नौ महीने में मुक्ति सेना ने आक्रांताओं और उनके कठपुतलों पर एक के बाद एक विनाशकारी वार किया—कंबोडिया के विभिन्न क्षेत्रों में—और मुक्त क्षेत्रों को पूरे देश की आजादी की लड़ाई के वास्ते विश्वसनीय अड्डों में परिवर्तित कर दिया।

हमें अपने बंधु कंबोडिया के जनगण की सफलताओं पर हार्दिक प्रसन्नता है। इस विजय को हम अपनी ही विजय मानते हैं। हम कंबोडिया के जनगण का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं।

कंबोडिया की जनता की विजय पूर्णतः सामदेच नोरोदम सिंहानूक तथा संयुक्त मोर्चे के सही नेतृत्व का परिणाम है। सामदेच राज्याध्यक्ष ने अब तक जिन साम्राज्यवाद-विरोधी देश-भक्तिपूर्ण और न्यायानुरक्त नीतियों का सतत सुदृढ़ पालन किया है और जिस प्रकार जनता का उन्हें गहरा विश्वास प्राप्त है, उनके बिना तो इन सफलताओं की कल्पना तक नहीं की जा सकती। आज जब अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं ने कंबोडिया की जनता पर कुटिल युद्ध लाद दिया है, तो उन्हें—कंबोडिया की देशभक्त जनता को—स्वयं अपने निजी अनुभव से यह बात पूरी तरह समझ में आ गई है कि पिछले दिनों की सामदेच राज्याध्यक्ष की गृह और

विदेश नीतियां पूरी तरह सही थीं। आज हर बीतते दिन के साथ जनता में उनका सम्मान गहरा होता जा रहा है, जनता उनके चारों तरफ एकत्रित हो रही है और अधिक दृढ़तापूर्वक लड़ रही है।

आजकल, विशेषकर २३ मार्च १९७० के सामदेच राज्याध्यक्ष के ऐतिहासिक पंच-सूत्री वक्तव्य के साथ-साथ उनकी प्रिय ओजस्वी वाणी पूरे कंबोडिया में गूंज रही है, अमरीकी-साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं के खिलाफ न्यायपूर्ण संघर्ष में एक होकर लग जाने के लिए जनता का आवाहन कर रही है, जो अब भी युद्धरत हैं, उनमें अनन्त शक्ति और साहस का संचार कर रही है और दुश्मन के दिलों को दहला रही है।

सामदेच नोरोदम सिंहानूक ने कहा था, "कामपूचिया के राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की ध्वजा के नीचे और कंबोडिया राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार के नेतृत्व में कंबोडिया की जनता अमरीकी-साम्राज्यवादियों के खिलाफ तब तक बगैर किसी समझौते के लड़ती रहेगी, जब तक मातृभूमि पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हो जाती।"

कंबोडिया की जनता के नाम अपने २४वें और २५वें संदेशों में सामदेच नोरोदम सिंहानूक ने एकबार फिर, राष्ट्र की रक्षार्थ अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध पावन युद्ध में अंतिम विजय तक नेतृत्व करने के संयुक्त मोर्चे और कंबोडियाई राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार के दृढ़ निश्चय की ओर पूरी गंभीरता से इंगित किया।

साम्राज्यवाद-विरोधी वीर योद्धा और जनगण की मुक्ति और स्वतन्त्रता के प्रचंड रक्षक के रूप में सामदेच नोरोदम सिंहानूक को तमाम दुनिया के शान्ति प्रेमी लोगों का विश्वास और पूर्ण समर्थन प्राप्त है।

यह इसी विश्वास का फल है कि संयुक्त मोर्चे के नेतृत्व में स्थापित राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार को अबतक २७ प्रभुसत्ता सम्पन्न राज्यों ने, कंबोडिया की जनता की एकमात्र न्यायसंगत सरकार के रूप में औपचारिक मान्यता प्रदान कर दी है।

अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर आज यह बिलकुल स्वाभाविक ही है कि वे सब देश जो ईमानदारी से साम्राज्यवाद-विरोधी झंडा उठाये हैं और राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का समर्थन करते हैं, सामदेच नोरोदम सिंहानूक के नेतृत्व वाली कंबोडिया के राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार को मान्यता प्रदान करें और अमरीकी साम्राज्य-वाद के पिट्ठुओं, गद्दार लोन नोल-सिरिकमातक गुट को दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दें, नामंजूर कर दें।

देशभक्त कंबोडियाई जनता का युद्ध-मनोबल बहुत ऊंचा है; उसके सामने फैला है अपनी महान और अंतिम विजय का महामार्ग।

अमरीकी साम्राज्यवाद का पिट्ठू गद्दार लोन नोल-सिरिकमातक गुट नोम पेन्ह के छोटे से इलाके में घिर गया है, निराशा और भ्रम से भटक रहा है। इसके

दिन अब गिने-चुने हैं। यह एक ऐसा नितान्त तथ्य है जिसे अमरीकी-साम्राज्यवादियों का गुलाम प्रेस भी स्वीकार करता है।

हम एक बार फिर अपना यह विश्वास प्रकट करते हैं कि कंबोडिया की जनता शीघ्र ही अपनी मातृभूमि को पूरी तरह स्वतंत्र कर लेगी, और सामदेच नोरोदम सिहानूक की राज्याध्यक्षता में एक नए, स्वाधीन, शांतिपूर्ण, साम्राज्यवाद-विरोधी और समृद्ध जन कंबोडिया का निर्माण करेगी।

अबतक कंबोडिया की जनता ने अमरीकी-साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं के विरुद्ध अपने संग्राम में जो सफलताएं जीती हैं वे तमाम दुनिया के दलित राष्ट्रों के साम्राज्यवाद-विरोधी स्वाधीनता संग्राम में महान योगदान हैं और हमारी जनता के अमरीका-विरोधी संघर्ष में बेशकीमती मदद।

दुनिया के किसी भी हिस्से में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं की हार हो तो यह दुनिया के सभी राष्ट्रों के लिए बहुत अच्छी चीज है।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और कोरियाई जनता कंबोडिया के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण को स्वयं अपने विरुद्ध आक्रमण मानती हैं। उन्होंने कंबोडिया के लोगों को सहायता देने का हर प्रयास किया है। हम एक बार फिर यह दृढ़ गंभीर घोषणा करते हैं कि सामदेच नोरोदम सिहानूक और संयुक्त मोर्चे के नेतृत्व में राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार के कहते ही हम कंबोडिया की जनता के सहायतार्थ हर आवश्यक कदम उठाने को तैयार हैं।

कंबोडिया और हिंद चीन के अन्य राष्ट्र केवल अपनी ही पूर्ण स्वाधीनता और मुक्ति की लड़ाई नहीं लड़ रहे, वे अपना खून एशिया और विश्व की शांति की रक्षा में भी बहा रहे हैं।

दक्षिण वियतनाम पर आक्रामक युद्ध में लगातार एक के बाद एक मात खाकर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने जनवादी वियतनाम, कंबोडिया और लाओस पर भी युद्ध की लपटें फैला दीं। लेकिन आक्रांता स्वयं अपनी कब्र खोद रहे हैं।

राज्याध्यक्ष सामदेच नोरोदम सिहानूक की पहल पर हुए हिंदी-चीनी राष्ट्रों के शिखर सम्मेलन की सैन्य ध्वजा के नीचे हिंद-चीन के राष्ट्र दृढ़तापूर्वक संगठित हैं। हिंदी-चीनी राष्ट्रों की जनता के अदमनीय और वीरतापूर्ण संघर्ष ने अमरीकी साम्राज्यवादियों की युद्ध के 'वियतनामीकरण' की योजना का और 'निक्सन सिद्धांत' के नाम-पट्ट के नीचे 'हिंदी-चीनियों को हिंद-चीनियों से लड़ाओ' जैसे कुचक्रों का दीवाला निकाल दिया है।

वियतनाम की जनता की अदमनीय वीरता ने अमरीकी-साम्राज्यवादियों का बर्बर आक्रमण निष्फल कर दिया है और अमरीकी साम्राज्यवाद की 'अजेयता' की मिथ्या धारणाओं को चकनाचूर कर दिया है। इससे विश्व के प्रगतिशील राष्ट्रों के

शांति, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाजवाद के आंदोलनों को विशेष बल मिला है। कामरेड हो ची मिन्ह के पावन सिद्धांतों का पालन करते हुए वियतनाम के लोग हर मोर्चे पर वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं—वे जल्दी ही वह दिन लाना चाहते हैं जब अमरीकी आक्रमण से राष्ट्र की रक्षा करने के युद्ध में उन्हें पूर्णविजय प्राप्त होगी।

इस वर्ष लाओस की जनता ने दक्षिण लाओस पर अमरीकी साम्राज्दवादी आक्रमण को बड़ी वीरता से कुचल डाला और शानदार जीत हासिल की। वे शत्रु पर वार पर वार किए जा रहे हैं और अपना स्वाधीनता संग्राम सफलतापूर्वक चला रहे हैं।

हाल ही में अमरीकी रक्षा विभाग के वियतनाम पर आक्रमण-संबंधी गुप्त दस्तावेजों का जो भंडाफोड़ अमरीका में हुआ है उससे दुनिया के लोगों पर यह अकाट्य तथ्य और भी अच्छी तरह प्रकट हो गया है कि हिंदी-चीन पर यह आक्रामक युद्ध थोपने की जिम्मेदारी सिर्फ अमरीकी साम्राज्यवादियों पर है, और किसीपर नहीं।

हिंद-चीन में बने रहने का अमरीकी साम्राजियों के पास न कोई कारण है न आधार। उन्हें तुरंत ही हिंद-चीन पर अपना आक्रमण रोक देना चाहिए, बिना शर्त अपनी आक्रामक थल, जल और नभ सेनाओं को हटा लेना चाहिए, अपने पिछ-लग्गू और कठपुतली देशों की तमाम सेनाओं को भी और सभी घातक हथियारों और युद्धास्त्रों को भी हटा देना चाहिए।

इस अवसर पर हम अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पिट्ठुओं के विरुद्ध न्यायपूर्ण राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में अपने बंधु वियतनामी और लाओसी जनगण के साथ संपूर्ण एकता की घोषणा करते हैं। वियतनाम समस्या के शांतिपूर्ण निपटारे के उस सप्त-सूत्री प्रस्ताव को हम अपना सक्रिय समर्थन देते हैं जिसे हाल ही में दक्षिण वियतनामी गणतंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार ने वियतनाम संबंधी पेरिस सम्मेलन में प्रस्तावित किया था। और हम अपना सक्रिय समर्थन देते हैं लाओस समस्या के निपटारे के उन नए प्रस्तावों को जिन्हें २७ अप्रैल और २२ जून को लाओस के देशभक्त मोर्चे ने प्रस्तुत किया था।

हमें विश्वास है कि एशिया तथा शेष विश्व के क्रांतिकारी लोगों की सक्रिय सहायता और प्रोत्साहन प्राप्त तीनों हिंद-चीनी देशों के लोग अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के अंतिम सैनिक तक को हटाने के लिए दृढ़ता से लड़ते रहेंगे और अंत विजय उन्हीं की होगी।

साथियो और मित्रो,

आज एशिया एक ऐसा क्षेत्र है जहां क्रांति का तूफान पूरे जोर पर है। साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी संघर्ष का यह आज मुख्य अखाड़ा है। यहीं साम्राज्यवाद की जीवन-रेखा काटी जा रही है।

एशिया में अनेक क्रांतिकारी युद्धरत देश हैं। इन सब में एकता भी मजबूत है। इसीलिए अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अपने आक्रमण का पहला शिकार एशिया को बनाया है। उन्होंने एशिया के समाजवादी देशों को घेरने और उनपर आक्रमण करने के लिए और तेजी से बढ़ते हुए राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलनों को रोकने के लिए हर आक्रामक हथकंडे का इस्तेमाल किया है। लेकिन इस क्षेत्र के लोगों ने संगठित होकर जो करारा जवाब दिया है, उससे अमरीकी साम्राज्यवादियों को मात-पर-मात खानी पड़ी है। हालत यह हो गई है कि अब वे और अधिक देर तक एशिया में नहीं टिक सकते। एशिया में आक्रमण की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति का पूरा दीवाला निकलने ही वाला है।

जब कोरिया पर अपने आक्रमण के दौरान अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अमरीकी इतिहास में पहली बार करारी सैनिक हार खाई थी और उनके पतन का आरंभ हुआ था—तबसे अब तक उन्हें हिंद-चीन के वीर जनगण के हाथों भारी पराजय का सामना करना पड़ा है। तब से अब तक जो कुछ भी हुआ है उससे यही नजर आता है कि वे चाहे जैसी भी चालें चले वे अपने विनाश को नहीं रोक सकते, लोगों के स्वाधीनता संग्रामों को नहीं रोक सकते और समाजवाद की विजय और प्रगति को नहीं रोक सकते।

अमरीकी साम्राज्यवाद को अब घर में और बाहर एक और भी गंभीर संकट का सामना करना पड़ रहा है। स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका में युद्ध-विरोधी और सरकार-विरोधी जन-आंदोलन प्रबल और विशाल होते जा रहे है, आर्थिक अवरोध और मुद्रास्फीति कायम हैं, बेरोजगारी बढ़ रही है, अंतर्राष्ट्रीय भुगतान की स्थिति बिगड़ती जा रही है। सामाजिक बेचैनी प्रतिदिन बढ़ रही है। शासकीय वर्गों के अंतर्विरोध तेज हो रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अपनी आकामक सेनाओं को छितरा दिया है और उसे संसार के समस्त क्षेत्रों में तैनात कर दिया है—इस सेना-नीति की कमजोरियां दिन प्रति दिन स्पष्ट होती जा रही हैं। साम्राज्यवादी सत्ताओं में बाजारों और प्रभाव-क्षेत्रों के लिए होड़ को लेकर आपसी विरोध प्रति दिन तेज होता जा रहा है। हिंद-चीन ही नहीं, सारे संसार में अमरीकी साम्राज्यवाद पर लगातार घात प्रतिघात हो रहे हैं।

अपने आपको सर्वनाश से बचाने की जीतोड़ कोशिशों में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने बदनाम 'निक्सन सिद्धांत' प्रस्तुत किया है। वे प्रचार कर रहे है नीति परिवर्तन का, पर वास्तव में आक्रमण की और भी चालाक और तिकड़मी योजनाओं का सहारा ले रहे हैं। इसमें भी उन्हें असफलता मिलेगी।

एशिया की क्रांतिकारी शक्तियों पर अपने आक्रमण में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने चीनी लोक गणतंत्र की नाकेबंदी करने और उसका दम घोंटने की पूरी-पूरी

कोशिश की ।

चीन में जनक्रांति की विजय हुई तो अमरीकी साम्राज्यवादियों ने चीनी लोक गणतंत्र को मान्यता प्रदान करने से इनकार कर दिया। इतना ही नहीं, जनवादी चीन के जन्म के आरंभिक दिनों में ही शत्रुतापूर्ण रवैया अपनाया। उन्होंने तमाम प्रतिक्रियावादी शक्तियों को साथ कर लिया और चीन के अवरोध और अलगाव के लिए हर कुटिल षड्यंत्र का उपयोग किया। जो ताइवान चीनी लोक गणतंत्र की पावन भूमि का अविभाज्य अंग था उस पर उन्होंने अपने कोरिया पर आक्रमण के साथ-साथ कब्जा कर लिया, चीनी जनता को सैनिक आक्रमण की लगातार धमकी देते रहे और उसके विरुद्ध शत्रुतापूर्ण गतिविधियों में सतत लगे रहे।

लेकिन यह सब निष्फल रहा। चीनी लोक गणतंत्र के अवरोध और अलगाव की अमरीकी साम्राज्यवादी नीति के बावजूद दम घुटना तो बहुत दूर, चीन मजबूत ही होता गया है। आज वह एक महान समाजवादी सत्ता और दृढ़ साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी शक्ति के रूप में एशिया में शान के साथ खड़ा है।

पिछले कुछ वर्षों में चीनी लोक गणतंत्र को चीनी जनता की एकमात्र विधिवत सरकार के रूप में मान्यता देने और उसके साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने का न रुकने वाला प्रवाह पूरे विश्व में चल पड़ा है। अमरीकी साम्राज्यवादियों की चीन के अवरोध और अलगाव की नीति का शर्मनाक अंत हो गया है।

इस प्रकार आंतरिक रूप से और बाह्य नीति में अमरीकी साम्राज्यवाद एक बंद गली में घुसा दिया गया है। इन्हीं परिस्थितियों में पिछले दिनों निक्सन ने अपनी चीन की यात्रा की योजना की घोषणा की।

इसके माने हैं कि चीन के प्रति शत्रुता की नीति जिसका पालन अमरीकी साम्राज्यवादी बीस से भी अधिक वर्षों से करते रहे हैं, चीन में—उस देश में जहां लगभग दुनिया की एक चौथाई जनसंख्या रहती है—उस चीन में महान क्रांतिकारी परिवर्तनों को शक्तिबल से रोकने की उनकी नीति अंततोगत्वा दीवालिया हो गयी है। इसके माने हैं कि आखिरकार अमरीकी साम्राज्यवादी संसार की शक्तिशाली साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी शक्तियों से हार गये हैं।

अंतिम विश्लेषण में, निक्सन अपने हाथों सुलह का सफेद झंडा लिये, पीकिंग पहुंचेंगे, ठीक वैसे ही जैसे कोरिया युद्ध में अपनी हार के बाद अमरीकी साम्राज्यवादी पानमुनजोन में सफेद झंडे के साथ पहुंचे थे।

सब तथ्य यही दिखाते हैं कि हमारे काल में साम्राज्यवाद बड़ी तेजी से टूट कर गिर रहा है।

निक्सन की प्रस्तावित चीन यात्रा से विश्व जनमत में विभिन्न प्रतिक्रियाएं हुई हैं।

उनकी यह यात्रा किसी विजेता की यात्रा नहीं होगी, बल्कि पराजित की यात्रा होगी। यह यात्रा अमरीकी साम्राज्यवाद के पतन की पूरी तरह द्योतक है। यह चीनी जनता की महान विजय है, संसार के क्रांतिकारी जनगण की विजय है।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और चीन की जनता पूरी तरह परिपक्व, अनुभवी और संतुलित है। दीर्घकालीन साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी संघर्ष की उनकी शानदार परंपरा हैं। दुश्मन की बरछी का अपनी बरछी से जवाब देने का और जब दुश्मन छलछद्म भरी चालीकी से काम ले तो अपने क्रांतिकारी सिद्धांतों से उसे पछाड़ने का उनके पास समृद्ध रणानुभव है। एशिया की साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी शक्तियों के विश्वसनीय स्तंभ के रूप में चीनी लोक गणतंत्र अमरीकी साम्राजियों के नेतृत्व में संगठित तमाम साम्राजियों की आक्रमण और युद्ध की नीतियों के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक लड़ता रहा है। सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के सिद्धांत को पूरी तरह पकड़े हुए चीन एशिया तथा शेष संसार के तमाम क्रांतिकारी लोगों को, जो अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं का विरोध करते हैं, पूरा सक्रिय समर्थन देता है। चीनी लोक गणतंत्र की सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह पूरी दृढ़ता और अडिगता के साथ क्रांतिकारी सिद्धांत का पालन करती रहेगी और युद्धरत क्रांतिकारी लोगों को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देती रहेगी।

निक्सन की प्रस्तावित चीन यात्रा से साम्राज्यवादी कैंप और भी अधिक भ्रांति और विघटन में पड़ता जा रहा है। जापानी प्रधानमंत्री सातो जो अमरीकी साम्राज्यवाद के पीछे-पीछे लगे रहते थे और जिन्होंने चीनी लोक गणतंत्र के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति में सब को पीछे छोड़ दिया था, अब अपनी प्रतिक्रियावादी नीति का खोखलापन छिपाने की जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं। पूरी तरह घबरा कर वह प्रति दिन परस्पर-विरोधी वक्तव्य देते हैं। अमरीका का अंधानुकरण करने वाले अन्य पिछलग्गू देश और कठपुतले पूरी तरह भ्रमित हैं। विशेषकर च्यांग काई-शेक गुट और दक्षिण कोरियाई कठपुतली गिरोह महाचिंता और भय से ग्रस्त होकर शोर-शराबा कर रहे हैं।

हर नया दिन सामान्य स्थिति को हम क्रांतिकारियों के लिए और अधिक अनुकूल बना रहा है।

आज की स्थिति की मांग है कि अब क्रांतिकारी देशों के लोग जिनमें वे भी सम्मिलित हैं जो आज सक्रिय युद्ध में रत हैं, संगठित हो जाएं और पतन से अस्त-व्यस्त साम्राज्यवादियों पर और कठोर आक्रमण करें और उनकी सांस की नली को काट दें।

ऐतिहासिक अनुभव सिखाता है कि साम्राज्यवादी अपनी ताकत टूट जाने पर भी अपनी आक्रामक प्रकृति नहीं त्यागता। साम्राज्यवादी अपनी पुरानी स्थितियों से

स्वेच्छा से नहीं हटते। जितना ही वे दलदल में धंसते हैं, उतना ही वे अपनी दोमुँही चालबाजियों से चिपकते हैं—एक हाथ से वे संधिप्रस्ताव दिखाते हैं दूसरे हाथ से संगीन घुमाते हैं, वे शांति के चोगे में छिप कर आक्रमण और युद्ध की नीति का और कुटिलता से पालन करते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की अनवरत आक्रामक गतिविधियों के कारण अभी तक हिंदचीन में युद्ध की लपटें बुझी नहीं हैं। एक और युद्ध छेड़ने और एशिया में तनाव को बरकरार रखने की कोशिश में अमरीकी साम्राज्यवादी बिना ढील डाले कोरिया सैनिक छेड़छाड़ में लगे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान एशियाई स्थिति को ओर कठिन बना रहा है।

१९६९ में नवंबर के अमरीकी-जापानी 'सुरक्षा समझौते' के स्वतः नवीनीकरण और हाल ही में 'ओकीनावा की वापसी के समझौते' पर अमरीकी-जापानी हस्ताक्षर तक सभी तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि 'निक्सन सिद्धांत' के अंतर्गत अमरीकी साम्राजियों ने जापानी सैन्यवादियों को एशिया में आक्रमण-सेना के तौर पर खुल्लम खुल्ला खड़ा कर दिया है। कुछ ही अरसा हुआ, उन्होंने अपने सुरक्षा मंत्री को जापान और दक्षिण कोरिया भेजा था कि एशिया के विरुद्ध आक्रमण में अमरीकी फौज के बदले जापानी सशस्त्र सेना को इस्तेमाल करने की साजिश की जा सके और दक्षिण कोरिया में 'अमरीकी-जापानी दक्षिण कोरियाई' संयुक्त कारवाई 'प्रणाली' त्रुटिहीन बनाई जा सके।

पुनर्जीवित जापानी सैन्यवादी अमरीकी साम्राज्यवादियों की 'एशियावासियों को एशियावासियों में लड़ाने' की 'नई एशिया नीति' के उपयोग से अपने 'बृहत्तर पूर्व एशिया सह-समृद्धि क्षेत्र' के पुराने सपने पूरे करने के वृथा प्रयास में अपने ही देश में फासिस्टीकरण को तेज करने में लगे हैं और खुले आम समुद्रपार आक्रमण की अपनी उच्छृंखल महत्वाकांक्षा का खुलेआम अनावरण कर रहे हैं। जापान के प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग जब भी अपना मुँह खोलते हैं तो यह दावा करते हैं कि जापान को 'एशिया में नेतृत्व' करना चाहिए। वे खुलेआम जापान की आक्रामक सशस्त्र सेनाओं को कोरियाई 'मोर्चे' पर झोंकने के षड्यंत्रों को गतिशील कर रहे हैं और दक्षिण कोरिया ताइवान और हिंदचीन के विशाल एशियाई क्षेत्र को अपना 'सुरक्षा क्षेत्र' घोषित कर रहे हैं।

आज साम्राज्यवाद मर रहा है। इसकी निराशोन्मत्त दोमुँही चालाकियों पर पूरी सतर्क निगरानी रख कर और समय रहते इसकी कुटिल योजनाओं को नष्ट करके हमें इसे जमीन में गाड़ देना चाहिए।

अगर एशिया में युद्ध रोकना है, अगर तनाव हटाकर सच्ची शांति स्थापित

करनी है, तो हम पूरे बलपूर्वक यह कहते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया, ताइवान, हिंदचीन जापान व उन तमाम देशों से चले जाना होगा जहां उन्होंने पैर जमा लिये हैं। उन्हें पिछलग्गू देशों और कठपुतलियों को सशस्त्र करके 'एशियावासियों से लड़ाने' की अपनी योजना त्यागनी होगी। अमरीकी और जापानी प्रतिक्रियावादियों को अन्यदेशों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप और उनके राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का दमन बंद करना होगा। हर देश की समस्याओं का निपटारा उस देश के नागरिकों पर ही छोड़ा जाना चाहिए।

अगर अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी सैन्यवादियों ने हटने से इनकार किया और अपने आक्रामक इरादों पर वे अड़े रहे, तो जनता के संयुक्त संघर्ष उन्हें हर जगह से बाहर खदेड़ देंगे।

एशिया में आक्रमण और युद्ध की उनकी वर्तमान योजनाओं को निष्फल करने के लिए आज इस बात का विशेष महत्व है कि उन सब देशों के साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी मोर्चे को शक्तिशाली किया जाये जो आज आक्रमण के सीधे शिकार बने हुए हैं।

एशिया के क्रान्तिकारी जनगण की सैनिक एकता इतिहास की उपज है। साम्राज्यवादी आक्रांताओं के विरुद्ध वीरतापूर्ण संग्रामों ने इस एकता को बनाया है और विकसित किया है। अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी सैन्यवादियों की नई आक्रामक चालें कोरिया, कंबोडिया, चीन, वियतनाम, लाओस व अन्य क्रांतिकारी एशियाई देशों के लोगों को और भी दृढ़ता से संगठित कर रही हैं।

कोरिया और चीन के लोग हमेशा कंधे से कंधा मिला कर लड़े हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों के खिलाफ एक ही मोर्चे पर वे कदम से कदम मिला कर चले हैं। यथार्थ जीवन के अनुभव ने उन्हें सिखाया कि उनका भविष्य अविभाज्य है। एशिया में अमरीकी साम्राज्यवादी और जापानी सैन्यवादी एक साथ मिल कर एक दूसरे के सहयोग से आक्रमण और युद्ध के षड्यंत्र रच रहे हैं। साथ ही साथ उनकी योजनाओं का परदाफाश होता जा रहा हैं। कोरिया और चीन की जनता दुश्मन के आक्रमण के संयुक्त मुकाबले की पूरी तैयारी कर रही है—आज भी वे वैसे ही क्रांतिकारी साथी और बंधु हैं और भविष्य में भी रहेंगे जैसे कि वे भूतकाल में तब थे जब जीवन और मृत्यु में एक दूसरे के साथ एक ही खंदक में वे कंधे से कंधा मिला कर लड़े थे और विजय पाई थी।

कुछ ही समय हुआ, 'मित्रता, सहयोग और परस्पर सहायता की कोरिया-चीन संधि' की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर हमारे दोनों देशों के बीच पार्टी और सरकार के प्रतिनिधि मंडलों का आदान-प्रदान हुआ था और हमारी राजधानियों-प्योंगयांग और पीकिंग—तथा अन्य कई स्थानों पर विशाल जन सभा हुई थीं। इन

उत्सवों ने एक बार फिर सारी दुनिया को दिखा दिया कि कोरिया और चीन की जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी सैन्यवाद की अंतिम पराजय तक साथ-साथ लड़ने के लिए अटल रूप से प्रतिबद्ध है।

कोरिया और चीन की जनता के बीच भाईचारा, मित्रता और एकता पर मुहर रक्त ने लगायी थी, वह इतिहास की कसौटी पर खरी उतरी है और अमिट है। भविष्य में भी समान शत्रु के विरुद्ध संग्राम में हमारी जनता बिरादराना चीनी जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ेगी।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के नेतृत्ववाले साम्राज्यवादियों को पराजित करने के लिए एशिया में क्रांति लाने वाले लोगों की एकता को दृढ़ बनाना ही काफी नहीं है, संसार के सभी क्रांति लाने वाले देशों की जनता की एकता को शक्तिशाली करना होगा। मार्क्सवाद-लेनिनवाद का झंडा, साम्राजी-विरोधी अमरीका-विरोधी संघर्ष का क्रांतिकारी झंडा ऊंचा उठाये, समाजवादी देशों की जनता और एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका व शेष विश्व के सब भागों की क्रांतिकारी जनता के साथ अपने समान उद्देश्य की विजय के लिए हम और उत्साह और कर्मठता से लड़ेंगे।

हमारी जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी सैन्यवाद के विरुद्ध जापान व अन्य एशियाई देशों की जनता के संघर्ष का सक्रिय समर्थन करती है। कोरिया की जनता तमाम अरब जनता के साथ, जिसमें फिलीस्तीन के लोग भी सम्मिलित हैं, अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध उनके संघर्ष में, अफ्रीकी लोगों के साथ साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और जातिवाद के विरुद्ध स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय आजादी की मजबूती के लिए उनके संग्राम में अपनी सुदृढ़ एकता की अभिव्यक्ति करती है। हमारी जनता क्यूबा की जनता के संघर्ष का दृढ़ संकल्प के साथ समर्थन करती है जो अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रामक और तोड़फोड़ के अनवरत कृत्यों का विनाश करते हुए समाजवाद का सफल निर्माण कर रही है। हम लातीन अमरीका के लोगों की अमरीका-विरोधी, तानाशाही विरोधी लड़ाई का दृढ़ समर्थन करते हैं। हम संसार के तमाम देशों के लोगों की साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी लड़ाई के साथ अपनी दृढ़ एकता अभिव्यक्त करते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद अपनी ताकत का कितना ही दिखावा करे, अगर संसार के क्रांतिकारी लोग हर जगह उसे काट गिराने के लिए संयुक्त हो जाएं, तो अन्ततोगत्वा वह चकनाचूर होकर रहेगा।

अपनी आक्रामक महत्त्वाकांक्षाओं में अंधे होकर जापानी सैन्यवादी द्वितीय विश्वयुद्ध में अपनी कटु और शर्मनाक हार का पाठ भूल कर अगर एक बार फिर आक्रमण के पुराने रास्ते चले तो वे भी अपने अंतिम पतन के दुर्भाग्य से बच नहीं सकेंगे।

साथियो और मित्रो,

कोरियाई क्रांति की अंतिम विजय के लिए हमें हर तरीके से अपनी आन्तरिक क्रांतिकारी शक्तियों को बलशाली बनाना और विकसित करना होगा और साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों के साथ अपनी एकता को मजबूत करना होगा।

आज दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी हटने से इनकार कर रहे हैं और कोरियावासियों को कोरियावासियों से लड़ाने की निराशोन्मत्त कोशिश कर रहे हैं। अमरीकी साम्राजियों की सहायता से जापानी सैन्यवादी हमारे देश पर एक बार फिर कब्जा करने की योजनाएं बना रहे हैं। इस परिस्थिति में हम अपनी जागरूकता में एक पल की भी ढील नहीं दे सकते। हमें अपनी सुरक्षा सामर्थ्य को मजबूत करने के लिए महत प्रयास करते रहना चाहिए और किसी भी आपत्कालीन स्थिति में अपनी पितृभूमि की रक्षा को अजेय बनाने के लिए समाजवादी आर्थिक निर्माण की गति में तेजी लानी चाहिए।

जूछे विचार की ध्वजा ऊंची उठाएं, हमारी पार्टी के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में हमारी जनता ने स्वाधीनता, आत्म-निर्भरता और स्व-सुरक्षा की क्रांतिकारी नीति का पालन किया है और फलस्वरूप समाजवादी औद्योगीकरण की ऐतिहासिक जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक पूरा किया है और इतनी सुरक्षा सामर्थ्य निर्मित की है जो इतनी मजबूत है कि साम्राज्यवादी हम पर जब भी हमला करें उन्हें कुचल सकती है।

हमारे गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्ध भाग द्वारा प्राप्त सफलताओं से प्रेरित होकर दक्षिण कोरिया के लोग अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों की सैनिक फासिस्ट तानाशाही उतार फेंकने के लिए, हमारे देश पर फिर से कब्जा करने की जापानी सैन्यवादियों की कोशिशों को तोड़ने के लिए, स्वाधीनता और स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए और हमारी पितृभूमि की एकता के लिए पूरी निष्ठा से संघर्ष कर रहे हैं। वे अमरीकी साम्राज्यवादियों के औपनिवेशिक शासन पर भारी प्रहार कर रहे हैं।

दिन प्रतिदिन क्रांति के अनुकूल होती जाती स्थिति से घबरा कर दक्षिण कोरिया का कठपुतली गिरोह अमरीकी साम्राज्यवादियों से अधिकाधिक चिपकता जा रहा है, जापानी सैन्यवादियों पर अधिकाधिक आश्रित होता जा रहा है और यह व्यर्थ आशा कर रहे हैं कि इस प्रकार उसके विनाश का दिन टल जाएगा। अपनी गद्दारी को छिपाने के लिए और दक्षिण कोरिया के लोगों में देश के शांति पूर्ण पुनरेकीकरण आंदोलन की बढ़ती हुई अदमनीय शक्ति का गला घोंटने के लिए वे अपने षडयंत्र पूर्ण 'शांतिमय पुनरेकीकरण कार्यक्रम' का कोलाहलपूर्ण विज्ञापन करने में जुटे हैं। उनकी यह मूर्खतापूर्ण चाल किसी को भी मूर्ख नहीं बना सकती और न ही दक्षिण कोरिया के कठपुतली गिरोह को अवश्यंभावी विनाश से बचा सकती है।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए हमेशा सुसंगत प्रयास करती रही है। पिछली अप्रैल में एक बार फिर उसने स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए आठ-सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया था।

इस बार अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरिया के कठपुतली गिरोह ने हमारे शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के उचित और न्यायपूर्ण कार्यक्रम का जवाब नहीं दिया है। हमारा कार्यक्रम पूरे राष्ट्र की सर्वसम्मति का दर्पण है। बल्कि वे लोग शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की खोखली बकवास में लगे हैं। अगर दक्षिण कोरिया के शासक सचमुच शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण चाहते हैं तो पहले तो उन्हें अमरीकी फौजों की स्थायी मौजूदगी की पैरवी नहीं करनी चाहिए बल्कि उन्हें दक्षिण कोरिया से हटा देना चाहिए। उन्हें जापानी सैन्यवादियों से मिलीभगत बंद करनी चाहिए और उन्हें दक्षिण कोरिया में न आने देना चाहिए। उन्हें चाहिए कि दक्षिण कोरिया की उन राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं और जनवादी हस्तियों का दमन बंद कर दें जो शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की आवाज उठाती हैं, बल्कि उन्हें देश के पुनरेकीकरण के लिए उत्तर-दक्षिण समझौता वार्त्ता के लिए आगे आने दें। उन्हें शुरूआत इस आधार से करनी चाहिए कि कोरियाई समस्याओं को कोरियावासियों द्वारा ही सुलझाया जाना चाहिए।

शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के आठ-सूत्री कार्यक्रम को दक्षिण कोरिया के शासक स्वीकार करें या न करें—इसके अलावा भी अगर वे सचमुच पुनरेकीकरण चाहते हैं तो उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और समझौता वार्ता से वे डरते क्यों हैं।

हम दक्षिण कोरिया की तमाम राजनीतिक पार्टियों, ड्रेमोकेटिक रिपब्लिकन पार्टी सहित और तमाम सामाजिक संस्थाओं और व्यक्तिगत हस्तियों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए हर समय तैयार हैं।

अगर दक्षिण कोरिया के शासक उत्तर और दक्षिण के बीच आरम्भिक संपर्कों से भी इनकार करते रहे, और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का केवल नाम ही लेते रहे तो इससे जनता में कटु घृणा और क्रोध का ही उत्थान होगा। वे खुलेआम दावा कर रहे हैं कि पुनरेकीकरण के प्रश्न पर वार्तालाप १९७३ के बाद ही हो सकता है उनके 'शक्तिवर्द्धन' के बाद या इसके भी बाद सत्तरादिक दशक के उत्तरार्द्ध में। उनका उद्देश्य है कि तब तक पुनर्जीवित जापानी सैन्यवादियों को पूरी ताकत के साथ दक्षिण कोरिया में स्थापित कर दें और तब 'साम्यवाद पर हावी होकर 'पुनरेकीकरण' की अपनी मूर्खतापूर्ण महत्त्वाकांक्षा को पूरा कर लें।

हमारी जनता गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग के समाजवादी निर्माण के श्रमसाध्य संघर्ष में लगी रहेगी, दक्षिण कोरिया के लोगों की सहायता करके दक्षिण कोरिया में क्रांति लाने के संघर्ष में लगी रहेगी और संघर्ष करती रहेगी कि प्रजा-

तांत्रिक आधार पर शांतिपूर्ण तरीके से कोरियावासी अपने आप स्वतन्त्र रूप से पुनरेकीकरण के प्रश्न को सुलझाएं।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को दक्षिण कोरिया से हटाने का, कोरिया तनाव दूर करने का और हमारे देश के स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का कोरियाई जनता का न्यायपूर्ण संघर्ष संसार के शांतिप्रेमी लोगों के अनवरत बढ़ते हुए समर्थन और प्रोत्साहन से अवश्य ही विजयी होगा।

सामदेच नोरोदम सिहानूक और कंबोडिया राज्य दीर्घकाल से अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों के विरुद्ध युद्ध में पूरी दृढ़ता से कोरिया की जनता के साथ रहे हैं। उन्होंने कोरिया के जनवादी गणतन्त्र को कोरियाई जनता के एकमात्र विधिवत् राज्य के रूप में मान्यता दी है और दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना को हटाने के और हमारी पितृभूमि के स्वतन्त्र शांतिपूर्ण एकीकरण के संघर्ष में हमारे गणतन्त्र की सरकार और कोरियाई जनता को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन दिया है।

इस सबके लिए मैं सामदेच नोरोदम सिहानूक, कामपूचिया के राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे और कंबोडिया के राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व वाले साम्राज्य के विरुद्ध अपने आम संघर्ष के लिए और नवजीवन के निर्माण के लिए कोरिया और कंबोडिया की जनता सैनिक संघ के मजबूत बंधन में बंधी है।

हमारी जनता को कंबोडिया की जनता जैसी उपाय कुशल और साहसी जनता को मित्र रूप में पाने पर अतीव प्रसन्नता है और हमारे दोनों देशों की जनता की मित्रता और एकता को वह महान महत्त्व का मानती है। हमारे देश में सामदेच नोरोदम सिहानूक की वर्तमान यात्रा का नवीन और महान योगदान है न सिर्फ अमरीका-विरोधी हमारे संयुक्त संघर्ष को तेज करने में, हमारे दोनों राष्ट्रों की सैनिक मित्रता और एकता को मजबूत करके विकसित करने में बल्कि एशिया के क्रांतिकारी देशों की जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी अमरीका-विरोधी संयुक्त मोर्चे को मजबूत करने और विकसित करने में और संसार के क्रांतिकारी लोगों के आंदोलन को आगे बढ़ाने में भी। इससे हमें अत्यधिक संतोष प्राप्त होता है।

अन्त में मैं एक बार फिर दृढ़तापूर्वक कहता हूं कि हमारी जनता अमरीका-विरोधी संयुक्त संघर्ष में कंबोडिया की जनता के साथ कंधे से कंधा मिला कर लड़ेगी और उसकी विश्वसनीय सहयोद्धा और मित्र रहेगी। मेरी हार्दिक कामना है कि माननीय सामदेच नोरोदम सिहानूक के बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में साहसी कंबोडिया राष्ट्र अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध राष्ट्रीय मुक्ति के संघर्ष में शानदान विजय प्राप्त करे।

कोरिया और कंबोडिया की जनता की अटूट सैनिक मित्रता और एकता जिंदाबाद !

सामदेच नोरोदम सिहानूक की अध्यक्षता वाला कामपूचिया का राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा और कंबोडिया के राष्ट्रीय संघ की राजसी सरकार जिंदाबाद !

एशिया के क्रांतिकारी लोगों की एकता जिंदाबाद !

दुनिया के लोगों की एकता जिंदाबाद !

आइए, हम राष्ट्रीय विभाजन को रोकें और देश को पुनः एक करें

चेकोस्लोवाक समाजवादी गणतंत्र की पार्टी और सरकार के प्रतिनिधि मंडल के स्वागत में हुई प्योंगयांग की जन-सभा में दिया गया भाषण

२३ जून १९७३

माननीय कामरेड गुस्ताव हुसाक,
माननीय कामरेड लुबोमिर स्त्रूगाल,
चेकोस्लोवाकिया के माननीय अतिथियो,
प्रिय साथियो और मित्रो,

प्योंगयांग नगर के हर वर्ग के लोग आज यहां एकत्रित हुए हैं और बिरादराना देश चेकोस्लोवाकिया के आप सद्भाव दूतों से मिल कर अत्यन्त हर्षित हैं।

कोरिया की मजदूर पार्टी को केंद्रीय समिति की ओर से, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और कोरिया की जनता की ओर से, सर्वप्रथम तो मैं चेकोस्लोवाक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महामंत्री के नेतृत्व में आए चेकोस्लोवाक समाजवादी गणतंत्र के पार्टी और सरकार के प्रतिनिधिमंडल का हार्दिक स्वागत करता हूं।

आपके माध्यम से चेकोस्लोवाकिया की जनता के प्रति कोरिया की जनता की ओर से बंधुत्वपूर्ण मित्रता का हार्दिक अभिनंदन भेजने की अनुमति भी आप मुझे दीजिए।

चेकोस्लोवाकिया से उच्चतम स्तर का पार्टी और सरकार का प्रतिनिधि मंडल हमारे देश आया—इसे हम चेकोस्लोवाकिया की जनता द्वारा हमारी जनता के प्रति गहरी मित्रता की अभिव्यक्ति के रूप में पूरा आदर देते हैं और हमारी जनता के समाजवादी निर्माण और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के संघर्ष से आपकी जनता की एकता के प्रतीक के रूप में सम्मान देते हैं

हमारे देश की आपकी यह यात्रा हमारे दोनों देशों की जनता के बीच गहरी

होती हुई पारस्परिक समझ को और उनके मित्रतापूर्ण और सहयोग के संबंधों को नए स्तर तक ले जाने के रास्ते में मील का पत्थर है।

आपके साथ मुलाकात से हमें चेकोस्लावाकिया की जनता के कठिन लेकिन शानदार संघर्ष, समाजवाद के निर्माण में उसकी उपलब्धियों और आपकी पार्टी और जनता के संभावित संघर्ष के बारे में बेहतर जानकारी मिली है।

आप यूरोपीय महाद्वीप के उस हृदय क्षेत्र में रहने वाले लोग हैं जहां राष्ट्रों के बीच युद्ध एक ऐतिहासिक महामारी की तरह फलता रहा है। चेकोस्लोवाकिया के लोगों ने विदेशी हमलावरों के विरुद्ध और राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक मुक्ति के लिए लंबी महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ी हैं। उन कठिन दिनों में जब देश पर हिटलरी फासिस्टों का कब्जा था, चेकोस्लोवाकिया के कम्युनिस्टों व देशभक्त लोगों ने अपने हाथों में हथियार लेकर फासिस्टों के खिलाफ आजादी की वीरतापूर्ण जंग लड़ी थी।

फासिस्ट जर्मनी की पराजय और आपके देश की आजादी के बाद भी चेको-स्लोवाकिया की जनता को बड़े पेचीदा संघर्ष करने पड़े। १९४८ में फरवरी विजय के बाद चेकोस्लोवाकिया की जनता ने समाजवाद का रास्ता स्वीकार किया। अपनी देश-भक्ति पूर्ण निष्ठा और सर्जनात्मक कार्यशीलता से आपने इतने कम समय में अपने देश को विकसित उद्योगों वाले समाजवादी देश में परिवर्तित कर दिया है, क्रांति के लाभों को सुरक्षित कर दिया है, और वर्ग-शत्रुओं की लगातार तोड़फोड़ और विनाश की कार्रवाइयों को चकनाचूर कर दिया है।

कामरेड गुस्ताव हुसाक की अध्यक्षता में चेकोस्लोवाक कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के नेतृत्व में अब चेकोस्लोवाकिया की जनता चेकोस्लोवाक कम्युनिस्ट पार्टी की १४ वीं कांग्रेस के समाजवादी समाज के वृहत्तर स्तर पर विकास के कार्यक्रम के अनुकूल राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में नई प्रगति के लिए, लोगों का जीवन स्तर उठाने के लिए और पांचवीं पांच-वर्षीय योजना के उद्देश्यों में भी आगे बढ़ने के लिए विशाल डग भर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में भी चेकोस्लोवाकिया नित्य प्रति अपनी गति-विधि का विस्तार कर रहा है।

हमारी जनता बंधु चेकोस्लोवाक जनता की नए समाज निर्माण में इन विजयों पर हर्ष से उल्लसित है और आपके भावी संघर्ष में और भी महान विजयों की हार्दिक अभिलाषा प्रकट करती है।

चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी, सरकार और जनता के साम्राज्यवादियों की युद्ध नीति के विरुद्ध और यूरोप में शांति और सुरक्षा के लिए प्रयासों के प्रति हमारी जनता एकता का ज्ञापन करती है।

हमारी जनता हमारे स्वयं के अनुभवों से अच्छी तरह जानती है कि समाज-

वाद का मार्ग आसान नहीं है।

आजादी के बाद उस कठिन परिस्थिति में जब अमरीकी साम्राज्यवादी कब्जे के कारण हमारा देश दो भागों में बंट गया था, हमारी जनता ने नए समाज का निर्माण आरम्भ किया। हमारी पार्टी के नेतृत्व में हमारी जनता ने अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके कुत्तों की आक्रमण और युद्ध की तमाम लगातार कोशिशों को निराश करके इतने थोड़े से समय में अपने पिछड़े हुए देश को प्रजातांत्रिक क्रांति, समाजवादी क्रांति और स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण आदि का सफल संपादन करके विकसित समाजवादी देश में परिवर्तित कर दिया है।

हमारी पार्टी की पांचवीं कांग्रेस द्वारा निर्धारित महान कार्यक्रम को समर्थन देकर हमारे लोग समाजवादी निर्माण के सब क्षेत्रों में जिस महान क्रांतिकारी प्रगति को प्राप्त करने में लगे हैं उसके मुख्य तत्व हैं : छह-वर्षीय योजना को समय से पहले पूरा करना, तकनीकी क्रांति की तीनों जिम्मेदारियों को पूरा करना, देश का स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण और साथ-साथ सैद्धांतिक क्रांति को प्रमुखता देते हुए सारे समाज का श्रमजीवीकरण करना।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विभिन्न परिस्थितियों में कोरिया और चेकोस्लोवाकिया ने समाजवाद का निर्माण आरम्भ किया लेकिन दोनों ही देशों द्वारा संग्रहीत अनुभव से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्रमजीवी वर्ग के लिए सच्ची स्वतंत्रता और स्वाधीनता, सुख और समृद्धि का एक मात्र रास्ता समाजवाद का रास्ता है।

कोरिया और चेकोस्लोवाकिया के लोगों ने दीर्घ काल से दृढ़ मैत्री संबंध बना रखे हैं, साम्राज्यवाद के विरुद्ध संग्राम और शांति और समाजवाद की विजय के लिए संघर्ष के समान उद्देश्यों में एक दूसरे की सहायता की है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के सिद्धांतों पर आधारित इस मित्रता ने जब कभी हमारे दोनों राष्ट्रों को अपनी प्रगति के रास्ते में कठिनाई और मुसीबतों का सामना करना पड़ा है अपनी महान तेजस्विता का परिचय दिया है।

हमारे लोगों के अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के विरुद्ध पितृभूमि स्वाधीनता संग्राम में और युद्धोपरांत पुनर्स्थापना और निर्माण के काल में चेकोस्लोवाकिया की जनता ने भौतिक और मनोबल दोनों स्तर पर हमारी सहायता की। हमें यह हमेशा याद रहता है।

समाजवाद के निर्माण और देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के हमारी जनता के संघर्ष में चेकोस्लोवाकिया के लोग अभी तक हमें सक्रिय समर्थन और सहायता दे रहे हैं। अभी कुछ समय पहले हमारी (सुप्रीम पीपुल्स असेम्बली) सर्वोच्च लोक सभा ने जब सब देशों की संसदों और सरकारों को पत्र लिखा तो उसके उत्तर में चेकोस्लोवाक समाजवादी गणतंत्र की संघीय सभा (फेडरल असेंली) ने जवाब में

हमारी शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की नीति की सकारात्मक सराहना की और यह विश्वास दिलाया कि वह हमारी जनता के न्यायपूर्ण उद्देश्यों को सक्रिय समर्थन और सहायता देना जारी रखेगी।

मैं इस अवसर पर कामरेड गुस्ताव हुसाक और चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी, सरकार और जनता को उनके बिरादराना समर्थन और सहायता के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

जैसा कि चेकोस्लोवाकिया की पार्टी और सरकार के प्रतिनिधि मंडल की हमारे देश की वर्तमान यात्रा में दिखाई देता है, हमारे दोनों देशों के संबंध अनुकूल रूप से विकसित हो रहे हैं और उनकी अंतर्राष्ट्रीय एकता मजबूती से बढ़ रही है।

समाजवादी देशों की एकता के शक्तिशाली होने से संपूर्ण समाजवाद की ताकत बढ़ती है और इससे लक्षित होता है कि विश्व समाजवाद की स्थिति ठोस है।

हमारी जनता भविष्य में भी हमारे देश की क्रांति और निर्माण को भली प्रकार संपादित करेगी और इस प्रकार अपनी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को अधिक वफादारी से पूरा करेगी।

साथियो और मित्रो,

आज अंतर्राष्ट्रीय स्थिति समाजवादी और क्रांतिकारी शक्तियों के अनुकूल और साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के प्रतिकूल रूप से विकसित हो रही है।

समाजवाद और राष्ट्रीय स्वाधीनता, श्रमिक वर्ग के और प्रजातांत्रिक आंदोलनों की बढ़ती हुई शक्तियों के मुकाबिले साम्राज्यवाद पतनोन्मुख है और हर बीतने वाले दिन के साथ अपने आप को कठिन परिस्थिति में पा रहा है। इससे बच निकलने के लिए साम्राज्यवादी लोग और भी चालाक दो मुंही चालबाजियों का सहारा ले रहे हैं।

'शान्ति' के साइनबोर्ड के नीचे संसार के कई भागों में संयुक्त राज्य अमरीका आक्रामक और हस्तक्षेप की नीतियां अपना रहा है और बड़े देशों से अपने संबंध सुधारता हुआ छोटे राष्ट्रों को सैनिक शक्ति से दबा कर अपना औपनिवेशिक आधिपत्य बरकरार रखने की कोशिश कर रहा है।

कोरिया, कंबोडिया, वियतनाम, लाओस, कई अरब देशों, क्यूबा और संसार के अन्य अनेक देशों में अमरीकी आक्रमण और हस्तक्षेप की चालबाजियों से यह पूरी तरह सिद्ध हो जाता है।

एशिया में उसकी जो औपनिवेशिक शासन व्यवस्था पूरी तरह खोखली हो गयी है, उसको बचाने के लिए अमरीका दक्षिण कोरिया को अपने कब्जे में ले कर हमेशा के लिए उसे अपने प्रमुख गढ़ के तौर पर इस्तेमाल करना चाहता है।

'निक्सन सिद्धांत' के अंतर्गत दोमुंही चालबाजियों को अपना कर अमरीका दक्षिण कोरिया के युद्ध प्रिय तत्वों को उकसा कर कोरियावासियों को कोरियावासियों से लड़ाने की कुनीति से, कोरिया के विभाजन को बनाये रखने से, दो कोरिया को बनाये रखने की नीति से तब भी बाज नहीं आना चाहता जबकि उत्तर-दक्षिण का संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित किया जा चुका है और कोरिया के दोनों भागों में संवाद आरंभ हो चुका है।

दक्षिण कोरिया के अधिकारी भी अमरीकी साजिशों के अनुरूप दोमुंही चाल-बाजियों का इस्तेमाल कर रहे हैं। वे भी षड्यंत्र रच रहे हैं कि देश का विभाजन बना रहे, और अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ एक तरफ 'शांतिपूर्ण पुनरेकी-करण' का साइनबोर्ड लगा रहे हैं और दूसरी तरह खुले आम 'संवाद के साथ मुका-बला', 'संवाद के साथ प्रतियोगिता' और 'संवाद के साथ सह-अस्तित्व' का शोर मचा रहे हैं।

इसी कारण उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच संवाद की जो प्रगति होनी चाहिए थी वह नहीं हो पा रही है और हमारी पार्टी और हमारे गणतंत्र की सरकार की देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की तमाम सुसंगत और निष्कपट कोशिशों के बावजूद पुनरेकीकरण के रास्ते में बड़ी भागी रुकावट पड़ी है। परिणाम यह है कि एक वर्ष पहले उत्तर-दक्षिण के ऐतिहासिक संयुक्त वक्तव्य से राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की जो उज्ज्वल आशाएं जगी थीं, उन्हें घुन लग गया है।

इस कठिन स्थिति से पार पाने की और शीघ्रातिशीघ्र जनता की शांतिपूर्ण राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की दीर्घकालीन आकांक्षाओं को पूरा करने की अपनी गंभीर इच्छा से हम संसार के सामने अपनी पार्टी और अपने गणतंत्र की शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की नीति में विश्वास की पुनः घोषणा करते हैं :

१. उत्तर और दक्षिण कोरिया के वर्त्तमान संबंधों को सुधारने के लिए और देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की गति तीव्र करने के लिए सर्व प्रथम आवश्यकता है सैनिक मुकाबले को खत्म करने की और उत्तर और दक्षिण के तनाव को कम करने की।

उत्तर और दक्षिण में गलतफहमी और अविश्वास दूर करने के लिए और आपसी समझ और विश्वास को गहरा करने के लिए, महान राष्ट्रीय एकता के लिए वातावरण बनाने के लिए, उत्तर और दक्षिण के संबंधों को उन्नत करने के लिए और देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने के लिए उत्तर और दक्षिण के बीच सैनिक मुठभेड़ को हटाने का और तनाव कम करने का आज तात्कालिक और भारी महत्त्व है।

उत्तर और दक्षिण कोरिया की विशाल सशस्त्र सेनाओं का आमने-सामने डटा

रहना न केवल हमारे देश की शांति के लिए खतरे का प्रमुख तत्व है बल्कि गलत-फहमी और अविश्वास का स्रोत भी है।

इस आधारभूत प्रश्न का निपटारा करके ही उत्तर और दक्षिण के बीच के तनाव और अविश्वास को हटाया जा सकता है, विश्वास का वातावरण तैयार किया जा सकता है और सभी समस्याओं को आपसी विश्वास के आधार पर सफलतापूर्वक तय किया जा सकता है। दूसरे की छाती पर कटार रख कर शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की और आपसी संवाद की पैरवी करना अप्राकृतिक है। जब तक कटार हटाकर रख नहीं दी जाती, आपसी विश्वास का वातावरण तैयार करना या देश के पुनरेकीकरण और उत्तर और दक्षिण के बीच सहयोग और पत्रव्यवहार की छोटी बड़ी समस्यों का संतोषजनक हल खोज पाना असंभव है।

इसीलिए देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के पहले कदम के तौर पर हमने एकाधिक बार दक्षिण कोरिया के अधिकारियों के सामने पांच-सूत्री प्रस्ताव रखा है सेनाओं का शक्ति विस्तार और शस्त्रों की होड़ बंद की जाए, सभी विदेशी फौजों को हटाया जाए, सेनाओं और शस्त्रों को कम किया जाए, विदेशों से शस्त्रों का आना बंद किया जाए और शांति समझौता किया जाए।

फिर भी दक्षिण कोरियाई अधिकारी इस तात्कालिक समस्या का सुलझाव टालना चाहते हैं और द्वितीय या गौण महत्त्व के मामलों को विभिन्न पड़ावों पर एक-एक करके निपटाना चाहते हैं। वास्तव में इसका तात्पर्य है कि आपसी विश्वास का विकास और महान राष्ट्रीय एकता का प्रवर्तन न हो, बल्कि क्षेत्रीय विभाजन बना रहे, राष्ट्रीय विभाजन का दुखदायी नासूर रिसता रहे।

अगर वे सचमुच शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण चाहते हैं और पुनरेकीकरण के प्रश्न के व्यावहारिक निपटारे की तलाश में हैं तो दक्षिण कोरिया के अधिकारियों को अपनी यह स्थिति त्यागनी होगी और सैनिक मुठभेड़ को हटाने का रास्ता अपनाना होगा।

२. उत्तर-दक्षिण संबंधों को सुधारने के लिए और शीघ्र ही देश का पुनरेकीकरण करने के लिए कि राजनीतिक, सैनिक, राजनयिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच बहुमुखी सहयोग और पत्र व्यवहार का ठोस रूप दिया जाए।

राष्ट्र के टूटे हुए संबंधों को पुनः जोड़ने के लिए और पुनरेकीकरण की पूर्व-स्थितियां प्राप्त करने के लिए उत्तर और दक्षिण के बीच बहुमुखी सहयोग और पत्र-व्यवहार का महत्व बहुत ही अधिक है। जब इस प्रकार का सहयोग और संपर्क वास्त-विक हो जाए तभी उत्तर और दक्षिण के बीच होने वाले शांति समझौते को मजबूत करना संभव हो सकेगा।

शाब्दिक रूप से तो दक्षिण कोरियाई अधिकारी यह प्रस्ताव रखते हैं कि दोनों पक्ष अपने समाज एक दूसरे के लिए 'पूरी तरह खोल' दें लेकिन वास्तव में उत्तर और और दक्षिण कोरिया के बीच कोई व्यवधान हटाने से डरते हैं और देश के दोनों भागों के मध्य आदान-प्रदान और सहयोग के सख्त खिलाफ हैं।

दक्षिण कोरियाई अधिकारी अब भी अपने देशवासियों के साथ सहयोग नहीं कर रहे; वे तो स्वदेशी शक्तियों के साथ मिलकर विदेशी एकाधिकारवादी पूंजी का सीमाहीन आघात करके दक्षिण कोरिया की अर्थ व्यवस्था को पूरी तरह पराधीन अर्थ व्यवस्था बनाए दे रहे हैं। वे तो हमारी सुन्दर भूमि को विदेशों में 'कचरापट्टी' की तरह तिरस्कृत 'प्रदूषण' उद्योग लगा कर कलुषित कर रहे हैं।

हम एक बार फिर जोर दे कर कहते हैं कि अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारियों में राष्ट्रीय अंतःकरण की एक चिंगारी भी शेष है तो उन्हें अर्थ व्यवस्था का विकास हमारे राष्ट्र के हित में देश के प्राकृतिक साधनों के संयुक्त उपयोग के द्वारा करने का प्रयास करना चाहिए और हर क्षेत्र में राष्ट्रीय सहयोग की स्थापना करनी चाहिए।

३. देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न को जनता की आकांक्षाओं और मांग के अनुरूप सुलझाने के लिए आवश्यक है कि उत्तर और दक्षिण के हर स्तर के जनसमूह पुनरेकीकरण के राष्ट्रव्यापी देशभक्तिपूर्ण कार्य में भाग ले सकें।

हम समझते हैं कि राष्ट्रीय पुनरेकीकरण पर उत्तर और दक्षिण के बीच संवाद उत्तर और दक्षिण के अधिकारियों तक ही सीमित न रहे बल्कि देशव्यापी स्तर पर किया जाए।

इस उद्देश्य से भी प्रस्ताव करते हैं कि जीवन यापन के हर क्षेत्र के लोगों—उत्तर से श्रमिक, श्रमरत किसान, श्रमरत बुद्धिजीवी, छात्र युवक और सैनिक, दक्षिण कोरिया से श्रमिक, किसान, छात्र युवा, बुद्धिजीवी, सेना कर्मचारी, राष्ट्रीय पूंजीपति और पैटी बूर्जुआ—और उत्तर और दक्षिण की राजनीतिक पार्टियों तथा सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बृहत् राष्ट्रीय कांग्रेस बुलाई जाए और इस कांग्रेस में देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न के हर मुद्दे पर बहस की जाए और इस प्रश्न को सुलझाया जाए।

४. देश के पुनरेकीकरण को शीघ्र लाने के लिए आज जिस की महत् सार्थकता है वह एक देश के नाम से उत्तर-दक्षिण के परि संघ की स्थापना।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि देश के पूर्ण पुनरेकीकरण को साकार करने के कई रास्ते हो सकते हैं।

वर्त्तमान में जो स्थिति है उसमें हम समझते हैं कि पुनरेकीकरण का सर्वाधिक

युक्तियुक्त रास्ता है बृहत् राष्ट्रीय कांग्रेस बुलाना और राष्ट्रीय एकता स्थापित करना, और इस आधार पर उत्तर-दक्षिण के परि संघ की स्थापना करना और उत्तर दक्षिण में जो समाज व्यवस्थाएं हैं उन्हें फिलहाल अपनी वर्त्तमान स्थिति में रहने देना ।

अगर उत्तर-दक्षिण संघ की स्थापना हो तो हमारी धरती पर कभी जो कोर्यो नाम का एक राज्य होता था और जिसे सारी दुनिया अच्छी तरह जानती थी उसके नाम पर उस परिसंघ का नाम कोर्यो का संघीय गणतंत्र रखना अच्छा रहेगा । यह एक अच्छा नाम होगा जो उत्तर और दक्षिण दोनों को स्वीकार्य होगा ।

संघीय कोर्यो गणतंत्र की स्थापना राष्ट्रीय विभाजन को रोकने में और उत्तर और दक्षिण के बीच बहुमुखी संपर्क और सहयोग स्थापित करने में और पूर्ण पुनरेकीकरण को शीघ्र लाने के रास्ते में निर्णायक स्थिति होगी ।

५. हम समझते हैं कि राष्ट्रीय विभाजन के स्थिरीकरण के परिणामस्वरूप हमारे देश का दो कोरिया में स्थायी विभाजन रोका जाना चाहिए और उत्तर और दक्षिण को बाह्य गतिविधि में भी साथ-साथ काम करना चाहिए ।

यह सही है कि बराबरी और परस्पर लाभ के सिद्धांत के आधार पर हम अपने गणतंत्र के मित्र देशों के साथ राजनयिक संबंध विकसित कर रहे हैं, पर इसका लाभ उठाकर दो कोरिया के निर्माण की चालबाजियों का हम दृढ़तापूर्वक विरोध करते हैं ।

हमारी धारणा है कि उत्तर और दक्षिण को संयुक्त राष्ट्रसंघ में अलग-अलग दाखिल नहीं होना चाहिए । हम सोचते हैं कि यदि पुनरेकीकरण के पहले वे संयुक्त राष्ट्र संघ में दाखिल होना चाहें तो उन्हें संघीय कोर्यो गणतंत्र के नाम से एक ही राज्य के नाम से दाखिल होना चाहिए—कम से कम परिसंघ की स्थापना के बाद ।

संयुक्त राष्ट्र में दाखिले का प्रश्न अलग भी कर दें तो भी जब कभी इसके एजेंडा पर कोरिया का प्रश्न रखा जाए तो हमारे गणतंत्र के प्रतिनिधि को भी इसमें तत्संबंधी पक्ष के रूप में भाग लेने और बोलने का अधिकार होना चाहिए ।

हमारे लोग एक लोग हैं जो शताब्दियों से एक ही संस्कृति और एक ही भाषा से जुड़े रहे हैं और वे कभी दो भागों में विभक्त हो कर नहीं रह सकते ।

हमारा प्रस्ताव है कि उत्तर और दक्षिण के बीच सैनिक मुठभेड़ हटा दिया जाए, तनाव कम किया जाए, उत्तर और दक्षिण के हर स्तर के लोगों और राजनीतिक दलों और सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की बृहत् राष्ट्रीय कांग्रेस बुलाई जाए, संघीय कोर्यो गणतंत्र के एक ही नाम से उत्तर-दक्षिण के परि संघ की स्थापना

की जाए और संयुक्त राष्ट्र संघ में एक ही नाम संघीय कोर्यो गणतंत्र के नाम से दाखिल हुआ जाए। जब देश के पुनरेकीकरण के इस प्रस्ताव को अमल में ले आया जाएगा, तो हमारी जनता और संसार की जनता की इच्छाओं के अनुकूल, उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य के सिद्धांत के आधार पर शांतिपूर्ण राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के ऐतिहासिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह युग संधि का क्षण होगा।

हमें दक्षिण कोरियाई अधिकारी से अपेक्षा है कि पुनरेकीकरण के हमारे इस नए और उचित प्रस्ताव को वे ईमानदारी से लेंगे।

साथ साथ हम मांग करते हैं कि संयुक्त राज्य अमरीका आज की तेजी से बदलती हुई स्थिति को ठीक से समझे, यथा संभव शीघ्रता से दक्षिण कोरिया से अपनी फौजें हटा ले, और हमारे देश के विरुद्ध आक्रमण और हस्तक्षेप करना बंद कर दे।

अगर अमरीका समझता है कि बड़े देशों के साथ अपने संबंध सुधारकर वह छोटे देशों को निगल सकता है या 'साम्यवाद विरोध' के साइन बोर्ड के तले जनता द्वारा परित्यक्त टट्टुओं को सहारा देकर वह अपना औपनिवेशिक आधिपत्य बनाये रख सकता है, तो वह भारी भूल कर रहा है। संयुक्त राज्य की इस नीति से संसार के राष्ट्रों के बहुमत से उसे विरोध और घृणा ही मिलेंगी और उसका विनाश शीघ्र ही होगा।

हमारे विचार में संयुक्त राष्ट्र को चाहिए कि अब वह संयुक्त राष्ट्र 'प्रस्ताव' के बहाने दक्षिण कोरिया पर अपनी सेना द्वारा कब्जे को न्यायोचित ठहराने की अमरीकी चालबाजियों पर चोट करे।

संयुक्त राष्ट्र को चाहिए कि वह दक्षिण कोरिया में अमरीकी सैनिकों के सिरे पर से 'संयुक्त राष्ट्र सेना' वाले कनटोप हटा दे, उन्हें वहां से हट जाने को कहे, और 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास संबंधी संयुक्त राष्ट्र आयोग' को विघटित कर दे और इस प्रकार आधुनिक युग की स्वतंत्रता और शांति की धारा के अनुकूल कोरिया के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के मार्ग की उन बाधाओं को हटा दे जो स्वयं उसने वहां रखी हैं। पूरे विश्व की परिस्थितियाँ यही मांग करती हैं।

अंतर्राष्ट्रीय अखाड़े में अमरीकी साम्राज्यवादियों की हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की दीवालिया नीति के सर्वाधिक सक्रिय समर्थक के रूप में निराशोन्मत्त काम करने वाले अब सिर्फ जापानी सैन्यवादी ही हैं और कोई नहीं। हम एक बार फिर जापानी सैन्यवादियों को चेतावनी देते हैं कि वे यथार्थ को सही तरह समझें, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण नीति को त्याग दें, और दक्षिण कोरिया पर कब्जा करने के अपने मूर्खतापूर्ण सपने पूरा करने हेतु अवसर का लाभ उठाने की कुटिल साजिशों से बाज आएं।

साथियो और मित्रो,

कोरिया की जनता की विदेशी हस्तक्षेप को स्वीकार करने की और देश का स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण प्राप्त करने की न्यायसंगत लड़ाई को समाजवादी देशों की जनता, एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका की जनता और विश्व की समस्त शांति प्रेमी जनता का समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त है।

हमारी क्रांति की विजय को अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों के साथ जोड़ने में और साथ साथ अपनी आंतरिक क्रांतिकारी शक्तियों के दृढ़ निर्माण में हमारी पार्टी और हमारी जनता इसे एक आवश्यक तत्त्व मानती है।

भविष्य में भी हम समाजवादी देशों की जनता से एकता के साथ, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग से एकता के साथ, एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका की युद्ध रत जनता से एकता के साथ, और समस्त विश्व के शांति प्रेमी लोगों से एकता के साथ मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता का झंडा उठाए, साम्राजी-विरोधी संघर्ष का क्रांतिकारी झंडा उठाये—शांति और प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वाधीनता और समाजवाद की विजय के लिए पूरी वीरता से लड़ते रहेंगे।

वियतनाम पर पेरिस समझौते के सही अनुपालन, उत्तर में समाजवाद के निर्माण और दक्षिण में शांति, स्वाधीनता और प्रभुसत्ता की सुरक्षा और पूरे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के उनके संघर्ष में कोरिया की जनता वियतनाम की जनता का सुदृढ़ समर्थन करती है।

हम लाओस में शांति की सुरक्षा और राष्ट्रीय सामंजस्य के साथ-साथ उस देश के पुनरेकीकरण के संघर्ष में लाओस की जनता के साथ अपनी दृढ़ एकता का ज्ञापन करते हैं।

आज अमरीका कंबोडिया में अपने आक्रामक युद्ध का विस्तार कर रहा है, हर दिन, हर घंटे विशाल मात्रा में बम बरसा रहा है—वास्तव में वह इन बमों से अपनी प्रतिष्ठा और गरिमा को ही ध्वस्त कर रहा है और अपनी नृशंसता को उजागर कर रहा है। हम कंबोडिया के विरुद्ध संयुक्त राज्य के आक्रामक युद्ध की घोर निंदा करते हैं और देश के पूर्ण स्वराज्य के संघर्ष में कंबोडिया की देशभक्त जनता का पूर्ण समर्थन करते हैं।

कोरिया की जनता अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण और जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान के विरुद्ध एशियावासियों के संघर्ष का सक्रिय समर्थन करती है और अमरीकी समर्थन वाले इस्रायली आक्रांताओं के विरुद्ध फिलिस्तीन तथा अन्य अरब देशों की जनता के संघर्ष का दृढ़ संकलिपत समर्थन करती है।

हमारे लोग साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और जातिवाद के विरुद्ध स्वतंत्रता, स्वाधीनता और राष्ट्रीय मुक्ति के शक्तिसंचय के अफ्रीकी जनता के संघर्ष का सक्रिय

समर्थन करते हैं और अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण और हस्तक्षेप के विरुद्ध अपने देशों की प्रभुसत्ता, क्षेत्रीय समुद्र और प्राकृतिक साधनों की रक्षा हेतु लातीन अमरीकी राष्ट्रों के संवर्ष के प्रति दृढ़संकल्पित समर्थन का ज्ञापन करते हैं।

पूंजी द्वारा शोषण और दमन के विरुद्ध और प्रजातांत्रिक अधिकारों तथा समाजवाद की लड़ाई में पूंजीवादी देशों के श्रमिक वर्ग और श्रमिक लोगों के संघर्ष के साथ कोरिया की जनता अपनी दृढ़ एकता का ज्ञापन करती है।

यूरोप के लोगों ने अपने उस महाद्वीप में से जो दो विश्व युद्धों का जन्म स्थल था, युद्ध की जड़ें उखाड़ फेंकने के लिए और स्थायी शांति और सुरक्षा निश्चित करने के लिए दीर्घ कालीन संघर्ष किया है।

विश्व के इस क्षेत्र में शांति और सुरक्षा के लिए हम यूरोप के समाजवादी देशों तथा यूरोप के अन्य देशों की जनता के प्रयासों का पूर्ण समर्थन करते हैं।

अपने समान उद्देश्यों और आदर्शों की प्राप्ति के संघर्ष में कोरिया और चेकोस्लोवाक जनता की बिरादराना मैत्री और एकता के विकास के लिए हम भविष्य में भी भरसक प्रयत्न करते रहेंगे।

कोरियाई जनता और चेकोस्लोवाक जनता की अमिट बन्धुत्वपूर्ण मैत्री और एकता जिंदाबाद !

चेकोस्लोवाक कम्युनिस्ट पार्टी और चेकोस्लोवाक समाजवादी गणतंत्र जिंदाबाद !

मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सदा—विजयी झंडा जिंदाबाद !

लाह्यूमैनिते के संवाददाता श्री मनियन द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

२७ जुलाई १९५०

प्रश्न : युद्ध आरम्भ होने के एक मास बाद आज सैनिक स्थिति का महामहिम का मूल्यांकन क्या है ?

उत्तर : कोरिया के लोग युद्ध नहीं चाहते थे। वे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए लड़े थे।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं—दक्षिण कोरिया के कठपुतली गिरोह—ने हमारे देश में भ्रातृहत्या का गृह युद्ध छेड़ दिया। सियोल में हमारी जन सेवा को जो दस्तावेज मिले हैं उनसे इसकी पुष्टि होती है कि सिगमन री के कठपुतली गिरोह द्वारा छेड़े गए इस युद्ध की तैयारी अमरीकी सैनिक मिशन के निर्देशन में बड़ी देर से हो रही थी।

जैसा कि अब स्पष्ट हो चुका है कोरिया में भ्रातृहत्या पूर्ण गृह युद्ध का छिड़ना अमरीकी साम्राजियों के लिए कोरिया पर सशस्त्र आक्रमण का बहाना गढ़ने के लिए ही नहीं, बल्कि एशिया के अन्य भागों में भी अपनी आक्रामक नीति की तामील करने के लिए आवश्यक था।

कोरिया में युद्ध अमरीकी साम्राज्यवादी युद्ध पिपासुओं की कुटिल योजनाओं को पूरा करने के लिए आवश्यक था, स्वयं संयुक्त राज्य अमरीका के भावी सैन्यीकरण और फासस्टीकरण के इरादों को ठोस रूप देने के लिए यह युद्ध आवश्यक था और उन राष्ट्रों को जो संयुक्त राज्य अमरीका पर निर्भर हैं अमरीकी साम्राजियों से और अधिक शृंखलाबद्ध करने के लिए भी यह आवश्यक था।

यह युद्ध छेड़ कर जन-विरोधी सिगमन री गद्दारों का इरादा अपने अमरीकी मान्तिकों की आज्ञाओं का पालन करना और अपनी पतनशील स्थिति को महत्व देना है।

हमारे कोरिया में युद्ध भड़काते समय अमरीका साम्राजियों ने अंदाजा लगाया था कि कोरिया की जनता की शक्ति प्रायः नगण्य है। लेकिन एक महीने तक जनता और गुरिल्लों के सक्रिय समर्थन और सहायता से लड़ी गई लड़ाइयों में

हमारी जन सेना ने दक्षिण कोरिया के समस्त क्षेत्र का तीन चौथाई भाग मुक्त कर लिया है, सिंगमन री की कठपुतली सेना और कोरिया की धरती पर उतरने वाली अमरीका की साम्राज्यवादी आक्रमणकारी सशस्त्र सेना का अधिकांश भाग ध्वस्त कर दिया है और अब अमरीकी २४ वीं डिवीजन के पैर उखाड़ती हमारी जन सेना वीरतापूर्वक आगे बढ़ रही है।

युद्ध क्षेत्र में मंझती हुई, युद्धानुभव प्राप्त करती हुई हमारी जन सेना पहले से अधिक शक्तिशाली हो गयी है।

प्रश्न : महामहिम के विचार से कोरिया में युद्ध लम्बा चलेगा या समाप्त हो जाएगा ?

उत्तर : हम यह नहीं सोचते कि हम इतनी आसानी से विजय प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन कोरिया की जनता का यह दृढ़ निश्चय है कि अमरीकी साम्राजी सशस्त्र आक्रांताओं को अपने कोरिया से खदेड़ने तक और पूर्ण विजय प्राप्त करने तक यह युद्ध जारी रहेगा।

प्रश्न : वे क्या तत्त्व हैं जिनके कारण कोरिया की जन सेना अमरीकी साम्राज्यवादी सशस्त्र आक्रांताओं को पराजित करने में सफल होगी ?

उत्तर : हमारी जन सेना की विजय में योगदान करने वाला प्रमुख तत्त्व है कि वह अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के और उनके गुर्गों के विरुद्ध एक न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए, देश की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के लिए लड़ रही है। कोरियाई जन सेना के अधिकारियों और सैनिकों को इसका पूरा ज्ञान है। कोरिया की जनता ने लम्बे अरसे तक औपनिवेशिक दमन भोगा है। अब वह अमरीकी साम्राज्यवादियों का दास बनना नहीं चाहती।

वर्तमान युद्ध में समस्त कोरियाई जनता की अंतहीन सहायता और समर्थन के साथ-साथ समस्त विश्व के प्रगतिशील लोगों का समर्थन और प्रोत्साहन भी जन सेना को प्राप्त है। इस सबसे हमारी जन सेना को महान वीरतापूर्ण कृत्यों की प्रेरणा मिलती है।

इसके साथ में इस तथ्य की ओर भी संकेत करूंगा कि हमारी जन सेना शस्त्रों से सुसज्जित है। ये हमारी जन सेना की विजय की बुनियादी गारंटी हैं।

इसके विपरीत संयुक्त राज्य अमरीका की साम्राज्यवादी आक्रामक सेना कोरियाई जनता को गुलाम बनाने के लिए और उसे अमरीकी इजारेदार पूंजीपतियों की दास बनाने के लिए अन्यायपूर्ण, आक्रमक युद्ध कर रही है। स्पष्टतः इस तरह का युद्ध अमरीकी जनता और सैनिकों के लिए अनावश्यक है। इसलिए यह आकस्मिक नहीं

है कि कोरिया में अमरीकी सैनिक लड़ने में अच्छे सिद्ध नहीं हो रहे और जन सेना के सामने सामूहिक रूप से शस्त्र डाल देते हैं ताकि उन्हें बंदी बना लिया जाए।

प्रश्न : क्या अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण सेना के वायुयानों द्वारा बरसाये गये बमों से जो क्षति हुई है उनमें युद्ध के अन्त पर प्रभाव पड़ेगा ? अमरीका साम्राजी आक्रांताओं द्वारा कोरिया पर की गई बर्बरतापूर्ण कार्रवाइयों के विषय में कोरियाई जनता के विचार क्या हैं ?

उत्तर : अमरीकी साम्राज्यवादियों आक्रांता कोरिया के नगरों और गांवों पर अंधाधुंध बम वर्षा कर रहे हैं। और शान्तिपूर्ण निवासियों की क्रूर हत्या कर रहे हैं अमरीकी साम्राज्यवादी औपनिवेशिक लुटेरे युद्ध के सर्वमान्य अन्तरराष्ट्रीय नियमों का जधन्य हनन कर रहे हैं। वे लगातार उन शांतिपूर्ण नगरों पर भी बम बरसाये जा रहे हैं जहां कभी कोई सैनिक प्रतिष्ठित नहीं रहा। वे निर्दयतापूर्वक निवास स्थलों पर आक्रमण कर रहे हैं, घरों को नष्ट कर रहे हैं, हमारे लोगों को गृहहीन बना रहे हैं और उन्हें मार रहे हैं।

अपने अत्याचारों को ढंकने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादी सहारा ले रहे हैं संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रभाव का जिसे उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र की अवहेलना करते हुए अपनी वोट-मशीन को कारगर करके गैर कानूनी ढंग से स्वीकृत कराया था।

वे संयुक्त राष्ट्र की ध्वजा को कोरियाई जनता के रक्त से रंजित कर रहे हैं। अमरीकी साम्राजियों द्वारा कोरिया पर सशस्त्र आक्रमण संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में एक शर्मनाक कुत्सित पृष्ठ जोड़ देगा।

अमरीकी साम्राजी अपने असली रंग में सामने आ गये हैं।

पहले हमारे देश में कुछ ऐसे सीधे-साधे लोग थे जो शहद में रचे 'मानवतावाद' जैसे अमरीकी शब्दों के बहकावे में आ गए थे। लेकिन अब अमरीकी 'मानवतावाद' के निजी कटु अनुभव के बाद इन लोगों ने भी अमरीकी साम्राज्यवाद के बारे में अपनी भ्रमित धारणाओं को बदल दिया है।

अमरीकी साम्राज्यवादी सशस्त्र आक्रांता अपने आक्रमण से कोरियाई जनता के शक्तिशाली मनोबल को नहीं तोड़ पाएंगे। अमरीकी साम्राजियों की पाशविकता अमरीकी साम्राज्यवादी सशस्त्र आक्रांताओं के प्रति कोरियाई जनता की घृणा की आग में तेल का काम कर रही है। इस तरह के अत्याचारों से स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के संघर्ष में कोरियाई जनता की शक्ति घटने के बजाए बढ़ ही रही है।

प्रश्न : अमरीकी साम्राज्यवाद के सशस्त्र आक्रमण के विरुद्ध कोरियाई

जनता के संघर्ष के समर्थन में हर देश में चल रहे विश्वव्यापी आंदोलन के विषय में महामहिम के विचार क्या हैं ?

उत्तर : अमरीकी साम्राजी आक्रांताओं द्वारा कोरिया में ढाए गए अत्याचार पर सभी प्रगतिशील लोग क्रुद्ध हैं। सब देशों में हजारों-लाखों लोगों के शक्तिशाली कंठों से आवाज आ रही है : "कोरिया से दूर रहो !" "कोरिया छोड़ दो !"

इस अन्तर्राष्ट्रीय एकता से कोरिया की जनता को प्रेरणा मिलती है और मिलती है एक नई शक्ति अपने देश की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता के युद्ध में।

प्रश्न : महामहिम फ्रांस की जनता से कुछ कहना चाहेंगे, ?

उत्तर : इस अवसर का लाभ उठा कर हर्षित मन से तमाम कोरियाई जनता की ओर से फ्रांस की स्वतन्त्रता-प्रेमी जनता को मित्रतापूर्ण अभिनन्दन भेजता हूं और अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के विरुद्ध संघर्ष में कोरियाई जनता के प्रोत्साहन के लिए फ्रांसीसी जनता का धन्यवाद करता हूं ।

भारत में नाफेन के संवाददाता द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

९ जून १९५६

प्रश्न : कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रवर्त्तन में जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार क्या करने वाली है ?

उत्तर : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार प्रजातांत्रिक आधार पर स्वयं कोरियावासियों द्वारा शांतिपूर्ण रीति से कोरिया का पुनरेकीकरण प्राप्त करने का प्रयास करती रही है और करती रहेगी।

एकाधिक बार हमने दक्षिण कोरिया के अधिकारियों के सामने उत्तर और दक्षिण के बीच मेलजोल और बातचीत का प्रस्ताव रखा है। हम अब भी यही पैरवी कर रहे हैं। अब भी हमारी धारणा है कि उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और कोरिया के पुनरेकीकरण की समस्याओं पर विचारविमर्श करने के लिए उत्तर और दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधियों के एक स्थायी आयोग की स्थापना होनी चाहिए।

कोरियाई युद्धविराम को स्थायी शांति में परिवर्तित करने के लिए कठिन मेहनत करते हुए हमने हाल ही में एक व्यावहारिक कदम के रूप में अपने गणतंत्र की सेनाएं ८०,००० कम करने और इस प्रकार बची हुई सैनिक व्ययराशि को शांतिपूर्ण निर्माण में लगाने का निर्णय किया है।

तनाव कम करने और परस्पर विश्वास का वातावरण बनाने के लिए हम प्रभावशाली कदम उठाते रहने के लिए तैयार हैं।

हमारी अब भी धारणा है कि कोरिया से तमाम विदेशी सेनाएं हटा ली जानी चाहिए, कि कोरियाई प्रश्न के शांतिपूर्ण निपटारे के लिए संबंधित राष्ट्रों की एक अंतर्राष्ट्रीय कानफ्रेंस बुलाई जानी चाहिए जिसमें उत्तर और दक्षिण कोरिया की सरकारों के प्रतिनिधि भी भाग लें।

प्रश्न : संयुक्तराज्य द्वारा तटस्थ राष्ट्रों के पर्यवेक्षण आयोग के निष्कासन के संबंध में जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की क्या राय है ?

उत्तर : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया का मत है कि दक्षिण कोरिया से

तटस्थ राष्ट्रों के पर्यवेक्षण आयोग के निष्कासन पर 'संयुक्त राष्ट्र कमान' का वक्तव्य कोरियाई युद्धविराम समझौते की धाराओं का जघन्य उल्लंघन है और दक्षिण कोरिया में शस्त्र बढ़ाने और कोरिया में तनाव बढ़ाने के लिए किया गया कृत्य है।

प्रश्न : अन्य एशियाई और अरब देशों से निकट संबँध बनाए रखने के लिए जनवादी जन गणतंत्र कोरिया क्या कदम उठायेगा ?

उत्तर : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांतों का समर्थन करता है और इन सिद्धांतों के अनुकूल सब राष्ट्रों से सहकारिता पुर्ण संबंध स्थापित और विकसित करने के लिए प्रयत्नशील है।

हम उन एशियाई और अरब देशों से सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध बढ़ाने के लिए विशेष प्रयत्न कर रहे हैं जो उपनिवेशवाद के विरुद्ध और अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

इन देशों से बहुमुखी संबंधों का और संसदीय, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रतिनिधि मंडलों के साथ-साथ व्यक्तिगत वैज्ञानिकों तथा जन एवं राजनीतिक हस्तियों के आदान-प्रदान का हम समर्थन करते हैं।

फिनलैंड के एक समाचार पत्र के संवाददाता द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

२८ नवम्बर १९५८

प्रश्न : कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की समस्या अभी तक नहीं सुलझी है। अंतर्राष्ट्रीय तनाव कम करने में महत्त्व की इस समस्या के सुलझाव के लिए पहले क्या कदम उठाये जाने चाहिए ?

उत्तर : कोरिया का पुनरेकीकरण अभी तक संभव नहीं हो सका है और कोरिया में अभी तक तनाव की स्थिति है। इसका मूल कारण है अभी तक अमरीकी सेनाओं द्वारा दक्षिण कोरिया पर कब्जा।

अमरीकी सेनाएं कोरिया के पुनरेकीकरण को रोक रही हैं। वे युद्धविराम समझौते का उल्लंघन करके दक्षिण कोरिया में आणविक हथियार, नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र तथा अन्य विभिन्न प्रकार के नए अस्त्र लाकर अपनी शस्त्र शक्ति बढ़ा रहे हैं। और सिंगमन री गिरोह को 'उत्तर चलो' का शोर मचाने के लिए उकसा कर वे तनाव पैदा किए रहते हैं। इस तथ्य से ही स्पष्ट हो जाता है कि जब तक दक्षिण कोरिया में अमरीकी सेना रहेगी शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण नहीं किया जा सकता, न ही कोरिया में स्थायी शांति रह सकती है।

कोरिया का पुनरेकीकरण कोरिया की जनता का अपना मामला है और बिना किसी विदेशी प्रभाव के यह उनके द्वारा अपने आप ही निपटाया जाना चाहिए। अब जबकि कोरिया से चीनी जनता के स्वयंसेवक चले गये हैं, अमरीकी सेना के पास दक्षिण कोरिया में टिके रहने का किंचित्मात्र बहाना भी नहीं है। सबसे पहले उन्हें दक्षिण कोरिया से चले जाना चाहिए। कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की और तनाव में कमी की यह पूर्व आवश्यकता है।

प्रश्न : कुछ लोग कोरियाई सैनिक युद्धविराम आयोग को भंग करने का सुझाव दे रहे हैं। इस आयोग की अहमियत और कार्य के विषय में आपका क्या मत है ?

उत्तर : कोरियाई युद्धविराम समझौते की यह शर्त थी कि कोरिया से सभी विदेशी सेनाएं हटा दी जाएं और यह कि युद्धविराम को स्थायी शांति में परिवर्तित कर दिया जाएगा।

चीनी जनता के स्वयंसेवक कोरिया से जा चुके हैं।

दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाओं को भी हटाना होगा ताकि कोरियाई युद्धविराम को स्थायी शांति में परिवर्तित किया जा सके और कोरियाई प्रश्न का निपटारा स्वयं कोरिया की जनता पर छोड़ा जा सके। लेकिन युद्धविराम समझौते का जघन्य उल्लंघन करते हुए वे दक्षिण कोरिया से निकलने से इनकार करते हैं!

जब तक दक्षिण कोरिया से तमाम अमरीकी सेना हट न जाए, सैनिक युद्धविराम आयोग का अस्तित्व बने रहना चाहिए।

इसके साथ-साथ तटस्थ राष्ट्रों के पर्यवेक्षण आयोग की कार्रवाईयां भी आवश्यक हैं क्योंकि इस आयोग का काम है युद्धविराम समझौते के सही पालन का पर्यवेक्षण करना।

तटस्थ राष्ट्रों का पर्यवेक्षण आयोग युद्धविराम की रक्षा में सुनिश्चित भूमिका अदा कर रहा है और अमरीकी पक्ष इसकी गतिनिधि में रुकावटें डाल रहा है। अमरीकी पक्ष को इससे बाज आना चाहिए। इसका कर्तव्य है कि तटस्थ राष्ट्रों के पर्यवेक्षण आयोग को समुचित सहायता दे।

प्रश्न : कितने देशों के साथ जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के राजनयिक संबंध हैं? यदि फिनलेंड का गणतंत्र आपके देश से राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहे तो इस मामले में आपका क्या रुख होगा?

उत्तर : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया ने सोवियत यूनियन और चीनी लोक गणतंत्र सहित ग्यारह समाजवादी देशों से राजनयिक संबंध स्थापित कर लिए हैं और उसके साथ मित्रतापूर्ण सहकारिता के संबंधों का विकास कर रहा है। इसके अलावा कई एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रों से जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध हैं। अपने जन्म से ही जनवादी जन गणतंत्र कोरिया ने शांतिप्रिय विदेश नीति का निष्ठापूर्वक पालन किया है और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धांतों के अनुकूल सब देशों से, उनकी समाज व्यवस्था जैसी भी हो, मित्रतापूर्ण संबंधों के विकास के लिए प्रयत्नशील है। जो भी देश हमारे देश के साथ मैत्री संबंध बनाना चाहते हैं हम उन सबके साथ अच्छे पड़ोसी वाले संबंध स्थापित करने को तैयार हैं।

जापान के क्योदो प्रेस के मैनेजिंग डायरेक्टर इवामोतो कियोशी द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

१९ अप्रैल १९६५

प्रश्न : वियतनाम का युद्ध दूसरे कोरिया युद्ध में और बढ़ते बढ़ते तृतीय विश्वयुद्ध में बदल जाने के खतरों से भरा नजर आता है। आप की राय में इस क्षण वियतनाम युद्ध के निपटारे के लिए परमावश्यक तत्त्व क्या है ! यह निपटारा कैसे हो सकता है ?

उत्तर : वियतनामी स्थिति पर आपकी चिन्ता में मैं भी भागीदार हूं।

वियतनाम में वर्तमान गंभीर स्थिति का जन्म एकमेव अमरीकी साम्राज्यवादियों के आक्रमण और युद्ध के कृत्यों के कारण हुआ है।

कई वर्षों से अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण वियतनाम में अपराधपूर्ण आक्रामक युद्ध कर रहे हैं।

दक्षिण वियतनाम की जनता के वीरतापूर्ण विरोध ने अमरीकी साम्राज्यवादियों को लगातार क्षति पहुंचाई और संकट में डाल दिया। अपने बचाव का मार्ग ढूंढ़ने की कोशिश में अमरीकी साम्राजी जनवादी गणतंत्र वियतनाम पर आक्रमण करके युद्ध में वृद्धि कर रहे हैं और दक्षिण वियतनाम पर अपने आक्रमण में तीव्रता ला रहे हैं। अतः मेरे मन में वियतनाम युद्ध का समाधान प्रमुखतः अमरीकी साम्राज्यियों के आक्रामक बटमार कृत्यों को रोकना और कुंठित करना है।

दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय मुक्ति-मोर्चे की केन्द्रीय समिति ने और जनवादी गणतंत्र वियतनाम की सरकार ने बार बार वियतनाम प्रश्न के समाधान के लिए न्यायोचित और तर्कसंगत उपाय सुझाए हैं।

हम उनका पूरी तरह समर्थन करते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों को चाहिए कि दक्षिण वियतनाम में वे अपना आक्रामक युद्ध तुरन्त बंद कर दें और जनवादी गणतंत्र वियतनाम पर बर्बर बमबारी बंद कर दें, बिना देर लगाए दक्षिण वियतनाम से हट जाएं, अपनी सेना और शस्त्रास्त्र वहां से ले जाएं और १९५४ के जेनेवा समझौते का पूर्णतः पालन करें।

दक्षिण वियतनाम के प्रश्न का समाधान दक्षिण वियनताम की जनता द्वारा ही होना चाहिए और इसी प्रकार बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के वियतनाम के पुनरेकीकरण के प्रश्न का निपटारा उत्तर और दक्षिण वियतनाम की जनता को ही करना चाहिए।

संसार के सभी शांतिप्रिय देशों और जनता को अपनी एकता और घनिष्ट करनी चाहिए, अमरीकी साम्राजियों की आक्रमण और युद्ध की और जोर से निंदा करनी चाहिए, उनका ध्वंस करने के लिए शक्तिशाली जन आन्दोलन का प्रवर्त्तन करना चाहिए और हर प्रकार से युद्धरत वियतनामी जनता को समर्थन और प्रोत्साहन देना चाहिए।

अपने न्यायपूर्ण वीरोचित युद्ध में विश्व जनता से समर्थित वियतनामी जनता निश्चय ही विजयी होगी जब कि अमरीकी साम्राज्यवादी, जो अपने अपराधपूर्ण आक्रमणों के लिए सारे संसार से निंदित और घृणित हैं, अन्ततोगत्वा हारेंगे।

प्रश्न : आपके मत से वर्तमान में समाजवादी देशों की एकता के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण और आवश्यक क्या है ?

उत्तर : मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा अंतरराष्ट्रीयता के सिद्धान्तों पर अपने समान शत्रु के विरुद्ध समान उद्देश्यों के लिए लड़ने वाली एक ही सेना-टुकड़ी में समाजवादी देश पंक्तिबद्ध हैं।

कुछ समाजवादी देशों में आज मतभेद हैं पर वे मतभेद ऐसे हैं जैसे किसी परिवार में अस्थायी क्लेश।

समाजवादी देशों की जनता साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध, शान्ति और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए और समाजवाद-साम्यवाद की विजय के लिए साथ-साथ लड़ेगी और इस संघर्ष के द्वारा उसकी एकता और दृढ़ होगी।

प्रश्न : दक्षिण कोरिया के अधिकारियों ने वियतनाम में सेना भेजी है इस तथ्य ने जापान में भी ध्यान गंभीरतापूर्वक किया है। इस सम्बन्ध में आपका मत क्या है ?

उत्तर : आम तौर पर सब जानते हैं कि दक्षिण वियतनाम में दक्षिण कोरिया की कठपुतली सेनाएं अमरीकी राष्ट्रपति जानसन के व्यक्तिगत आदेश पर युद्ध का विस्तार करने के विचार से भेजी गई थीं।

अमरीकी साम्राज्यवादी बड़ी देर से दक्षिण वियतनाम में अपने आक्रामक युद्ध के तथाकथित 'अंतर्राष्ट्रीयकरण' और 'एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाओ' के द्वारा अपने आक्रामक उद्देश्यों की प्राप्ति के कोशिश में थे।

इस तथ्य से कि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने सबसे पहले दक्षिण कोरिया की 'राष्ट्रीय रक्षा सेना' को दक्षिण वियतनाम में अपने आक्रामक युद्ध में घसीटा यह

और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है कि दक्षिण कोरिया की पाक जुंग 'सरकार' अमरीकी साम्राज्यवाद की सर्वोच्च कठपुतली है।

संसारव्यापी घोर-निंदा के बावजूद दक्षिण वियतनाम में दक्षिण कोरियाई 'राष्ट्रीय रक्षा सेना' का अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा प्रवेश यह भी स्पष्ट करता है कि वे ऐसी कठिन स्थिति में पहुंच गए हैं जहां के केवल दक्षिण वियतनामी कठपुतली सेना के सहारे अपना आक्रामक युद्ध जारी नहीं रख सकते। फिर भी किसी देश के स्वाधीनता और स्वतन्त्रता के न्यायोचित संग्राम को डालरों से खरीदे हुए भाड़े के सैनिकों द्वारा दबाया नहीं जा सकता।

दक्षिण कोरिया के युवा जन दक्षिण वियतनाम की जनता के विरुद्ध आक्रामक युद्ध में अमरीकी साम्राजियों द्वारा तोप-चारे के रूप में अपना इस्तेमाल कभी सहन नहीं करेंगे।

दक्षिण वियतनाम में दक्षिण कोरियाई 'राष्ट्रीय रक्षा सेना' के प्रवेश के जो कटु परिणाम होंगे वे अमरीकी साम्राजियों को चखने ही पड़ेंगे।

प्रश्न : 'जापान कोरियाई प्रजातंत्र वार्त्ता' में लंबित प्रश्नों पर सैद्धान्तिक रूप से समझौता हो गया है। अपने देश और जापान के भविष्य और उत्तरी व दक्षिणी कोरिया के पुनरेकीकरण के दृष्टिकोण से आपका क्या मत है?

उत्तर : 'जापान-कोरियाई प्रजातन्त्र वार्त्ता' के विषय में अनेक वक्तव्यों द्वारा हमारी सरकार की स्थिति स्पष्ट की जा चुकी है।

'उत्तर पूर्व एशिया सैनिक गठबंधन' खड़ा करते के और जापानी सैन्यवादी शक्तियों को एशिया पर आक्रमण में 'आक्रमण दस्ते' के रूप में इस्तेमाल करने के उद्देश्य से 'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्ता' अमरीका द्वारा प्रेरित की गई थी। जहां तक जापानी सरकार का प्रश्न है, वह दक्षिण कोरिया में घुस पैठ करने का षड्यन्त्र रच रही है और अभी तक अमरीका की आक्रमण योजना में सक्रिय योगदान की कीमत के तौर पर एशिया पर छा जाने के अपने पुराने सपनों को पूरा करने की मूर्खतापूर्ण अभिलाषा संजोए है।

दक्षिण कोरिया की 'सरकार' अपने कठपुतली शासन के गिरते आधार को सहारा देने के लिए और अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी सैन्यवाद के संयुक्त उपनिवेश के तौर पर दक्षिण कोरिया को बेच देने की सीमा तक जाकर हमारे देश के विभाजन को स्थायी करने के लिए 'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्त्ता' को सक्रियता से आगे बढ़ा रही है।

'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्ता' का उद्देश्य है कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में रुकावट डालना और जापान की सैन्यवादी शक्तियों का समुद्र पार

क ४

विस्तार करना । इस प्रकार यह 'वार्त्ता' कोरिया और-जापान दोनों देशों की जनता के आधारभूत हितों के विरुद्ध जाती हैं ।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और कोरिया की जनता अमरीकी साम्राजियों द्वारा उकसाये गये दक्षिण कोरिया के कठपुतली शासन और जापानी सरकार के इन षड्‌यंत्रों का दृढ़तापूर्वक विरोध करते हैं ।

जहां तक 'कोरियाई प्रजातंत्र जापान वार्त्ता' में शेष प्रश्नों पर विचार विमर्श का प्रश्न है दक्षिण कोरिया के कठपुतली अधिकारियों और जापानी सरकार के बीच जो भी समझौते होंगे वे पूर्णतः अकृत और शून्य हैं ।

दक्षिण कोरिया का कठपुतली शासन अमरीकी साम्राज्यवाद की संगीनों पर खड़ा किया गया था । वह कोरिया के जनगण का प्रतिनिधित्व कभी नहीं कर सकता ।

पिछले वर्षों में कोरिया और जापान के बीच जो समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं उनका उचित और युक्तिसंगत आधार पर समाधान कोरिया की जनता की सामान्य अभिलाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली एकीकृत सरकार की स्थापना के बाद ही हो सकता है ।

उत्तर और दक्षिण कोरिया की समस्त जनता अपना क्रोध प्रकट करने के लिए 'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्त्ता' के विरुद्ध अब शक्तिशाली संघर्ष कर रही है । विशेषतः दक्षिण कोरियाई छात्रों और युवकों ने जापान-विरोधी, सरकार-विरोधी शक्तिशाली आंदोलन छेड़ दिया है ।

जापानी जनता भी 'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्त्ता' के विरुद्ध व्यापक संघर्ष कर रही है ।

कोरिया की जनता इस न्यायोचित संघर्ष में जापानी जनता के प्रति पूर्ण समर्थन और एकता अभिव्यक्त करती है ।

अपराधपूर्ण 'कोरिया प्रजातन्त्र-कोरिया वार्त्ता' का ध्वंस होना ही चाहिए और कोरिया और जापान के बीच संबंध दोनों राष्ट्रों के हितों की रक्षा करते हुए और शांति और मित्रता के आधार पर सुस्थिर किए जाने चाहिए ।

प्रश्न : आपके देश में आर्थिक परिस्थिति कैसी है, और प्रसंगवश, कोरिया और जापान के बीच व्यापार का विकास करने के लिए आपकी सुनिश्चित योजनाएं क्या हैं ?

उत्तर : समाजवादी व्यवस्था की श्रेष्ठता और हमारी जनता के कठिन श्रम के परिणाम स्वरूप हमारे देश की अर्थव्यवस्था सुस्थिर रूप से बड़ी तेजी से विकसित हो रही है ।

औद्योगिक और कृषि उत्पादन तेजी से बढ़े हैं और अब राष्ट्रीय अर्थतंत्र के

हर क्षेत्र में व्यापक तकनीकी क्रांति और विस्तीर्ण कार्य चल रहा है।

हम अपने लिए एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की ठोस बुनियाद डालने में सफल हो चुके हैं और परिणामस्वरूप हम अन्य देशों के साथ विस्तृत पैमाने पर व्यापारिक संबंधों को विकसित कर सके हैं।

आज अनेक विदेशी देशों से हमारे व्यापारिक सम्बन्ध लगातार फैल रहे हैं और विकसित हो रहे हैं।

जहां तक जापान से हमारे व्यापारिक संबंधों का प्रश्न है, वे केवल जापानी सरकार के रुख पर आश्रित हैं अगर कोरिया और जापान के बीच व्यापारिक संबंधों के विकास में जापानी सरकार के अधिकारी नकली रुकावटें न डालें और अपना अमैत्री पूर्ण रवैया बदल दें तो दोनों देशों के बीच व्यापार प्रवर्त्तन हो सकता है।

प्रश्न : वर्त्तमान एशियाई स्थिति में जापान से आपकी अपेक्षाएं या आशाएं क्या हैं।

उत्तर : हमें आशा है कि जापान अपने आपको अमरीकी साम्राज्यवाद के बंधनो से मुक्त कर लेगा ओर सच्चे शान्ति-प्रेमी देश के रूप में अपने समीपस्थ एशियाई देशों से अच्छे पड़ौसी जैसे सम्बन्धों का प्रवर्त्तन करेगा।

प्रश्न : आपके देश और जापान के बीच राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्ध सुधारने की, आपकी राय में, आवश्यक शर्तें क्या हैं।

उत्तर : जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार हमेशा से ही अपने पड़ोसी देश जापान से अपने संबंध सुस्थिर करने और सुधारने का प्रयत्न करती रही है। फिर भी जापान सरकार जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति का पालन करती रही है।

हमारे दोनों देशों के बीच संबंध सुधारने के लिए सबसे पहले आवश्यक है कि जापानी सरकार अपनी यह नीति त्याग दे।

मौजूदा स्थिति में जापानी सरकार को तुरन्त ही 'कोरियाई प्रजातन्त्र-जापान वार्त्ता' बंद कर देनी चाहिए—यह वार्त्ता वह दक्षिण कोरियाई अधिकारियों के साथ गैर कानूनी तरीके से कर रही है—और अब तक जिन समझौते पर हस्ताक्षर हुए हैं उन्हें रद्द कर देना चाहिए।

'नि होन केइज़ाई शिमबुन' के संवाददाताओं साकाइ तत्सुओ और फूसे मिचिओ द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर (अंश)

२१ अप्रैल १९६५

प्रश्न : समाजवादी और साम्यवादी पार्टियों सहित जापान का प्रगतिशील पक्ष आजकल हो रही जापान-दक्षिण कोरिया वार्त्ता का विरोधी है। उनका कथन है कि इससे उत्तर और दक्षिण कोरिया के पुनरेकीकरण में बाधा पड़ेगी।

कोरिया के पुनरेकीकरण की संभावना के बारे में आपका मत क्या है ?

उत्तर : 'कोरियाई प्रजातंत्र-जापान वार्त्ता' का जापान की समाजवादी और साम्यवादी पार्टियों सहित प्रगतिशील पक्ष द्वारा विरोध पूरी तरह उचित है।

'कोरियाई प्रजातंत्र-जापान वार्त्ता' का उद्देश्य दक्षिण कोरिया को अमरीकी और जापानी साम्राज्यवादों का गुलाम बनाकर औपनिवेशिक राज्य को प्रबल करना है।

जैसा कि जापानी सरकार के अधिकृत प्रतिनिधियों ने स्वयं बार बार और खुले आम कहा है—वर्तमान 'कोरिया-प्रजातंत्र-जापान वार्त्ता के प्रति जनवादी जन गणतंत्र कोरिया का सीधा विरोध पहले से अनुमानित ही था। अतः 'कोरियाई प्रजातंत्र-जापान वार्त्ता' कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में गम्भीर बाधा है।

कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण को रोकने और दक्षिण कोरिया के लड़-खड़ाते कठपुतली शासन को बचाने के लिए जापानी सरकार दक्षिण कोरिया में जापानी सशस्त्र सेना भेजने का एक गुप्त समझौता तक अमरीका सरकार में कर चुकी है।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादी और जापानी सैन्यवादी शक्तियां एक दूसरे से कितनी अधिक मिली हों वे दक्षिण कोरिया में औपनिवेशिक शासनतंत्र को चरमरा कर टूटने से कभी नहीं बचा सकते और न ही कोरियाई राष्ट्र के पुनरेकीकरण को रोक सकते हैं।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार ने हमेशा यह कहा है कि दक्षिण कोरिया से अमरीका की साम्राज्यवादी आक्रामक सेना सहित सभी विदेशी सेनाओं को

हटाने के बाद बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के प्रजातांत्रिक आधार पर उत्तर-दक्षिण में स्वतंत्र आम चुनाव के द्वारा ही शांतिपूर्ण तरीकों से देश का पुनरेकीकरण होना चाहिए। हमारी सरकार ने उत्तर-दक्षिण के बीच किसी भी समय समझौते की बातचीत का भी प्रस्ताव रखा है।

अमरीकी साम्राज्यवाद और दक्षिण कोरियाई अधिकारियों के अड़ियल विरोध के बावजूद जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार की इस न्यायोचित स्थिति को स्वदेश और विदेश में प्रबल समर्थन मिला है।

देश के उत्तरी भाग में समाजवादी निर्माण की सफलताएं प्रति दिन बढ़ रही हैं, और ये सफलताएं ही देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की भौतिक गारंटी हैं।

पिछले बीस वर्षों के अपने कटु अनुभवों के द्वारा दक्षिण कोरिया की जनता को यह पता चल गया है कि वर्त्तमान दुर्दशा से निकलने का एकमात्र रास्ता देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण है और अब वह राष्ट्र की रक्षा में प्रचंड अमरीका-विरोधी संघर्ष के लिए उठ खड़ी हुई है।

जनता पर मुसीबतों का पहाड़ लादने वाले और देश के पुनरेकीकरण में रुकावटें डालने वाले अमरीकी साम्राज्यवाद और उनके पिट्ठुओं को दक्षिण कोरिया की जनता कभी नहीं बख्शेगी।

कोरिया की समस्या का निपटारा तभी होगा जब दक्षिण कोरिया की जनता के अमरीका-विरोधी स्वाधीनता संग्राम के द्वारा उत्तर और दक्षिण कोरिया के लोगों के मिले जुले प्रयास से हमारा देश शांतिपूर्ण तरीके से फिर एक हो जाएगा।

गैबरीयल मोलिना, निदेशक, प्रेस विभाग, 'होय', तथा क्यूबा के अन्य पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

६ जुलाई १९६५

प्रश्न : कामरेड प्रधानमंत्री, इस वर्ष जनवरी में आपने जो प्रस्ताव रखे थे, उनके आधार पर पत्राचार और आर्थिक आदान प्रदान के द्वारा आपके देश के पुनरेकीकरण की प्रक्रिया को तीव्र करने की संभावनाएं क्या हैं ?

उत्तर : जैसा कि आप अच्छी तरह जानते हैं, संपूर्ण कोरिया की सर्वसम्मत आकांक्षाओं और अभिलाषाओं के अनुरूप हमारे देश के पुनरेकीकरण के लिए हमारी सरकार बड़े धैर्यपूर्वक प्रयत्न करती रही है ।

फिर भी कोरिया का पुनरेकीकरण अभी तक नहीं हो पाया है, और हमारा क्षेत्र और हमारी जनता अभी तक विभाजित ही हैं ।

इस का एकमात्र कारण है अमरीकी साम्राज्यवाद जो संयुक्त राष्ट्र के साइन बोर्ड के नीचे अपने शस्त्रों की ताकत पर दक्षिण कोरिया पर कब्जा किए बैठा है और कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करता है और विभाजन नीति का पालन करता है।

कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर हमारी सरकार की नीति स्पष्ट है ।

हमने बार बार कहा है कि कोरिया का पुनरेकीकरण प्रजातांत्रिक सिद्धांतों पर, विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप के बिना, स्वतन्त्रता से और शांतिपूर्वक होना चाहिए ।

अपने इन सिद्धांतों को आधार बना कर हमने दक्षिण कोरियाई अधिकारियों से बारंबार कहा है कि अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक सेना को दक्षिण कोरिया से बाहर निकालने के बाद, पूरे उत्तर, और दक्षिण कोरिया में स्वतंत्र, प्रजातांत्रिक आम चुनावों के द्वारा हर स्तर के प्रतिनिधियों के साथ एक सर्व-कोरिया सरकार स्थापित की जानी चाहिए ।

कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न के निपटारे के लिए हमारी सरकार का यह

प्रस्ताव सर्वथा उचित और तर्क संगत है और सब को स्वीकार्य है—यह प्रस्ताव न सिर्फ कोरिया की संपूर्ण जनता के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल है बल्कि सुदूर पूर्व तथा शेष विश्व की शांति के हितों से भी मेल खाता है।

फिर भी अमरीकी साम्राज्यवादी और दक्षिण कोरिया का कठपुतली शासन हमारे इन न्यायोचित प्रस्तावों के विरुद्ध हैं।

क्योंकि अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरिया के शासकों ने स्वतंत्र, प्रजातांत्रिक चुनाओं के द्वारा संयुक्त कोरिया सरकार की स्थापना का विरोध किया इस लिए हमने अंतर्वर्ती कदम के तौर पर एक परिसंघ (कानफेडरेशन) की स्थापना का प्रस्ताव रखा—ताकि हमारे राष्ट्र की साझी और आत्यंतिक समस्याओं को सुलझाया जा सके, संपूर्ण पुनरेकीकरण की ओर कदम-ब-कदम बढ़ा जा सके और ताकि क्षेत्रीय विभाजन से हमारे राष्ट्र को दुर्दशा और कष्ट भोगने पड़ रहे हैं उनका चाहे थोड़ा ही सही कुछ निदान करने के लिए उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच कम से कम आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पत्र व्यवहार आरंभ किया जा सके।

लेकिन दक्षिण कोरियाई अधिकारियो ने इस प्रस्ताव का भी पूरा अनुरोध किया।

परिणाम यह है कि पुनरेकीकरण तो दूर हमारे देश में अभी तक यह असाधारण स्थिति है उत्तर और दक्षिण कोरिया में एक दूसरे से विभाजित मां बाप, बच्चे, पत्नियां, संबंधी और मित्र पत्र व्यवहार तक नहीं कर सकते।

इतना ही नहीं, पाक जुंग ही के कठपुतली शासन ने, अमरीकी साम्राज्यवाद से परिचालित होकर हाल ही में 'कोरियाई प्रजातंत्र—जापान वार्त्ता' पूरी करली और जापानी सैन्यवादियों के देशद्रोही 'संधि' और 'समझौतों' पर हस्ताक्षर कर डाले और इस प्रकार के पुनरेकीकरण के रास्ते में एक और बड़ी बाधा खड़ी कर दी।

'कोरिया प्रजातंत्र—जापान वार्त्ता' में जिन 'संधि' और 'समझौतों' पर हस्ताक्षर हुए हैं उनका मतलब है कोरिया के पुनरेकीकरण को रोकना, इसके विभाजन को स्थायी करना और पुनर्जीवित जापानी सैन्यवाद की शक्तियों को केंद्र में रखते हुए 'उत्तरपूर्व एशिया सैन्य मैत्री' का ढांचा खड़ा करके एशिया पर आधिपत्य की अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक योजना को तीव्र करना।

यही कारण है कि संपूर्ण कोरियाई जनता इनसे पूरे संकल्प से लड़ रही है।

कोरिया के पुनरेकीकरण में मुख्य बाधा है दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राजियों का आधिपत्य और कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की उनकी नीति।

दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं के रहने का कोई आधार नहीं है।

उन्हें दक्षिण कोरिया से हट जाना चाहिए और कोरिया के प्रश्न का निपटारा स्वयं कोरिया की जनता द्वारा किया जाना चाहिए ।

दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना को जबरदस्ती निकालने के लिए ओर कोरिया का पुनरेकीकरण शीघ्र करने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे गणतंत्र के उत्तरार्द्ध में हमारी क्रांतिकारी बुनियाद की समाजवाद का शानदार निर्माण करके राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक रूप से किलेबंदी की जाए और दक्षिण कोरिया की जनता को राष्ट्र रक्षा के अमरीका-विरोधी संयुक्त मोर्चे के गिर्द इकट्ठा करके दक्षिण कोरिया की क्रांतिकारी शक्तियों को मजबूत किया जाए ।

इसके साथ-साथ कोरिया की जनता और विश्व की क्रांतिकारी शक्तियों की एकता को भी दृढ़ करना होगा ।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना तभी दक्षिण कोरिया को छोड़ेगी जब हमारी अपनी ताकत मजबूत हो, जब अमरीका-विरोधी राष्ट्रीय-मुक्ति संग्राम पूरे उत्साह से लड़ा जाए और हमारी जनता के संघर्ष को अंतर्राष्ट्रीय समर्थन अधिक मिले ।

दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना के हटने पर कोरिया की जनता स्वयं अपने प्रयत्नों से ही अपने देश का पुनरेकीकरण कर लेगी ।

कोरिया की जनता एक राष्ट्र है । प्राचीन काल से इसकी एक भाषा है, एक रीतिरिवाज हैं । एक ही भूमि पर इसका सुसंगत जीवन है ।

कोरिया की जनता विभाजित नहीं रह सकती ।

एक दिन अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांता अन्य देशों की ही तरह दक्षिण कोरिया से भी खदेड़ दिए जाएंगे और निश्चय ही हमारे लोग अपने आप अपने देश का पुनरेकीकरण करेंगे ।

यह इतिहास के विकास की एक ऐसी अपरिहार्य प्रक्रिया है जिसे कोई शक्ति नहीं रोक सकती ।

दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना को हटाने के और कोरिया के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के हमारे राष्ट्र के संघर्ष को क्यूबा की वीर जनता ने हमेशा सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन दिया है ।

हमारे लिए इसका बहुत मूल्य है और कोरिया की जनता के लिए महान प्रेरणा स्रोत ।

मैं इस अवसर पर हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति, हमारे गणतंत्र की सरकार और समस्त कोरिया राष्ट्र की ओर से कामरेड फिडेल कास्त्रों की अध्यक्षतावाली क्यूबा की समाजवादी क्रांति की संयुक्त पार्टी और क्रांतिकारी सरकार तथा क्यूबा की वीर जनता के प्रति अपना हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं कि उन्होंने हर समय

हमारे न्यायोचित उद्देश्य को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन दिया है।

प्रश्न : क्या आप हमें जनवादी जन गणतंत्र कोरिया और क्यूबा गणतंत्र के वर्तमान संबंधों और इन दोनों देशों के बीच व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंधों की वृद्धि की वर्तमान संभावनाओं के बारे में कुछ बताएंगे ?

उत्तर : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया और क्यूबा गणतंत्र के बीच संबंध अब बहुत अच्छे हैं।

हमारे दोनों देशों के बीच जो मित्रता ओर सहयोग के संबंध हैं वे एक नए प्रकार के राज्य संबंध हैं। जिनके आधार हैं मार्क्सवाद-लेनिनवाद के और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के सिद्धांत।

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग के क्रांतिकारी उद्देश्यों के संग्राम में, समान शत्रु-अमरीकी साम्राज्यवाद—के विरुद्ध संग्राम में, कोरिया और क्यूबा की जनता में मोर्चे के एक ही तरफ लड़ने वाले सिपाही हैं, कनिष्ठ भाई हैं।

अतः हमारे दोनों राष्ट्र एक दूसरे की स्थिति पूरी तरह समझते हैं और एक दूसरे से सहानुभूति रखते हुए समर्थन देते हैं।

क्यूबा की क्रांति की विजय के पहले दिन से कोरिया की जनता क्यूबा की जनता के साथ खड़ी है। क्यूबा की क्रांति का गला घोंटने के अमरीकी साम्राज्यवाद के अविरत षड्यंत्रों के विरोध में क्यूबा की जनता के न्यायोचित संग्राम को क्यूबा की जनता ने सुस्पष्ट समर्थन दिया है और दे रही है।

हमारी पार्टी और हमारे गणतंत्र की सरकार क्यूबा की समाजवादी क्रांति की संयुक्त पार्टी और क्रांतिकारी सरकार की क्रांतिकारी लाभों की दृढ़ रक्षा और देश के समाजवादी निर्माण में शीघ्रता की लाइन और नीतियों का पूरा समर्थन करती हैं।

क्यूबा की जनता ने हमेशा कोरिया की जनता के समाजवादी निर्माण और देश के स्वतंत्र पुनरेकीकरण संघर्ष को सक्रिय समर्थन दिया है।

सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता पर आधारित यह परस्पर समर्थन न केवल हम दोनों देशों के हितों के अनुकूल है बल्कि समाजवादी कैंप की एकता के हितों के भी पूर्णतः अनुरूप है।

आज दिन प्रति दिन कोरिया और क्यूबा के बीच मित्रता और सहयोग के संबंध दृढ़ और विकसित होते जा रहे हैं।

हमारे दोनों देशों में समाजवादी निर्माण की प्रगति के साथ हमारा आर्थिक आदान-प्रदान और अधिक स्फूर्ति से होगा और हमारे व्यापार संबंधों का विस्तार होगा।

क्यूबा से अपना व्यापार बढ़ाने का हम हर संभव प्रयास करेंगे

हमारे दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का विस्तार और विकास किया जा रहा है।

दोनों देशों की संस्कृति के अपने उत्कृष्ट राष्ट्रीय तत्व हैं और विश्व संस्कृति के भंडार में अपना योगदान।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान से राष्ट्रों के बीच परस्पर समझ के विकास को ही लाभ नहीं होता, बल्कि एक दूसरे से कुछ सीख कर हर राष्ट्र की अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने में भी इसका विशेष महत्व है।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हमारे दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण और सहयोग के संबंध भविष्य में और अधिक विस्तार और विकास पाएंगे।

प्रश्न : वियतनामी जनवादी गणतंत्रके विरुद्ध योजनाबद्ध अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणों और दक्षिण कोरियाई अधिकारियों द्वारा दक्षिण वियतनाम को सेनाएं भेजे जाने के विषय में जनवादी लोक गणतंत्र कोरियाई की सरकार का दृष्टिकोण क्या है ?

उत्तर : दक्षिण वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवादी बड़ी देर से एक अघोषित 'विशेप युद्ध' में लगे हैं। उन्होंने जहरीली गैसों व अन्य विषाक्त रासायनिक शस्त्रों तक का उपयोग करते हुए वहां क्रूरतापूर्ण आक्रामक युद्ध किया है।

और अब वे धीरे-धीरे युद्ध का विस्तार कर रहे हैं—उन्मत्त होकर समाजवादी देश वियतनामी जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध आक्रमण तेज कर रहे हैं।

वियतनामी जनता के विरुद्ध अमरीकी साम्राजियों का युद्ध आक्रमण का युद्ध है जबकि वियतनाम की जनता जो युद्ध कर रही है वह आक्रांताओं के विरुद्ध न्यायोचित युद्ध है, स्वाधीनता का युद्ध है।

वियतनाम जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के कृत्य चुनौती हैं समाजवादी कैंप के सभी देशों के लिए, एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका के सभी राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त राज्यों के लिए और विश्व के सभी प्रगतिशील लोगों के लिए।

वियतनामी जनता के वीरतापूर्ण प्रतिरोध से सामने में अमरीकी साम्राजियों को एक के बाद एक करारी हार मिल रही है। दक्षिण वियतनाम में अपनी दुर्गति से बचने की कोशिश में वे अपनी सशस्त्र सेना को विशाल पैमाने पर कुमुक भेज रहे हैं और पिछलग्गू देशों से भाड़े के लड़ैत भी ला रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के हुक्म पर दक्षिण कोरिया के पाक जुंग ही गिरोह

ने, तमाम कोरियाई जनता के एकमत विरोध के बावजूद, पहले ही २००० से ज्यादा सेना दक्षिण वियतनाम भेज दी है और दसियों हजार सेना और भेजने की योजना है।

संपूर्ण कोरियाई जनता के साथ यह असह्य गद्दारी है, उसका घोर अपमान है।

पाक जुँग ही गिरोह द्वारा दक्षिण वियतनाम को सेना भेजने से यह एकदम स्पष्ट हो जाता है कि वे अमरीकी साम्राज्यवाद के नितांत कठपुतले है और एशिया में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के जल्लाद हैं।

वियतनाम के विरुद्ध अपराधपूर्ण आक्रमक युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवाद का साथ देकर पाक जुंग ही गिरोह ने अपनी कलई खोल दी है और बता दिया है कि वह न सिर्फ कोरिया की जनता का दुश्मन है बल्कि एशिया व शेष विश्व के इन सब लोगों का भी दुश्मन है जो स्वतंत्रता, स्वाधीनता और प्रगति के लिए लड़ रहे हैं।

आज संसार भरके शांतिप्रेमी लोग वियतनाम पर अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण की कड़ी निंदा कर रहे हैं और वियतनामी जनता का सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन कर रहे हैं।

वियतनाम की जनता न्यायोचित संग्राम में उठ खड़ी हुई है और अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को हराएगी ही और अंतिम विजय उसी की होगी। अपने शर्मनाक अंत से अमरीकी साम्राज्यवाद बच नहीं सकता।

प्रश्न : अगर वियतनाम जनवादी गणतंत्र और दक्षिण वियतनामी संयुक्त स्वाधीनता मोर्चा (नेशनल फ्रंट फार लिबरेशन) समाजवादी कैंप से और अधिक तात्कालिक प्रभावी सहायता की प्रार्थना करें तो जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थिति क्या होगी ?

उत्तर : आज वियतनामी जनता की अमरीकी साम्राजियों से लड़ाई केवल उसकी अपनी स्वतंत्रता और स्वायत्तता की रक्षा की लड़ाई नहीं है बल्कि यह तमाम समाजवादी कैंप की सुरक्षा और एशिया तथा विश्व की शांति के बचाव की लड़ाई है।

अतः सभी समाजवादी देशों, एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका के सभी राष्ट्रीय स्वाधीता प्राप्त देशों और विश्व के सभी प्रगतिशील लोगों का कर्त्तव्य हो जाता है कि वियतनाम पर अमरीकी साम्राजियों के आक्रामक कृत्यों के विरुद्ध स्पष्ट रूप से निर्णयात्मक कदम उठाएं और वियतनाम की युद्धरत जनता को प्रभावी सहायता दें। यह सहायता पाने का वियतनामी जनता का न्यायोचित अधिकार है।

इस न्यायोचित संघर्ष में वियतनामी जनता की स्पष्ट सहायता करना हमारी जनता अपना अंतर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानती है।

हम २२ मार्च के उस वक्तव्य का पूरा समर्थन करते हैं जो वियतनाम में आक्रामक युद्ध के अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा उन्मत्त तीव्रीकरण के संबंध में दक्षिण वियतनामी संयुक्त स्वाधीनता मोर्चे की केन्द्रीय समिति ने दिया था। वियतनाम प्रश्न

के निपटारे के लिए वियतनाम जनवादी गणतंत्र की नेशनल असेंबली और सरकार ने जो चार-सूत्री मांग रखी थी उसका भी हम पूरा समर्थन करते हैं।

अपने २६ मार्च के वक्तव्य में जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार पहले ही दक्षिण वियतनामी जनता के प्रति अपने दृढ़ समर्थन का कथन कर चुकी है और अपनी इस दृढ़ स्थिति को अभिव्यक्त कर चुकी है, उसकी घोषणा कर चुकी है कि वह दक्षिण को शस्त्रास्त्र सहित हर प्रकार की भौतिक और नैतिक सहायता देगी और जब भी दक्षिण वियतनामी संयुक्त स्वाधीनता मोर्चा कहेगा अपने यहां से स्वयं सेवक भी भेजेगी।

बाद में ३० अप्रैल को हमारी सर्वोच्च लोक सभा की प्रधान परिषद् के परिवर्द्धित अधिवेशन में और २० मई के सर्वोच्च जन सभा के प्रस्ताव में इस स्थिति की अभिपुष्टि भी की गयी थी।

इस समय हमारे देश में वियतनामी जनता को सक्रिय सहायता देने के लिए राष्ट्रव्यापी आंदोलन चल रहा है और अनेक युवकों ने वियतनामी मोर्चे पर स्वयंसेवक के रूप में जाने की इच्छा व्यक्त की है।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामण के विरुद्ध यह संग्राम वियतनामी जनता के साथ जीवन और मृत्यु का साथ देने के लिए दृढ़संकल्प हम कोरिया के लोग वियतनाम की जनता के साथ दृढ़तापूर्वक खड़े रहेंगे और उसके न्यायोचित संघर्ष में सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देते रहेंगे।

प्रश्न : आपकी राय में सांतो दोमिंगो में अमरीकी साम्राज्यवादी हस्तक्षेप का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव क्या होगा ?

उत्तर : पिछले अप्रैल में सैनिक तानाशाही को उखाड़ फेंकने के लिए और देश की स्वतंत्रता और प्रजातंत्र की प्राप्ति के लिए दोमिनिकन रिपब्लिक की जनता ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया।

सैनिक तानाशाही के विरुद्ध दोमिनिकन रिपब्लिक की जनता के घुटे हुए क्रोध का यह विस्फोट है। दोमिनिकन जनता का यह अपना आंतरिक मामला है। किसी को इसमें पड़ने का अधिकार नहीं है।

फिर भी अमरीकी साम्राज्यवादियों ने सांतो दोमिगो में अपने नौसैनिक उतार दिए और 'आरगेनाइजेशन आफ अमेरिकन स्टट्स' अपने पिछलग्गू देशों की सेनाएं भी ले आए। अब दोमिनिकन रिपब्लिक के देशीय मामलों में खुलेआम हस्तक्षेप कर रहे हैं और देशभक्त लोगों का रक्तरंजित दमन कर रहे हैं।

दोमिनिकन रिपब्लिक में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण लातीन अमरीका के उन तमाम लोगों को चुनौती है जो राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के

लिए लड़ रहे हैं और लातीन अमरीका और शेष संसार की शांति के लिए बड़ा खतरा है।

इसीलिए आज लातीन अमरीका के लोग और और सारे विश्व के प्रगतिशील लोग दोमिनिकन रिपब्लिक के आंतरिक मामलों में अमरीकी साम्राज्यवादियों के घृणित हस्तक्षेप और आक्रमक कृत्यों के विरुद्ध दृढ़ संकल्प से लड़ रहे हैं।

क्यूबा की क्रांति की विजय या लातीन अमरीका के लोगों के स्वतंत्रता और प्रगति के स्वाधीनता संग्रामों पर महान प्रेरक प्रभाव पड़ा है। इससे उनकी धारणा बढ़ी है कि वे अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके गुर्गों को हरा सकते हैं।

लातीन अमरीकी क्षेत्र में स्वतंत्रता और स्वाधीनता के प्रचंड जन आंदोलन के कारण वहां अमरीकी साम्राज्यवाद का आधार जड़ तक हिल उठा है।

अमरीकी साम्राज्यवाद ने क्यूबा की जनता के क्रांतिकारी लाभों को मिटाने के लिए लगातार अनावृत्त आक्रमणों का सहारा लिया है, कई लातीन अमरीकी देशों में कठपुतली सैनिक फासिस्ट शासन खड़े किए हैं और जनता के स्वाधीनता आंदोलनों को निर्दयतापूर्वक कुचला है।

अमरीकी साम्राज्यवाद कोई भी चाल चले अब दोमिनिकन जनता तथा अन्य लातीन अमरीकी लोगों को गुलाम नहीं बना सकता क्योंकि अब वे जाग चुके हैं और न्यायोचित संघर्ष में जुटे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवाद आक्रमण और दमन को जितना भी तेज करेगा दोमिनिकन जनता और अन्य लातीन अमरीकी लोगों का प्रतिरोध भी उतना ही बढ़ेगा, उतना ही अमरीकी साम्राज्यवाद अकेला पड़ जाएगा और अंततोगत्वा बुरी तरह हारेगा।

हमारा दृढ़ विश्वास है दोमिनिकन जनता न्यायोचित संग्राम के लिए उठ खड़ी हुई है और हथियार उठा कर अगर अमरीकी साम्राजी आक्रांताओं से पूरी बहादुरी के साथ अंत तक लड़ती रही तो अवश्य जीतेगी।

प्रश्न : गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग में सप्त-वर्षीय योजना की तामील में कोरियाई जनता के संघर्ष के बारे में आप कुछ बताएंगे ?

उत्तर : हमारी पार्टी की चौथी कांग्रेस ने सप्त-वर्षीय योजना की तामील के लिए कुछ उत्तरदायित्व स्थिर किए। सप्त-वर्षीय योजना के उद्देश्य थे : समाजवाद की ठोस भौतिक और तकनीकी नींव डालना, तकनीकी और सांस्कृतिक क्रांतियों को पूर्णरूपेण लागू करके जनता के भौतिक और सांस्कृतिक स्तर में मौलक सुधार करना।

सप्त-वर्षीय योजना के पहले चार वर्षों में हमसे अपेक्षा थी कि भारी उद्योग के विद्यमान आधार को पुनर्सज्जित और सुदृढ़ करें, अपने प्रयासों को और उसका प्रभावी उपयोग करते हुए लघु उद्योगों और कृषि का शीघ्र विकास करने पर और

जनता के दैनिक जीवन की परिस्थितियों को मौलिक रूप से सुधारने पर केंद्रित करें। शेष वर्षों में भारी उद्योग के और विस्तार पर, उसके तकनीकी उपकरणों के सुधार पर, समाजवाद के भौतिक और तकनीकी आधार को निर्णयात्मक रूप से दृढ़ करने पर, और साथ-साथ जनता का जीवन स्तर सुधारने पर बल दिया गया था।

पिछले चार वर्षों में हमने सप्त-वर्षीय योजना के प्रथमार्द्धक संबंधी अपने दायित्वों को पूरा करने में उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त की हैं। अब हम उत्तरार्द्ध के दायित्वों को पूरा करने में लग चुके हैं।

पिछले दो तीन वर्षों में एशिया में व शेष विश्व में हर जगह युद्ध और आक्रमण के अमरीकी साम्राज्यवादी हथकंडों को देखते हुए हमारे लिए स्वाभाविक था कि अपनी सुरक्षा सामर्थ्य को मजबूत करने के लिए हम काफी धनराशि लगाएं। इससे सप्त-वर्षीय योजना पर कुछ प्रभाव पड़ा है।

फिर भी अबसे हम लोहा और इस्पात, ईंधन और ऊर्जा, रसायन और मशीन-निर्माण जैसे मूल उद्योगों में और अधिक निष्पादन और आधुनीकीकरण पर और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर अपने प्रयास केंद्रित करेंगे और इस प्रकार अपनी सप्त-वर्षीय योजना को सफल करेंगे।

इस समय हम और भी अधिक मध्यम और लघु स्तर की स्थानीय फैक्टरियां खड़ी करने में, बड़े पैमाने की फैक्टरियां खड़ी करने में, श्रम की उत्पादन क्षमता बढ़ा कर और अधिक मितव्ययता बरतकर उत्पादन व्यय कम करने में और क्वालिटी सुधारने में पूरी कोशिश कर रहे हैं।

साथ-साथ, ग्राम्य अर्थव्यवस्था के शीघ्र विकास की दृष्टि से हम कृषि पर लगने वाली पूंजी निरंतर बढ़ा रहे हैं।

हमारे देश में कृषियोग्य भूमि सीमित और असिंचित है। इसलिए अनाज में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना बड़ा कठिन था।

फिर भी युद्धोपरांत काल में हमारी पार्टी द्वारा पूंजी-विस्तार की कृपा से ग्राम्य अर्थव्यवस्था की दृढ़ भौतिक और तकनीकी नींव डाल दी गई है।

ग्राम्य अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में सिंचाई, मशीनीकरण, विद्युनीकरण और रासायनीकरण की महान उपलब्धियों के परिणामस्वरूप हमारा कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ा है और हमने अनाजादि में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है।

इस समय हमारी पार्टी अपने मुख्य प्रयत्न खेती के रासायनीकरण की ओर निर्देशित कर रही है।

पिछले वर्ष के अंत में हमारी पार्टी की चौथी केंद्रीय समिति का दसवां पूर्णाधिवेशन हुआ था जिसमें सप्त-वर्षीय योजना को सफल बनाने के कई उपायों पर चर्चा की गई और निर्णय लिए गये।

पूर्णाधिवेशन ने पूरा जोर देकर स्पष्टतः आह्वान किया था कि राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के हर क्षेत्र में जनता के बीच पार्टी लाइन को पूरी तरह ले जाकर, तकनीकी क्रांति को सोत्साह आगे बढ़ाते हुए, श्रमशक्ति का उपयोग सुधारते हुए, अधिक मितव्ययता बरतते हुए, संस्थानों का प्रबंध कौशल सुधारते हुए और अधिक स्रोतों को काम में लाते हुए हमें अपनी सप्त-वर्षीय राष्ट्रीय आर्थिक योजना को सफल बनाने में निर्णायक प्रगति करनी चाहिए।

अतः हमारी पार्टी ने अब अपना सारा ध्यान सप्त-वर्षीय योजना को सफल करने के संघर्ष पर केंद्रित किया है।

हमारी जनता ने सप्त-वर्षीय योजना के प्रथमार्द्ध में अपने दायित्व सफलतापूर्वक निबाहे थे। वैसे ही हमारी जनता निश्चय ही योजना के उत्तरार्द्ध को भी पूर्ण गौरव से पूरा करेगी।

इस अवसर पर मैं क्यूबा की जनता को अपने देश के समाजवादी निर्माण में महान उपलब्धियों के लिए, और विशेषकर इस वर्ष की रिकार्ड स्थापित करनेवाली गन्ने की फसल के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

मुझे आशा है कि कामरेड फिडेल कास्त्रो की अध्यक्षता में क्यूबा की क्रांतिकारी सरकार के साथ और भी अधिक संगठित होकर क्यूबा की संपूर्ण जनता अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध और समाजवादी निर्माण में शानदार विजय प्राप्त करेगी।

साद अल तायेह विदेशी समाचार संपादक 'अल अखबार' कमाल अमीर, विदेशी समाचार संपादक, 'मैन', तथा संयुक्त अरब गणराज्य के अन्य पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

१३ सितम्बर १९६५

प्रश्न : महामहिम, कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर आपके विचार क्या हैं ? आपकी राय में इसकी प्राप्ति का श्रेष्ठ उपाय क्या है ?

उत्तर : कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर हमारी स्थिति और विशिष्ट योजनाएं एकाधिक बार स्पष्ट की जा चुकी हैं।

हमारी धारणा है कि कोरिया का पुनरेकीकरण शांतिपूर्ण तरीके से, स्वतंत्र प्रजातांत्रिक सिद्धांतों से, कोरिया की जनता द्वारा स्वयं, बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के प्राप्त किया जाना चाहिए।

यह है हमारी स्थिर स्थिति।

इस मौलिक सिद्धांत को आधार बना कर हमने प्रस्ताव रखा है कि दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेना के निकाले जाने के बाद, उत्तर-दक्षिण में स्वतंत्र और प्रजातांत्रिक आम चुनाव द्वारा जीवन के हर क्षेत्र की जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली संयुक्त केंद्रीय सरकार की स्थापना करके कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न को सुलझाया जाए।

हमारा यह प्रस्ताव एक बहुत ही अच्छी, उचित युक्तियुक्त और सर्व स्वीकार्य योजना है।

यह न सिर्फ संपूर्ण कोरियाई जनता की आकांक्षाओं और राष्ट्रीय हितों के अनुकूल है बल्कि सुदूरपूर्व और विश्व में शांति के हितों के अनुकूल भी है।

क्योंकि अमरीकी साम्राजियों और दक्षिण कोरियाई शासक स्वतंत्र प्रजातांत्रिक चुनावों के द्वारा संयुक्त कोरियाई सरकार की स्थापना के विरुद्ध हैं, इसलिए हमने राष्ट्र की साझी और तात्कालिक समस्याओं को तय करने के लिए अतंर्कालीन उपाय के तौर पर एक परिसंघ बनाने का और फिर धीरे-धीरे पूर्ण पुनरेकीकरण करने का प्रस्ताव रखा।

क्षेत्रीय विभाजन से हमारे राष्ट्र को जिस दुर्दशा और कष्ट को भोगना पड़ता है उसे चाहे थोड़ा ही सही कम करने के लिए हमने आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा उत्तर और दक्षिण के बीच पत्र व्यवहार का प्रस्ताव रखा।

हमने दक्षिण कोरिया में ध्वस्त अर्थ व्यवस्था के पुनर्वास के लिए ओर जनता की बिगड़ी हुई आजीविका को सुधारने के लिए पदार्थ और खाद्य भेजने की पेशकश की, दक्षिण कोरिया के बेकारों को उत्तरी कोरिया में लेने और उन्हें काम देने का, दक्षिण कोरिया की गलियों में घूमने वाले अनाथ बच्चों को लेकर उनका पालन पोषण करने का दायित्व उठाने का प्रस्ताव भी रखा है।

पर दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य जमाए बैठे अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके गुर्गे इन न्यायोचित प्रस्तावों को ठोस रूप दिए जाने से रोक रहे हैं।

कोरिया के पुनरेकीकरण में मुख्य बाधा है दक्षिण कोरिया पर अमरीकी सेना का कब्जा। इसलिए कोरिया के पुनरेकीकरण के लिए पहले दक्षिण कोरिया से अमरीकी फौजों का खदेड़ा जाना आवश्यक है।

दक्षिण कोरिया में टिके रहने का अमरीकी सेना के पास कोई भी आधार नहीं है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया पर आतंकपूर्ण फासिस्ट शासन लाद दिया है, हमारे देशवासियों को निर्दयतापूर्वक कुचला है, जहां-तहां उन्हें मारा है, और दक्षिण कोरिया के लोगों को गरीबी और भुखमरी दी है।

वे दक्षिण कोरिया में अपने गुर्गों को हर संभव तरीके से कोरिया का पुनरेकीकरण रोकने के लिए उकसा रहे हैं और दक्षिण कोरिया को उत्तरी भाग, चीन और सोवियत यूनियन पर आक्रमण के लिए सैनिक अड्डे के तौर पर इस्तेमाल कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राजी आक्रांता के खदेड़े जाते ही दक्षिण कोरिया के लोग अपनी इच्छा की जन सरकार स्थापित करेंगे। तब कोरियावासी अपने आप बड़ी सलाहियत से देश का पुनरेकीकरण करेंगे।

अमरीकी साम्राज्यवादी देर तक दक्षिण कोरिया के लोगों को औपनिवेशिक शासन की जंजीरों में जकड़ा नहीं रख सकते और न ही वे कोरिया की जनता की राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की आकांक्षा को मंद कर सकते हैं। विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध संघर्ष की दक्षिण कोरिया की जनता की लंबी और शानदार परम्परा है। हर बीतते दिन के साथ दक्षिण कोरिया में छात्रों, युवकों और जनता का अमरीकी साम्राजियों और उनके कठपुतलों के विरुद्ध वर्त्तमान संघर्ष प्रबल होता जा रहा है। दक्षिण कोरिया की जनता का अमरीका-विरोधी संघर्ष के प्रति उत्साह, और यह उत्साह उनके अपने अनुभव से उपजा है, लगातार बढ़ता जा रहा है।

अमरीकी दखलंदाज कितना भी दमन कर वे दक्षिण कोरिया के जन-संघर्ष को निरुत्साहित नहीं कर सकते।

निश्चय ही अमरीकी साम्राज्यवादी ठोकर मार करे दक्षिण कोरिया से निकाल दिए जाएंगे और कोरिया निश्चय ही फिर से एक होगा।

इस अवसर पर मैं संयुक्त अरब गणराज्य की सरकार, जनता और अखबार वालों को कोरियावासियों के बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के देश के स्वतंत्र पुनरेकीकरण संघर्ष के प्रति अपरिवर्तनीय समर्थन और प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद देता हूं।

प्रश्न : महामहिम, समाजवादी कैंप में सैद्धांतिक विवाद में आपकी स्थिति क्या है?

उत्तर : हालांकि आज समाजवादी कैंप में मतभेद हैं, फिर भी समाजवादी देश एक साथ मिल कर साम्राज्यवाद के विरुद्ध और समाजवाद और साम्यवाद की विजय के लिए लड़ेंगे।

जहां तक हमारा प्रश्न है, हम सब समाजवादी देशों के साथ दृढ़ता से संगठित होंगें और साम्राज्यवाद के विरुद्ध जनता के क्रांतिकारी उद्देश्य के लिए साझे संघर्ष को तीव्र करेंगे।

प्रश्न : महामहिम, आपकी राय में वे कौन-सी प्रमुख समस्याएं हैं जिन्हें कोरिया में सुलझा लिया गया है, और समाजवादी क्रांति की राह में वे कौन सी समस्याएं हैं जिन्हें अभी सुलझाया जाना है।

उत्तर : पहले हमारा देश एक पिछड़ा हुआ उपनिवेश था। स्वाधीनता के बाद अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा छेड़े गए युद्ध में हमारा देश भयानक रूप से ध्वस्त हुआ। हमें बहुत कष्ट थे और अनेक परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा। अपने संयुक्त प्रयासों से हमारे लोगों ने, फिर भी, नव जीवन के निर्माण में काफी काम किया है।

हमने पुराने समाज को बदल दिया है और एक ठोस समाजवादी व्यवस्था खड़ी की है। कोरिया के उत्तरी अर्द्ध भाग में शोषण और गरीबी के स्रोत समाप्त कर दिए गए हैं और मजदूर लोग मित्रतापूर्वक, समान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक दूसरे की सहायता करते हुए रहते हैं। निर्माण कार्य को उत्साहपूर्वक संपन्न करके हमने जिस स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव डाली है वह हमें आत्मनिर्भर बनाती है और हमारे देश को और अधिक संपन्न और मजबूत। हम अपने उपयोग के लिए लगभग सब मशीनें और उपकरण बनाते हैं और अधिकांश आवश्यक कच्चा माल और रसद भी हम उपजाते हैं। अपनी जनता के लिए उपभोक्ता पदार्थ भी मूलत: हम स्वयं ही अपने उत्पादनों से पूरे करते हैं और भोजन के मामले में भी हम आत्म-

निर्भर हैं। हमने अपने राष्ट्र के कर्मकरों को ट्रेनिंग देने में काफी मेहनत की है जिसका परिणाम यह है कि हम अपने राज्य का संचालन और अपनी अर्थव्यवस्था और संस्कृति का निर्माण अपने ही कर्मकरों द्वारा कर रहे हैं।

हमारे देश में लोगों का जीवन स्तर भी काफी सुधरा है। वे बहुत अधिक धनी तो नहीं हैं, पर हमारे लोगों को अब रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता नहीं सताती। हमारे देश में कोई बेकार नहीं है और हर मजदूर को मुफ्त चिकित्सा और हर बच्चे और युवक को उच्च स्तर की शिक्षण संस्थाओं तक मुफ्त शिक्षा मिलती है। हमने उत्तरी अर्द्ध भाग में समाजवाद के निर्माण की ठोस बुनियादें बड़ी शान से डाल ली हैं और इतनी अधिक संपत्ति बचा ली है कि देश के पुनरेकीकरण के बाद दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था को पुनर्स्थापित कर सकें और उनके निवासियों की जीविका को स्थिर कर सकें।

हमारे सामने सब से बड़ा दायित्व, जो हमें अभी पूरा करना है, हमारे देश के पुनरेकीकरण का है। कोरियावासियों की यही ज्वलंत राष्ट्रीय आकांक्षा है।

हम पूर्ण स्थिरता से उत्तरी अर्द्ध भाग में विजयी समाजवादी व्यवस्था को और भी जमाएंगे, तकनोलोजी का विकास इस प्रकार करेंगे कि औद्योगीकरण किया जा सके, और कृषि में तकनीकी उपकरणों को सुदृढ़ किया जा सके। इस प्रकार हम राष्ट्र की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति को दृढ़ करेंगे और जनता के भौतिक और सांस्कृतिक जीवन स्तर को और ऊपर ले जाएंगे।

उत्तरी अर्द्ध भाग की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति में वृद्धि ही देश के पुनरेकीकरण की सबसे मजबूत गारंटी है।

प्रश्न : आप उत्तरी वियतनाम की सहायता के लिए स्वयंसेवक कब भेजेंगे? और आपकी राय में समस्त दक्षिण पूर्वी एशिया में वियतनाम समस्या का क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर : वियतनामी जनता के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादियों ने जो युद्ध छेड़ रखा है वह पूर्णतः बटमारी का आक्रामक युद्ध है, एक ऐसा युद्ध है जो अंतर्राष्ट्रीय कानून का हनन करता हुआ वियतनाम की स्वायत्तता को पूरी उच्छृंखलता से भंग करता है।

आज अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांता न सिर्फ दक्षिण वियतनाम में और अधिक सेना और शस्त्र भेज रहे हैं न सिर्फ वियतनाम जनवादी गणतंत्र पर बम वर्षा को तेज कर रहे हैं, बल्कि एशिया के विशाल क्षेत्रों में युद्ध को फैलाने के षड्यंत्र भी रच रहे हैं।

एशिया और विश्व की शांति के लिए यह भयानक खतरा है और तमाम समाजवादी देशों को और एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका के स्वाधीन देशों

को और पूरे संसार के शांति प्रेमी लोगों को गम्भीर चुनौती है। वियतनाम के लोग जो वीरतापूर्ण प्रतिरोध का युद्ध कर रहे हैं अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के विरुद्ध, वह न केवल उनके अपने देश की स्वतंत्रता और स्वाधीनता की रक्षा के लिए है बल्कि एशिया और विश्व में शांति की रक्षा के लिए न्यायोचित युद्ध भी है।

इसलिए संसार के प्रगतिशील लोगों का यह कर्त्तव्य और अधिकार है कि अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध वीरतापूर्वक युद्ध करने वाली वियतनामी जनता को हर आवश्यक सहायता दें।

कोरिया की जनता इसे अपना महान अंतर्राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानती है कि भ्रातृत्वपूर्ण वियतनामी जनता को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन दे और हर संभव सहायता दे भी रही है। जब भी जरूरत हो हम स्वयंसेवक भेजने को तैयार हैं। जब तक वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवाद का आक्रमण जारी रहेगा कोरिया की जनता वियतनामी जनता को अपनी सहायता बढ़ाती रहेगी।

जैसा कि दक्षिण वियतनामी संयुक्त स्वाधीनता मोर्चे ने और वियतनाम जनवादी गणतंत्र ने घोषित किया है, वियतनाम प्रश्न का एकमात्र हल है अमरीकी साम्राज्यवाद का वियतनाम पर अपना आक्रमण तुरंत बन्द करना, बिना देर किए दक्षिण वियतनाम में अपनी सेना और शस्त्रों के साथ निकल जाना, और वियतनाम का प्रश्न स्वयं वियतनामियों द्वारा सुलझाने के लिए छोड़ देना।

वियतनाम की जनता की उचित मांग और सब देशों की चेतावनी की अवहेलना करके अगर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने वियतनाम में अपने आक्रामक युद्ध का विस्तार जारी रखा तो उन्हें और भी बुरी मात खानी पड़ेगी।

प्रश्न : महामहिम, हमारे दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंधों को दृढ़ करने के श्रेष्ठ साधन क्या हैं? इस्राइल को साम्राज्यवादी अग्रिम मोर्चे और अरब प्रगति और एकता में रुकावट के तौर पर दृढ़ करने के पश्चिमी रुख के बारे में आपका क्या विचार है।

उत्तर : हमारे दोनों देशों के लोग साम्राज्यवादी दमन से मुक्त हुए थे और साम्राज्यवाद के विरुद्ध साझे मोर्चे पर लड़ रहे हैं। हम दोनों की जनता नवजीवन के निर्माण और राष्ट्रीय संपन्नता की प्राप्ति के लिए संघर्षरत हैं।

साम्राज्यवाद-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी झंडे के नीचे, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सम्पन्नता के झंडे के नीचे आज हमारे दोनों देशों के बीच मित्रता और-सहयोग के संबंध दिन प्रति दिन दृढ़ और विकसित हो रहे हैं। यह हमारे दोनों देशों की जनता के हितों के अनुकूल है और एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका के लोगों की एकता में योगदान करता है।

कोरिया की जनता संयुक्त अरब गणराज्य की गुणी और वीर जनता के साथ अपनी मैत्री को बहुमूल्य मानती है और उसके सब न्यायोचित संघर्षों का सक्रिय समर्थन करती है।

इस्राइली विस्तारवादियों के विरुद्ध अरब जनता के संघर्ष को कोरिया की जनता पूरी तरह समझती है। इस्राइली मध्यपूर्व में अरब लोगों के विरुद्ध अमरीकी और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का आक्रमण का अग्रिम अड्डा है, अरब देशों की सुरक्षा को खतरा है और अरब प्रगति को रोक रहा है। अरब जनता के विरुद्ध अमरीकी और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों, पश्चिमी जर्मन सैन्यवादियों और इस्राइली विस्तारवादियों की उत्तेजनात्मक कार्रवाई की हमारी जनता घोर निंदा करती है और उनके विरुद्ध संयुक्त अरब गणराज्य के संघर्ष का पूर्ण समर्थन करती है।

फिलीस्तीन की स्वाधीनता के संघर्ष में हमारी जनता फिलीस्तीन तथा अन्य अरब देशों की जनता के साथ अपनी दृढ़ एकता प्रकट करती है।

अमरीकी और ब्रिटिश साम्राज्यवादी और पश्चिमी जर्मन सैन्यवादी जो इस्राइल को अग्रिम मोर्चे की तरह इस्तेमाल करते हुए संयुक्त अरब गणराज्य और अन्य अरब राज्यों के विरुद्ध आक्रामक कार्रवाई कर रहे हैं एक दिन शर्मनाक मात खाएंगे।

मेरा दृढ़ विश्वास है कि भविष्य में साम्राज्यवाद-विरोधी और उपनिवेशवाद-विरोधी और नवजीवन निर्माण के संयुक्त संघर्ष में हमारे दोनों देशों की जनता के बीच मित्रता और दृढ़ होगी और विकसित होगी।

ताहा अल-बसरी सह प्रधान निदेशक इराकी न्यूज एजेंसी द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

१ जुलाई १९६९

प्रश्न : दक्षिण कोरिया की जनता अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य के विरुद्ध और दक्षिण की स्वाधीनता के लिए जो भीषण संग्राम कर रही है उसकी महामहिम पर क्या छाप पड़ी है ? देश के दोनों भागों के पुनरेकीकरण के लिए महामहिम द्वारा प्रस्तावित आधार क्या हैं ?

उत्तर : जहां तक दक्षिण कोरियाई क्रांति और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का प्रश्न है, पिछले वर्ष जनवादी लोकतंत्र कोरियाई की स्थापना की बीसवीं जयंती के अवसर पर रिपोर्ट में हम काफी तफसील में गये हैं। इसके अलावा दक्षिण कोरियाई क्रांति और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण पर हमने कई दस्तावेज प्रकाशित किए हैं। इनमें कोरिया की मजदूर पार्टी की १९६९ में हुई कानफ्रेंस की रिपोर्ट भी शामिल है। मैं समझता हूं कि अगर आप ये पढ़ लें तो राष्ट्रीय पुनरेकीकरण पर हमारा प्रोग्राम और अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य के विरुद्ध दक्षिण कोरिया की जनता के क्राँतिकारी संघर्ष पर हमारी स्थिति—दोनों को आप पूरी तरह समझ जाएंगे।

कोरिया की जनता की आज महानतम अभिलाषा है शीघ्रातिशीघ्र अपने विभाजित देश को फिर से एक करना।

कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के हमारे उद्देश्य की शीघ्र प्राप्ति मुख्यतः निम्न तीन प्रश्नों के सुलझाव पर निर्भर करती है।

प्रथम गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में समाजवादी निर्माण को शानदार तरीके से पूरा करके हमें राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक-सभी क्षेत्रों में अपनी क्रांतिकारी बुनियाद को और मजबूत करना चाहिए। द्वितीय, अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके गुर्गों के विरुद्ध दक्षिण कोरिया की जनता को अपना संघर्ष और तेज करना चाहिए और अपनी क्रांतिकारी शक्तियों का शीघ्रता से पोषण करना चाहिए। तृतीय, दुनिया के लोगों को विशेष कर उन लोगों को जो क्रांतिकारी हैं और उन

शक्तियों को जो साम्राज्यवाद का विरोध करती हैं, दृढ़ता से संगठित हो जाना चाहिए और विश्व स्तर पर अधिकतम संभव सीमा तक अमरीकी साम्राज्यवादियों को अकेला और कमजोर करना चाहिए और दसके साथ-साथ कोरियाई जनता के अमरीकी साम्राज्यवाद को बाहर खदेड़ने के और देश का स्वतन्त्र पुनरेकीकरण करने के संघर्ष को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देना चाहिए।

हमारी राय में कोरिया का पुनरेकीकरण इन तीनों क्रांतिकारी शक्तियों के पूरी तरह तैयार और संयुक्त होने पर संपादित किया जा सकेगा।

दक्षिण कोरिया की जनता और पूरे विश्व की जनता को हम बता चुके हैं कि हमारी इच्छा कोरिया का पुनरेकीकरण शांतिपूर्ण तरीकों से करने की है। राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का हमारा प्रोग्राम है कि दक्षिण कोरिया से विदेशी सेनाओं के हट जाने के बाद बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के उत्तर और दक्षिण में प्रजातांत्रिक आधार पर आम-चुनाव कराने के बाद एक संयुक्त केन्द्रीय सरकार स्थापित की जाए।

हमारी यह स्थिति बिलकुल सही और युक्तियुक्त है। इसलिए कि देश के पुनरेकीकरण का हमारा कार्यक्रम संपूर्ण कोरियाई जनता की राष्ट्रीय स्वाधीनता की दृढ़ चेतना का दर्पण है, और जीवनयापन के हर क्षेत्र के लोगों की चाहे उनके पार्टी-संबंध, राजनीतिक विचार, संपत्ति-स्तर, शिक्षा-स्तर, धर्म, विश्वास, लिंग कुछ भी हों, उनकी स्वतन्त्र इच्छाओं के अनुकूल प्रजातांत्रिक तरीकों से पुनरेकीकरण प्रश्न के सुलझाए जा सकने की संभावना प्रस्तुत करता है।

कोरिया की जनता की सर्वसम्त इच्छा और आकांक्षा की अभिव्यक्ति करते हुए जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार ने बारंबार देश के पुनरेकीकरण के लिए अत्यन्त युक्तियुक्त और ठोस सुझाव रखे हैं और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए हर संभव प्रयास किया है।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादियों ने और एक के बाद एक आने वाले उनके दक्षिण कोरियाई कठपुतली शासकों ने देश के पुनरेकीकरण के हमारे उचित कार्यक्रम और प्रस्तावों का हठपूर्वक विरोध किया है और देश के विभाजन को स्थायी करने का षड्यंत्र रचा है।

हमारे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की सब से बड़ी बाधा है दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य। जब तक दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक सेना बनी रहेगी सारे उत्तर व दक्षिण कोरिया में जनता की स्वतन्त्र इच्छा प्रकट करने वाले आम चुनाव नहीं हो सकते। इसलिए कोरिया के शांतिपूर्ण एकीकरण के लिए सब से पहले अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमक सेना को दक्षिण कोरिया से निकलना होगा।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादी स्वेच्छा से दक्षिण कोरिया नहीं छोड़ेंगे। यही

नहीं, दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों की रक्षा उनकी संगीनें करती हैं और ये कठपुतलियां उनकी आक्रामक सेना से दक्षिण कोरिया से न हटने की भीख मांगती रहती हैं।

किसी भी हालत में यह दक्षिण कोरियाई जनता की असली इच्छा की अभिव्यक्ति नहीं है। उत्तरी अर्द्धभाग की जनता की ही तरह दक्षिण कोरिया की जनता की मांग है कि अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरिया से शीघ्रातिशीघ्र हट जाए और वह प्रजातांत्रिक आधार पर स्वतन्त्र और शांतिपूर्ण तरीके से देश का एकीकरण करना चाहती है।

अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके राष्ट्रद्रोही गुर्गे दक्षिण कोरिया की जनता की इस आकांक्षा का दमन करने के लिए उन्मत्त हो उठे हैं और देश के पुनरेकीकरण के उनके संघर्ष को निर्दयतापूर्वक दबा रहे हैं। दक्षिण कोरिया में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के उच्चारण मात्र पर ही वे हर किसी को गिरफ्तार करके जेल में डाल देते हैं और प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं और प्रेस पर अभूतपूर्व फासिस्ट दमन चक्र तीव्र कर रहे हैं और देशभक्तों को बर्बरता से बंदी बनाते हैं या उनकी हत्या कर देते हैं।

जबतक दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद और इसका गुर्गा--वर्त्तमान शासन—रहेगा देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण नहीं किया जा सकता। यह तभी संभव हो सकता है जब दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेना जबरदस्ती निकाल दी जाए और जब दक्षिण कोरिया की जनता विद्यमान कठपुतली शासन का तखता पलट दे और प्रगतिशील शक्तियां सत्ता में आ जाएं। अगर अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया से निकल जाएं और राष्ट्रीय चेतना वाली प्रजातांत्रिक प्रगतिशील शक्तियां आज भी सत्ता छीन लें तो हम देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर उनसे शांतिपूर्ण वार्त्तालाप करने को तैयार हैं।

दक्षिण कोरिया की जनता का क्रांतिकारी संघर्ष दिन प्रतिदिन विकसित हो रहा है हालांकि फासिस्ट दमन चक्र तीव्र करके अमरीकी साम्राज्यवादी और उनका वर्त्तमान कठपुतली गिरोह इस संघर्ष को रोकने की जी तोड़ कोशिश कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया की जनता अच्छी तरह जानती है कि उन संघर्ष के निशाना नंबर एक अर्थात् अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया से जबरन हटा कर ही और उनके गुर्गे—पाक जुंग ही कठपुतली शासन को चकनाचूर करके ही देश को शांतिपूर्णतरीके से फिर से एक किया जा सकता है। अपनी राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की आकांक्षा को शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करने के लिए दक्षिण कोरिया की जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और इसके गुर्गों के विरुद्ध कई प्रकार के संघर्ष पूरी शक्ति से कर रही है।

पिछले दिनों दक्षिण कोरिया में पाक जुंग ही कठपुतली गिरोह ने अपने को

दीर्घकाल तक बनाए रखने के लिए 'तृतीय-अवधि राष्ट्रपति चुनाव के लिए सांविधानिक संशोधन' का जल्दबाजी से भरा षड्यन्त्र रचा था। उसके विरुद्ध युवकों और छात्रों के विशाल समूह उठ खड़े हुए हैं और उसके विरुद्ध अनेक प्रबल प्रदर्शन किए हैं।

यह सही है कि दक्षिण कोरिया की जनता का क्रांतिकारी संघर्ष कष्टसाध्य है। यह भी सही है कि दमनकर्त्ताओं के विरुद्ध दीर्घकालीन संघर्ष ने उन्हें मजबूत बना दिया है और वे अपने संघर्षशील सैनिकों की संख्या में अनवरत वृद्धि करते चले जा रहे हैं और अनवरत रूप से क्रांतिकारी शक्तियों का संचय कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया की जनता को उस वीरतापूर्ण संघर्ष का अनुभव भी है जिसने अमरीकी साम्राज्यवाद के पुराने गुर्गे सिंगमन री के कठपुतली शासन का तख्ता पलट दिया था। अपने कष्ट साध्य संघर्ष के द्वारा दक्षिण कोरिया की जनता और अधिक जाग्रत हो गई है और स्पष्ट यह समझ चुकी है कि विजय प्राप्ति के लिए लड़ना ही होगा। दक्षिण कोरिया के संघर्षशील जन सैनिकों के बीच से अनेक शानदार क्रांतिकारी नेता उभर कर आ रहे हैं।

दक्षिण कोरिया की जनता निश्चय ही अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया से खदेड़ देगी और पाक जुंग ही के कठपुतली शासन को चकनाचूर कर देगी। वह दिन दूर नहीं है जब दक्षिण कोरिया के लोग अपने लिए जनता की सरकार की स्थापना करेंगे और उत्तरी अर्द्धभाग के लोगों से मिल कर देश को फिर से एक करेंगे। यह हमारा दृढ़ विश्वास है।

आज अमरीकी साम्राज्यवादी, विश्व के लोगों के सामने अपना दुष्ट आक्रामक रूप छिपाने के मूर्खतापूर्ण प्रयास में, दक्षिण कोरिया पर हमारे 'आक्रमण' का हास्यास्पद असत्य प्रचार कर रहे हैं और शोर मचा रहे हैं कि दक्षिण कोरिया के क्रांतिकारी आन्दोलन गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्धभाग ने खड़े किए हैं। इसके साथ-साथ वे उत्तर के विरुद्ध अनवरत उत्तेजनापूर्ण कार्रवाइयां कर रहे हैं, हमें युद्ध की धमकी दे रहे हैं और दक्षिण कोरिया के जन संघर्ष को सख्ती से दबा रहे हैं।

पर अमरीकी साम्राज्यवादियों का कोई भी छलछद्म दुनिया की आंखों में धूल नहीं झोंक सकता और कोई भी धमकी कोरिया की जनता को नहीं डरा सकती।

दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों का गैरकानूनी आधिपत्य कोरिया की जनता कभी भी सहन नहीं करेगी और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का सपना कभी नहीं त्यागेगी।

पहले की तरह आज भी ईराकी जनता अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध और देश के पुनरेकीकरण के लिए कोरिया की जनता के संघर्ष का सक्रिय समर्थन करती है—यह कोरिया की जनता के लिए महान प्रेरणा है। इसके लिए हम ईराकी जनता के आभारी हैं और अपना विश्वास प्रकट करते हैं कि भविष्य में भी वह हमारी

जनता के न्यायोचित संघर्ष का सक्रिय समर्थन करती रहेगी।

प्रश्न : हमें विश्वास है कि महामहिम सियोनवाद (जियोनिज्म) और साम्राज्यवाद के विरुद्ध अरब जनता के संघर्ष से पूरी तरह परिचित हैं। फिलीस्तीन की स्वाधीनता के लिए अरबों के सशस्त्र संघर्ष के बारे में महामहिम का मत क्या है?

उत्तर : सियोनवादी और साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध और फिलीस्तीन की स्वाधीनता के पक्ष में अरब जनता का समर्थन करते हुए हमारी सरकार और सामाजिक संस्थानों ने कई अवसरों पर वक्तव्य जारी किये हैं।

इस्राइली विस्तारवादियों और अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में उनके संचालकों द्वारा किये गये डाकुआना बेशर्म आक्रमण के विरुद्ध अरब लोग अपने हाथों हथियार लेकर वीरतापूर्ण संघर्ष कर रहे हैं। आज अरब लोगों का अमरीका-विरोधी, इस्राइल-विरोधी संघर्ष राष्ट्रीय स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा का, छीने गये अरब क्षेत्र को वापस लेने का और फिलीस्तीन की जनता की स्वाधीनता का न्यायोचित संघर्ष है।

कोरिया की जनता अरब जनता के न्यायोचित संघर्ष का स्पष्ट समर्थन करती है और उसके साथ अपनी एकता प्रकट करती है। पहले की तरह भविष्य में भी हमारी जनता अपनी पितृभूमि को स्वाधीन करने के लिए सशस्त्र संघर्ष रत वीर फ़िलीस्तीनी जनता के साथ और सियोनवादी साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध संघर्षरत अरब जनता के साथ दृढ़तापूर्वक खड़ी रहेगी और साम्राज्यवाद-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष में अरब जनता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ेगी।

हम अरब लोगों के संघर्ष को हम अपना संघर्ष मानते हैं। हमें पूरा भरोसा है कि आपका न्याययुद्ध निश्चय ही विजयी होगा।

अमरीकी साम्राज्यवादी अब पतनशील हैं; संसार में हर जगह उन्हें साम्राज्यवाद-विरोधी जनता के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्रामों का मुकाबला करना पड़ रहा है और भारी चोटें खानी पड़ रही हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद कितना ही मजबूत और क्रूर क्यों न हो, जब सारे संसार के क्रांतिकारी और प्रगतिशील लोग अपनी शक्ति संचय करके अमरीकी साम्राज्यवाद और इसके गुर्गों से दृढ़ संकल्प से लड़ेंगे तो अमरीकी साम्राज्यवादियों, इस्राइली विस्तारवादियों तथा अन्य प्रतिक्रियावादियों का नाश अवश्यंभावी है।

प्रश्न : आप समाजवाद के महा प्रमुख नेताओं में से हैं। ईराक में १७ जुलाई १९६८ की क्रांति के परिणाम स्वरूप जो सामाजिक लाभ प्राप्त हुए हैं उन पर महामहिम के क्या विचार हैं? ईराक में पकड़े गए अमरीकी और इस्राइली ज़ासूसों

को प्राणदंड पर महामहिम का दृष्किोण क्या है ?

उत्तर : जैसा कि हमारी सरकार पहले ही कह चुकी है, ईराक में क्रांति और क्रान्तिकारी लाभों की रक्षा के लिए ईराकी क्रांतिकारी सरकार जो भी कदम उठाएगी उनके पूर्ण समर्थन में कोरिया की जनता ईराक की जनता के साथ है। कोरिया के मजदूर वर्ग और जनता की हार्दिक अभिलाषा है कि ईराक की क्रांतिकारी सरकार के नेतृत्व में अमरीकी साम्राज्यवादियों और इस्राइली विस्तारवादियों की आक्रामक महत्वाकांक्षाओं को तोड़ने के लिए, देश की स्वाधीनता को मजबूत करने के लिए और नवजीवन के निर्माण के लिए ईराकी मजदूर वर्ग और जनता नयी विजयें प्राप्त करे।

जहां तक ईराक के पकड़े गये अमरीकी इस्राइली जासूसों को प्राणदंड का प्रश्न है, मैं इसे पूरी तरह सही कदम मानता हूं—यह शत्रु की विनाशक और तोड़ फोड़ की कार्रवाई से राष्ट्रीय सुरक्षा और क्रांति के लाभों को बचाने के लिए उठाया गया कदम था। उन साम्राज्यवादी जासूसों पर आपको रहम नहीं दिखाना चाहिए जो आपके देश की प्रभुसत्ता और सुरक्षा के लिए खतरा बन जाते हैं बल्कि क्रांति के शत्रुओं के विरुद्ध बेपनाह युद्ध करते रहना चाहिए। कोरिया की जनता उस ईराकी जनता का पूर्ण समर्थन करती है जिसने अमरीकी साम्राज्यवाद और इस्राइली आक्रांताओं के दलालों को सख्त सजा दी।

अब्दल हमीद अहमद हमरूच, जनरल मैनेजर, दार-अल-तहरिर संयुक्त अरब गणराज्य के मुद्रण एवं प्रकाशन संस्थान द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर

१ जुलाई १९६९

प्रश्न : कामरेड प्रधान मंत्री, कोरिया की अपनी यात्रा में जो सबसे महत्वपूर्ण चीज मैंने जानी है, वह आत्म-निर्भरता की क्रांतिकारी भावना। यहां अपने निवास काल में मैंने इस भावना को आपकी आंतरिक और विदेश नीतियों के हर पहलू में बड़े वैभव से स्थापित देखा है। मैंने बड़े स्पष्ट रूप से देखा है कि आत्म-निर्भरता के सिद्धांत पर विशेषकर आंतरिक मामलों में किस प्रकार व्यवहार किया जाता है। पर मैं यह नहीं कह सकता कि इतने थोड़े से समय में मैं सब कुछ पूरी तरह समझ पाया हूं। कामरेड प्रधानमंत्री, क्या आप कृपा करके मुझे इस संबंध में कुछ और बताएंगे ?

उत्तर : मैं यह मान लेता हूं कि जहां तक हमारे देश की स्थिति का प्रश्न है इस संबंध में 'रोदोंग सिनमुन' के प्रधान संपादक तथा पत्रकार यूनियन की केंद्रीय समिति के अध्यक्ष ने आपको कुछ बताया है।

आपने शायद ध्यान दिया हो कि पिछले दिनों नव समाज और नवजीवन के निर्माण में हमें जो सफलता मिली है वह कुछ कम नहीं है। विगत में हमें जो सफलता मिली उसके लिए पूर्णतः ऋणी है हमारी पार्टी और सरकार की सही नीतियों और बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व के और पार्टी की नीति पर अमल करने के लिए हमारी जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष के।

हमारी पार्टी ने क्रांतिकारी संघर्षों के नेतृत्व के लिए और निर्माण कार्य के लिए जूछे के विचार को अपने अटल ध्रुव सिद्धांत के रूप में लिया है और हमारी जनता ने पार्टी के जूछे विचार से सज्जित होकर आत्मनिर्भरता की क्रांतिकारी भावना से अदमनीय संघर्ष किया है।

हम कोरिया की क्रांति का निर्माण कर रहे हैं। कोरिया की क्रांति के संबंध में कोरियावासी ही सर्वाधिक जानते हैं। कोरिया की क्रांति के मालिक कोरिया के लोग हैं, हमारी अपनी शक्ति ही इसकी विजय का निर्णायक तत्व है। कोई विदेशी हमें नहीं बता सकता कि हम कोरिया में क्रांति कैसे करें, न ही हमारे बदले कोई और इसे कर सकता है। कोरिया की क्रांति की सफलता पक्की करने के लिए इसके मालिकों, कोरिया के लोगों को अपना दिमाग लगाना होगा, इससे उठने वाली सब समस्याओं को अपने ही प्रयासों से हल करना होगा और कोरियाई क्रांति के हितों के अनुकूल उन्हें निश्चित करना होगा।

इसीलिए हमने यह अवधारणा की है कि क्रांति और निर्माण के हर क्षेत्र में ज़ूछे की स्थापना सबसे महत्वपूर्ण दायित्व है और स्वाधीनता के पहले दिन से ही हम लक्ष्य के लिए लड़े हैं।

संक्षेप में ज़ूछे की स्थापना का अथं है अपनी बुद्धि से, अपनी शक्ति से रहना, दूसरों का अंधानुकरण न करना या दूसरों की सहायता पर आश्रित होने की कोशिश न करना। इसका अर्थ है अपने देश की क्रांति के हित में अपनी वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूल हर समस्या को सुलझाने का स्थिर दृष्टिकोण होना।

हमने अपने सिद्धांत में ज़ूछे को दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दिया है और राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक क्षेत्रों में पूरी तरह मूर्त्त रूप दिया है। सिद्धांत में ज़ूछे राजनीति में स्वतंत्रता, अर्थनीति में आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय सुरक्षा में आत्मरक्षा—यह है हमारी पार्टी का स्थिर आधार।

अभी तक हमारी पार्टी ने ज़ूछे के आधार का दृढ़तापूर्वक पालन किया है—क्रांति और निर्माण की सब समस्याओं का अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुकूल और मुख्यतः हमारे अपने ही प्रयास से स्वतंत्र रूप से हल किया है। हमारे लोगों ने संघर्ष चलाया है—आत्मनिर्भरता की क्रांतिकारी भावना के साथ—उस भावना के साथ जो हमसे यह मांग करती है कि अपने देश में क्रांति संपादन और समाजवाद और साम्यवाद का निर्माण हम अपने प्रयास से अपने राष्ट्रीय साधनों के उपयोग से करें और दूसरों पर आश्रित रहने का विचार त्याग दें।

ज़ूछे की स्थापना और आत्म-निर्भरता के प्रयासों के परिणामस्वरूप हम अपने देश की क्रांति को यथासंभव शीघ्रतिशीघ्र बढ़ाने में सफल हुए हैं, अनेक कठिनाइयों और परीक्षाओं पर पार पाने में सफलता और विजय पाने में सफल हुए हैं। ज़ूछे और आत्मनिर्भरता—हमारी उपलब्धियों की ये आधारभूत गारंटियां हैं।

आपने शायद युद्धविराम के ठीक बाद बनी हमारी फिल्म देखी हो—युद्ध ने हमारे देश में इतनी अधिक बरबादी कर दी थी। हर चीज जल गई थी, नष्ट हो गई थी। हमारे शहरों और गांवों में बस राख मिलती थी। उदाहरण के लिए प्योंगयांग

में लड़ाई के बाद कुछ नहीं बचा था, बस, कुछ घर थे। वे भी बुरी तरह टूटे हुए। सच, हमारा देश बड़ी कठिन हालत में था, मुसीबतों का पहाड़ हमारे सामने खड़ा था।

लेकिन हम जरा भी निरुत्साहित नहीं थे। हमने युद्ध के बाद पुनर्वास और निर्माण शुरू किया। हमें पूरा विश्वास था कि जब तक पार्टी, सत्ता, जनता और धरती हमारे पास हैं हर मुसीबत झेल कर हम फिर से अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। हमारी पार्टी ने लोगों को विश्वास दिलाया कि चाहे युद्ध ने लगभग सबकुछ ध्वस्त कर दिया है, अगर वे अपनी खुद की मेहनत पर भरोसा करें तो इस खंडहर से वे फिर उठ सकते हैं। और इससे प्रभावित होकर लोग उठ खड़े हुए और युद्धोपरांत पुनर्वास और निर्माण के भीमकाय संघर्ष में लग गए। पार्टी ने जीवन के हर क्षेत्र के लोगों को आवाज दी कि उनके पास जो भी था समाजवादी पितृभूमि के निर्माण के महायज्ञ में होम कर दें। जिनके पास शारीरिक शक्ति थी, जिनके पास बुद्धि भी थी उन्होंने बुद्धि दी और जिनके पास तकनीकी कौशल था उन्होंने अपना तकनीकी कौशल दिया।

पार्टी के आह्वान के जवाब में देश के सब लोग एक होकर उठ खड़े हुए और अपनी सारी शक्ति, बुद्धि और कौशल लगाकर साहसी संघर्ष में जुट गए। हमने मजदूरों ने अपने लिए मशीनें बनाईं, फैक्टरियां फिर से खड़ी कीं, वह बनाया जो पहले उनके पास नहीं था, और जिसकी उनके पास कमी थी उसका उत्पादन बढ़ाया। यही नहीं, उन्होंने नए वैज्ञानिक आविष्कार किए, नए तकनीकी सुधार किए, रचनात्मक सुझाव दिए और इस प्रकार देश के सामने जो पेचीदा समस्याएं थीं उनका अपने प्रयासों से हल निकाला। हमारे देश भक्त बुद्धिजीवियों ने विशेषकर महान योगदान किया।

मैं कुछ उदाहरण देता हूं।

जापानी साम्राज्यवादी शाखा के अंतर्गत हमारे देश के उत्तरी अर्द्धभाग में मुश्किल से ही कोई कपड़ा उद्योग रहा हो। कुछ हजार से अधिक तकुए नहीं थे और प्रति व्यक्ति कपड़े का उत्पादन कुल १४ सेंटीमीटर था। स्वाधीनता के बाद भी जनता को काफी कपड़ा मुहैया कराना आसान नहीं था। हमारे यहां अधिक वर्षा गरमी में होती है, इसीलिए कपास की उपज भी हमारे देश में नाममात्र होती है। अतः धागे की समस्या भी एक सिर दर्द थी।

हमारे वैज्ञानिकों ने अपनी आत्म-निर्भरता का सबूत दिया और इस कठिन समस्या का संतोषजनक हल खोज निकाला। हमारे देश में लाइमस्टोन पत्थर बहुतायत से होता है। कुछ वैज्ञानिकों ने इस पत्थर से विनालोन बनाने का तरीका निकाल लिया। इसी तरह कोरिया में पाए जानेवाले झाड़झंखाड़ से धागे निकालने का तरीका कुछ और वैज्ञानिकों ने खोज निकाला। इस प्रकार अपने आंतरिक कच्चे माल का

और अपने वैज्ञानिकों के प्रयासों का लाभ उठा कर हमने अपनी जनता के कपड़े की समस्या को पूरी तरह हल कर लिया।

हमारे लौह उद्योग के सामने भी कई अनसुलझी समस्याएं थीं। कोकिंग कोल हमारे देश में नहीं होता। लोहे के उत्पादन के लिए हमें कोकिंग कोल का आयात करना पड़ता था। हमारे यहां एंथ्रासाइट के अनंत भंडार हैं और हमारे वैज्ञानिक एंथ्रासाइट की सहायता से लोहा बनाने में सफल हो गए। परिणाम यही हुआ कि हमारे अपने कच्चे माल से लोहा बनाने का महामार्ग खुल गया। हमारे देश की स्वतंत्र अर्थव्यवस्था का आधार मजबूत करने वाला यह एक और महान योगदान था।

कुछ देशों में खाद का उत्पादन पानी के विद्युतीकरण से किया जाता है। इस प्रक्रिया में इतनी बिजली चाहिए जो हम नहीं दे सकते। हमारे वैज्ञानिकों ने हमारे देश में जो कोयला होता है उसके गैसीकरण से खाद उत्पादन का तरीका निकाल लिया है।

बहुत-सी ऐसी धातुएं मिली हैं जिनके बारे में धारणा थी कि वे हमारे देश में उपलब्ध नहीं हैं। इनके मिलने से भी हमारे देश के शीघ्र विकास में सहायता मिली है। ग्राम्य सिंचाई के क्षेत्र में बहुत कुछ किया गया है—ऐसे-ऐसे तरीके और रास्ते निकाले गए हैं जो कोरिया से बाहर प्रचलित नहीं हैं। मैं एक बार फिर कहूंगा कि निर्माण कार्य को अधिक गति इसलिए दी जा सकी कि हम अपने देश में ही प्राप्त कच्चे माल और निर्माण पदार्थों का उपयोग कर रहे थे।

शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में भी जूछे विचार और आत्मनिर्भरता की भावना को सफलतापूर्वक स्थापित किया गया है।

हमारे देश के कर्मकर और जनता आत्म-निर्भरता से ओतप्रोत हैं और उनमें महान आत्मविश्वास जागा है। पार्टी उनके लिए जो भी दायित्व निश्चित करे, वे बिना जरा झिझके उन्हें स्वीकार कर लेते हैं और काम कितना ही कठिन हो और भारी हो, अपने स्वयं के प्रयास और कौशल से उसे पूरा ही करके दम लेते हैं।

युद्धविराम के तुरंत बाद हम ब्लास्ट फरनेसों की पुनर्रचना और निर्माण कर रहे थे। हमारे पास तकनीशियन नहीं थे, उपकरण और सामान की कमी थी। काम आसान करने के लिए हम विदेशी तकनीशियनों को बुला सकते थे और उपकरण भी विदेशों से मंगा सकते थे। पर ऐसा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त धन नहीं था। अतः हमने कुछ साहसपूर्ण कदम उठाए। हमने तकनीकी कालेज के तृतीय वर्ष में पढ़ने वाले छात्रों को समय से पहले ही अस्थायी रूप से डिग्री दे दी और उनसे कहा कि वे धमन भट्टियों की रूपरेखा बनाएं और उनका निर्माण करें। वे लगभग २०० छात्र थे। उन्होंने दिन रात मेहनत की और एक वर्ष से कुछ अधिक समय में वे शानदार भट्टियां बनाने में सफल हो गए।

अगर हम विदेशी सहायता से भट्टियां बनाते तो भी हमें काफी समय और काफी धन लगाना पड़ता। एक साल तो उनका डिजाइन बनाने में ही लगता, एक और साल उन्हें बनाने में और फिर उन्हें लाने में और लगाने में भी काफी समय लगता। भट्टियां खड़ी होते-होते कम से कम चार-पांच साल तो लग ही जाते।

भट्टी बनाने के लिए बाहरी देशों का सहारा लें तो काफी बड़ी मात्रा में धन और समय लगाओ, अगर अपने स्वयं के प्रयासों के भरोसे काम करें तो एक साल जितने कम समय में अच्छी भट्टी बना लो ! अपने प्रयासों पर भरोसा करना कितना अच्छा है !

बिजली के रेल इंजनों जैसी चीजों के आयात के लिए भी बड़ी धन राशियां चाहिए। बाहरी देशों से बड़ी तादाद में बिजली के रेल इंजन मंगाना हमारे वश का नहीं था और हमें उनकी आवश्यकता थी। इसलिए हमने अपने कालेज के छात्रों और तकनीशियनों को अपने डिजाइन पर रेल इंजन बनाने का काम सौंप दिया। अब हमारे तकनीशियन इस स्थिति में हैं कि अपनी तकनीक और अपने प्रयास के सहारे वे बड़े अच्छे बिजली के रेल इंजन बना सकें और अब हम अपने देश की अधिकांश रेलवे लाइनों का विद्युतीकरण कर रहे हैं घर में बने रेल इंजनों के लिए।

जब भी हमें कोई अच्छी मशीन मिलती हम उसकी नकल कर लेते। हमने हर जगह हर-मशीन-पुर्जे-से-मशीन-पुर्जे बनाओ आंदोलन आरंभ किए और इस प्रकार राष्ट्र के मशीन बनाने के उद्योग का विकास किया। आज हम अपने आप कारें, ट्रैक्टर और विभिन्न प्रकार के हथियार बनाते हैं। अपनी आवश्यकता की लगभग हर चीज हम अपनी मेहनत से बनाते हैं।

इस प्रकार अपने प्रयासों पर भरोसा करके हमने एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद डाली है, देश के लिए अभेद्य रक्षा सामर्थ्य बनाई है और जनता की रोटी, कपड़े और मकान समस्याओं को पूरी तरह सुलझाने में सफल हुए हैं।

आज हमारे देश में निर्माण स्थलों पर व आधुनिक विदेशी मशीनें काम कर रही हैं, खेतों में हमारे अपने ट्रैक्टर चल रहे हैं और सड़कों पर 'चर्योक्गैङसाङ' (आत्म-निर्भरता) मोटर गाड़ियां दौड़ रही हैं। हमारी वीर जन सेना राष्ट्र की अभेद्य सुरक्षा पंक्ति की रक्षा हमारे मजदूर वर्ग द्वारा निर्मित शस्त्रों से करती है। यह सही है कि हमारे लोगों की आजीविका उतनी अधिक नहीं है जैसी कि विकसित देशों में होती है। फिर भी हम अपने खेतों में उगा चावल पेट भर खाते हैं और बाहरी देशों से खरीदने की जरूरत नहीं होती। हम अपने बनाए घरों में अच्छा जीवन बिताते हैं; अपने ही देश में बने कपड़े पहनते हैं और अपनी ही बनी दैनिक आवश्यकता की चीजें इस्तेमाल करते हैं।

जूछे की स्थापना और हमारे आत्म-निर्भरता के प्रयासों के परिणाम स्वरूप

हमने अपने कभी के पिछड़े, औपनिवेशिक कृषि प्रधान देश को इतने कम समय में इस विकसित समाजवादी औद्योगिक कृषि देश में बदल दिया है। आज हमारा राष्ट्र गारिमायुक्त राष्ट्र है जिसकी अवहेलना करने का आज किसी में साहस नहीं है।

कुछ कहते हैं कि छोटे देशों के लिए आवश्यकता नहीं है कि उसके पास पूर्णतः विस्तृत विकसित उद्योग हो और कुछ का कहना है कि हमारे लिए बेहतर होगा कि हम अपनी आवश्यकता की केवल कुछ ही चीजें स्वयं बनाएं और शेष बाहरी देशों से खरीद लें। निश्चय ही उत्पादक शक्तियों के विकास की किसी प्रदत्त स्थिति में हम बाहर से वे चीजें खरीद सकते हैं जो हमारे यहां नहीं बनतीं या जिनकी मांग हमारे यहां बहुत कम है। पर मुख्य बात तो है इस सिद्धांत की स्थापना कि हम अपने प्रयासों से अपने साधन स्रोतों का उपयोग करते हुए एक स्वतन्त्र राष्ट्रीय उद्योग का निर्माण करें। विशेषकर वे चीजें जिनकी मांग हमारे देश में काफी है, और वैसे ही कच्चे माल और अन्य पदार्थ तो हमें अपने आप उत्पादित करने ही चाहिए। ऐसा करके ही हम अपनी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की स्वतन्त्रता सुरक्षित कर सकते हैं

जूछे के विचार और आत्म निर्भरता की भावना से संकुचित राष्ट्रीयता का प्रश्न संलग्न नहीं है। हमारे जूछे की स्थापना और अपने स्वयं के श्रम पर भरोसा और बेहतर समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के लिए किया। कोरिया में रहना और कोरिया में समाजवाद और साम्यवाद की स्थापना करना कोरियावासियों का कर्त्तव्य है। अपना देश छोड़ कर किसी और देश में रहने तो वे नहीं जा सकते थे ! जा सकते थे क्या ? अगर हम आत्मनिर्भरता के सहारे कोरिया में समाजवाद और साम्यवाद का अच्छा निर्माण कर पाते हैं तो इसके यही अर्थ है कि हम अपने राष्ट्रीय कर्त्तव्य निभा रहे हैं और साथ साथ अंतरराष्ट्रीय कर्त्तव्यों के प्रति भी निष्ठा वान हैं। यह सब विश्व क्रांति के विकास में सहायक है।

जूछे की स्थापना और अपने प्रयासों पर निर्भरता से हमारा मतलब अन्तर-राष्ट्रीय एकता बंधु देशों में परस्पर सहयोग और सहायता को अस्वीकार करना नहीं है। हम लगातार जोर देते हैं कि देशों में अंतरराष्ट्रीय एकता को और शक्तिशाली बनाया जाना चाहिए और हम यह भी सोचते हैं कि हमें एक दूसरे के साथ सहयोग और सहायता करनी चाहिए।

युद्धोपरान्त पुनर्वास और निर्माण के कठिन काल में हमें अन्य समाजवादी देशों और विश्व के शांति प्रेमी लोगों से सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन मिला था। बिरादराना समाजवादी देशों से भी हमें कम सहायता नहीं मिली। युद्धोपरान्त पुनर्वास और निर्माण काल में हमारे देश को जो सफलताएं मिलीं उसमें इन मित्रों का सहायक हाथ भी था। इसके लिए हम आभारी हैं और हमें यह याद है।

हम बाहरी देशों के विकसित ज्ञान से लाभ उठाते हैं और अनेक अच्छे अनुभवों का उपयोग करते हैं। जब हम कोई वह काम करते हैं जिसका हमें पूर्ण अनुभव न हो या हम अपने लिए कोई बिलकुल नई चीज शुरू करें तो हम विदेशी सहायता भी लेते हैं। हम विदेशों से वे चीजें भी खरीदते हैं जो हमारे देश में होतीं ही नहीं। हमने सोवियत तकनीशियनों की सहायता से एक थर्मल पावर स्टेशन का निर्माण किया है। उनकी ही सहायता से हम एक तेल शोधक कारखाना बना रहे हैं क्योंकि तेल हमारे देश में अभी तक नहीं होता। पर यह भी निश्चय है कि अगली बार जब हम थर्मल पावर स्टेशन या तेल शोधक कारखाना बनाएंगे तो अपने तकनीशियनों से बनवाएंगे।

हम यह आवश्यक समझते हैं कि बंधु देशों को एक दूसरे से सहयोग और सहायता करनी चाहिए। हम अन्य देशों से सहायता लेते हैं पर उन पर पूरी तरह निर्भर नहीं होते। युद्धोपरान्त पुनर्वास और निर्माण के काल में भी हमने नियम बना लिया था कि हमें अपने प्रयासों पर निर्भर रहना चाहिए और विदेशी सहायता को हम बहुत अधिक महत्त्व नहीं देते थे। आज तो यह और भी अधिक है। विदेशी सहायता की अपनी सीमाएं होती हैं उसके पीछे कितनी ही अच्छी भावनाएं क्यों न हों, और किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के निर्माण में उसकी भूमिका सहायक ही हो सकती है। बाहरी देशों की सहायता से हम अपनी मांग पूरे संतोष के साथ समय रहते पूरी नहीं कर सकते।

अगर विदेशी सहायता पर बहुत अधिक जोर दिया जाए या दूसरों पर पूर्णतः निर्भर रहने की कोशिश की जाए तो लोगों का अपनी शक्ति में से विश्वास उठ जाता है और वे अपने ही देश के आन्तरिक स्रोतों को ढूंढ़ने के प्रयास से लापरवाह हो जाते हैं और अपनी अंधी आशाएं दूसरों पर टिका देते हैं या उनका अनुकरण करने लगते हैं। अंत में एक प्रभुसत्ता-सम्पन्न, स्वतन्त्र राज्य के निर्माण में सफलता असंभव हो जाती है। आप लेखक हैं—केवल दूसरों के लेखों की नकल करके या उनका अनुकरण करके न आप अच्छा लेख लिख सकते हैं, न अपनी लेखनी सुधार सकते हैं। स्वयं अपने मस्तिष्क का उपयोग करें तभी आप अच्छा लेख लिख सकते हैं या अपना लेखन स्तर उठा सकते हैं।

हमारा अपना अनुभव दिखाता है कि देश की सम्पन्नता और प्रगति का विकास करते हुए स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण में सफलता तभी संभव है जब जूछे की पूर्ण स्थापना हो और मुख्य बल आत्म निर्भरता पर दिया जाए।

समाजवादी निर्माण में आप हमारे देश की सफलता की इतनी प्रशंसा करते हैं। पर अभी तक यह आरंभिक सफलता ही है। अभी तक की अपनी सफलताओं से हम जरा भी आत्म-तुष्ट नहीं हुए हैं।

अभी हमें बहुत कुछ करना है। अभी तक हमने अपने देश को फिर से एक नहीं किया है। अब हमारी धरती का दक्षिणी अर्द्धभाग अभी तक विश्वसाम्राज्यवाद के रिंग-लीडर अमरीकी साम्राज्यवाद के आधिपत्य में है। हमारे राष्ट्र का सर्वोपरि क्रांतिकारी दायित्व है अमरीकी साम्राज्यवादियों को खदेड़ना ताकि हम अपने देश का पुनरेकीकरण संपादित कर सकें।

विभक्त धरती के पुनरेकीकरण के लिए और क्रांति की राष्ट्र-व्यापी विजय के लिए हमें गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्धभाग में समाजवादी निर्माण को और बेहतर करना होगा, सभी राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक क्षेत्रों में अपनी क्रांतिकारी शक्तियों को और बलवान बनाना होगा। हमारे सामने विशेष दायित्व है राष्ट्र के उद्योगों का तीव्र गति से विकास करके स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की बुनियादों को और मजबूत बनाना।

यह सही है कि हमारे सामने अनेक कठिनाइयां और मुसीबतें हैं। पर ये कठिनाइयां हाथ पर हाथ रखे बैठे रहने की नहीं हैं और मुसीबतें युद्ध में पीछे हटने की नहीं हैं। ये कठिनाइयां और मुसीबतें हमारे प्रगति के पथ की हैं।

हमारे लोगों के क्रांतिकारी ओज से हमारा मतलब है कि वे कठिनाइयों के सामने निराशा में डूब नहीं जाते, मुसीबतों के सामने हथियार नहीं डालते। इसके विपरीत हम हमेशा नये रास्ते निकालते हुए लगातार बढ़ते हुए नयी विजयों को प्राप्त करते हैं। पहले की तरह भविष्य में भी सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में जुछे की दृढ़ स्थापना करते रहेंगे और आत्म निर्भरता की क्रांतिकारी भावना का पूर्ण प्रदर्शन करेंगे और इस प्रकार तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों का साहस से सामना करेंगे और हमारे हिस्से आने वाले राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों को सगौरव पूरा करेंगे।

प्रश्न : कामरेड प्रधानमंत्री, अपने गणतन्त्र की स्थापना की बीसवीं जयन्ती के समारोह पर आपने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि खेद की बात है कि समाजवादी कैंप में मतभेद हैं, ऐसे मतभेद जो दूर किए जाने चाहिए। आपकी राय में सितम्बर १९६८ से समाजवादी कैंप के भीतर के ये मतभेद क्या और गहरे हो गये हैं ?

उत्तर : जैसा कि हमने पहले भी कहा था और अब भी कहते हैं—समाजवादी देशों के बीच मतभेद हैं और हम उन्हें छिपाने की कोशिश नहीं करेंगे।

लेकिन समाजवादी देशों के बीच के मतभेदों को साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच के विरोधों जैसा या विभिन्न सामाजिक एवं राज्य व्यवस्थाओं के-जैसे समाजवादी और साम्राज्यवादी देशों के बीच के विरोधों जैसा नहीं समझना चाहिए। सभी

समाजवादी देशों में सत्ता श्रमिक वर्ग के हाथ में है, उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व स्थापित हो चुका है, जिसका परिणाम यह है कि आदमी का आदमी के द्वारा शोषण और दमन समाप्त हो चुका है। इसलिए समाजवादी देशों के बीच वैसा विरोध नहीं हो सकता जैसा शत्रु वर्गों के बीच परिलक्षित होने वाले मूलतः विपरीत हितों में होता है।

समाजवादी देशों में जो मतभेद हैं वे हर अर्थ में वैसे हैं जैसे एक ही उद्देश्य के लिए लड़ने वाले महत्वपूर्ण देशों में हो सकते हैं। अगर समाजवादी देशों में मतभेद हैं तो मूलतः वे साम्राज्यवाद को कूतने के और समाजवादी विरोधी संघर्ष के दांव-पेंच और नीतिसम्बन्धी मतभेद हैं।

कुछ साम्राज्यवाद की विशेषतः अमरीकी साम्राज्यवाद की ताकत को बहुत ज्यादा आंकते हैं और यह सोच कर साम्राज्यवादी-विरोधी, अमरीका-विरोधी संघर्ष सक्रिय रूप से नहीं करते कि अगर साम्राज्यवादी आणविक बम विस्फोट कर दें तो सारी दुनिया तबाह हो जाएगी। हम इससे सहमत नही हैं।

यह सही है कि साम्राज्यवाद की ताकत को कम नहीं आंकना चाहिए, पर उसकी ताकत को बहुत ज्यादा भी नहीं आंका जाना चाहिए। साम्राज्यवाद, सर्वाधिक अमरीकी साम्राज्यवाद, पतनशील है।

अगर अमरीकी साम्राज्यवादी पतनशील नहीं हैं तो कोरिया युद्ध में वे क्यों हार गए? अगर पश्चिम में डूबते सूरज की तरह अमरीकी साम्राज्यवादियों का अन्त भी निश्चित नहीं हो चुका है तो दक्षिण वियतनाम में वे एक के बाद एक हार क्यों उठा रहे हैं? ये उदाहरण याद दिलाते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवाद के दिन अब गिने हुए हैं।

जब संयुक्त अरब गणराज्य साम्राज्यवाद के जूए से आजाद हुआ था, और नवजीवन के निर्माण की राह पर चलने का उपक्रम कर रहा था, तब जब राष्ट्रपति नासिर के नेतृत्व में संयुक्त अरब गणराज्य की जनता ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, तो युद्ध छेड़ने की साम्राज्यवादियों की हिम्मत नहीं हुई।

फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों से वीरतापूर्वक लड़ कर अल्जीरिया की जनता ने आजादी हासिल की। अफ्रीका के कई और देश भी साम्राज्यवादी जूए से निकल कर नवजीवन निर्माण की राह पर चल पड़े हैं। अफ्रीका महाद्वीप में साम्राज्यवाद का औपनिवेशिक शासन-तंत्र चरमरा कर टूट रहा है।

फिर, लातीन अमरीका में भी शांति है क्या? नहीं, कदापि नहीं। जनता के अमरीकी-विरोधी तानाशाही-विरोधी संघर्ष पूरे जोर से सामने आ रहे हैं। वह महाद्वीप जो कभी संयुक्त राज्य अमरीका का 'शांत पिछवाड़ा' कहलाता था वहां भी अमरीकी साम्राज्यवादी असहाय और चोट खाए हुए हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों

की नाक के ठीक नीचे क्यूबा की क्रांतिकारी जनता बहादुरी से समाजवाद का निर्माण कर रही है। हाल ही में, ज्यादा दिन नहीं हुए निक्सन के विशेष दूत को लातीन अमरीकी देशों में अमरीका-विरोधी प्रबल जन विरोधों का सामना करना पड़ा और अन्त में वहां से लौट आना पड़ा।

साम्राज्यवाद पर आक्रमण बाहर से ही नहीं बल्कि अंदर से भी हो रहा है और घोर संकट का सामना करना पड़ रहा है। स्वयं अमरीका में जातीय भेदभाव के विरुद्ध और प्रजातांत्रिक अधिकारों और स्वतन्त्रता का काले लोगों का संघर्ष और जनता का युद्ध-विरोधी संघर्ष चल रहे हैं। इस तरह फ्रांस में मजदूर वर्ग और जन साधारण ने संघर्ष छेड़ दिया और डी गाल के तानाशाही शासन को त्याग पत्र देने के लिए मजबूर कर दिया।

ये सब साम्राज्यवाद के पतन के लक्षण हैं।

आपने देखे ये हैं समाजवादी देशों के मतभेद—इन प्रश्नों पर कि साम्राज्यवाद की ताकत को कितना आंका जाए, उससे कैसे लड़ा जाए और लोगों के स्वाधीनता आंदोलनों का समर्थन कैसे किया जाए।

समाजवादी देशों के बीच के मतभेद कुछ वैसे हैं जैसे क्षणिक पारिवारिक झगड़े में होते हैं। कभी-कभी भाई भाई तक आपस में लड़ बैठते हैं तो यह कैसे संभव है कि भ्रातृत्वपूर्ण देशों के बीच मतभेद ही नहीं होंगे।

समाजवादी देशों के बीच मतभेदों पर यह है हमारा नजरिया।

खैर, जिस प्रश्न में आपकी अधिक रूचि है वह है कि क्या इस बीच मतभेद और अधिक बढ़े हैं। पर हम इस बात को इस तरह नहीं देखते।

क्योंकि समाजवादी देशों के बीच मतभेद अभी तक दूर नहीं हुए हैं तो झगड़े कभी बढ़ेंगे भी, कभी घटेंगे भी। इसके माने यह नहीं है कि मतभेद गहरे हो गए हैं और यह तो सोचा ही नहीं जा सकता कि समाजवादी देश एक दूसरे से पूर्णतः कट गए हैं।

अगर कोई एक समाजवादी देश पूरी तरह साम्राज्यवादियों के साथ चला जाता तो बिलकुल दूसरी बात होती। लेकिन जब से मतभेद आरम्भ हुए हैं किसी भी एक समाजवादी देश ने ऐसा नहीं किया है—इसलिए यह नहीं सोचा जा सकता कि समाजवादी देश एक दूसरे से बिलकुल अलग हो गए हैं। सभी समाजवादी देशों के लोग स्वतन्त्र और सुखी समाजवादी साम्यवादी समाज के निर्माण के साझे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष कर रहे हैं जिसकी मांग अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग करता है, जो विश्व साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष में विजयी होती रही है।

अंततोगत्वा समाजवादी देश अपने मतभेद दूर कर देंगे और एकमत होकर समाजवाद और साम्यवाद की विजय के लिए साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक साथ लड़ेंगे।

समाजवादी देशों को लड़ाने और तोड़ने की साम्राज्यवादी चालों का शर्मनाक अंत अवश्यंभावी है।

प्रश्न : क्या मैं यह समझूं कि आपकी पार्टी ने हाल ही में मास्को में हुई साम्यवादी और मजदूर पार्टियों की अंतर्राष्ट्रीय कानफ्रेंस में जो भाग नहीं लिया वस्तुतः वह निर्णय समाजवादी देशों के मतभेदों के इस विश्लेषण पर आधारित था ?

उत्तर : सिद्धान्त रूप से हमारी पार्टी को साम्यवादी और मजदूर पार्टियों की किसी अंतर्राष्ट्रीय कानफरेंस से कोई आपत्ति नहीं है। यह आवश्यक और अच्छा ही है कि बंधु पार्टियां एक मेज पर बैठें और अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवादी और मजदूर आन्दोलनों को बढ़ाने के लिए साथियों की तरह विचार विमर्श करें, कार्य में एकता के उद्देश्य से संघर्ष में साझे दायित्व निर्धारित करें। इस तरह की कानफ्रेंस से विश्व क्रांति के विकास की प्रगति की तरफ बढ़ा जा सकेगा और एकता के उद्देश्य में भी योगदान होगा।

पर बंधु पार्टियों की अंतर्राष्ट्रीय कानफ्रेंस के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कानफरेंस तभी बुलाई जानी चाहिए जब काफी तैयारियां की जा चुकी हों और जब परिस्थितियां परिपक्व हों। अगर वर्त्तमान परिस्थितियों में कोई अन्तरराष्ट्रीय कानफरेंस होती है तो बंधु पार्टियों के बीच के मतभेद शत्रुओं को और अधिक मालूम पड़ने की संभावना रहती है। साथ-साथ ऐसी किसी बैठक से एकता के उद्देश्य को भी लाभ नहीं होगा।

सभी बंधु पार्टियों की एकता की इच्छा के कारण और कोरिया की क्रांति और अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलनों के हित में, इस विश्वास के कारण कि अभी स्थिति परिपक्व नहीं है, हमारी पार्टी वर्त्तमान परिस्थितियों में पार्टियों की की किसी अंतरराष्ट्रीय कानफरेंस में भाग नहीं लेती। यही है हमारी पार्टी की सुसंगत स्थिति।

प्रश्न : कामरेड प्रधानमंत्री, दार-अल-तहरीर के समाचार पत्रों के माध्यम से आप संयुक्त अरब गणराज्य की जनता से कुछ कहना चाहेंगे ?

उत्तर : संयुक्त अरब गणराज्य के लोग राष्ट्रपति नासिर के नेतृत्व में अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता की रक्षा के लिए और साम्राज्यवाद के विरुद्ध, अमरीकी साम्राज्यवादियों व उनके अनुचर इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं। वे नव समाज निर्माण के संघर्ष में सफलताएं पा रहे हैं।

कोरिया की जनता को संयुक्त अरब गणराज्य की जनता की सफलता पर बहुत हर्ष है और आपके न्यायोचित संघर्ष के प्रति हमारी जनता सक्रिय समर्थन

और प्रोत्साहन का हाथ बढ़ाती है। आप के साम्राज्यवाद-विरोधी, उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष का हमारे लोग अपने राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के उद्देश्य में किया गया समर्थन मानते हैं।

कोरिया के लोग संयुक्त अरब गणराज्य के लोगों को अपने साथी सिपाही पाकर प्रसन्न हैं और अमरीकी तथा अन्य साम्राज्यवादियों के विरुद्ध साझे संग्राम में हमेशा कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ेंगे।

इस अवसर पर मैं आशा करता हूं कि विजित क्षेत्र से इस्राइली आक्रांताओं को बाहर खदेड़ने में, अरब लोगों का सम्मान बचाने में और सम्पन्न देश की रचना में संयुक्त अरब गणराज्य की जनता नई सफलताएं प्राप्त करेगी।

फिनलैण्ड की कम्युनिस्ट पार्टी के मुख-पत्र 'कानसान उतिसेत' के लिए फिनलैण्ड की डेमोक्रेटिक यूथ लीग के प्रतिनिधि मंडल द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

२ सितम्बर, १९६९

प्रश्न : अमरीकी साम्राज्यवाद ने जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के विरुद्ध अपनी गतिविधि तेज कर दी है। जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की थल, जल और नभ सीमा का अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा उल्लंघन, आपकी राय में, कहीं आपके देश के विरुद्ध विस्तृत सशस्त्र हस्तक्षेप की भूमिका तो नहीं है, जो अन्त में समग्र युद्ध में परिवर्तित हो सके ?

उत्तर : आपकी तरह सारे संसार के शांतिप्रेमी लोग हमारे देश में होनेवाली घटनाओं को गहरी रुचि से देखते हैं और हमारे देश की असाधारण स्थिति से चिंतित रहते हैं।

यह सही है कि आज स्थिति बहुत पेचीदा और संगीन है। अमरीकी साम्राज्यवादी लगभग हर दिन जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के विरुद्ध उत्तेजक कार्रवाई कर रहे हैं और स्थिति को पूरी तरह उकसा रहे हैं, बिगाड़ रहे हैं।

जहाँ तक अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा हमारी पावन भूमि के उल्लंघन का क्षेत्रीय जल और नभ के अनवरत उल्लंघन का प्रश्न है, ये कोई आकस्मिक घटनायें नहीं हैं बल्कि कोरिया में एक नया युद्ध छेड़ने की पूर्व नियोजित चालों की श्रृंखला की कड़ियाँ हैं।

दक्षिण कोरिया में घुसने के पहले दिन से ही अमरीकी साम्राज्यवादियों का नीचतापूर्ण उद्देश्य रहा है और अब भी है कि न सिर्फ दक्षिण कोरिया को अपना पूरा उपनिवेश बना लें बल्कि यह भी कि दक्षिण कोरिया को पायदान बनाकर पूरे कोरिया और एशिया और आगे बढ़ कर पूरे समाजवादी कैंप के विरुद्ध अपना आक्रमण आगे बढ़ाएं। अपने इसी जक्ष्य की पूर्ति के लिए वे हर संभव तरीके से दक्षिण कोरिया पर अपना औपनिवेशिक आधिपत्य बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं। संगीन के जोर

पर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में एक अत्यंत उग्र औपनिवेशिक फासिस्ट तनाशाही, एक कठपुतली शासन, खड़ा कर दिया जो बड़े सेवा भाव से उनकी सैनिक आक्रमण और औपनिवेशिक गुलामी की नीतियों का पालन करता है। इस शासन के माध्यम से और 'सहायता' का चुग्गा डाल कर उन्होंने दक्षिण कोरिया के सभी राजनीतिक, आर्थिक सांस्कृतिक और सैनिक मामलों को अपने कब्जे में कर लिया है और उसे अमरीकी आक्रमण का सैनिक अड्डा, संयुक्त राज्य अमरीका का सैनिक उपांग बना दिया है।

कोरिया में नया युद्ध भड़काने की अमरीकी कार्रवाईयां हाल ही के वर्षों में विशेष रूप से तेज की गई हैं। अब अमरीकी सैन्यवादियों ने अपना आदिम स्वभाव और स्पष्टता से उधाड़ दिया है और हर दिन ज़नवादी जन गणतंत्र कोरिया के विरुद्ध सशस्त्र उत्तेजनाएं हैं और स्थिति को युद्ध के कगार पर पहुंचा दिया है। अकेले पिछले वर्ष उन्होंने २००० से भी अधिक बार सैनिक सीमांकन रेखा के पार हमारे क्षेत्र में सशस्त्र आक्रमण की और हमारे गणतंत्र के उत्तरी अर्द्धभाग में उच्छेदक और विनाश की कार्रवाई करवाने के इरादे से कई जासूस घुसाए। इस वर्ष मार्च में कोरिया में अपनी एक और युद्ध की तैयारी को परखने के लिए, अमरीकी साम्राज्यवादियों ने एक बहुत ही उत्तेजनापूर्ण सैनिक कसरत तक की—'आपरेशन फोकस रेटिना' नाम से—जिसमें संयुक्त राज्य अमरीका से दक्षिण कोरिया तक आक्रामक सेना और युद्ध सामग्री बड़ी मात्रा में हवाई जहाज द्वारा लाए गए।

नया युद्ध छेड़ने के इरादे से अब अमरीकी साम्राज्यवादियों और भी खुले रूप में हमारे देश के विरुद्ध कई तरह की जासूमी कार्रवाइयां कर रहे हैं। एक तरफ तो वे खुले खजाने हमारे देश की जन सीमा में काफी गहरे अपने सशस्त्र गुप्तचर यान भेजकर शत्रुतापूर्ण उत्तेजनाएं प्रस्तुत करते हैं और दूसरी तरफ हमारी नम सीमा में आक्रामक आकाशी सर्वेक्षण बढ़ा रहे हैं। सारी दुनिया के लोग जानते हैं कि पिछले साल जनवरी में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं ने हमारी क्षेत्रीय जलसीमा में गहरे जासूसी करने के लिए अपना सशस्त्र गुप्तचर-यान 'प्यूब्लो' भेजा था। वे रंगे हाथ पकड़े गए थे और उन्हें पूरा दंड भोगना पड़ा। लेकिन इससे शिक्षा न लेकर वे अभी तक जासूसी कार्रवाइयां कर रहे हैं। जैसाकि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने स्वयं स्वीकार किया है कि इसके वर्ष के विगत महीनों में उनके सर्वेक्षण वायुयानों ने सैकड़ों बार हमारे क्षेत्र पर उड़ानें भर कर जासूसी कार्रवाई की है। पिछली १५ अप्रैल को उनका एक विशाल गुप्तचर वायुयान 'ईसी-१२१' हमारे गणतंत्र के क्षेत्रीय आकाश में गहरा पैठने के लिए भेजा गया था लेकिन गुप्तचरी की कार्रवाइयां करते हुए उस यान को कोरिया की लोक सेना के वीरों ने मार गिराया।

इस अमरीकी साम्राज्यवादियों के गुप्तचर यान ने हमारी नभ सीमा का उल्लंघन

किया था और हमारे विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कार्रवाई की थी अतः अंतर्राष्ट्रीय क़ानून के अंतर्गत अपनी स्वायत्तता का पालन करते हुए हमने इसे मार गिराया। हर देश के लोगों का यह पावन और अलंघनीय अधिकार है कि वे अपनी स्वायत्तता की रक्षा करें और जो लोग उनका अतिक्रमण करने की कोशिश करें उनके विरुद्ध आत्म-रक्षा के कदम उठाएं।

फिर भी क्योंकि उनके गुप्तचर यान को कठिन दंड उठाना पड़ा अमरीकी साम्राज्यवादी मूर्खतापूर्ण रूप से अपने अपराधपूर्ण कृत्यों को उचित सिद्ध करने के लिए भारी भरकम कुतर्क कर रहे हैं और भी अधिक अंधाधुंध युद्ध हिस्टीरिया से ग्रसित हो रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रांता घोषणा कर रहे हैं कि भविष्य में भी वे हमारे पर सर्वेक्षण उड़ाने भरते रहेंगे और उनके साथ 'सशस्त्र संरक्षक' भेजगे। वे ऐसी झूठी तस्वीर खींचते हैं कि जैसे हमारे देश के विरुद्ध गुप्तचर गतिविधि संयुक्त राज्य अमरीका की सुरक्षा के लिए कोई 'आवश्यक' गतिविधि हो और उनको किसी प्रकार का 'अधिकार' प्राप्त हो।

युद्ध का विश्व इतिहास दिखाता है कि साम्राज्यवादी इस प्रकार के उत्तेजनापूर्ण आक्रामक और संकल्पित कृत्य युद्ध की शुरूआत से तुरंत पहले ही करते हैं—विदेशी सैनिक प्रतिष्ठानों और अन्य सैनिक रहस्यों को मालूम करने के लिए और युद्ध छेड़ने का बहाना ढूंढ़ने के लिए।

आजकल अनेक अमरीकी साम्राज्यवादी उच्च सैनिक अधिकारी दक्षिण कोरिया आ रहे हैं और अग्रिम सेना रेखाओं व सैनिक अड्डों पर गतिविधि उकसा रहे हैं और लगभग हर महीने दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों की वाशिंगटन बुलाहट होती है—एक के बाद एक षड़यंत्र की रचना के लिए। इस से भी मालूम पड़ता है कि कोरिया में एक और नया आक्रामक युद्ध उकसाने के लिए वे कैसे पागलों से उतावले हो रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों ने संपूर्ण दक्षिण कोरिया में अब 'युद्ध संरचना' स्थापित कर ली है, उन्होंने दक्षिण कोरिया में स्थित अमरीकी आधिपत्य सेना और दक्षिण कोरिया की कठपुतली सेना को आपत्कालीन संघटन आदेश दे दिए हैं, और सैनिक सीमांकन रेखा के पास अपनी सेना की शक्ति बढ़ा कर 'विशेष सावधान' स्थिति को पहुंच गए हैं।

सभी लक्षणों को देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि अगर हम बहुत तेज क्रांतिकारी सतर्कता नहीं बरतेंगे और हर प्रकार की तैयारी—नहीं करेंगे तो अमरीकी साम्राज्यवादी किसी भी क्षण आक्रामण का नया युद्ध छेड़ सकते हैं। हमारे देश में बहुत तनाव की स्थिति है और खतरनाक परिस्थितियां खड़ी कर दी गई हैं। कल ही या परसों अमरीकी साम्राज्यवादी युद्ध शुरू कर सकते हैं। अगर अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके अनुचर हमें ऐसे ही उत्तेजित करते रहे तो हम भी हाथ बांधे बैठे रहने

वाले नहीं हैं और अगर इसी तरह आक्रमण और प्रत्याक्रमण की यह प्रक्रिया दोहराई जाती रही तो कालांतर में यह पूर्ण युद्ध में परिवर्तित हो सकती है।

प्रश्न : दक्षिण कोरिया की धरती पर अमरीकी सैनिक क्षमता में वृद्धि के कुछ उदाहरण हैं क्या ? अगर उसमें वृद्धि हुई है तो आपके मत में यह तनाव की पूर्व-नियोजित तीव्रता और पूर्ण युद्ध की आशंका से किस सीमा तक संबद्ध है ?

उत्तर : पूरे कोरिया और एशिया पर आधिपत्य जमाने के उद्देश्य से दक्षिण कोरिया क्योंकि अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण का सैनिक अड्डा है, इसलिए वहां पहले से ही भारी अमरीकी सैनिक क्षमता विद्यमान है। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में ६०,००० से अधिक अमरीकी और अन्य पिछलगू देशों की सशस्त्र सेनाएं वहां रखी हुई हैं और ७,००,००० की विशाल कठपुतली सेना भी वे वहां स्थायी रूप से बनाए हुए हैं। सैनिक आधिपत्य और 'सहायता' के माध्यम से उन्होंने दक्षिण कोरिया में वास्तविक सत्ता छीन ली है और मानवशक्ति और भौतिक स्रोतों को अपने सैनिक उद्देश्यों और युद्ध नीति के पूरी तरह अधीन कर दिया है।

युद्ध के बाद युद्धविराम समझौते का क्रमबद्ध उल्लंघन करके अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया में लगातार अपनी सैनिक क्षमता में वृद्धि की है और विशेषतः हाल ही के वर्षों में अपनी सेना की क्षमता को बढ़ाने के कार्यक्रम पर चल पड़े हैं। जनवादी जन गणतंत्र कोरियाई के विरुद्ध एक और आक्रामक युद्ध के लिए दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों की व्यग्र तैयारी से इसका सीधा संबंध है।

आक्रामक युद्ध के लिए अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया में अमरीकी आधिपत्य सेना को कुमुक पहुंचा रहे हैं और अपनी युद्ध क्षमता को और भी बढ़ा रहे हैं। वे दक्षिण कोरिया में बड़ी मात्रा में सामरिक आणविक शस्त्र, नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र, और महाविनाश के अन्य अस्त्र पहले ही ला चुके हैं और पिछले दिनों उन्होंने विशाल शस्त्र शक्ति वाले ७१ वें कृत्यक बेड़े की रचना की है और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के समीप उसे स्थापित कर दिया है। इसके साथ साथ दक्षिण कोरियाई अड्डों पर उन्होंने युद्धक बमवर्षकों की संख्या सैकड़ों में बढ़ा ली है।

दक्षिण कोरिया में अपनी सैनिक सामर्थ्य बढ़ाने में अमरीकी साम्राज्यवादियों की विशेष रुचि दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना की संख्या को और बढ़ाने और उसके सैनिक उपकरणों को आधुनिक करने में है।

दक्षिण कोरिया की कठपुतली सेना भाड़े की औपनिवेशिक सेना है और इसका एकमात्र काम अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रमक नीति की सेवा करना है। अमरीकी साम्राज्यवादी स्वयं अपनी आक्रमण सेना के बजाय कठपुतली सेना का

विस्तार इतने बड़े पैमाने पर अकारण ही नहीं कर रहे। दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना की एक डिवीजन पर अमरीकी साम्राज्यवादियों को रखरखाव का खर्चा उसका केवल पच्चीसवां भाग बैठता है जो उन्हें अपनी स्वयं की आक्रमण सेना की एक डिवीजन पर करना पड़ता है। इसलिए अमरीकी साम्राज्यवादी युवा और अधेड़ दक्षिण कोरियावासियों को सेना में दाखिल होने के लिए मजबूर करते हैं और अपने आक्रामक उद्देश्यों में इस्तेमाल करते हैं और इस प्रकार अपना सैनिक व्यय भी काफी कम कर लेते हैं। इसके अलावा अपनी सेनाओं के इस्तेमाल के बजाए विशाल कठपुतली सेना को काम में ला कर वे यह 'विश्वास' फैलाना चाहते हैं कि जैसे दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना किन्हीं राष्ट्रीय हितों की सेवा कर रही हो, और स्वयं अपने आपको वे 'सहायक' के रूप में सुंदर सजावट के तौर पर पेश करते हैं।

इसी उद्देश्य से युद्धविराम के बाद से अब तक अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया की कठपुतली सेना की थल सेना को कुल १६ डिवीजनों से बढ़ाकर २९ डिवीजन और ४ ब्रिग्रेड का बना दिया है, आणविक और नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र यूनिटें सक्रिय कर दी हैं और दक्षिण कोरियाई जल और नभ सेना के विशाल विस्तार को भी प्रोत्साहन दिया है।

प्यूबलो कांड और ईसी १२१ गुप्तचर वायुयान के मार गिराए जाने के बाद से तो अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके अनुचर और भी क्रुद्ध हो उठे हैं और दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना की संख्या बढ़ाने की अपनी चालें और भी व्यग्रता से कर रहे हैं। कठपुतली सेना से विसैन्यीकरण रोक कर, सैनिक सेवा का सत्र बढ़ा कर, पीछे रहने वाली रिजर्व डिवीजनों को युद्ध के डिवीजनों में बदल कर और नई टुकड़ियां संगठित करके पिछले साल दो साल में दक्षिण कोरिया में कठपुतली सेना की संख्या में लगभग १,००,००० की वृद्धि हुई है।

विशेष ध्यान देने की जो चीज है वह है अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों द्वारा 'होमलैंड रिजर्व फोर्स' स्थापित करने के षड्यंत्र। दक्षिण कोरिया में स्थानीय भाड़े के सैनिकों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से अमरीकी साम्राज्यवादियों ने 'होमलैंड रिजर्व फोर्स' बना डाली और दक्षिण कोरिया के बीस लाख से भी अधिक युवकों और अधेड़ों को दाखिल होने के लिए मजबूर किया और अब उसका पूर्ण सशस्त्रीकरण कर रहे हैं। उन्होंने 'होमलैंड रिजर्व फोर्स' को कठपुतली सेना के कमांड के नीचे रख दिया है, उस पर सैनिक प्रशिक्षण लाद दिया है और 'आवाहन दस्तावेज' तक तैयार करवा चुके हैं ताकि कभी भी यह फोर्स युद्ध में झोंकी जा सके।

आक्रमण और युद्ध की अमरीकी साम्राज्यवादियों की नीति की आवश्यकताओं के अनुकूल आज पूरे दक्षिण कोरिया में सैनिक हवाई अड्डे, बंदरगाह, प्रक्षेपास्त्रों के अड्डे, सामरिक सड़कें और अन्य अनेक तरह के सैनिक अड्डे और अधिष्ठान बनाए

जा रहे हैं, या बड़े पैमाने पर बढ़ाए जा रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया को एक विशालकाय सैनिक कैंप बना डाला है। वहां विशाल सशस्त्र सेनाओं का जमाव है। हर चीज युद्ध नीति से जुड़ी है। वह नए युद्ध को उकसाने का एक कवायद क्षेत्र बन गया है। इससे जनवादी कोरियाई गणतंत्र को 'ताकत' से विजित करने का अमरीकी साम्राज्यवादियों का आक्रामक षड्यंत्र पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों के दक्षिण कोरिया में सैनिक क्षमता विस्तार के इन कृत्यों से तनाव बढ़ता जा रहा है और हमारे देश में नए आक्रामक युद्ध का खतरा प्रति दिन बढ़ रहा है।

प्रश्न : क्या आपकी राय में कोरिया में पूर्ण युद्ध का विस्फोट रोका जा सकता है।

उत्तर : हमारे देश में अमरीकी साम्राज्यवादियों की युद्धोत्तेजक गतिविधियों और आक्रामक चालों से स्थिति तनावपूर्ण हो गई है पर मेरी राय में अगर हम शांति की रक्षा के लिए सक्रिय संघर्ष करें तो संपूर्ण युद्ध रोका जा सकता है।

हमारे राज्य और समाजतंत्र का सच्चा स्वभाव हर प्रकार के शोषण और दमन के विरुद्ध है। और इसी से उद्भूत होती है जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की विदेश नीति, जो दूसरे देशों के विरुद्ध आक्रमण का विरोध करती है और शांति और प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के लिए संघर्ष करती है। हम कोरियावासी शांति प्रेमी लोग हैं। हम किसी को उत्तेजित करने में पहल नहीं करना चाहते। हमने अपने इतिहास में विदेशी भूमि के एक इंच क्षेत्र पर भी कब्जा नहीं किया है। न ही हमने अन्य देशों की स्वायत्तता और सुरक्षा का लेशमात्र भी अतिक्रमण किया है।

हां, आक्रमण और युद्ध साम्राज्यवादियों का तो धंधा ही है, उनके अस्तित्व का मूल आधार है। आक्रमण और युद्ध साम्राज्यवाद के सतत साथी हैं। विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवाद ने तो संसार में हर जगह हर तरह की क्रूर लूटमार की है, अपने जन्म के पहले दिन से ही क्रूर और बर्बर युद्ध किये हैं और करोड़ों अरबों लोगों के खून पसीने से अपना मोटापा बढ़ाया है।

आज जो कोरिया में परिस्थिति एकदम बिगड़ गई है और यह खतरा पैदा हो गया है कि कभी भी युद्ध छिड़ सकता है—वह इसलिए नहीं कि हमने संयुक्त राज्य अमरीका की भूमि पर अतिक्रमण किया है या उसकी स्वायत्तता और सुरक्षा को खतरा पैदा किया है, बल्कि इसलिए अपने देश से हजारों मील दूर अमरीकी साम्राज्यवादी हमारे देश आए हैं और उन्होंने कोरियाई जनता के विरुद्ध अपनी आक्र-

मण और युद्ध की नीतियों को हवा दी है। कोरिया में युद्ध का स्रोत है दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों का आधिपत्य और जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के प्रति उनकी युद्ध नीति। अतः कोरिया में संपूर्ण युद्ध का विस्फोट भी पूरी तरह अमरीकी साम्राज्यवादियों पर निर्भर करता है।

कोरिया में युद्ध रोकने के लिए विस्फोट का यह स्रोत हटाया ही जाना चाहिए। अगर अमरीकी साम्राज्यवादी हमारे देश के दक्षिणी अर्द्ध भाग से चले जाएं, अपने साथ अपनी आक्रमण सेना और घातक अस्त्र ले जाएं और जनवादी लोक गणतंत्र कोरिया के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण कार्रवाई से बाज आ जाएं तो कोरिया में संपूर्ण युद्ध रोका जा सकता है और शांति बरकरार रखी जा सकती है।

कोरिया से आक्रामक अमरीकी साम्राज्यवादी सेना हटने के बाद हम एक शांति समझौता कर सकते हैं जिसके अनुसार उत्तर और दक्षिण एक दूसरे पर आक्रमण न करने की शपथ ले सकते हैं और ऐसे काम उठा सकते हैं कि उत्तर और दक्षिण कोरिया अपनी सेनाएं १,००,००० या उससे कम करने के लिए राजी हो जाएं। यह कोरिया में स्थायी शांति बनाएं रखने की विश्वसनीय गारंटी बन सकती है।

आक्रामक अमरीकी साम्राज्यवादी सेना के हटने के बाद इस प्रकार उत्तर और दक्षिण कोरिया में शांति समझौते का संपादन और दोनों की सेना में भारी कटौती ही कोरिया में संपूर्ण युद्ध रोकने और युद्ध का खतरा हटाने का एकमात्र रास्ता है।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादी इसका सख्त विरोध करते हैं और युद्ध की राह पर खतरनाक तरीके से बढ़े जा रहे हैं।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और कोरियाई जनता ने अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों द्वारा नए युद्ध को भड़काने की अंधाधुध कोशिशों को रोकने का और इस प्रकार कोरियाई युद्ध विराम को मजबूत करने का और शांति बनाए रखने का हर प्रयास किया है और अभी तक कर रही है। यह जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और कोरिया की जनता के अत्यंत धैर्य और अटल संघर्ष की और विश्व के शांतिप्रेमी लोगों के संघर्ष का ही प्रताप है कि आज कोरिया में शांति बरकरार है।

कोरियावासियों को यह अच्छी तरह मालूम है कि अमरीकी साम्राज्यवादियों से भीख मांग कर शांति की रक्षा नहीं की जा सकती, कि युद्ध भड़काने की साम्राज्यवादी चालों को दबाने के लिए गंभीर और निरन्तर संघर्ष कर के ही शांति जीती जा सकती है। पहले की तरह भविष्य में भी अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रमण की चालों को रोकने के लिए और कोरिया में शांति की रक्षा के लिए कोरिया की जनता पूरे संकल्प से संघर्ष करेगी।

हम युद्ध रोकने और शांति बनाए रखने के संघर्ष में डटे रहेंगे; साम्राज्यवादी

अपने हथियारों की ताकत से हम पर टूट पड़ेंगे—इसका हमें डर नहीं है। हमारी लगातार चेतावनियों और विश्व के शांति प्रेमी लोगों की सर्वसम्मत निन्दा के बावजूद अगर अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके अनुचर जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के विरुद्ध संपूर्ण युद्ध छेड़ने की हद तक जाने को तैयार हों तो हम भी उनके विरुद्ध संपूर्ण युद्ध घोषित कर देंगे और हम पर आक्रमण करने वालों का पूर्ण विनाश कर देंगे। हम कोरियावासी वाल स्ट्रीट के युद्धोत्तेजकों के औपनिवेशिक गुलाम कभी नहीं बनेंगे चाहे शत्रु के विरुद्ध निर्णायक युद्ध में हमें अपनी जान ही क्यों न गंवानी पड़े। अपनी प्रिय पितृभूमि की और अपने रक्त से अर्जित समाजवादी लाभों की विदेशी आक्रांताओं से रक्षा हम प्राणपण से करेंगे।

प्रश्न : दक्षिण कोंरिया में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को दबाने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद क्या तरीके इस्तेमाल कर रहा है? आपकी राय में इस आंदोलन के विकास की सम्भावनाएं क्या हैं?

उत्तर : दक्षिण कोरिया की क्रांति अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वाधीनता की क्रांति है और सामंतशाही शक्तियों के विरुद्ध प्रजातांत्रिक क्रांति है। अमरीका साम्राज्यवादियों ने हथियारों के जोर पर दक्षिण कोरिया पर अपना आधिपत्य जमा लिया है और उसे पूरी तरह अपना उपनिवेश और सैनिक अड्डा बना डाला है। अपना औपनिवेशिक शासन बनाए रखने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादी जमींदारों, पूंजीपतियों ओर नौकरशाहों का सहारा लेते हैं जो अमरीकी साम्राज्यवाद के सलाहकार और स्वामी भक्त दलाल बन गए हैं। जमींदार वर्ग अमरीकी साम्राज्यवादियों के संरक्षण में किसान जनता का निर्दय शोषण और दमन करता है। पूंजीपति फालतू अमरीकी माल और पूंजी का आयात करके, हमारे देश के साधन लूट कर और अमरीकियों को बेचकर और अमरीकी साम्राज्यवाद के भाड़े के सैनिकों को युद्ध सामग्री सप्लाई करके मुनाफा कमाने में लगे हैं। अतः दक्षिण कोरिया की क्रांति का प्रमुख दायित्व है—अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा दक्षिण कोरिया के आधिपत्य का विरोध करना और अमरीकी आक्रमण सेना को बाहर खदेड़ना, अमरीकी साम्राज्यवादियों के सहयोगी जमींदारों, पूंजीपतियों और नौकरशाहों के शोषण और दमनचक्र का विरोध करना और दक्षिण कोरियाई समाज का प्रजातांत्रिक विकास सुरक्षित करना।

स्वाधीनता से आज के दिन तक दक्षिणी कोरिया के मजदूरों, किसानों, देशभक्त युवकों और छात्रों, बुद्धिजीवियों, मध्यम वर्गियों और यहां तक कि चेतनाशील राष्ट्रीय पूंजीपतियों ने इस दायित्व को पूरा करने के लिए प्रबल संघर्ष किए हैं और अमरीकी साम्राज्यवाद के औपनिवेशिक शासन को जड़ से हिला दिया है और

अमरीकी साम्राज्यवादियों व उनके अनुचरों को अंधी गली में धकेल दिया है।

अमरीकी साम्राज्यवादी इससे इतने परेशान हो चुके हैं कि अपने औपनिवेशिक शासन को – उस शासन को जो दक्षिण कोरिया में पूरे दीवालियापन के कगार पर खड़ा है– बचाने के लिए और उन तमाम सामाजिक और राजनीतिक तत्त्वों को जो उनके औपनिवेशिक शासन और युद्ध नीति के पालन में बाधा हैं, नष्ट करने के लिए उन्हें स्पष्ट सैनिक फासिस्ट तानाशाही का सहारा लेना पड़े।

अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके अनुचरों ने हर प्रकार के कुटिल फासिस्ट कानून बना कर दमन तंत्र का बहुत विस्तार कर लिया है। उन्होंने पूरे दक्षिण कोरिया को सैनिक, पुलिस, जासूसी और गुप्त सेवा के जाल से पाट दिया है और उसे आतंक और दमन का जीवित नरक बना दिया है। जनता की सब स्वाधीनताओं और प्रजातांत्रिक अधिकारों को रौंदते हुए, देशभक्त प्रजातांत्रिक शक्तियों को बेरहमी से कुचलते हुए वे जंगली जानवरों से दौड़ रहे हैं। सभी प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियां, सामाजिक संस्थाएं और समाचार पत्र इस कठोर दमन के लक्ष्य बन गये हैं। अस्तित्व के अधिकार, प्रजातांत्रिक स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय स्वाधीनता और देश के पुनरेकीकरण के लिए जो क्राँतिकारी और देशभक्त लोग उठ खड़े हुए हैं उन्हें पकड़ा जा रहा है, जेलों में रखा जा रहा है और अन्धाधुंध मारा जा रहा है। अभी हाल ही में अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों ने अनेक क्रांतिकारी और देश भक्त हस्तियों को, जिसने दक्षिण कोरिया की क्रांतिकारी पुनरेकीकरण पार्टी' के प्रमुख कार्यकर्ता किम जोंग ताए भी थे, पकड़ लिया, कैद कर लिया और मार डाला। उनका कसूर बस इतना ही था कि उन्होंने प्रजातन्त्र और स्वतन्त्रता की मांग की थी। हर जगह फैली हुई 'गुप्तचर राजनीति जो मानवीय अधिकारों का हनन करती है और बल राजनीति जो जनमत की अवहेलना करती है' में दक्षिण कोरिया के समाज को 'वायुहीन आकाश, जलहीन धरती और प्रकाशहीन समाज' बना डाला है, 'प्रजातन्त्र का खंडहर' बना दिया है। इस प्रकार कोरिया में स्थापित सैनिक फासिस्ट तानाशाही पूरी भक्ति से औपनिवेशिक दासता और युद्ध की अमरीकी साम्राज्यवादी नीतियों की सेवा कर रही है। अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा प्रवर्तित इस दक्षिण कोरियाई तानाशाही ने क्रूरता और बर्बरता में हिटलर और तोजों की तानाशाहियों को मात कर दिया है और सब उपनिवेशों में साम्राज्यवाद के घृणित फासिस्ट शासन की आदर्श रूपरेखा बन गई है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों की आक्रमण और युद्ध की नीतियों के सैनिक व्यय के भारी बोझ से और फासिस्ट दमन चक्र से दक्षिण कोरिया की जनता की गरीबी और अधिकारहीनता सीमा तक पहुंच चुकी है और राष्ट्र सम्मान कुचला जा चुका है और प्रतिदिन सामाजिक व्यग्रता बढ़ती जा रही है।

दक्षिण कोरिया के क्रांतिकारी और देशभक्त लोग अमरीका-विरोधी राष्ट्रीय स्वाधीनता का संग्राम निरंकुश फासिस्ट दमन की बड़ी कठिन परिस्थितियों में चला रहे हैं। इस कारण दक्षिण कोरिया के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के सामने बड़ा कठिन मार्ग है। लेकिन कोई कठिनाई, शत्रु का कैसा भी मदोन्मत्त प्रयास दक्षिण कोरिया के क्रांतिकारी आन्दोलन की प्रगति को नहीं रोक सकता।

जहां कहीं शोषण और दमन हैं, वहां जनता का क्रांतिकारी संघर्ष होगा ही। जहां दमनकर्त्ता अपने अत्याचार बढ़ायेंगे वहां दमन के विरुद्ध जनसंघर्ष अधिक संगठित और अटल हो जाएगा।

अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया में अपना फासिस्टी दमन जितना तीव्र करेंगे उन्हें दक्षिण कोरिया की जनता के उतने ही अधिक असंतोष और उतने ही शक्तिशाली प्रतिरोध का सामना करना पड़ेगा।

आज दक्षिण कोरिया में प्रजातन्त्र और प्रतिक्रियावाद में मुकाबला बहुत तेज हो गया है। साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियां अकेली पड़ कर क्षीण होती जा रही हैं और देशभक्त क्रांतिकारी शक्तियां बढ़ रही हैं।

राष्ट्रीय और वर्ग चेतना क्रमश: बढ़ रही है; दक्षिण कोरियाई जनसमूह में अमरीका-विरोधी भावनाएं उग्र हो रही हैं। दक्षिण कोरिया की जनता का क्रांति संग्राम लगातार बढ़ रहा है और तीव्र अमरीका-विरोधी राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष विभिन्न रूपों में विकसित हो रहा है। मजदूरों और किसानों में जड़ें जमा कर, और ये ही वर्ग इस क्रांति की प्रमुख शक्तियां हैं, यह संबर्ष और अधिक संगठित हो गया है और जीवन व्यापार के हर क्षेत्र के विशाल जन-समूह में तेजी से फैल रहा है। दक्षिण कोरिया का जन संघर्ष, जो आजकल पाक जुंग ही गिरोह की दीर्घकाल तक सत्ता में बने रहने की कोशिशों के विरोध में तेजी से जोर पकड़ रहा है, स्पष्ट रूप से सिद्ध कर देता है कि अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके अनुचरों के कठोरतम फासिस्ट दमन के बावजूद दक्षिण कोरिया का राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन बढ़ता चला जा रहा है। कठिन परिस्थितियों में तीव्र क्रांतिकारी संघर्ष दक्षिण कोरिया की जनता को और सचेतन बना देगा, और तपा देगा। वहां के लोग ऐसी अदम्य क्रांतिकारी शक्ति बन जाएंगे जो कैसे भी क्रूर शत्रु को हरा सकेगी। उपयुक्त क्रांतिकारी स्थिति आते ही वे अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों को निश्चयपूर्वक चकनाचूर कर देंगे और क्रांति को पूर्णत: विजयी करेंगे।

प्रश्न : कोरिया का राष्ट्रीय पुनरेकीकरण प्राप्त करने का श्रेष्ठ साधन क्या है?

उत्तर : कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर हमारा रुख कई अवसरों पर स्पष्ट किया जा चुका है।

हम कहते रहे हैं और अब भी कहते हैं कि कोरिया के पुनरेकीकरण का प्रश्न स्वयं कोरिया की जनता द्वारा प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों के अनुकूल, शांतिपूर्ण तरीके से स्वतन्त्रतापूर्वक और बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के सुलझाया जाना चाहिए।

पुनरेकीकरण का प्रश्न कोरिया की जनता का आंतरिक मामला है—किसी भी विदेशी शक्ति को इसमें पड़ने की अनुमति नहीं दी जा सकती। हम अपने राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का प्रश्न कभी भी विदेशियों को नहीं सौंप सकते। और विदेशी लोग हमारे राष्ट्र की गृह समस्याओं को कभी सुलझा नहीं सकते। कोरिया का प्रश्न स्वयं कोरियावासियों द्वारा अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप अपने ही प्रयत्नों से हल किया जाना चाहिए। हमारा राष्ट्र सभ्य और बुद्धिमान राष्ट्र है और स्वयं अकेले ही अपनी राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में पूरी तरह समर्थ है।

उत्तर और दक्षिण के पुनरेकीकरण की जो हमारे राष्ट्र की चिरकालीन आकांक्षा है अभी तक सिर्फ इसलिए पूरी नहीं हो सकी है कि अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य जमा रखा है, वे हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं और राष्ट्र के विभाजन की नीति बरत रहे हैं। अगर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया पर गैर कानूनी तरीके से आधिपत्य न कर लिया होता और हमारी जनता के उद्देश्य—राष्ट्रीय पुनरेकीकरण—को रोक न दिया होता तो हम कभी का, देश को फिर से एक कर चुके होते और तीन हजार 'री' क्षेत्र में फैली पुनरेकीकरण धरती पर चार करोड़ कोरिया वासी सुखी जीवन बीता रहे होते। दक्षिण कोरिया पर उनका आधिपत्य और उनकी आक्रमण नीति हमारे राष्ट्र की सब मुसीबतों का कारण है और कोरिया के पुनरेकीकरण के मार्ग में मुख्य बाधा। अगर कोरिया का पुनरेकीकरण होना है तो पहले अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को दक्षिण कोरिया से जाना होगा।

केवल उस स्थिति में कि जब विदेशी सेनाएं हट चुकी हों और बाहरी शक्तियों का कोई हस्तक्षेप न हो, केवल उस स्थिति में ही प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों के आधार पर उत्तर और दक्षिण में आप चुनाव करवा कर हम संयुक्त केन्द्रीय सरकार की स्थापना करके अपने देश का पुनरेकीकरण कर सकते हैं।

इस आम चुनाव के लिए सब से पहले यह देखना आवश्यक है कि उत्तर और दक्षिण कोरिया में सब राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थानों और व्यक्तियों को भाषण, मुद्रण, सभा, संगठन और प्रदर्शन की स्वतन्त्रता के साथ-साथ राजनीतिक गतिविधि की पूरी छूट हो। इसके साथ साथ उत्तर और दक्षिण कोरिया के सब नागरिकों को अपने पार्टी-संबंधों, राजनीतिक विचारों, संपत्ति स्तर, शिक्षण स्तर,

धार्मिक विश्वास अथवा लिंग भेद के बावजूद वोट देने के और चुनाव में खड़े होने के समान अधिकार मिलने चाहिए। अतः आबादी के सभी स्तरों के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली संयुक्त प्रजातांत्रिक सरकार की स्थापना जनता की स्वतन्त्र विचार अभिव्यक्ति को रोकने या दबाने वाले तत्त्वों को हटाने के बाद ही पूर्णतः प्रजातांत्रिक वातावरण में गुप्त मतदान के आधार पर आम, समान और सीधे मतदान के सिद्धांत पर हुए चुनावों द्वारा ही हो सकती है।

हमारी राय में कोरिया के पुनरेकीकरण का यह सर्वाधिक यथार्थवादी रास्ता है और यह प्रस्ताव एक उचित, युक्तियुक्त और सर्वमान्य है।

देश के पुनरेकीकरण के लिए स्वाधीनता से अब तक हमने हर संभव प्रयत्न किया है।

अगर तुरन्त ही सारे उत्तर और दक्षिण कोरिया में स्वतन्त्र आम चुनाव अभी नहीं हो सकता तो हमने राष्ट्र की साझी और तत्कालिक समस्याओं से निपटने के लिए और पूर्ण एकीकरण के लिए धीरे धीरे काम करने के लिए अंतरिम कदम के रूप में उत्तर और दक्षिण कोरिया के परिसंघ की स्थापना का प्रस्ताव भी रखा है। हमारे द्वारा प्रस्तावित परिसंघ का मतलब है उत्तर और दक्षिण कोरिया की विद्यमान राजनीतिक प्रणालियों को बरकरार रखते हुए जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार और दक्षिण कोरियाई अधिकारियों द्वारा समान संख्या में नियुक्त प्रतिनिधयों की एक सर्वोपरि राष्ट्रीय समिति की स्थापना। यह सर्वोपरि राष्ट्रीय समिति एक ऐसी संस्था होनी चाहिए जिसका प्रमुख कार्यक्षेत्र हो कोरिया के दोनों भागों के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में तालमेल बैठाना और राष्ट्र के समान हितों में उत्तर और दक्षिण के बीच परस्पर सहयोग और आदान प्रदान प्रवर्तित करना।

हमने कहा कि अगर दक्षिण कोरिया परिसंघ को भी स्वीकार न करे तो फिलहाल राजनीतिक प्रश्नों को एक तरफ करके विभक्त राष्ट्र के कष्टों को कम करने के लिए उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक आदान प्रदान और व्यक्तियों का आवागमन तो हो। उनके यह भी स्वीकार न करने की स्थिति में हमने उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच पत्रों के आवागमन की अनुमति का मानवीय प्रस्ताव रखा।

अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनकी दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों ने हमारे ये सब उचित प्रस्ताव ठुकरा दिये हैं और हमारे धैर्यपूर्ण निष्ठावान प्रयत्नों का जवाब बारंबार आक्रामक उत्तेजनाओं से दिया है।

परिणाम यह है कि स्वाधीनता से आज तक एक नई पीढ़ी बड़ी हो चुकी है और देश के पुनरेकीकरण के स्थान पर हमारे लोग एक ऐसा अतिरिक्त असामान्य जीवन बसर कर रहे हैं जिसमें मां बाप, पत्नियां और बच्चे, सम्बन्धी और मित्र एक

दूसरे से अलग रहते हैं—कोई उत्तर में, कोई दक्षिण में—और एक दूसरे से पत्र-व्यवहार तक नहीं कर पाते ।

तो क्या कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों ने हमारे उचित प्रस्तावां के विरोध में एकीकरण के लिए हमारे सामने अपने प्रति-प्रस्ताव रखे हमारी स्वीकृति के लिए ? नहीं, कभी नहीं ।

और अब शांतिपूर्ण एकीकरण के उच्चारण मात्र पर ही अमरीकी साम्राज्यवादी और दक्षिण कोरियाई कठपुतली गिरोह दक्षिण कोरिया में हर किसी को जबर्दस्ती गिरफ्तार करके जेल में डाल देते हैं और कठोर उन्मत्त दमन चक्र चला रहे हैं और हर प्रकार से कोरिया के विभाजन को स्थायी बनाने की चालें चल रहे हैं । इस स्थिति में जब तक दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके वर्त्तमान कठपुतली शासकों को बने रहने दिया जाएगा, कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की बात तक सोचना एक प्रकार से असंभव है ।

कोरिया का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण तभी संभव है जब दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रमक सेना को खदेड़ बाहर किया जाए, सब दक्षिण कोरिया के लोग वर्त्तमान कठपुतली शासन को पलट दें और प्रगतिशील शक्तियां दक्षिण कोरिया में सत्ता हस्तगत कर लें। जब अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को जबरन निकाल दिया जाएगा, वर्त्तमान दक्षिण कोरियाई शासक हटा दिए जाएंगे और प्रगतिशील प्रजातन्त्रवादी सत्ता में होंगे तब हम उनसे किसी भी समय कोरिया के पुनरेकीकरण पर शांति पूर्ण वार्त्तालाप करने को तैयार रहेंगे । अतः राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का जनता का उद्देश्य उत्तरी कोरिया की समाजवादी शक्तियों और दक्षिण कोरिया की देशभक्त प्रजातांत्रिक शक्तियों के संयुक्त प्रयासों से संभव होगा ।

हम कह सकते हैं कि अंतिम विश्लेषण में कोरिया का पुनरेकीकरण और राष्ट्रीय स्वाधीनता की हमारे लोगों की आकांक्षा की प्राप्ति तीन क्रांतिकारी शक्तियों के तैयार होने पर निर्भर है । वे हैं : एक, उत्तरी कोरिया की समाजवादी शक्तियां, दो, दक्षिण कोरिया की क्रांतिकारी शक्तियां; और तीसरे, अंतरराष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियां । उत्तर और दक्षिण कोरिया में क्रांतिकारी शक्तियों को सुदृढ़ और विकसित करने के प्रयासों के साथ साथ हम अन्तरराष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन को विकसित करने और उसके साथ अपनी एकता बढ़ाने के लिए संघर्षशील हैं ।

उत्तरी और दक्षिण कोरिया के क्रांतिकारी संघर्ष से और विश्वव्यापी क्रांतिकारी लोगों के सक्रिय समर्थन से अंततोगत्वा अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया भगा दिए जाएंगे और निश्चय ही हमारा कोरिया पुनरेकीकरण करके रहेगा।

इस अवसर पर मैं फिनलैंड के साम्यवादियों और मजदूर वर्ग को दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को खदेड़ने के और देश के स्वतन्त्र

पुनरेकीकरण के कोरियाई जनता के न्यायोचित संघर्ष में सक्रिय समर्थन के लिए हार्दिक अभिनंदन भेजता हूं।

प्रश्न : जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के युवकों के समाजवादी निर्माण को तेज करने और अपने देश के आत्म-निर्णय के अधिकार की रक्षा करने के निर्णय के बारे में आपका क्या मत है ?

उत्तर : हमारे देश की क्रांति और निर्माण में युवकों की महान भूमिका है।

वे आरम्भ से ही नए के प्रति आग्रही और उद्यमशील हैं। सत्य और न्याय के प्रति प्रेम और इनके लिए हर भारी मुसीबत से जूझने का उनका उत्साह उनके शक्तिशाली गुण हैं। अतः सामाजिक क्रांति और नवसमाज के निर्माण में वे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। एक क्रांतिकारी पार्टी के नेतृत्व में समाज और जनता के संघर्ष पर सब कुछ निछावर कर देने के दृढ़ संकल्प के संग्राम से ये गुण और भी उभर कर सामने आएंगे।

हमारी राय में कोरिया के युवकों ने अपने व्यवहार से यह सत्य स्पष्टतः सिद्ध कर दिया है।

आज हमारी पार्टी के नेतृत्व में समाजवादी निर्माण की गति को तीव्र करने के लिए और शत्रु के आक्रमण से क्रांति के लाभों, देश के स्वाधीनता और जनसुरक्षा की रक्षा के लिए राष्ट्रीय रक्षा सामर्थ्य और आर्थिक निर्माण के हर मोर्चे पर कोरिया के युवक हिरावल और अग्रिमदस्ता बने हुए हैं।

स्वाधीनता के बाद कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में कोरिया के युवक डेमोक्रेटिक यूथ लीग के झंडे के नीचे दृढ़ता से जमा हो गए। उन्होंने उत्तरी कोरिया में प्रजातांत्रिक सुधारों के लिए सक्रिय भाग लिया। और विशषतः युद्धोत्तर पुनर्वास के कठिन दिनों में, जब समाजवादी क्रांति और समाजवाद का निर्माण राष्ट्र का प्रथम उद्देश्य बन गए थे, युवकों के क्रांतिकारी उत्साह, अनंत शक्ति और कौशल ने पूरा रंग दिखाया। महान क्रांतिकारी भावना के साथ वे कृषि के सहकारीकरण और निजी व्यापार और उद्योग के समाजवादी पुनर्गठन में जुट गए—हमारे देश के लिए यह एक महान सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन था। उन्होंने अपनी कमर कस ली और महान समाजवादी संघर्ष में फैक्टरियां खड़ी कीं, रेलवे का पुर्ननिर्माण किया और जो शहर और गांव राख के ढेर हो गए थे उन्हे दोबारा बना डाला।

शीघ्रता से नए सुखी समाज का निर्माण करने का हमारे युवकों का दृढ़ संकल्प और महान क्रांतिकारी भावना आज समाजवादी निर्माण के हर क्षेत्र में दिखाई देती है।

कारखानों और खदानों में, खेती में और मछीगिरी में और देश भर में फैले अनेक निर्माण स्थलों में नवयुवक हमेशा सबसे कठिन और भारी काम का बोझ अपने

जिम्मे लेते हैं। उत्पादन के नए तरीके खोजने के आंदोलन में वे लगातार अपनी शक्तियां लगाए रहते हैं। स्वतंत्र समाजवादी उद्योग और ठोस समाजवादी कृषि के निर्माण में ही वे महान कार्य नहीं कर रहे, विज्ञान और तकनोलोजी के विकास और देश की राष्ट्रीय संस्कृति और कला के प्रस्फुटन को प्रोत्साहन में भी उनका विशेष योगदान है। कोरिया की जनता की समाजवादी निर्माण में तमाम उपलब्धियों के आधार में हमारे नवयुवक स्त्री-पुरुषों का समर्पित श्रम और महान कारगुजारियां हैं।

और विदेशी आक्रांताओं से अपनी पितृभूमि की स्वायत्तता और समाजवाद के लाभों की रक्षा के संघर्ष में तो कोरिया के नौजवानों ने अद्वितीय देशभक्ति की भावना और साहस का परिचय दिया है।

कोरिया के नौजवानों के पीछे हैं पितृभूमि के स्वतंत्रता और स्वाधीनता संग्राम की उज्ज्वल क्रांतिकारी परंपराएं। जब जापानी साम्राज्यवादियों ने कोरिया पर कब्जा कर लिया तो कोरिया के नौजवानों ने अपने हाथों में हथियार उठा लिए और पन्द्रह साल के लंबे संघर्ष के बाद जापानी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को चकनाचूर करके अपने देश की छीनी हुई आजादी हासिल करके छोड़ी। जब अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने हमारे नवयुवा गणतंत्र के विरुद्ध लड़ाई छेड़ दी तो एक बार फिर कोरिया के नौजवानों ने अदमनीय क्रांतिकारी सैनिकता और सामूहिक वीरता का प्रदर्शन किया, दुश्मन को पछाड़ दिया और देश की स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा की।

आज वे दृढ़ता से देश की रक्षा कर रहे हैं। जब कभी दुश्मन हमारी थल, जल या नभ सीमा का एक इंच भी अतिक्रमण करता है तो हमारी जन सेना के वीर सिपाही उस पर निर्णायक जवाबी हमले करते हैं। अभी हाल में एकाधिक बार अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने हमारे बहादुर जनसेना के सैनिकों के वारों का कड़वा स्वाद चखा है।

हमारे देश में रक्षा सेवाएं केवल जनसेवा के नौजवानों के लिए ही नहीं हैं। हमारे सब युवक और सब मजदूर समाजवाद के ही निर्माता नहीं हैं वे साथ-साथ पितृभूमि के सच्चे रक्षक भी हैं। वे समाजवादी देश का निर्माण एक हाथ में हसिया या हथौड़ा और दूसरे में बंदूक लेकर कर रहे हैं।

आज कोरिया के सब युवक अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके अनुचरों के किसी भी आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए कटिबद्ध हैं।

यह सब कोरिया के नौजवानों के कोरिया की मजदूर पार्टी में अनंत विश्वास और देश तथा समाजवादी व्यवस्था के लिए उनके उत्कट प्रेम की अभिव्यक्ति है।

कोरिया के युवक भली प्रकार जानते हैं कि वे रिजर्व सेना की तरह हैं जिस पर कोरिया की मजदूर पार्टी भरोसा करती है, कि वे देश के सच्चे मालिक हैं कि और यह भी कि वे हमारे समाज के भविष्य के प्रतिनिधि हैं। यही कोरिया है कि वे इतनी निष्ठा के साथ मजदूर वर्ग और समाजवादी पितृभूमि के क्रांतिकारी उद्देश्य

की इतनी निष्ठा से सेवा करते हैं, कि समाजवादी व्यवस्था को उनका इतना सक्रिय समर्थन और गहरा प्यार मिला है। समाजवादी व्यवस्था और समाजवादी देश ने ही काम करने का, अपनी इच्छानुसार मन भरके पढ़ने का और अपनी तरुण बुद्धि और कला कौशल दिखाने का मौका दिया है। यही कारण है कि समाजवादी निर्माण को शीघ्र ही पूरा करने के लिए, समाजवादी व्यवस्था को दृढ़ और विकसित करने के लिए, क्रांतिकारी लाभों और पितृभूमि की रक्षा के लिए संघर्ष में अपना सब कुछ लगा देना वे अपना सर्वोत्तम सम्मान और सर्वोच्च कर्त्तव्य समझते हैं, खरीदी-बेची जानेवाली चीज नहीं।

समाजवादी क्रांति की विजय और समाजवादी निर्माण की सशक्त प्रगति से हमारे देश के युवकों के आध्यात्मिक जीवन में एक महान परिवर्तन आ रहा है। सादा, उत्साहपूर्ण जीवन बिताना और पढ़ना, समाज और समूह के लिए स्थिरता से निष्ठावान श्रम करना हमारे युवकों में आम हो गया है। उनके क्रियाकलाप और जीवन कोरिया की मजदूर पार्टी के लाल क्रांतिकारी सैनिकों की दृढ़ क्रांतिकारी चेतना और सुंदर साम्यवादी तौर तरीकों से लबालब भरे हैं।

भविष्य में भी हमारी पार्टी के नेतृत्व में समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण संघर्ष में कोरिया के नवयुवक अपनी पूरी शक्ति से अगली पंक्ति में आगे बढ़ते रहेंगे।

सारी दुनिया के और फिनलैंड के प्रगतिशील युवकों से हमारे कोरिया के युवक अपने मैत्री और एकता के संबंध और भी प्रगाढ़ करेंगे और अमरीकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व वाले साम्राज्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष में मोर्चे के एक ही तरफ खड़े होकर उनके साथ हमेशा वीरता से लड़ेंगे।

प्रश्न : अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव, पैरिस में वियतनाम वार्त्ता, दक्षिण वियतनाम गणतंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की स्थापना का आपके मत में वियतनाम प्रश्न के अंतिम निपटारे पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

उत्तर : आज वियतनाम का प्रश्न सारे संसार के लोगों के लिए सर्वाधिक चिन्ता का प्रश्न है।

एशिया में आक्रमण और वियतनामी जनवादी गणतंत्र पर आधिपत्य के लिए दक्षिण वियतनाम को उपनिवेश और सैनिक अड्डे में परिवर्तित करने की डाकुआना आकांक्षा थी अमरीकी साम्राज्यवादियों की। वियतनाम युद्ध का आरंभ ही उनके द्वारा वियतनामी जनता के स्वतंत्रता, स्वाधीनता, प्रजातंत्र और पुनरेकीकरण के उद्देश्यों में शर्मनाक हस्तक्षेप के कारण हुआ। १९५४ के वियतनाम संबंधी जेनेवा समझौते का जघन्य उल्लंघन करके अमरीकी साम्राज्यवादी पिछले १५ वर्षों से वियत-

नाम में अपनी आक्रामक अकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हर तरह के षड्यंत्रों में संलग्न हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण वियतनाम में आक्रमण की विशाल सेना—५,००,००० से भी अधिक—ढोई है और इसी प्रकार अपने पिछलग्गू देशों तथा कठपुतली गिरोहों की विशाल सेनाएं भी ले गए हैं। महाविनाश के शस्त्रों, युद्ध उपकरणों और यहां तक कि विषैले रसायनों से भी उन्होंने दक्षिण वियतनाम की जनता का अंधाधुंध हनन किया है। जब उन्हें वियतनाम की वीर जनता के दृढ़ प्रतिरोध का सामाना करना पड़ा, जो विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध निकल पड़ी थी, तो अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण वियतनाम के विरुद्ध अपना अपराधपूर्ण आक्रमण तेज कर दिया और उसको विस्तृत करने लगे। वे इस हद तक गए कि १९६४ में "बाक बो खाडी कांड" गढ़कर उन्होंने वियतनामी जनवादी गणतंत्र के विरुद्ध भी विनाशकारी युद्ध छेड़ दिया।

अतः वियतनाम में युद्ध विराम के लिए और वियतनाम प्रश्न के अंतिम निपटारे के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों को वियतनाम पर अपना आक्रमण हमेशा के लिए बंद करना होगा, और अपनी आक्रमण सेना तथा अपने पिछलग्गू देशों तथा कठपुतली गिरोहों की सेना के साथ वियतनाम से बिना शर्त निकलना होगा। वियतनाम प्रश्न के निपटारे के लिए इसे हम आधारभूत आवश्यकता मानते हैं।

लेकिन हमें यह आशा कतई नहीं है कि अमरीका में नए राष्ट्रपति के पदग्रहण मात्र से ही अमरीकी साम्राज्यवाद की नीति में कोई परिवर्तन हो जाएगा या वियतनाम प्रश्न के निपटारे में कोई नया मोड़ आ जाएगा।

संयुक्त राज्य अमरीका की नीतियों का स्रोत अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक प्रकृति में है। ये नीतियां तब तक नहीं बदलेंगी जब तक अमरीका साम्राज्यवादी शक्ति बना रहता है और विश्व आधिपत्य की अपनी आकांक्षा नही त्यागता। कोई भी अमरीका का राष्ट्रपति बने, वह अमरीकी एकाधिकारवादियों के हितों का वक्ता ही रह सकता है और उसे अमरीकी साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक और विस्तारवादी नीतियों का निष्ठापूर्वक पालन करना होगा। जब तक संयुक्त राज्य अमरीका की राज्य और समाजव्यवस्था में आधारभूत परिवर्तन नहीं होता, मात्र किसी राष्ट्रपति के बदल जाने से अमरीकी साम्राज्यवादी नीतियां अचानक ही आक्रामक के बदले शांतिप्रेमी कभी भी नहीं हो सकतीं। वियतनाम प्रश्न के संबंध में भी यही बात कही जा सकती हैं। मात्र नए राष्ट्रपति के आने से अमरीकी साम्राज्यवाद के वियतनाम पर आक्रमण के इरादे नहीं बदल सकते न ही संयुक्त राज्य में राष्ट्रपति का चुनाव वियतनाम प्रश्न के निपटारे के लिए किसी नए मोड़ का अवसर बन सकता है।

लेकिन इन सबका किसी प्रकार यह अर्थ नहीं हैं कि जब तक संयुक्त राज्य एक साम्राज्यवादी शक्ति रहेगा वियतनाम का प्रश्न एक ऐसा प्रश्न रहेगा जिसके निप-

टारे की कोई आशा ही न हो। देर सबेर जब क्रांति की आत्मनिष्ट और वस्तुनिष्ठ स्थिति निर्मित होगी तो वियतनाम का प्रश्न भी निश्चित ही निपटेगा, शायद यह प्रश्न शीघ्र ही, वर्त्तमान अमरीकी राष्ट्रपति के कार्यकाल में ही सुलझ सके। फिर भी यह प्रश्न इसलिए नहीं सुलझेगा कि वर्तमान अमरीकी राष्ट्रपति आक्रमण की नीति से बाज आकर शांति की नीति अपना लेगा, बल्कि इसलिए कि विश्व के क्रांतिकारी लोगों का सक्रिय समर्थन प्राप्त वियतनाम की जनता, वीरतापूर्ण अमरीका-विरोधी राष्ट्र-रक्षा प्रतिरोध अभियान में अमरीकी साम्राज्यवादी पूरी तरह हराकर वियतनाम से निकाल दिए जाएंगे।

जहां तक वियतनाम पर पेरिस कान्फरेंस की बात है, अमरीकी साम्राज्यवादी पैरिस की कान्फरेंस में भाग लेने के लिए मजबूर किए गए थे—क्योंकि जैसे-जैसे दिन बीत रहे थे उन्हें वियतनाम की जनता के वीर प्रतिरोध के कारण एक के बाद एक भारी सैनिक और राजनीतिक हार खानी पड़ रही थीं, ऐसी हार जिसे उबरना उनके लिए मुश्किल था और उन्हें सारे विश्व के शांतिप्रेमियों के, उन लोगों के जो वियत-नाम में इस अपराधपूर्ण आक्रमण-युद्ध के विरोधी थे, दृढ़ विरोध और निंदा का सामना करना पड़ रहा था। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादी कानफरेंस की मेज पर बैठकर युद्धक्षेत्र की अपनी भारी पराजय से बड़े ठीक तरीके से उबरने की कोशिशें कर रहे हैं और 'शांति' और 'वार्त्तालाप' की आड़ में अपनी 'शक्ति की नीति' के पालन की है और वियतनाम में अपना आक्रमक युद्ध तीव्र करने की तथा दक्षिण वियतनाम पर अपना आधिपत्य स्थायी बनाने की चालाक कोशिशों से चिपटे हुए हैं। इन सबसे संदेह की सीमा से परे यह सिद्ध हो जाता है कि अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण वियतनाम की राष्ट्रीय स्वाधीनता की क्रांति को घोंटने के, दक्षिण वियतनाम पर अपना नव-उपनिवेशवादीशासन बनाए रखने के, और वियतनामी जनवादी गण-तंत्र का नाश करने के अपने चोरों जैसे इरादों को पूरा करने के लिए कितने नीच तरीके से काम कर रहें हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की कपटपूर्ण दुरंगी चालों के कारण वियतनाम पर पेरिस कान्फरेंस ने सारे विश्व की प्रगतिशील जनता की आशाओं के विपरीत जरा भी प्रगति नहीं की है।

अगर वियतनाम पर पेरिस कान्फरेंस में अमरीकी साम्राज्यवादी अपनी वर्त-मान स्थिति पर डटे रहे तो कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

कान्फरेंस को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने का और वियतनाम के प्रश्न को विश्व मत और वियतनाम की जन-आकांक्षाओं के अनुकूल हल करने का एक ही सही रास्ता है—अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा वियतनाम की जनता के प्रतिनिधियों के उचित सुझावों को पूरी तरह स्वीकार कर लिया जाना। वियतनामी जनता की ओर

से कोई और वियतनामी प्रश्न का हल नहीं कर सकता। वियतनाम की मालिक वियतनाम की जनता है और वियतनाम का प्रश्न वियतनाम की जनता द्वारा स्वयं ही बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के सुलझाया जाना चाहिए। हमारी मान्यता है कि वियतनाम के प्रश्न का श्रेष्ठ हल वियतनाम जनवादी गणतंत्र के प्रतिनिधियों के प्रस्ताव के आधार पर और दक्षिण वियतनाम के राष्ट्रीय स्वाधीनता मोर्चे के प्रतिनिधिमंडल द्वारा प्रस्तावित दस-सूत्री प्रस्ताव के आधार पर ही हो सकता है और हम इन प्रस्तावों को अपना पूर्ण एवं हार्दिक समर्थन देते हैं।

जहां तक दक्षिण वियतनामी प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की स्थापना की बात है, मैं समझता हूं कि यह एक युगांतरकारी घटना है जिसने पिछले दिनों समस्त विश्व के लोगों का ध्यान केंद्रित किया।

दक्षिण वियतनामी प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार की स्थापना राष्ट्र की रक्षा में वियतनामी जनता के अमरीका-विरोधी प्रतिरोधी युद्ध का शानदार परिणाम है। दक्षिण वियतनामी जनता की राष्ट्रीय स्वाधीनता क्रांति की प्राप्ति के संघर्ष में इसका महान ऐतिहासिक महत्त्व है। इस क्रांतिकारी सरकार की स्थापना से दक्षिण वियतनाम की जनता को एक और शक्तिशाली हथियार मिल गया है जिससे वे अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के विरुद्ध अपना स्वाधीनता संग्राम और विकसित कर पाएंगे, एक स्वाधीन, प्रजातांत्रिक, शांतिपूर्ण और तटस्थ दक्षिण वियतनाम बना पाएंगे और अंततोगत्वा देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण कर पाएंगे।

दक्षिण वियतनाम प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार दक्षिण वियतनामी जनता की सच्ची, विधिवत् सरकार है जिसमें दक्षिण वियतनामी राष्ट्रीय स्वाधीनता मोर्चा, वियतनामी राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक शांति शक्तिसंघ तथा अनेक राजनीतिक पार्टियां, सामाजिक-धार्मिक संस्थाएं और दक्षिण वियतनाम के हर जीवन स्तर के लोग सम्मिलित हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों को चाहिए कि दक्षिण वियतनाम का प्रश्न दक्षिण वियतनाम की जनता की सच्ची विधिवत् प्रतिनिधि दक्षिण वियतनाम प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार पर छोड़ दें और स्वयं बिना देर किए दक्षिण वियतनाम से हट जाएं। वियतनाम पर पेरिस कान्फरेंस में उन्हें दक्षिण वियतनाम के प्रश्न पर बातचीत भी दक्षिण वियतनाम प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार के प्रतिनिधियों से करनी चाहिए।

अगर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने इसे अस्वीकार कर दिया और आज की ही तरह दक्षिण वियतनाम में थियु-काई कठपुतली गिरोह का पृष्ठपोषण करते रहे और अपनी अपराधपूर्ण आक्रामक चालें चलते रहे तो दक्षिण वियतनाम प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार के मार्गदर्शन में दक्षिण वियतनाम की जनता और भी

संकल्पशीलता तक लड़ेगी और तब तक लड़ती रहेगी जब तक अंतिम अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांता का नाश न कर दे।

हमें पूरा विश्वास है कि दक्षिण वियतनाम प्रजातंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार के गिर्द और भी दृढ़ता से संगठित होकर दक्षिण वियतनाम की वीर जनता अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं और उनके कुत्तों को हरा देगी और राष्ट्रीय स्वाधीनता क्रांति तथा राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के पावन उद्देश्य को पूर्ण विजय के साथ प्राप्त करेगी।

जिन लोगों ने सत्ता अपने हाथ में ले ली हो और स्वतंत्रता-स्वाधीनता के लिए सशस्त्र संग्राम में जुट गए हों उन्हें कोई ताकत नहीं दबा सकती।

विजयश्री निस्संदेह वियतनाम की वीर जनता को मिलेगी, जो उत्तर की रक्षा दक्षिण की स्वाधीनता और देश के पुनरेकीकरण के लिए राष्ट्रीय मुक्ति के अमरीकी साम्राज्यवाद-विरोधी महान संघर्ष में उठ खड़ी हुई है।

लेबनान के समाचार पत्र 'अल अनवर' के संवाददाता अली बलौत द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

२२ नवम्बर १९६९

प्रश्न : महामहिम श्री प्रधान मंत्री, आपने कोरिया की वीर जनता के लिए आश्चर्यजनक सफलताएं प्राप्त की हैं।

ये सफलताएं अमर रहेंगी और उन लोगों के लिए दीपस्तम्भ का काम करगी जो स्वयं अपने प्रयासों से अपनी नियति का निर्माण कर रहे हैं। ये उन लोगों के लिए भी मार्गदर्शक का काम करेंगी जो श्रेष्ठतम समाज का निर्माण करना चाहते हैं।

महामहिम श्री प्रधान मंत्री, क्या आप लेबनान के समाचार पत्र 'अल अनवर' द्वारा अरब जनता को उन उपलब्धियों के बारे में बताना चाहेंगे जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में आपके बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में प्राप्त होने वाली हैं ?

उत्तर : पहले तो मैं अपनी जनता की सफलताओं की इतनी प्रशंसा के लिए आपका धन्यवाद प्रकट करता हूं।

कोरिया की जनता उन सब सफलताओं को जो उसने कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में नव समाज के निर्माण में पाई हैं, बहुत महत्त्व देती है। उसे उनमें निश्चित विश्वास और महान गौरव की अनुभूति है। हमारी सफलताएं कितनी ही महान क्यों न हों, हम उनके बारे में आत्मतुष्ट नहीं हैं। क्रांतिकारी संघर्ष और निर्माण कार्य में हमने जितनी भी सफलताएं प्राप्त की हैं वे क्रांति को और आगे बढ़ाने और नई सफलताएं प्राप्त करने की बुनियाद मात्र हैं। हम अभी तक क्रांति की राह पर हैं। हमारे सामने अभी बहुत काम है—जितना हमने अब किया है उससे कहीं अधिक काम हमें अभी करना है।

हमें अपने गणतन्त्र के उत्तरी आधे भाग में समाजवाद की पूर्ण विजय के लिए ही नहीं लड़ना है। हमारी जनता को अभी दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादियों को खदेड़ना होगा, देश की राष्ट्रीय स्वाधीनता क्रांति को पूरा करके पुनरेकीकरण करना होगा। इसके लिए गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्धभाग में समाजवादी निर्माण

को तेजी से आगे बढ़ाना होगा और उत्तर की क्रांतिकारी शक्ति को, जो कोरियाई क्रांति का आधार है, उस क्रांतिकारी शक्ति को राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और सांस्कृतिक—हर क्षेत्र में दृढ़तापूर्वक एक अजेय शक्ति बनाना होगा। यह बड़ा भारी, पेचीदा और क्रांतिकारी दायित्व है। पर हमारी जनता का क्रांतिपूर्ण उत्साह और युद्ध मनोबल बहुत ऊंचा और सामर्थ्यशाली है। हमारी जनता यह दायित्व पूरा करके ही रहेगी। अपनी विजय में उनका विश्वास भी दृढ़ है। हमारी जनता को अपने हर भविष्य के आदर्शों में ही दृढ़ विश्वास नहीं है बल्कि तुरन्त आने वाले निकट भविष्य की उज्ज्वल संभावनाओं में भी उन्हें विश्वास है।

पहले की तरह भविष्य में भी, स्वतन्त्रता, आत्म-निर्भरता और आत्मरक्षा—अर्थात् कोरिया की मजदूर पार्टी के जूछे विचार के राजकीय गतिविधि के हर क्षेत्र में पालन के मूर्त्त रूप—की लाइन पर चल कर ही हमारी जनता नई सफलताएं प्राप्त करेगी।

हम अब भी अपने क्रांति और निर्माण की समस्याओं को स्वतन्त्र रूप से सुलझाने के सिद्धान्त पर अडिग रहेंगे। हम अपनी समस्याएं कोरिया की मजदूर पार्टी के जूछे विचार के अनुकूल सुलझाएंगे। विशेषतः हम संपूर्ण मजदूर वर्ग को अपनी पार्टी के जूछे विचार से सज्जित करने की ओर विशेष ध्यान देंगे और उनका और अधिक क्रांतिकरण तथा मजदूर वर्गीकरण करेंगे ताकि वे पार्टी और सरकार के गिर्द और मजबूती से संगठित हो जाएं। ऐसा करके हम अपनी क्रांति की राजनीतिक शक्ति को ऐसी अजेय शक्ति बना देंगे जिसे कोई भी शक्ति नष्ट न कर सके।

आने वाले कुछ वर्षों में समाजवादी आर्थिक निर्माण में जो लक्ष्य हमें पाना है वह महान और प्रेरणादायक है। पिछले वर्षों कठिन संघर्ष करके हमारी जनता ने जो स्वतन्त्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था खड़ी की है उसके ठोस आधार का सहारा ले कर हमारे देश की अर्थव्यवस्था अब बड़ी तेजी से विकसित होगी।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में हम अब बड़े उत्साह से तकनीकी क्रांति को आगे बढ़ाएंगे। उद्योगों के क्षेत्र में कुछ वर्षों हम पूर्ण मशीनीकरण और अर्द्ध स्वचालन और पूर्ण स्वचालन करने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार हम मजदूरों की मेहनत को आसान और बेहतर बनाएंगे और अधिक बड़े पैमाने पर उत्पादन का विस्तार करेंगे।

भारी उद्योग के क्षेत्र में—जैसे इंजीनियरिंग, धातु, रसायन और खदान उद्योगों के विकास में यह एक विशेष लम्बी छलांग होगी। कपड़ा, भोजन और दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं सहित हल्के उद्योगों में भी मौलिक परिवर्तन होंगे।

इस समय हमारी जनता सप्त वर्षीय आर्थिक योजना के—समाजवादी निर्माण के शानदार कार्यक्रम के—शीर्ष पर पहुंचने के अन्तिम प्रयास कर रही है। इस

योजना के पूरा होने पर हमारा देश एक औद्योगिक—कृषक राज्य से बदल कर एक शक्तिशाली समाजवादी औद्योगिक राज्य बन चुका होगा और संसार के विकसित देशों के बीच सिर ऊंचा करके खड़ा होने लायक होगा।

हमारी समाजवादी ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी तेजी से विकसित होगी। अगले ही कुछ वर्षों में सिंचाई और विद्युतीकरण पूरा कर देने की हमारी योजना है और साथ ही हम मशीनीकरण और रासायनीकरण का विस्तार करना चाहते हैं और कृषि के विकसित तरीकों का चलन आर्थिक क्षेत्रों तक ले जाना चाहते हैं। 'हमारे देश में समाजवादी ग्रामीण प्रश्न—कुछ शोध प्रबंध' की रूपरेखा के अनुकूल ग्राम्य तकनीकी क्रांति को तेजी से आगे बढ़ा कर हम यह सब करेंगे। इस योजना की प्राप्ति से हमारे किसानों को काफी हद तक उस कठिन और कष्ट कर श्रम से मुक्ति मिल जाएगी जो वे हजारों वर्षों से भोग रहे हैं। वे अत्याधुनिक कृषि यंत्रों, रासायनिक खादों अपतृण-नाशियों, शाक सब्जी की उपज बढ़ाने वाले तथा अन्य प्रकार के रसायनों की सहायता से आसान, मजेदार और बढ़िया तरीके से खेती कर सकेंगे। इतना ही नहीं अनाज और पशु उत्पादनों के सहित हर प्रकार की कृषि उत्पादन क्षमता में तीव्र विकास से हमारा देश भोजन के मामले में और भी समृद्ध हो जाएगा और मजदूरों को मूल भोजन के अलावा मांस, अंडे और सब्जियां भी अधिक मात्रा में मुहैया कर सकेगा।

राष्ट्र की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति के साथ साथ हमारे विज्ञान और संस्कृति की प्रगति भी तीव्र होगी। वैज्ञानिक और तकनीशियन सक्रिय शोध में व्यस्त रहेंगे ताकि जूछे उद्योगों और समाजवादी कृषि के विकास से उठने वाली वैज्ञानिक और तकनीकी समस्याओं के हल निकाल सकें। राज्य ऐसे कदम उठाएगा जिनसे और अधिक संख्या में युवक और मजदूर उच्चतर शिक्षा पा सकें और अभी तक जो लाजमी तौर पर नौ-वर्षीय तकनीकी शिक्षा लागू की जा चुकी है उसकी सफलताओं को सुदृढ़ कर सकें। इसके साथ साथ जन समूह जर्जर प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी की संस्कृति के प्रभाव को हमेशा हमेशा को नष्ट करने के लिए और हमारी समाजवादी राष्ट्रीय संस्कृति को चमकाने के लिए तेजस्वी संघर्ष करेंगे।

राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के हर क्षेत्र में इन लक्ष्यों की प्राप्ति के बाद हमारे देश की राजनीतिक और आर्थिक शक्ति अद्वितीय रूप से बढ़ जाएगी, हमारे विज्ञान और तकनीक, साहित्य और कला विकसित होकर एक ऊंचे स्तर तक चले जाएंगे और हमारी जनता एक सुख समृद्धशाली सांस्कृतिक जीवन बीता सकेगी।

यह सही है कि हमने जो लक्ष्य अपने सामने रखें हैं वे बहुत ऊंचे हैं और हमारे सामने कई कठिनाइयां हैं। हम समाजवाद का निर्माण कठिन परिस्थितियों में कर रहे हैं—हमारा देश दो भागों में, उत्तर और दक्षिण में, बंटा है, नया युद्ध छेड़ने

की अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके अनुचरों की चालें दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। इसलिए एक हद तक हमारे देश की अर्थव्यवस्था और संस्कृति के निर्माण में विघ्न बाधा पड़ेगी ही। अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

लेकिन हमारी जनता क्रांतिकारी संघर्ष की परीक्षाओं में परिपक्व हुई है और उसे कोरिया की मजदूर पार्टी का बुद्धिमत्ता पूर्ण नेतृत्व प्राप्त है। हमारी यह जनता पूरी साहस से इन कठिनाइयों पर विजय पाएगी और अपने हाथ में बंदूक और दूसरे में हंसिया और हथौड़ा मजबूती से उठाए निश्चय ही अपने सभी क्रांतिकारी कर्त्तव्यों को सगौरव पूरा करेगी।

प्रश्न : हमारी मित्र कोरियाई जनता ने, जिसे आपका प्रेरणादायक नेतृत्व प्राप्त है, सिद्ध कर दिया है कि अमरीकी ठग उसकी राष्ट्रीय प्रभुसत्ता का अपहरण नहीं कर सकते, न ही उपनिवेशवादियों को बाहर खदेड़ने की तथा निकट भविष्य में ही देश का पुनरेकीकरण करने की उसकी आकांक्षा को मंद कर सकते हैं।

महामहिम प्रधानमंत्री क्या आपकी राय में अमरीकी साम्राज्यवादी कोरिया की वीर जनता के विरुद्ध नए आक्रमण की योजना बना रहे हैं ?

उत्तर : कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक चालों के बारे में आज दुनिया जानती है। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने पूरे कोरिया को छीन कर उसे एशिया और समाजवादी देशों पर आक्रमण का अड्डा बनाने के अपने डाकुआना इरादे से दक्षिण कोरिया को अपना पूर्ण उपनिवेश और आक्रमण का सैनिक अड्डा बना दिया है। जिस दिन वे दक्षिण कोरिया में पहली बार रेंगते हुए घुसे थे, उस दिन से आज के दिन तक, बीस साल से भी ज्यादा अरसे से जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के विरुद्ध वे प्रति दिन अपनी आक्रमण की चालें और युद्धोत्तेजनाएं करते रहते हैं।

विशेषकर पिछले कुछ वर्षों में तो कोरिया में नया युद्ध छेड़ने की अमरीकी साम्राज्यवादी चालें बहुत तेज हो गई हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के पास पहले ही दक्षिण कोरिया में विशाल आक्रामक सैनिक सामर्थ्य थी और अब तो उन्होंने इसमें वृद्धि की गति और बढ़ा दी है। गैर कानूनी तरीके से वे दक्षिण कोरिया में सामरिक आणविक शस्त्रों, नियंत्रण प्रक्षेणास्त्रों व महानाश के अन्य प्रकार के अनेक शस्त्रों को भारी मात्रा में ले आए हैं—यह सब उन्होंने युद्ध विराम समझौते का घोर उल्लंघन करके किया है। कुछ समय पहले वे दक्षिण कोरिया के सैनिक अड्डों पर बड़ी संख्या में युद्धक-बम वर्षक ले आए और अब उन्होंने विशाल सैन्य शक्तिवाले ७१ वें कृत्यक बेड़े की रचना की है जिसमें एक आणविक विमानवाहक और विशाल युद्धपोतों सहित बीसियों युद्धकयान

हैं और इसे उन्होंने जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के पास ही समुद्र में स्थापित कर दिया है।

अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना की संख्या बढ़ा रहा है और इसकी सैनिक तकनीकीं उपकरणीय शक्ति को और बढ़ा रहा है। दक्षिण कोरिया के स्थानीय भाड़े के सैनिकों की संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने विशेषतः तथाकथित 'होमलैंड रिजर्व फोर्स' की रचना की है। उन्होंने इसमें दक्षिण कोरिया के युवकों और अधेड़ों को बड़ी संख्या में ठूंस दिया है और वे इसे सशस्त्र करने की जल्दी कर रहे हैं।

दक्षिण कोरिया में अनेक सैनिक अड्डों और सैनिक अधिष्ठानों की संख्या तेजी से कई गुना बढ़ी हैं।

इस बीच अमरीकी साम्राज्यवादी गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग के विरुद्ध सशस्त्र उत्तेजनाएं और अधिक बौखलाहट के साथ फैला रहे हैं। इसके कारण कोई भी ऐसा दिन नहीं बीतता जब सैनिक सीमांकन रेखा पर गोलाबारी नहीं होती।

जैसा कि पिछले साल की जनवरी में अमरीकी साम्राज्यवादियों के सशस्त्र गुप्तचर पोत 'प्यूब्लो' की घटना से इस अप्रैल में उनके विशाल गुप्तचर यान 'ईसी—१२१' के मार गिराए जाने से पूरी तरह सिद्ध हो चुका है कि अमरीकी साम्राज्यवादी हमारे देश के विरुद्ध अपनी जासूसी कार्रवाई और भी खुल्लम खुल्ला कर रहे हैं।

आज अमरीकी साम्राज्यवादियों ने संपूर्ण दक्षिण कोरिया में 'युद्धकालीन ढांचा' खड़ा कर लिया है, दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य जमाने वाली अमरीकी सेना और दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना को आपात्कालीन संगठन आदेश दे दिए हैं और सीमा रेखा पर सशस्त्र सेना को सुदृढ़ बना कर 'विशेष चौकसी' की स्थिति में प्रवेश कर लिया है।

इन सब तथ्यों से पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि किस बौखलाहट से अमरीकी साम्राज्यवादी कोरिया में एक बार फिर आक्रमण युद्ध छेड़ने की तैयारी कर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की नंगी आक्रामक चालों से कोरिया में स्थिति इतनी तनावपूर्ण और भयानक हो गई है कि किसी भी क्षण युद्ध छिड़ सकता है।

लेकिन अमरीकी साम्राज्यवादियों की सैनिक धमकियां कोरिया की जनता को डरा नहीं सकतीं। अगर युद्ध रोकने और शांति बनाए रखने के हमारी जनता के धैर्य-पूर्ण प्रयासों और विश्व के सभी शांतिप्रेमियों की सर्वसम्मत निंदा के बावजूद अम-रीकी साम्राज्यवादियों और उनके अनुचरों ने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के विरुद्ध नया युद्ध छेड़ ही दिया तो अपने प्रिय देश और क्रांतिकारी लाभों की रक्षा के पावन युद्ध में कोरिया की जनता एक होकर उठ खड़ी होगी। वह आक्रांताओं को पूरी तरह नष्ट कर देगी।

प्रश्न : साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी समाचार पत्र और समाचार एजेंसियां यह दावा करके कि आपका युवा देश दो महान समाजवादी शक्तियों के बीच विवाद में एक तरफ झुक रहा है, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के सोवियत यूनियन और चीन के साथ अच्छे संबंध बिगाड़ने की कोशिश करती रहती हैं।

आपकी राय में इस विवाद के बने रहने का विश्व साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष में समाजवादी देशों की एकता पर क्या प्रभाव पड़ेगा !

उत्तर : जैसा कि आपने सही संकेत किया है, साम्राज्यवादी और उनका सर्पीला प्रेस बकवास करते रहते हैं कि समाजवादी देशों के विवाद में हमारा देश इस देश के साथ है या उस देश के साथ है। हमारे देश और अन्य समाजवादी देशों के बीच दरार डालने और शत्रुता बढ़ाने की यह एक मूर्खतापूर्ण चाल है, और कुछ नहीं। इसमें कोई विचित्र बात नहीं है कि इस तरह की नीच चालें हर प्रकार के साम्राज्यवादी और प्रतिक्रियावादी विश्व भर में चलते रहते हैं। उन्हें यह आशा होती है कि इससे समाजवादी देशों के बीच मतभेद बढ़ जाएंगे। समाजवादी देशों की एकता और संगठन को कमजोर करने के लिए वे हर तरह की कुटिल चालें चल रहे हैं।

मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टियां स्वभाव से स्वतंत्र और स्वायत्त होती हैं। मार्क्सवाद-लेनिनवाद में अपने विश्वास के कारण ही कम्युनिस्ट लड़ाके अपने अपने देश में श्रमिक वर्ग और कर्मचारी जनता की मुक्ति का संग्राम लड़ते हैं, विश्व की जनता की स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का संग्राम लड़ते हैं और वे अपनी स्वतन्त्र मान्यताओं को दृढ़ता से धारण करते हुए हर मुसीबत का सामना करते हुए बिना हारे लड़ते रहते हैं। अगर कम्युनिस्ट अपनी स्वतन्त्रता और प्रभुसत्ता खो दें और दूसरों के पदचिन्हों पर चलने लगें तो वे अपने सिद्धांत धारण नहीं कर सकते, अपनी लाइन और नीतियों के पालन में समनुरूप नहीं रह सकते। और अंततोगत्वा इससे न केवल उनके अपने देशों में क्रांति और निर्माण बिगड़ जाएंगे बल्कि अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन और विश्व क्रांति की प्रगति को भी भारी चोट पहुंचेगी।

हमारी पार्टी की अपनी गतिविधियों जूछे विचार के मार्ग पर चलती है। यह एक ऐसी पार्टी है जो केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों को मानती है और अपनी लाइन और नीतियां स्वतंत्र रूप से अपने देश की वास्तविक स्थिति के अनुरूप निश्चित करती है। हमारी पार्टी साम्राज्यवाद और हर प्रकार के अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष का विकास किसी के सुझावों या आदेशों का अंधपालन करके नहीं बल्कि हमेशा अपने विश्वासों के आधार पर करती है। इस प्रकार अपनी गतिविधियों में दृढ़तापूर्वक अपनी स्वतंत्रता बनाए रखकर हम उन मित्रों के साथ होने का प्रयत्न करते हैं

जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के सिद्धांतों के साझे उद्देश्यों के लिए संघर्ष शील हैं। हम उनको अनुभवों से सीखने का प्रयत्न भी करते हैं अगर वे अनुभव कुछ सिखाने योग्य हों, मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों के अनुरूप हों और हमारी वास्तविक परिस्थिति के उपयुक्त हों। बंधु पार्टियां भी हमारी पार्टी की इस स्थिति को पूरी तरह समझती हैं और सही मानती हैं।

साम्राज्यवादियों और प्रतिक्रियावादियों की कोई कुटिल चाल हमारी पार्टी की स्वतंत्र और सैद्धांतिक स्थिति को नहीं बदल सकती और हमारे तथा अन्य समाजवादी देशों के बीच की एकता को कमजोर नहीं कर सकती।

जहां तक समाजवादी देशों के बीच मतभेदों का प्रश्न है, हर मामले में वे ऐसे सैद्धांतिक और मीमांसात्मक मतभेद हैं जो एक ही राजनीतिक और आधार वाले समाजवाद और साम्राज्यवाद निर्माण के साझे लक्ष्य के लिए साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध लड़ने वाले वर्ग भाइयों में होते हैं। इन मतभेदों में वे शत्रुतापूर्ण विरोध अभिव्यक्ति नहीं हो पाते जो साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच या मित्र समाज व्यवस्था वाले राष्ट्रों के बीच होते हैं। ये मतभेद अस्थायी मतभेद होते हैं और इनका जन्म कुछ ऐसे प्रश्नों पर भिन्न विचारों से होता है कि वर्तमान स्थिति का आकलन कैसे किया जाए, साम्राज्यवाद से कैसे लड़ा जाए और लोगों के स्वाधीनता संग्रामों का कैसे समर्थन किया जाए। इनकी जड़ें हर समाजवादी देश की भिन्न ऐतिहासिक और भौगोलिक परिस्थितियों, भिन्न राष्ट्रीय दायित्वों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भिन्न समझ में होती हैं।

साम्राज्यवाद के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष के दौरान समाजवादी देशों के लोग अंततोगत्वा अपने मतभेद दूर कर लेंगे और समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के अपने समान उद्देश्यों की विजय के संग्राम में कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ेंगे।

प्रश्न : महामहिम प्रधान मंत्री, संभवतः आप अच्छी तरह यह जानते हैं कि अरब लोग आक्रामक देश इस्राइल और उसके सहायक संयुक्त राज्य अमरीका के अनवरत आक्रमण से कष्ट पा रहे हैं और बीस लाख से भी अधिक अरब अपनी जन्मभूमि से निकाल दिए गए हैं।

मध्यपूर्व के संकट पर क्या आप हमें अपनी राय बताएंगे ?

उत्तर : मध्यपूर्व का संकट परिणाम है अमरीकी साम्राज्य के नेतृत्व वाले साम्राज्यवादियों की आक्रामक चालों का जो सियोनवादियों को आक्रमण सेना के रूप में खड़ा करके अरब लोगों के बढ़ते हुए साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष को घोंटने की और इस क्षेत्र को अपने कंट्रोल में लाने की कोशिश कर रहे हैं।

इस्राइली आक्रांताओं और उनके संचालक अमरीकी साम्राज्यवादियों के बेशर्म आक्रामक षड्यंत्रों के कारण ही यह संकट अभी तक सुलझाया नहीं जा सका है और मध्य-पूर्व में स्थिति अभी तक तनावपूर्ण है।

आज अरब लोगों का अमरीका-विरोधी, इस्राइल-विरोधी संघर्ष राष्ट्रीय स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा का, हड़पे अरब क्षेत्र वापस लेने का और फिलीस्तीन की जनता की स्वाधीनता प्राप्त करने का न्यायोचित संघर्ष है।

कोरिया की जनता मध्यपूर्व में अमरीकी साम्राज्यवादियों और सियोनवादियों की उनके आक्रामक षड्यंत्रों के लिए दृढ़ निन्दा करती है और न्यायपूर्ण संघर्ष में अरब जनता का पूर्ण समर्थन करती है और उसके साथ अपनी दृढ़ एकता प्रकट करती है।

प्रश्न : महामहिम प्रधान मंत्री, आपने जापानी आक्रामकों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध का पूर्ण विजयपूर्वक संगठन और नेतृत्व किया, १५ लंबे वर्षों तक लड़े और अंत में कोरिया की जनता के लिए महान विजय प्राप्त की।

आज आपके द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चल कर फिलीस्तीन के अरब लोगों ने हड़पे हुए क्षेत्रों में अपना स्वाधीनता संग्राम आरंभ किया है।

अपने शानदार संग्राम के अनुभव से आप अरब गुरिल्लों को क्या परामर्श दे सकते हैं?

उत्तर : फिलीस्तीन के लोगों ने अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनके फरमाबरदार गुर्गों सियोनवादियों के विरुद्ध सशस्त्र गुरिल्ला संग्राम आरंभ कर दिया है। स्वतन्त्रता और स्वाधीनता प्राप्त करने का यह सही रास्ता है।

आपने मुझ से अरब गुरिल्लों को कुछ परामर्श देने के लिए कहा है। पर मैं परामर्श देने के बजाय संग्राम के अपने अनुभव संक्षेप में बताना चाहता हूं।

आप जानते ही हैं कि कम्युनिस्टों के नेतृत्व में कोरिया की जनता के उत्कृष्ट बेटे बेटियों ने १५ लंबे वर्षों तक कठिन जापान-विरोधी सशस्त्र संग्राम लड़ा था और जापानी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को हराकर देश को स्वाधीन करने का ऐतिहासिक दायित्व पूरा किया था। कोरिया की जनता का जापान-विरोधी संघर्ष अपनी क्रांतिकारी शक्तियों से प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को अवरुद्ध अरने के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का उच्चतम रूप था। इस संघर्ष में हमें कई परीक्षाओं में से गुजरना पड़ा और बहुमूल्य अनुभव मिला।

हमारा अनुभव दिखाता है कि पददलित लोगों को देश की स्वाधीनता और राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए पूरे संकल्प से लड़ना ही चाहिए और सशस्त्र लड़ाई ही इस संघर्ष का सर्वाधिक सक्रिय और सर्वाधिक निर्णायक रूप है।

इतिहास में अब तक ऐसा कोई उदाहरण नहीं हैं जहाँ साम्राज्यवादियो ने किसी उपनिवेश की जनता को स्वतंत्रता की सौगात में दे दी हो, न ही कोई ऐसी घटना है कि अपने देश से वंचित जनता को स्वयं संघर्ष किए बिना दूसरों के हाथों अपनी स्वतंत्रता प्राप्त हुई हो। इसलिए अपना खोया हुआ देश पाने के लिए और सच्ची राष्ट्रीय स्वाधीनता और स्वतंत्रता पाने के लिए दलित लोगों को साम्राज्यवाद के बारे में अपने सब भ्रम फेक देने चाहिए। साम्राज्यवाद के विरुद्ध सक्रिय संघर्ष के द्वारा ही वे क्रांति को बढ़ा सकते हैं और स्वाधीनता का अपना उद्देश्य पूरा कर सकते हैं।

अपना औपनिवेशिक शासन बनाए रखने के लिए साम्राज्यवादी कोई कसर नहीं उठा रखते और अपने नाश को आता देख कर वे और भी उन्मत्त हो उठते हैं। अपनी सत्ता और हिंसा के यंत्रों का पूरी तरह उपयोग करते हुए साम्राज्यवादी औपनिवेशिक जनता के स्वाधीनता संघर्ष को क्रूरतापूर्वक बड़ी बेरहमी से कुचलते हैं। पहले जापानी साम्राज्यवादियों ने भी कोरिया में यही किया। इसलिए कोरिया के कम्युनिस्टों को हथियार ले कर उठना पड़ा, पितृभूमि की वापसी के लिए लड़ना पड़ा और लंबे कष्टसाध्य सशस्त्र संघर्ष के बाद हमें पूर्ण विजय मिली। हिंसा का जवाब हिंसा से ही दिया जाना चाहिए और प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को क्रांतिकारी शक्तियों द्वारा चूर कर देना ही होता है। जन स्वाधीनता संघर्ष का अनुभव दिखाता है कि छोटे स्तर पर शुरू होने वाला संघर्ष क्रमशः विशाल संघर्ष में विकसित हो जाता है और अंत में विजयी हो सकता है। हमें पूरा विश्वास है कि फिलीस्तीन के लोग जो हाथों में हथियार लेकर स्वाधीनता के मार्ग पर चल पड़े हैं, अवश्य विजयी होंगे बशर्ते कि उन्हें अपनी विजय में दृढ़ विश्वास हो और वे हर क्षेत्र में छोटे या बड़े पैमाने पर अंक तक पूरे संकल्प से सशस्त्र संघर्ष जारी रखें।

क्रांतिकारी शक्तियों की स्थिर वृद्धि पक्का कर लेना किसी भी क्रांति संघर्ष में विजय प्राप्ति की आधारभूत शर्त है। इसलिए जापान-विरोधी सशस्त्र संग्राम के पूरे काल में अपनी स्वयं की क्रांतिकारी शक्तियों का निर्माण अपना सर्वाधिक महत्त्व का दायित्व बना लिया था और अंत तक हमने इस पर पूरा ध्यान दिया।

सबसे पहले तो हमारी रुचि का केंद्र रहता था जापान-विरोधी गुरिल्ला सेना को राजनीतिक, सैद्धांतिक और सैनिक रूप से सशक्त करना ताकि क्रांतिकारी शक्तियां दृढ़ हों। हमने जापान-विरोधी गुरिल्ला सैनिकों की संगठनात्मक और सैद्धांतिक शुद्धता और उद्देश्य की एकता सुनिश्चित करने के प्रयास किए और सब गुरिल्लों को जूछे की दृढ़ चेतना, ज्वलंत देशभक्ति, हार्दिक क्रांतिकारी साथीवत भावना और स्वेच्छापूर्ण अनुशासन से सज्जित कर दिया। इसके साथ-साथ दुश्मन से लगातार लड़ाइयों में शस्त्र छीन कर हमने अपनी गुरिल्ला सेना के सैनिक उपकरणों में भी सुधार किया। हम गुरिल्ला सेना का विस्तार और विकास करते चले गए।

जापान-विरोधी गुरिल्ला सेना को सुदृढ़ करने के साथ-साथ हमने क्रांति का सुदृढ़ जन आधार बनाने के, सभी देशप्रेमी राष्ट्रप्रेमी जनसमूहों को संगठित करने के और उन्हें संगठित करके क्रांति संघर्ष से जोड़ने के भारी प्रयास किए।

इस तथ्य को देखते हुए कि हमारा सशस्त्र संघर्ष गुरिल्ला युद्ध के रूप में हो रहा था हमारे लिए यह बहुत आवश्यक था कि हम जापान-विरोधी गुरिल्लों और जनता के संबंध दृढ़ करते रहें, हर प्रकार से गुरिल्लों को समर्थन और प्रोत्साहन देने के लिए जनता को राजी करें और उन्हें भी जापान-विरोधी संघर्ष के लिए सक्रिय रूप से संगठित करें।

"जल बिन मछली जन बिन गुरिल्ला' नारे के अंतर्गत जापान-विरोधी गुरिल्ला सेना हर समय जनता से निकटतर संबंध बनाने की कोशिश करती। गुरिल्ले साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों को सशस्त्र संघर्ष के गिर्द लाने की कोशिश करते और सही सामरिक और व्यावहारिक नेतृत्व में अपने संघर्ष को जन संघर्ष के विभिन्न रूपों से जोड़ने की कोशिश करते। ५ मई १९३६ को पितृभूमि मुक्ति संघ की स्थापना, जो हमारे देश में पहला जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा था, क्रांति के जन आधार को सुदृढ़ करने में ऐतिहासिक महत्त्व की घटना थी। इस संघ की स्थापना से जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के साथ साथ जापान-विरोधी राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे का राष्ट्रीय स्तर पर और भी शीघ्रता से, क्रमबद्धता से और संगठनात्मकता से विकास हुआ। देश के स्वाधीनता संग्राम में साम्राज्यवादी-विरोधी शक्तियों को दृढ़ता से एकत्रित करना और संगठित करना संभव हो गया।

जापान-विरोधी गुरिल्ला सेना का शक्ति विन्यास, क्रांति के जन आधार का दृढ़ीकरण, जापान-विरोधी सशस्त्र संघर्ष के विभिन्न रूपों से जोड़ा जाना ये सब जापान-विरोधी हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम की विजय के महत्त्वपूर्ण तत्त्व थे।

अगर फिलीस्तीन लोग अपने सशस्त्र गुरिल्लों को संगठनात्मक सैद्धांतिक और सैनिक रूप में दृढ़ करें, संघर्ष का ठोस जन आधार तैयार करें, सब क्रांतिकारी और जन संगठनों को निकट लाकर क्रांतिकारी शक्तियों की एकता को दृढ़ करें और सभी अरब लोगों के साथ दृढ़ एकता से राष्ट्र व्यापी और समग्र अरब और स्तर पर अमरीका-विरोधी इस्राइल-विरोधी संघर्ष उत्साहपूर्वक करें तो विजय और तेजी से प्राप्त होगी।

इस अवसर पर मैं फिलीस्तीन की जनता की उनके देश की स्वाधीनता के गुरिल्ला संघर्ष में महान विजयों की हार्दिक कामना करता हूं।

कोरिया की मजदूर पार्टी और गणतंत्र की सरकार की गृह और विदेशनीतियों की कुछ समस्याओं के बारे में

जापानी समाचारपत्र 'असाही शिमबुन' के प्रबंध सम्पादक और 'क्यो दो प्रेस' के संवाददाता से बातचीत

२५ सितम्बर और ८ अक्तूबर १९७१

हमारे देश में आपकी यात्रा के लिए मैं आपका आभारी हूं। आपका हार्दिक स्वागत है।

हालांकि मैं आपसे पहली ही बार मिल रहा हूं खोंगरियोन (जापान में रहने वाले कोरियावासियों की जनरल एशोसिएशन) के अध्यक्ष हान दोक सु और उपाध्यक्ष किम ब्योंग सिक आपके पुराने मित्र हैं। इसलिए हम आपका स्वागत पत्रकारों के रूप में अपने प्रतिष्ठित अतिथियों के रूप में कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि यह अच्छा रहेगा कि आजकी आपके और मेरे बीच की भेंट को आप पत्रकारों और एक प्रधान मंत्री के बीच की भेंट न समझें बल्कि मित्रों, वह भी घनिष्ठ मित्रों के बीच मुलाकात समझें।

आपने खोंगरियोन के काम में बहुत सहायता दी है और जापान में रहने वाले कोरियावासियों के स्वदेश वापसी के काम का और उनके प्रजातांत्रिक राष्ट्रीय अधिकारों के संघर्ष का सक्रिय समर्थन किया है। आप जनवादी जनगणतंत्र कोरिया के मित्र हैं, आपने अनेक अच्छे काम किए हैं। आप कोरिया और जापान की जनता में मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास के लिए प्रयत्नशील हैं। इस सबके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं।

हमारी संबंधित संस्थाओं के द्वारा मुझे आपके प्रश्न मिल गए थे। आपने मुझसे विभिन्न प्रश्न पूछे हैं और मैं इसका कारण जानता हूं। हमारे बीच में अधिक संपर्क नहीं रहा है, इसलिए आप हमारे देश से परिचित नहीं हैं। मैं समझता हूं कि आपके प्रश्न कई समस्याओं की गहरी जानकारी पाने की इच्छा पर आधारित हैं।

मैं आपके प्रश्नों को सद्भावनापूर्ण मानता हूं ।

अब मैं संक्षेप में आपके प्रश्नों पर आता हूं ।

जैसा कि आप जानते हैं सप्त-वर्षीय योजना पूरी करने में हमें दस वर्ष लगे । सप्त-वर्षीय योजना १९६१ में आरंभ हुई थी और १९६७ तक इसे पूरा करने का विचार था । लेकिन तत्कालीन स्थिति के कारण इसका पूरा होना तीन वर्ष के लिए टल गया ।

पिछले वर्षों में कैरीबियन संकट खड़ा करके और वियतनाम में अपने आक्रामक युद्ध का विस्तार करके अमरीकी साम्राज्यवादियों ने स्थिति में तनाव पैदा कर दिया था । साम्राज्यवादी अपने आक्रमण और शत्रुतापूर्ण उत्तेजना बढ़ा रहे थे इसलिए समाजवाद के अपने लाभों और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की अपने ही प्रयासों से रक्षा हेतु अपनी आत्म-रक्षा की लाइन पर चल कर हमें अपनी रक्षा-सामर्थ्य बढ़ानी पड़ी । इसलिए हमारी पार्टी ने अर्थव्यवस्था और सुरक्षा के समांतर निर्माण की क्रांतिकारी लाइन रखी । इस रूपरेखा के अनुसार हमने काफी बड़ी धनराशि सुरक्षा निर्माण में लगा दी और परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आर्थिक योजना को पूरा करने के लिए हमें और समय की आवश्यकता आ पड़ी । नतीजा यह हुआ कि हमने अपनी सप्त-वर्षीय योजना को तीन साल के लिए स्थगित कर दिया ।

हमने अपनी सप्त-वर्षीय योजना को बड़े कठिन काल में पूरा किया । अमरीकी साम्राज्यवादियों की बढ़ती हुई आक्रमण की चालों तथा उनकी और जापानी सैन्यवादियों की अवरोध नीति ने हमारे समाजवादी निर्माण में कई रूकावटें डालीं । इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन में जो पेचीदा स्थिति उत्पन्न हुई उससे भी हमारे समाजवादी निर्माण पर एक सीमा तक प्रभाव पड़ा ।

फिर भी हमारी जनता ने सब कठिनाइयों को पारकर के सफलतापूर्वक सप्त-वर्षीय योजना को पूरा किया । हालांकि योजना को पूरा करने में हमें दस साल लगे, पर हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था बड़ी तेजी से विकसित हुई । जिन पिछले दस सालों में हमारी सप्त-वर्षीय योजना पूरी हुई, उनमें हमारा औद्योगिक उत्पादन प्रति वर्ष १२.८ प्रतिशत के औसत से बढ़ा । मैं समझता हूं कि अन्य देशों के मुकाबिले यह काफी अच्छी वृद्धि का औसत है । हमारी जनता को इस पर गर्व है ।

सप्त-वर्षीय योजना के गौरवपूर्ण संपादन से हमारी स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का आधार मजबूत हुआ है और एक ठोस आर्थिक नींव पड़ गई है जिसके द्वारा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की हर शाखा का शीघ्र विकास संभव होगा ।

सप्त-वर्षीय योजना के काल में उद्योग के क्षेत्र में जो हमारी महानतम सफलता है, वह यह है कि जूछे-आधारित उद्योगों की शक्ति और औद्योगिक उत्पादन का शीघ्र विकास हुआ । जूछे-आधारित उद्योग से हमारा मतलब है वह उद्योग जो मूलतः

हमारे अपने कच्चे माल का इस्तेमाल करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर देता है। सप्त-वर्षीय योजना के काल में हमारी पार्टी की जूछे-आधारित उद्योगों के निर्माण की नीति की कृपा से हमारे उद्योगों ने भीमकाय कदम रखे। विशेषकर मशीन बनाने वाले उद्योग का शीघ्र विकास हुआ।

कृषि में भी महान सफलता मिली है।

इस क्षेत्र में सप्त-वर्षीय योजना काल की महानतम सफलता है सिंचाई-कार्यों का पूरा होना। हमने धान के खेतों की सिंचाई पूरी कर दी है और कई सूखे खेतों को भी पानी पहुचाया है। अब षड्-वर्षीय योजना में हम गैर-धान के खेतों की सिंचाई का भी काम पूरा करेंगे।

हमने गांवों का विद्युतीकरण भी पूरा कर दिया है। अब संपूर्ण देश में बिजली है। ऐसे बहुत ही कम देश होंगे जहां नगरों में ही नहीं गांवों में भी विद्युतीकरण पूरा न हो चुका हो।

कृषि का यंत्रीकरण एक निश्चित स्तर तक पहुंच गया है। लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हो पाया है क्योंकि हम सब टुकड़ों की नई चकबंदी नहीं कर पाए और हमारे पास कृषि मशीनों की कमी भी है।

क्योंकि हम अभी तक कृषि का यंत्रीकरण और रासायनीकरण पूरा नहीं कर पाए हैं, इसलिए हमने कृषि उत्पादन के विकास का काम 'उद्योग कृषि की सहायता करें और नगर ग्रामों की' सिद्धांत पर अमल करते हुए जारी रखा है। पहले हमारे देश में भोजन की कमी थी। लेकिन हमारी पार्टी के कृषि-विकास प्रयत्नों के परिणाम-स्वरूप भोजन के मामले में हम कभी के आत्मनिर्भर हो चुके हैं।

फलों के उत्पादन ने भी शीघ्र प्रगति की है। स्वाधीनता से पहले हमारे देश के पास १०,००० छोंग्बो से भी कम के बाग थे। लेकिन हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति की प्रधान परिषद् की पुकचौंग मीटिंग के बाद हमने बाग लगाने का जन आंदोलन आरंभ किया। परिणामस्वरूप आज हमारे बागों का क्षेत्रफल २,००,००० छोंग्बो तक पहुंच गया है।

पशुपालन ने भी महान सफलता पाई है। पिछले कुछ वर्षों से हमने अपने प्रयास का केंद्र मुर्गीपालन को बनाया है और इसके शानदार परिणाम आ रहे हैं।

हमने संस्कृति के विकास में भी बहुत काम किया है। अब तो कई वर्षों से हम अनिवार्य नौ-वर्षीय तकनीकी शिक्षा का कार्यक्रम लागू कर रहे हैं। हमारे देश में हर घर में समाचारपत्र और पत्रिकाएं पहुंचती हैं और सब कर्मचारी लोगों को रेडियो प्राप्य है।

हमारे लोगों का जीवनस्तर भी काफी सुधरा है। विगत में सुरक्षा निर्माण के हमारे महान प्रयास से जीवन स्तर सुधारने का कार्यक्रम कुछ पीछे रह गया था।

फिर भी लोगों की आजीविका में सुस्थिर सुधार हुआ है। सप्त-वर्षीय योजना के दौरान हमने केंद्र संचालित और स्थानीय उद्योगों के समांतर विकास की पार्टी लाइन का पालन करके उपभोक्ता माल का उत्पादन उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया। यह सही है कि हमारे स्थानीय उद्योगों में बनने वाले माल का स्तर उतना ऊंचा नहीं है। फिर भी जहां तक दैनिक आवश्यकता की चीजों का सवाल है आयात पर आश्रित रहने के बजाए हम लगभग सारी मांग अपने उत्पादनों से पूरा कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त जनता का जीवनस्तर सुधारने के विचार से सप्त-वर्षीय योजना काल में पार्टी ने एक क्रांतिकारी कदम उठाया और जिन्स के रूप में दिया जाने वाला कृषिकर पूरी तरह समाप्त कर दिया।

समाजवादी निर्माण में अब तक मिली सफलताओं के आधार पर हमने इस वर्ष छ-वर्षीय योजना पर कार्य आरम्भ किया।

कोरिया की मजदूर पार्टी की पांचवीं कांग्रेस पिछले वर्ष हुई थी। इसने छ-वर्षीय योजना के प्रोग्राम के दायित्व निश्चित किए और तकनीकी क्रांति हेतु समाजवादी निर्माण के लिए सर्वाधिक महत्व के तीन प्रमुख दायित्व प्रस्तावित किए।

इन तीन दायित्वों में से पहला है उद्योग के क्षेत्र में भारी और हलके श्रम के अंतर को कम करना।

हमारे खदान, जंगलात तथा ऐसे ही अन्य उद्योगों में अन्य क्षेत्रों के मुकाबले श्रम अधिक भारी है। इन शाखाओं में यंत्रों और स्वचालन के अधिकाधिक प्रवेश से हम जनता को कष्ट साध्य काम से मुक्ति दिलाएंगे। लेकिन हमारे देश में मशीनीकरण का स्तर इतना ऊंचा नहीं है अतः इस दायित्व को वर्तमान छ-वर्षीय योजना के काल में पूरा करना असंभव है। लेकिन कहावत है न 'ठीक से शुरू किया गया काम आधा हुए के बराबर है' इसलिए अगर हम इस काम में जुट जाएं और खदान उद्योगों से आरम्भ करें तो मेरे ख्याल में धीरे धीरे सभी कमरतोड़ श्रमसाध्य कार्यों का यन्त्रीकरण और स्वचालन सम्पन्न करने में सफल हो जाएंगे।

दूसरा दायित्व है ग्राम्य तकनीकी क्रांति की गति बढ़ाने का ताकि कृषि और उद्योग श्रम का अन्तर उल्लेखनीय रूप से कम किया जा सके।

हमारे देश में औद्योगिक श्रम से कहीं अधिक भारी कृषि श्रम है। किसानों को भारी श्रम से बचाना है तो हमें कृषि का यंत्रीकरण और आधुनिकीकरण करना ही चाहिए। ग्राम्य तकनीकी क्रांति की गति बढ़ा कर हमारी छ-वर्षीय योजना काल में कृषि और उद्योग श्रम के बीच का अंतर काफी कम करने की योजना है और अधिकांश क्षेत्रों में हल चलाना, फसल काटना तथा अन्य खेत के काम हम यंत्रों से करवा के रहेंगे।

हमारी पार्टी की नीति है शहर और गांव के बीच का भेद समाप्त

करना। ग्राम्य तकनीकी क्रांति को सही तरह संपन्न करके ही इस नीति का पूर्ण-सफल सम्पादन हो सकता है। कृषि के यन्त्रीकरण और रासायनीकरण के बाद ही किसानों की श्रम स्थिति सुधारी जा सकती है और उद्योगों की तरह खेतों में भी प्रतिदिन आठ घंटे का काम लागू किया जा सकता है। कृषि कर्म के सरल होने पर और ग्राम्य जीवन का स्तर ऊपर उठाने पर नगर और गांव का भेद काफी कम हो जाएगा।

तीसरा दायित्व है स्त्रियों को घर के भारी कामों से मुक्ति दिलाने की तकनीकी क्रांति का संपादन।

स्त्रियों की पूर्ण मुक्ति के लिए इतना ही आवश्यक नहीं है कि लिंगों की समानता के कानून के अनुसार स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार की गारंटी दे दी जाए, यह भी आवश्यक है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न की जाए कि वे चिंता हीन होकर राज्य तथा जन गतिविधियों में भाग ले सकें।

हमारे देश में आज काफी स्त्रियां घर से बाहर निकल कर काम करती हैं। हमारे औद्योगिक कर्मकरों में स्त्रियों का अनुपात ४५.५ प्रतिशत है। हमारी स्त्रियां श्रम में मजदूरों की कमी पूरा करने मात्र के लिए भाग नहीं लेती हैं। सामाजिक जीवन और राष्ट्र निर्माण में उन्हें लगाने के पीछे मुख्यतः हमारा उनका क्रांतिकरण और मजदूर वर्गीकरण हमारे उद्देश्य हैं। स्त्रियां अगर घर पर ही रहती हैं तो वे पिछड़ जाती हैं। समाज में अग्रसर होकर, श्रम में भाग ले कर, और सामूहिक जीवनयापन करके ही वे नए सैद्धांतिक सांचे में ढलती हैं और क्रांतिकारी बनती हैं। इसीलिए हमारी पार्टी ने स्त्रियों को समाज में आने के लिए प्रोत्साहित किया है।

हमने कामों में स्त्रियों का बोझ कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। कई बच्चों वाली स्त्रियों को राज्य से कई लाभ मिलते हैं। छह घंटे काम करने पर भी उन्हें आठ घंटों का वेतन मिलता है। इसके अलावा बच्चों के पालन के लिए राज्य ने सारे देश में नर्सरी और किंडर गार्टन बनाए हैं।

इससे ही सारी समस्या का हल नहीं होगा। स्त्रियों की समस्याओं को पूर्णतः सुलझाने के लिए हमें उन्हें घर के कामों के भारी बोझ से मुक्ति भी दिलानी होगी।

यह काम करने के लिए हम कई परियोजनाओं को उठा रहे हैं और उनमें राज्य की लागत पूंजी बढ़ा रहे हैं। हम भोजन उद्योग का विकास करेंगे ताकि औरतें आसानी से खाना बना सकें। घर के कामों को हलका करने के लिए कपड़े सीने और धोने के कारखाने लगाने और भिन्न प्रकार के रसोई बरतन बड़ी मात्रा में बनाने की भी हमारी योजना है। इसके साथ साथ ग्राम्य क्षेत्रों में हम जल सेवा आरंभ करने वाले हैं ताकि औरतों को सिर पर घड़े लादने की आवश्यकता न रहे।

एक शब्द में कहा जाए तो हमारी पार्टी द्वारा प्रस्तावित तकनीकी क्रांति के तीनों दायित्व हमारे मजदूरवर्ग को भारी, कमरतोड़ मेहनत से मुक्ति दिलाने का पावन कर्त्तव्य है। तकनीकी क्रांति के तीनों दायित्वों को पूरा करके अपनी छ-वर्षीय योजना के काल में हम अपनी जनता का जीवनस्तर ऊंचा उठाएंगे।

हमारे देश में छ-वर्षीय योजना पर काम संतोषजनक रूप से हो रहा है।

हमें तकनीकी क्रांति की कुंजी मशीनी पुर्जों के उत्पादन में मिली। इस क्रांति को पूर्ण करने के लिए हमें बहुत सारे मशीनी पुर्जे चाहिए। भारी श्रम की आवश्यकता वाली खदानों तथा अन्य क्षेत्रों में मशीनीकरण और स्वचालन के लिए हमें अनेक प्रकार की मशीनें और उपकरण चाहिए। कृषि के यंत्रीकरण के लिए भी हमें ट्रैक्टरों की तथा मशीनों की मरम्मत के कारखाने खोलने होंगे और अनेक प्रकार की कृषि मशीनों का उत्पादन करना होगा। खाद्य पदार्थ उद्योगों के लिए भी काफी बड़ी संख्या में मशीनी पुर्जों की जरूरत पड़ेगी। छ-वर्षीय योजना की पूर्णता का महाद्वार खोलने के लिए हमने पहले मोर्चे पर जोर दिया है अनेक प्रकार के मशीनी पुर्जे बनाने पर।

आपने हमारे अखबारों में देखा ही है कि हमारे मशीनी पुर्जे बनाने वाले कार-खाने अपना उत्पादन बढ़ाने का महाप्रयास कर रहे हैं।

पहले हुईचोन मशीनी-पुर्जा संयंत्र प्रति वर्ष २,५०० मशीनी पुर्जे बनाता था, लेकिन अब तकनीकी क्रांति के झंडे के नीचे अपने प्रबल प्रयासों से यह १०,००० पुर्जों का उत्पादन करने में सफल हो गया है। पिछले अगस्त में इस संयंत्र ने विभिन्न प्रकार के ८५० मशीनी पुर्जे बनाए और सितम्बर में १,०००। कुसोंग मशीनी-पुर्जे संयत्र में तो प्रति वर्ष १,४०० से अधिक मशीनी पुर्जे नहीं बनते थे। लेकिन पिछले अगस्त में इसने ८५० मशीन पुर्जे बनाए और इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता ने १०,००० का अंक छू लिया है।

आजकल हमारा मजदूर वर्ग श्रम के महान उत्साह से ओतप्रोत है। हर जगह वे उत्पादन विधियों में स्वचालन का प्रवेश करके और उत्पादन का युक्तियुक्त पुनर्गठन करके तेजी से उत्पादन बढ़ा रहे हैं।

हमारी जनता की संघर्ष भावना से हमें पूरा विश्वास हो गया है कि हमारी छ-वर्षीय योजना सफल होगी।

तकनीकी क्रांति के साथ-साथ हमने सैद्धांतिक और सांस्कृतिक क्रांति को भी मुख्य दादित्वों के रूप में प्रस्तावित किया है।

आपने मुझ से पूछा था कि हमारे देश में समाजवादी निर्माण की शीघ्र प्रगति की कुंजी क्या है। हमारे पास कोई विशेष कुंजी नहीं है। कर्मचारी जनता के क्रांति-कारी उत्साह और गतिविधि को बढ़ा कर हम समाजवादी निर्माण को उन्नत कर रहे हैं।

समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण में सफलता के लिए दो गढ़ों को जीतना होगा—पदार्थ का किला और सिद्धांत का गढ़। कुछ लोगों का विचार है कि मूलतः समाजवाद का भौतिक आधार स्थापित करने मात्र से समाजवादी निर्माण पूरा हो जाता है। लेकिन हम यह नहीं सोचते। हर चीज को हल करने के लिए भौतिक आधार काफी नहीं है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि साम्यवादी समाज में हम इस सिद्धांत पर अमल कर पाएंगे कि 'हर व्यक्ति अपनी क्षमतानुकूल काम करे और आवश्यकतानुसार फल पाए'। लेकिन समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण काल में अर्थात् पूंजीवाद से समाजवाद के परिवर्तनकाल में लोगों को सिद्धांत से सुसज्जित किए बिना और सिद्धांत के गढ़ पर कब्जा किए बिना तो हम पदार्थ के किले पर कब्जा तक नहीं कर सकते।

लोगों को सैद्धांतिक शिक्षा दिए बगैर केवल आर्थिक निर्माण में लगे रहने की प्रवृत्ति का हम विरोध करते हैं और साथ ही उस प्रवृत्ति का भी जो केवल सैद्धांतिक काम पर जोर देती है और आर्थिक काम को नजरअंदाज कर देती है। इसी कारण हमारी पार्टी ने हमेशा सैद्धांतिक और सांस्कृतिक क्रांति के साथ-साथ तकनीकी क्रांति-को तेजी से आगे बढ़ाने के सिद्धांत का पालन किया है।

किसी पिछड़े हुए देश को शीघ्र प्रगति करने के लिए तो अपनी जनता को सही सैद्धांतिक शिक्षा देना और भी महत्त्वपूर्ण होता है। अपने देश में समाजवादी निर्माण की गति तेज करने के लिए हम मजदूरों, कृषकों, कार्यशील बुद्धिजीवियो तथा अन्य सभी कार्यशील लोगों की राजनीतिक-सैद्धांतिक शिक्षा में तीव्रता ला रहे हैं ताकि वे अपनी पूरी शक्ति और बुद्धि समाजवादी निर्माण की सेवा में लगा सकें।

सैद्धांतिक और सांस्कृतिक क्रांतियां करने के लिए मेहनत से पढ़ना बहुत आवश्यक है। 'सर्व जनता, सर्व पार्टी और सर्व सेना को पढ़ना ही चाहिए' नारे के अंतर्गत हमारे संपूर्ण राष्ट्र ने पठनपाठन की आदत बना ली है। सभी अधिकारी प्रति दो घंटे पढ़ते हैं और हर शनिवार को वे सामूहिक पाठन करते हैं। मैं पढ़ता हूं, इसी प्रकार उप-प्रधान मंत्री गण और सब मंत्री पढ़ते हैं; कारखानों के मैनेजर और चीफ इंजीनियर पढ़ते हैं—पूरी मेहनत से। हमने एक ऐसी प्रणाली बनाई है जिसके अंतर्गत सभी कर्मकर वर्ष में एक महीने नियमित शिक्षण संस्थाओं में पढ़ते हैं। हम इसका ध्यान रखते हैं कि पार्टी के अधिकारी पार्टी के स्कूलों में, आर्थिक मजदूर आर्थिक संस्थाओं में और राजनयिक विदेश संबंध संस्थान में पढ़ें। इन स्कूलों में अधिकारी गण अपनी कार्य संबंधी योग्यता और तकनीकी स्तर उन्नत करते हैं और साथ ही साथ सैद्धांतिक संघर्ष से अपनी गलत सैद्धांतिक समझ को सही करते हैं।

सैद्धांतिक और सांस्कृतिक क्रांतियों के प्रमुख दायित्वों में हमने बूर्जुआ संस्कृति की घुसपैठ रोकने के संघर्ष की परिभाषा भी की है। पश्चिमी यांकी संस्कृति

के प्रवेश से जनता की हानि होती है और लोगों का सैद्धांतिक पतन होता है। बूर्जुआ यांकी संस्कृति की घुसपैठ रोकने के उद्देश्य से हम अपने समाजवादी साहित्य और कला का विकास कर रहे हैं—जो रूपाकार में राष्ट्रीय है और विषय वस्तु में समाजवादी और क्रांतिकारी। इसके साथ साथ हम जनता का सैद्धांतिक शिक्षण तीव्र कर रहे हैं ताकि उन्हें शोषण और दमन से भरा अपना विगत याद रहे, समाजवाद में गर्व हो और भविष्य में विश्वास।

सांस्कृतिक क्रांति का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व है कार्यशील लोगों की सामान्य तकनीकी और सांस्कृतिक योग्यताएं बढ़ाना। हम इसके लिए प्रयत्नशील हैं कि हर आदमी के पास कम-से-कम तकनीकी हुनर हो और उनके सामान्य ज्ञान का स्तर ऊपर उठे। भविष्य में अनिवार्य दस-वर्षीय शिक्षा लागू करेंगे। कुछ स्कूलों ने प्रयोगात्मक आधार पर इसे शुरू भी कर दिया है। अगले वर्ष से यह प्रणाली आरंभ करेंगे और कुछ वर्षों में इसे सब स्कूलों पर लागू कर देंगे। भविष्य में कार्यशील जनता के लिए कई प्रकार के और अधिक समाचारपत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित किए जाएंगे।

छ-वर्षीय योजना के काल में हमारी पार्टी जनता का जीवनस्तर और सुधारना चाहती है। आज हमारे लोग रोटी, कपड़ा और मकान की चिंता से मुक्त होकर सुखी जीवन बिता रहे हैं। फिर भी हम अपनी जनता के जीवन स्तर को उच्च नहीं समझ सकते। इसे समतल रूप से ऊपर उठाने के लिए हम छ-वर्षीय योजना के काल में कुछ कदम उठाएंगे। षड्-वर्षीय योजना को सफलतापूर्वक संपन्न करके तथा कुछ और वर्षों तक मेहनत करके हमारी जनता का जीवनस्तर उल्लेखनीय रूप से ऊंचा होगा और उनका जीवन शालीन।

दूसरे, अब मैं कोरिया में पुनरेकीकरण के प्रश्न पर आता हूं।

देश के स्वतंत्र और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की हमारी जनता की सर्व सम्मत आकांक्षा है। शांतिपूर्ण राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के प्रति सुझाव गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग की जनता में ही नहीं, दक्षिण कोरिया की जनता में भी स्पष्ट है। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट है कि दक्षिण कोरिया के युवक और छात्र सैनिक कवायद के विरुद्ध और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के समर्थन में प्रति दिन विद्रोह कर बैठते हैं। इस वसंत में दक्षिण कोरिया के 'राष्ट्रपति चुनाव' के दौरान भी यह पूर्णतः स्पष्ट हो गया था।

पिछले 'चुनाव' में दक्षिण कोरिया की गैर-सरकारी राजनीतिक पार्टियों ने संयुक्त होकर पाक जुंग ही का मुकाबला किया था। न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी का प्रत्याशी पाक जुंग ही को हराने वाला ही था कि पाक जुंग ही के छल कपट के कारण रह गया। सियोल में, जहां कठपुतली शासकों के इशारे पर विशाल पुलिस और सैनिक शक्तियां तैयार रहती हैं, विरोधी प्रत्याशी ने ६० प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त करके पाक जुंग ही को हरा दिया। चोल्ला तथा अन्य प्रान्तों में भी उसे पाक से

अधिक मत प्राप्त हुए। अगर चुनाव उचित तरह होता तो वह विजयी हो जाता। लेकिन केवल आतंक और छल के आधार पर पाक जुंग ही ने 'राष्ट्रपति' पद फिर से छीन लिया। न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रत्याशी को 'चुनाव' में इतने अधिक मत अपनी लोकप्रियता के लिए नहीं मिले थे बल्कि इसलिए कि उसने चुनाव अभियान में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का नारा लगाया था और यह नारा जनता की मांग है।

उसके कई नारे ध्यान देने योग्य थे। उसने घोषणा की थी कि अगर वह सत्ता में आ गया तो एक-तरफा नीति का पालन नहीं करेगा। दूसरे शब्दों में उसने वादा किया था कि वह अमरीका और जापान से ही नहीं सोवियत यूनियन और चीनी जनवादी गणतन्त्र से भी संबंध रखेगा। उसने यह भी कहा था कि वह 'होमलैंड रिजर्व फोर्स' को बरखास्त कर देगा, गुप्तचरी की राजनीति से दूर रहेगा और शांतिपूर्ण तरीके से देश का पुनरेकीकरण करेगा। इन नारों ने उसे दक्षिण कोरिया की जनता में लोकप्रियता दिलाई।

पिछले 'चुनाव' में दक्षिण कोरिया की जनता के न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के प्रत्याशी के समर्थन को अंतिम विश्लेषण में देश के यथाशीघ्र, युद्ध के द्वारा नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की अभिव्यक्ति समझा जा सकता है।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सरकार ने बीसियों अवसरों पर शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के सुस्पष्ट प्रस्ताव रखे हैं जो समस्त कोरियाई जनता की अपने देश को शांतिपूर्ण तरीके से पुनरेकीकरण करने की सर्व सम्मत आकांक्षा और इच्छा के दर्पण हैं। इस बसंत में जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की सर्वोच्च लोक सभा ने शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का आठ-सूत्री प्रस्ताव रखा जिसमें हमारे अब तक के प्रस्ताव एक साथ संग्रहीत कर दिये थे। विशेषकर अपने ६ अगस्त के भाषण में हमने एक बार फिर दक्षिण कोरिया की डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी सहित सभी राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं और व्यक्तियों से किसी भी समय संपर्क में आने की अपनी रजामंदी को स्पष्ट किया। मैं समझता हूं कि आप इसे अच्छी तरह जानते हैं।

शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के हमारे प्रस्ताव को संपूर्ण कोरियाई जनता का सर्वसम्मत समर्थन और सहमति प्राप्त है।

हमारे देश में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का विरोध बस कुछ गिने-चुने दक्षिण कोरियाई प्रतिक्रियावादी शासक ही करते हैं। न वे सिर्फ शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण से घृणा करते हैं बल्कि इसकी पैरवी करने वालों को कम्युनिस्ट समर्थक का लेबल लगाकर 'कम्युनिस्ट-विरोधी नियम' के उल्लंघन के लिए कैद भी कर लेते हैं। शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का सबसे कट्टर विरोधी पाक जुंग ही है।

पिछले वर्ष जब दक्षिण कोरिया की जनता में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की तरफ झुकाव अदमनीय तेजी से बढ़ा तो दक्षिण कोरिया के शासकों ने भी पहली बार

'शाँतिपूर्ण पुनरेकीकरण' शब्दों का उच्चारण किया। लेकिन उनकी 'शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण योजना' देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए नहीं बनाई गई है। वे बहाना करते हैं कि पुनरेकीकरण के प्रश्न पर बातचीत सत्तरादिक दशक के अन्त में ही या उसके भी दस वर्ष बाद की जा सकती है, और तब तक उन्हें 'शक्तिवर्द्धन' करेंगे। दूसरे शब्दों में पहले वे 'शक्तिवर्द्धन' करेंगे और फिर देश को शांतिपूर्ण तरीके से पुनरेकीकृत करेंगे।

आखिरकार इसका मतलब है शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण से इनकार। शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण तभी हो सकता है जब दोनों पक्षों को उसकी इच्छा हो और वे इसके लिए सुसंगत प्रयास करें। शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए 'शक्तिवर्द्धन' का क्या उपयोग है ? दक्षिण कोरियाई कठपुतली शासकों का यह शोर उनके 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' के नारे के विस्तार से अधिक कुछ नहीं है जिसकी पैरवी वे हमेशा करते रहे हैं।

हमने इसका भी अध्ययन किया कि वे कैसी 'शक्ति' का 'वर्द्धन' करेंगे। 'शक्तिवर्द्धन' से उनका मतलब है कि वे अपनी ताकत इतनी बढ़ा लें कि हमें आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक रूप से दबा सकें। यह एक ऐसे सपने से अधिक नहीं है जो कभी पूरा नहीं हो सकता।

पहले तो हम उनके 'शक्तिवर्द्धन' को अनुकूल दृष्टिकोण से सोचें तो इसका मतलब हो सकता है कि वे हमसे आर्थिक स्पर्द्धा करना चाहते हैं।

लेकिन मुझे विश्वास है कि दक्षिण कोरिया गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्धभाग से आर्थिक प्रतियोगिता में कभी नहीं जीत सकता। दक्षिण कोरिया में अर्थव्यवस्था का विकास होगा तो हम भी निष्क्रिय होकर सोते नहीं रहने वाले हैं। ऐसा होगा क्यों ? जैसे जैसे समय बीतेगा हमारी—अर्थव्यवस्था की प्रगति तेज ही होगी। स्पष्ट बात तो यह है कि अगर आर्थिक प्रतियोगिता शांतिपूर्ण तरीके से हुई तो हम दक्षिण कोरिया के मुकाबले कई गुना तेज विकसित हो सकते हैं। फिलहाल दक्षिण कोरिया अधिकांश अमरीकी सहायता विशाल सैनिक व्यय पर लगा रहा है। जब कि हम सब कुछ अपने बलबूते पर कर रहे हैं। इसलिए अगर हम अपना सुरक्षा व्यय कम कर सकें और आर्थिक निर्माण पर अधिक धन लगाएं तो हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था अब के मुकाबले और तेजी से विकसित होगी और जनता का जीवन स्तर और अधिक सुधरेगा। अतः सत्य तो यह है कि हमने और दक्षिण कोरिया के बीच आर्थिक प्रतियोगिता का प्रश्न ही नहीं उठता।

अब वे अपनी राजनीतिक 'शक्ति' का 'वर्द्धन' कैसे करेंगे ? स्पष्ट है कि जो दक्षिण कोरियाई कठपुतली शासक चाहते हैं वह वे कर नहीं कर सकेंगे ?

जैसा कि मैंने पहले ही जिक्र किया है, जैसे जैसे दिन बीत रहे हैं दक्षिण

कोरिया के लोग और ज्यादा जोरदार तरीके से शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की मांग कर रहे हैं। आज दक्षिण कोरिया में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के प्रति कितना झुकाव है वह इस बात से ही जाना जा सकता है कि स्वयं पाक जुंग ही, जो शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के उच्चारण मात्र पर ही लोगों को अंधाधुंध गिरफ्तार करके क़ैद में डालता रहा है, पिछले 'चुनाव' में जनता को प्रसन्न करने के लिए 'शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण' की बात करने को मजबूर हो गया।

वर्तमान कठपुतली शासकों और दक्षिण कोरिया की समाज-व्यवस्था के प्रति दक्षिण कोरिया की जनता का असंतोष भी प्रतिदिन बढ़ रहा है। जब तक दक्षिण कोरिया में वर्तमान औपनिवेशिक शासन व्यवस्था बरकरार है जनता को सच्ची स्वतंत्रता और अधिकार नहीं मिल सकते और न ही वे खुशहाल हो सकते हैं। आज दक्षिण कोरिया में अमीरों और गरीबों के बीच बहुत बड़ी खाई है। अगर भविष्य में दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था का कुछ विकास भी हो तो यह खाई गायब नहीं हो जाएगी। अगर अर्थव्यवस्था का विकास होगा तो गिनती के अमीर और अमीर हो जाएंगे लेकिन अधिकांश जनता को अपनी वर्त्तमान गरीबी से छुटकारा नहीं मिलेगा।

दक्षिण कोरिया में आज राजपथ-शीघ्रपथ बनाए जा रहे हैं, लेकिन यह युद्ध की तैयारी के लिए किया जा रहा है और जनता की जीविका में सुधार के लिए तो कतई नहीं। विकसित पूंजीवादी देशों के लिए तो यह और बात है, पर दक्षिण कोरिया में शीघ्रपथ बनाने की कोई तात्कालिक आवश्यकता नहीं है। जब वहां बहुत ज्यादा कारें नहीं हैं और वे अभी तक अधिकतर बैलगाड़ियों का उपयोग करते हैं तो शीघ्रपथों का क्या लाभ है? अगर दक्षिण कोरिया शीघ्रपथों का निर्माण न करके उस धन से बांध बना कर ग्राम्य क्षेत्रों की सिंचाई का बन्दोबस्त करे तो इससे दक्षिण कोरिया की जनता की आजीविका की बड़ी सहायता मिलेगी। लेकिन दक्षिण कोरिया के कठपुतली शासकों को इसका तो सपना तक नहीं आता।

कुछ समय पहले मैंने एक जापानी समाचार पत्र में दक्षिण कोरियाई वस्तु स्थिति की निंदा का एक लेख पढ़ा था। उसमें लिखा था कि दक्षिण कोरिया में शीघ्रपथों के दोनों तरफ झुग्गी झोंपड़िया और गन्दी बस्तियां हैं। मेरे विचार में दक्षिण कोरिया की यही वस्तु स्थिति है। यह स्वाभाविक ही है कि प्रतिदिन दक्षिण कोरिया की जनता का असंतोष बढ़ता रहे।

यह स्पष्ट है कि दक्षिण कोरिया हमसे आर्थिक या राजनीतिक प्रतियोगिता करने की स्थिति में नहीं है। आखिरकार 'शक्तिवर्द्धन' से दक्षिण कोरियाई कठपुतली शासकों का मतलब है समय हासिल करना, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की मांग करनेवाली प्रगतिशील शक्तियों को दबाना और युद्ध की तैयारी करने के बाद 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' करना।

दक्षिण कोरियाई अधिकारी भारी गलती पर हैं। अगर वे अपनी सैनिक 'शक्ति' का 'वर्द्धन' करेंगे और हमें जीतने की युद्ध पूर्ण तैयारी करेंगे तो हम क्या हाथ बांधे बैठे रहेंगें ? सो अगर वे 'शक्तिवर्द्धन' करते रहे और युद्ध की तैयारियां करते रहे तो शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण कब संपन्न होगा ?

यही नहीं 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' की उनकी महत्त्वाकांक्षा बहुत ही मूर्खतापूर्ण मरीचिका है। 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' का मतलब है हमारे देश में साम्यवाद को नष्ट करके और गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में समाजवादी व्यवस्था को पलट कर राष्ट्रीय पुनरेकीकरण प्राप्त करना। इसे पुराव शेषी विचारधारा से अधिक कुछ नहीं समझा जा सकता।

वे साम्यवाद को कभी नहीं मिटा सकते। अगर पेरिस कम्यून से इसका आरंभ मानें तो साम्यवादी आंदोलन का १०० वर्षों से भी अधिक का इतिहास है। अनेक देशों में साम्यवादी सिद्धांत प्रमुख सिद्धांत बन चुका है और जनता के हृदय में इसकी जड़ें गहरी हैं। साम्यवाद के बदनाम दुश्मनों ने साम्यवाद को मिटाने की हर संभव और जीतोड़ कोशिशें की हैं, पर कोई भी सफल नहीं हुई। समाजवाद का सफाया नहीं हुआ है, उल्टे यह हर दिन बढ़ रहा है। इतिहास ने पूरी तरह सिद्ध कर दिया है कि साम्यवाद को नष्ट नहीं किया जा सकता।

न ही दक्षिण कोरिया के कठपुतली शासक गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में समाजवादी व्यवस्था को पलट सकते हैं। हमारी समाजवादी व्यवस्था प्रतिदिन पनप रही है। राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में यह बड़ी तेजी से सुदृढ़ और विकसित हो रही है। क्योंकि उत्तर की संपूर्ण जनता इस व्यवस्था का दृढ़ समर्थन करती है, इससे प्रेम करती है और इसे मजबूत बनाने और विकसित करने के लिए प्रयत्नशील है।

दक्षिण कोरिया के कठपुतली शासकों के 'शक्तिवर्द्धन' के नारे का अंततोगत्वा यही मतलब है कि वे 'शक्तिवर्द्धन' और 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' करना चाहते हैं। इसका सच्चा अर्थ तो यह है कि वे देश का पुनरेकीकरण कभी नहीं करेंगे। आखिरकार उनका सच्चा इरादा तो है देश के पुनरेकीकरण को टालना, दक्षिण कोरिया को अमरीकी साम्राज्यवादियों का उपनिवेश और सैनिक अड्डा बनाए रखना और आक्रामक जापानी सैन्यवादियों को घुसा कर उनकी सहायता से अपने सैनिक फासिस्ट शासन को टिकाए रखना।

अब जो पानमुनजोन में उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के रेडक्रास संगठनों के प्रतिनिधियों में प्रारंभिक वार्ता हो रही हैं उनसे भी राष्ट्रीय पुनरेकीकरण को रोकने की दक्षिण कोरियाई अधिकारियों की साजिश स्पष्ट हो जाती है।

यह कहा जा सकता है कि इस उत्तर-दक्षिण संवाद के लिए दक्षिण कोरियाई अधिकारी मजबूर हो गए थे—विशेषकर हमारे उत्तर-दक्षिण समझौता वार्ता के बारंबार दोहराए गए प्रस्तावों के कारण और दक्षिण कोरियाई जनता की इन्हें पूरा करने की बढ़ती हुई मांग के कारण। दूसरी ओर उनके अमरीकी मालिकों ने भी इस संकट से निकलने के लिए हमारे पक्ष से बात करने के लिए उकसाया। यह इस तथ्य से भी देखा जा सकता है कि अमरीकी समाचार पत्र 'न्यूयार्क टाइम्स' ने इस अभिप्राय का समाचार प्रकाशित किया था।

हालांकि रेडक्रास संस्थाओं के बीच प्रारंभिक वार्ता के लिए दक्षिण कोरियाई पक्ष राजी हो गया था फिर भी वे पूरी ईमानदारी से बातचीत में हिस्सा नहीं ले रहे हैं और टालू हथकंडे अपना रहे हैं। शायद आप यह अच्छी तरह जानते ही हैं क्योंकि आपने पानमुनजोन में यह स्वयं देखा था। अब आरंभिक वार्ता में पूर्ण वार्ता के लिए स्थान, समय और एजेंडा पर चर्चा हो रही है। ये इतनी सीधी-सादी चीजें हैं कि इन पर रजामंदी आसानी से हो सकती है। फिर भी दक्षिण कोरियाई पक्ष वार्ता में रुकावटें डाल रहा है और जानबूझ कर चर्चा में देर लगा रहे हैं। अगर हम २० सितम्बर को कोई प्रस्ताव रखें तो जवाब मिलता है २७ सितंबर को।

आजकल पानमुनजोन प्रारंभिक वार्त्ताओं में पूर्ण वार्ताओं के लिए स्थान पर बहस चल रही है। दस वर्ष पहले ही हमने उत्तर-दक्षिण की राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक संस्थाओं की कान्फरेंस के लिए प्योंगयांग और सियोल का सुझाव दिया था। हमने अनेक अवसरों पर अपने भाषणों में और दस्तावेजों में यह प्रस्ताव रखा है। इस बार हमारी रेडक्रास संस्था ने प्रस्ताव रखा है कि बातचीत पहले पानमुनजोन में हो और बाद में जैसे ही तैयारियां हो जाएं प्योंगयांग और सियोल में। तैयारियों से हमारा मतलब है संचार की सुविधाओं से। प्योंगयांग और सियोल के बीच संचार व्यवस्था नहीं है। इसीलिए हमारे पक्ष ने प्योंगयांग और सियोल में बातचीत करने से पहले इन आवश्यक परिस्थितियों को बनाने का प्रस्ताव रखा। पर दक्षिण कोरियाई पक्ष ने आरंभ से ही सियोल और प्योंगयांग में बातचीत आरंभ करने पर जोर दिया। उनका प्रस्ताव तर्कपूर्ण नहीं था, पर फिर भी हम सहमत हो गए आखिर हम वार्ता को हर कीमत पर सफल बनाना चाहते थे। लेकिन पानमुनजोन वार्ता में दक्षिण कोरियाई पक्ष ने अब जो रुख अपनाया है उसे देखते हुए लगता है कि वे अनेक बहानों के अंतर्गत वार्ता भंग करना चाहते हैं और उसकी जिम्मेदारी हमारे पक्ष पर लादना चाहते हैं।

हम वार्ता को तोड़ना नहीं चाहते। हम पूरी निष्ठा से उन्हें आगे बढ़ाना चाहते हैं, और हर सम्भव प्रयास से सफल करना चाहते हैं चाहे हमें गौण मुद्दों पर रियायतें देनी पड़ें। यह करके न सिर्फ हम उत्तर और दक्षिण के तितर-बितर हुए परि-

वारों, संबंधियों और मित्रों को खोजेंगें बल्कि दोनों भागों के बीच पत्रव्यवहार और स्वतंत्र आवागमन भी लागू करेंगे।

जब उत्तर और दक्षिण की रेडक्रास संस्थाओं की बातचीत का प्रश्न पहली बार उठाया गया था तभी हमने प्रस्ताव रखा था कि बातचीत केवल परिवारों, संबंधियों और मित्रों को खोजने तक ही सीमित न की जाए बल्कि उत्तर और दक्षिण के बीच पत्रव्यवहार और स्वतंत्र यात्राओं के प्रश्नों को भी सम्मिलित किया जाए। गणतंत्र के उत्तरी अर्द्धभाग की जनता ही नहीं दक्षिण कोरिया की जनता भी हर्षोत्तेजित हो उठी और उन्होंने इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन भी किया। इस पर दक्षिण कोरियाई शासक उलझन में पड़ गए और बार-बार वही पुराने बहाने बनाने लगे : 'हमें इतना उत्तेजित नहीं होना चाहिए,' 'अभी सब कुछ अपरिपक्व है,' आदि।

उत्तर और दक्षिण कोरिया की रेडक्रास संस्थाओं के वार्तालाप में अब हमने और दक्षिण कोरिया के पक्ष की स्थितियां स्पष्ट हैं। हम वार्तालाप आसान करना चाहते हैं और दक्षिण कोरियाई पक्ष उनमें देर लगाना चाहता है। स्पष्टतः यही अंतर है। इसीलिए दोनों रेडक्रास संस्थाओं के वार्त्तालाप को आगे बढ़ाने और सफल बनाने के लिए मेरी राय में यह आवश्यक है जनमत को और जगाया जाए और दक्षिण कोरिया के अधिकारियों पर और दबाव डालने के लिए दक्षिण कोरिया की जनता को और सक्रियता से लड़ना चाहिए।

हाल ही में दक्षिण कोरिया में कुछ लोगों ने उत्तर और दक्षिण के बीच पत्रकारों की पारस्परिक यात्राओं की संभावना का सुझाव रखा है। हम इसका स्वागत करते हैं। हम दक्षिण कोरियाई पत्रकारों के उत्तरी अर्द्धभाग की यात्रा पर आने और देखने के विरुद्ध नहीं हैं। हमें तो आशा है कि हमारे भी पत्रकार दक्षिण कोरिया जा सकेंगे। और देख सकेंगें। लेकिन उत्तर और दक्षिण के बीच यात्रा और संपर्क के डर से दक्षिण में कोरियाई अधिकारियों ने दरवाजा बंद करके रखा है।

हम न केवल उत्तर और दक्षिण कोरिया की रेडक्रास संस्थाओं के वार्त्तालाप को आगे बढ़ाते रहेंगे बल्कि उत्तर और दक्षिण कोरिया की राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक संस्थाओं के बीच क्रमशः संपर्क के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगे।

हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार ने हमेशा कहा है कि हर हाल में कोरिया का प्रश्न स्वयं कोरियावासियों द्वारा सुलझाया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में हम बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के स्वतन्त्र रूप से देश का पुनरेकीकरण चाहते हैं।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया हर प्रकार से पूर्णतः स्वतन्त्र है। हम किसी को अपने आंतरिक मामलों में पड़ने की आजादी नहीं देते, न ही कोई हमारे मामलों में पड़ रहा है। समस्या यह है कि अमरीका और जापान दक्षिण कोरिया के आंतरिक

मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं और हमारे राष्ट्रीय पुनरेकीकरण को रोक रहे हैं।

दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य कोरिया के स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की समस्या में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए पुनरेकीकरण को शीघ्रता से लाने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों को हमारे देश के प्रति आक्रामक नीति से बाज आना चाहिए और दक्षिण कोरिया में 'संयुक्त राष्ट्र सेना' के साइन बोर्ड के नीचे खड़ी अपनी आक्रामक सेना को हटा लेना चाहिए। साथ-साथ उन्हें चाहिए कि जापान की आक्रामक सैन्यवादी शक्तियों को दक्षिण कोरिया पर धावा करने के लिए प्रोत्साहित न करें। और दक्षिण कोरियाई शासकों को चाहिए कि वे दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादियों को व अन्य विदेशी आक्रामक सेनाओं को बाहर खदेड़ने के लिए और आंतरिक मामलों में उनके हस्तक्षेप का अंत करने के लिए प्रयास करें।

लेकिन इसके विपरीत दक्षिण कोरियाई शासक अमरीकी साम्राज्यवादियों के आगे हाथ जोड़ रहे हैं कि वे दक्षिण कोरिया न छोड़ें और जापानी सैन्यवादियों को फिर से दक्षिण कोरिया में लाने की कोशिश कर रहे हैं। दक्षिण कोरिया की जनता और विश्व मत को धोखा देने की कोशिश में वे यह प्रचार करने का कोई अवसर नहीं चूकते कि हम 'दक्षिण पर धावा' बोलने वाले हैं। यह सब दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक सेना के आधिपत्य और दक्षिण कोरिया पर जापानी सैन्यवादियों द्वारा पुनः आक्रमण की सफाई देने के लिए ही कहा जाता है।

हमने कभी 'दक्षिण पर धावा' नहीं करना चाहा, न ही कभी हमने कहा कि हम ऐसा करेंगे। गणतन्त्र की सरकार लगातार शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की पैरवी करती रही है और अब भी कर रही है। हम गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्ध भाग की सामाजिक व्यवस्था को दक्षिण कोरिया पर लादना नहीं चाहते। हमने एकाधिक बार राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के आरंभिक कदम के रूप में एक प्रकार के परिसंघ की स्थापना का प्रस्ताव रखा है जिसमें उत्तर और दक्षिण कोरिया की समाज व्यवस्थाएं यथावत् रहेंगी। भविष्य में भी हमारी पार्टी और गणतन्त्र की सरकार शांतिपूर्ण एकीकरण की पैरवी करेगी और उसके लिए प्रयत्नशील रहेगी।

क्योंकि अमरीकी साम्राज्यवादियों ने दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य कर रखा है और जापानी सैन्यवादी एक बार फिर आक्रमण की साजिश कर रहे हैं, इसलिए हम यह आशा नहीं कर सकते कि कोरिया के पुनरेकीकरण का प्रश्न आसानी से सुलझ जाएगा। यह सत्य है फिर भी हमारे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की गति तीव्र हो सकती है अगर उत्तर और दक्षिण कोरिया की संपूर्ण जनता, जापानी तथा अन्य एशियाई लोग और सारे संसार के लोग संगठित हो जाएं और अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी प्रतिक्रियावादियों से लड़ कर उन पर दबाव डालें

ताकि अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया से अपनी आक्रामक सेना हटानी पड़े और जापानी सैन्यवादी दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों का समर्थन करने से बाज आएं। चाहे कुछ समय लगे पर हमारी राय है कि राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत के आधार पर कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न के शांतिपूर्ण निपटारे की संभावनाएं हैं।

तीसरे, आपने मुझ से पूछा है कि कोरिया के प्रश्न के निपटारे में संयुक्त राष्ट्र क्या भूमिका अदा कर सकता है। हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए और देखना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र हमसे अनुचित मांगें करता रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने कोरिया के प्रश्न पर गैर कानूनी 'प्रस्ताव' स्वीकार किए, हमसे ढिठाई से मांग की कि हम उनका आदर करें। उनका कथन है कि इसके बाद ही वे हमारे प्रतिनिधि को संयुक्त राष्ट्र जनरल असेंबली में भाग लेने की और वक्तव्य देने की अनुमति देंगे। हम कोरिया के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र के गैर कानूनी 'प्रस्तावों' और उनकी अनुचित मांगों को कभी स्वीकार नहीं कर सकते।

हम संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र का आदर करते हैं। हमने कभी उसका उल्लंघन नहीं किया। हम संयुक्त राष्ट्र के 'प्रस्तावों' का विरोध करते हैं क्योंकि वे अनुचित हैं और घोषणापत्र की भावना के विपरीत हैं। हम नहीं बल्कि अमरीकी साम्राज्यवादी संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र का उल्लंघन कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के 'प्रस्तावों' के बहाने अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया पर अपने आधिपत्य को उचित ठहराने की कोशिश कर रहे हैं। दक्षिण कोरिया में तथाकथित 'संयुक्त राष्ट्र सेनाएं' अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक सशस्त्र सेनाएं हैं जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र का झंडा छीन लिया है।

कोरिया के प्रश्न पर अमरीकी दबाव में स्वीकार किए गए अनुचित 'प्रस्तावों' को पहले संयुक्त राष्ट्र को बेदखल करना चाहिए, 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास के संयुक्त राष्ट्र आयोग' को भंग करना चाहिए और दक्षिण कोरिया से 'संयुक्त राष्ट्र सेनाओं' को हटाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र को चाहिए कि कोरिया के प्रश्न पर स्वीकृत और गैर कानूनी 'प्रस्तावों' को मनसूख करे और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया से उचित बरताव करे। संयुक्त राष्ट्र को चाहिए कि हमसे अनुचित मांगें न करे और कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करे ताकि कोरियावासी स्वयं उसे सुलझा लें।

चौथे, मैं जापान में कोरियावासियों के राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा और उनकी स्वदेश वापसी के प्रश्न की चर्चा करना चाहूंगा।

जापान में कोरियाई नागरिकों के लिए आवश्यक है कि वे अपने राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करें। यह स्वाभाविक है कि कोई भी राष्ट्र अपने अधिकारों की

रक्षा करे और यह अंतर्राष्ट्रीय कानून के विपरीत नहीं है। जैसा कि हम समझते हैं कई जापानी परदेश में रहते हैं और साथ ही अपने राष्ट्रीय अधिकारों को त्यागने के बजाए उनकी रक्षा करना चाहते हैं। इसी प्रकार जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों के लिए भी अपने राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करना स्वाभाविक है।

सब से पहले तो जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों को राष्ट्रीय शिक्षा के पूर्ण अधिकार की गारंटी मिलनी चाहिए।

विदेशों में रहने वाले हमारे सभी नागरिकों के अपने स्कूल हैं। जहां कोरिया के नागरिकों की संख्या बहुत कम है, वहां स्कूल हमारे दूतावासों द्वारा चलाए जाते हैं। चीन में, जहां कोरियाई नागरिकों की संख्या मुकाबले में काफी है, पीकिंग, शंघाई तथा अन्य स्थानों में हमारे अपने स्कूल हैं। कोरियाई नागरिकों की शिक्षा की रक्षा के लिए चीनी सरकार वह सब करती है जो वह कर सकती है। वर्त्तमान में चीन में रहने वाले सभी कोरियावासियों के अपने स्कूल हैं जहां वे अपनी बोली और लिखित भाषा सीखते हैं और अपनी पार्टी की नीतियां और हमारा इतिहास पढ़ते हैं।

जापान में भी खोंगरियान के अंतर्गत कोरिया के नागरिक अपनी मातृभाषा सीखते हैं और हमारी पार्टी की नीति और हमारा इतिहास पढ़ते हैं। जापान में कोरिया के नागरिकों का यह कानूनी राष्ट्रीय अधिकार है।

मेरी राय में यह राष्ट्रीय शिक्षा इसलिए संभव हो सकी कि वे भली भांति लड़े और उन्हें जापानी जनता और हर स्तर के प्रगतिशील लोगों से सशक्त समर्थन और प्रोत्साहन मिला।

जापानी शासक वर्ग के कुछ व्यक्ति जो अपने झुकाव से प्रतिक्रियावादी हैं जापान में कोरियावासियों की इस राष्ट्रीय शिक्षा को नष्ट करने के प्रयत्न करते हैं पर वे जापानी जनता की अधिकांश बहुसंख्या और प्रगतिशील हस्तियों के दबाव के कारण ऐसा नहीं कर पाते। स्वयं जापान की सरकार के अंदर एक प्रतिक्रियावादी अंश जापान में कोरियावासियों की राष्ट्रीय शिक्षा के विरुद्ध है लेकिन अनेकों का समर्थन भी इसे प्राप्त है। संभवतः इसीलिए जापानी सरकार उनकी शिक्षा के लिए हमारी आर्थिक सहायता की अनुमति भी देती है।

प्रवासी नागरिकों को राष्ट्रीय शिक्षा देना बहुत महत्त्व का है। जैसा कि आप जानते हैं कि बोली और लिखित भाषा की सामूहिकता किसी राष्ट्र का प्रमुख निर्माण तत्व होती है। अगर जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिक कोरियन भाषा बोलना और लिखना न जानें तो वास्तव में कोरिया राष्ट्रीय भी नहीं कहला पाएंगे। इसलिए हम जापान के कोरियावासियों को राष्ट्रीय शिक्षा को बहुत बड़ा महत्त्व देते हैं और इस काम के लिए सक्रिय समर्थन और सहायता देते रहेंगे।

जापान की काफी बड़ी आबादी है, इसलिए हमारी राय में उसे कोरियावासियों को जापानी बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। हमें आशा है कि भविष्य में जापानी जनता और हर क्षेत्र के प्रगतिशील व्यक्ति जापान में कोरियाई नागरिकों की राष्ट्रीयता को दृढ़ समर्थन और संरक्षण देते रहेंगे।

इस समय जापानी सरकार जापान में कोरियाई नागरिकों को जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की राष्ट्रीयता ग्रहण करने से रोक रही है। मेरी राय में यह हमारे देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रुख की अभिव्यक्ति है। जापानी सरकार के भीतर प्रतिक्रियावादी तत्व दक्षिण कोरियाई कठपुतली गिरोह से गठजोड़ करके जापान में कोरियावासियों को 'कोरिया प्रजातंत्र' की 'राष्ट्रीयता' लेने को मजबूर कर रहे हैं। अगर वे 'कोरिया प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' मान लेते हैं तो उन पर कृपादृष्टि रखी जाती है। लेकिन जो लोग जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की राष्ट्रीयता लेते हैं उन्हें कई बहानों से अन्यायपूर्ण व्यवहार मिलता है। मुझे लगता है कि कुछ को इतना परेशान किया जाता है कि उन्हें 'कोरिया प्रजातंत्र की 'राष्ट्रीयता' लेनी ही पड़ती है ऊपरी तौर पर राष्ट्रीयता के चुनाव में जापानी 'स्वतंत्रता' का शोर मचाते हैं पर वास्तव में राष्ट्रीयता के स्वतंत्र चुनाव की अनुमति नहीं देते बल्कि अनुचित रूप से 'कोरिया प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' थोप देते हैं। चाहे वे जापान में रहने वाले कोरियावासियों पर यह थोप भी दें इससे हमें कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं होती। जापानी प्रतिक्रियावादियों के दबाव में आकर अगर लोग अपनी राष्ट्रीयता बदल भी लें तो भी वे बिना हिचक जनवादी जन गणतंत्र कोरिया का समर्थन करेंगे जैसे कि दक्षिण की जनता अब करती है।

आखिरकार उनकी राष्ट्रीयता में 'कोरिया प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' का यह खेदजनक परिवर्तन इसलिए तो हो रहा है कि आज हमारा देश उत्तर और दक्षिण में बटा हुआ है। फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि सही समय आने पर यह समस्या ठीक से सुलझ जाएगी।

जहां तक जापान में रहनेवाले कोरियाई नागरिकों की स्वदेश वापसी का प्रश्न है यह दोनों पक्षों के प्रयत्नों से ही संभव हो सका है। दूसरे शब्दों में यह इसलिए संभव हो सका कि हमारी और जापान की रेडक्रास सोसाइटी ने भारी प्रयास किया। हम यह नहीं मानते कि यह केवल हमारी रेडक्रास सोसाइटी के प्रयत्नों से संभव हो सका।

जापान में रहनेवाले कोरियाई नागरिकों की स्वदेश वापसी आरंभ हो गई है और हमारे दोनों देशों के बीच स्वदेश वापसी की नावें चल रही हैं। यह बहुत अच्छा है। कोरिया और जापान की जनता के बीच मैत्री संबंधों के विकास में यह एक बढ़ता हुआ कदम है। हमें आशा है कि जापानी जनता के समर्थन से यह काम

चलता रहेगा ताकि वे सभी कोरियाई नागरिक जो स्वदेश वापसी के इच्छुक हों अपनी मातृभूमि को लौट सकें ।

जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों के लिए घर आने-जाने की छूट भी हम आवश्यक मानते हैं । हमें आशा है कि नीइगाता और चोंगजिन के बीच आने-जाने वाले स्वदेश वापसी के जहाजों पर वापस लौटने वाले नागरिक ही नहीं आएंगे बल्कि वे लोग भी आएंगें जो घर अपने रिश्तेदारों से मिलने के इच्छुक हैं और लौटकर वे जापान भी जा सकेंगे ।

आपके ख्याल में हमने प्रवासी स्वदेशियों के मामलों के जनरल ब्यूरो की स्थापना हाल ही में की है । लेकिन इसकी स्थापना १९५९ में ही हो चुकी थी जब जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों की स्वदेश वापसी आरंभ हुई थी । अब तक यह ब्यूरो काम नहीं कर पाया क्योंकि स्वदेश वापसी रुक गई थी । स्वदेश वापसी के पुनः आरंभ होने से यह ब्यूरो काम कर रहा है । इस ब्यूरो का काम है वापस लौटने वालों को उनकी इच्छा और गुणों के अनुसार काम दिलाने में सहायता करना और उनकी इच्छानुकूल निवास की गारंटी करना ।

हम स्वदेश वापस लौटने वालों को उनकी बुद्धि और कौशल को पूरा अवसर देने की और असुविधापूर्ण निवास की सभी सुविधाओं की पूरी गारंटी दे रहे हैं । जो देशवासी जापान से लौटे हैं उन्हें मुफ्त शिक्षा और मुफ्त स्वास्थ्य सेवा मिल रही है और वे समाजवादी निर्माण में सक्रिय भाग ले रहे हैं । अपनी इच्छा और सामर्थ्य के अनुसार वे सरकारी दफ्तरों, आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थानों तथा अन्य क्षेत्रों में काम कर रहे हैं और अपनी बुद्धि और कौशल निष्ठापूर्वक लगा रहे हैं । अभी जो हमारे खिलाड़ी जापान गए थे उनमें से कई वे थे जो जापान से स्वदेश लौटे थे । इस प्रकार जो खेलों के शौकीन थे वे खेलकूद में लगे हैं, जिन्हें कला का शौक था वे कला के क्षेत्र में काम कर रहे हैं और जिन्हें तकनीक ज्ञान था वे तकनीक के क्षेत्र में काम कर रहे हैं ।

पांचवे, मैं संक्षेप में कोरिया और जापान के संबंधों की चर्चा करूंगा ।

अपनी स्थापना के पहले दिन से जनवादी जन गणतंत्र कोरिया उन सब देशों के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों की नीति का पालन किया है जिनकी हमारे साथ बराबरी और परस्पर लाभ के सिद्धांतों पर हमारे प्रति मित्रतापूर्ण भावना है ।

जहां तक कोरिया-जापान संबंध का प्रश्न है, जापान ने कोरिया पर आक्रमण किया और कोरिया ने उसके आक्रमण को भोगा । कोरिया और जापान के बीच यह ऐतिहासिक संबंध है । लेकिन कोरिया पर आक्रमण जापानी जनता ने नहीं जापानी साम्राज्यवादियों ने किया था । इसी कारण जापानी साम्राज्यवाद के जूए से हमारे देश की मुक्ति के बाद और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना पर हमने भिन्न

समाज व्यवस्था के बावजूद जापान से अच्छे पड़ोसी संबंध बनाने की इच्छा की।

फिर भी जापानी सरकार लगातार जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के प्रति अमैत्रीपूर्ण रही है। मैं कुछ उदाहरण देता हूं।

१९५० में जब अमरीकी साम्राज्यवादियों ने हमारे देश पर आक्रामक युद्ध छेड़ा तो जापान के तत्कालीन प्रधानमंत्री योशिदा ने कहा, "कोरिया युद्ध के लिए सेना और शस्त्र लाद कर जापान संयुक्त राष्ट्र के साथ सहयोग करेगा।" १९५३ में 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान वार्ता' के दौरान जापानी प्रतिनिधि मंडल ने एक अनर्गल दावा किया : "कोरिया पर जापानी राज से कोरिया की जनता को लाभ हुआ।"

किशी मंत्रिमंडल के दिनों में भी जापानी प्रतिक्रियावादियों ने हमारे देश के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण वक्तव्य दिए।

एक जापानी पत्रिका के जून १९५८ अंक के अनुसार 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान वार्त्ता' के प्रमुख जापानी प्रतिनिधि ने कहा : "चीन-जापान और रूस-जापान युद्ध जापान को खतरा पहुंचाने वाली सेनाओं को यालू के पार धकेलने के लिए किए गए थे क्योंकि वे कोरिया अंतरीप तक आ गई थीं। अगर हम तीसरी बार उठकर ३८वीं समांतर रेखा को यालू के पार नहीं धकेल देते तो हम अपने पूर्वजों के सामने, अपने पुरखों के सामने अपना सम्मान नहीं बचा पाएंगे। यह है जापान का राजनयिक दायित्व। जापान और कोरिया प्रजातंत्र के बीच विचाराधीन प्रश्नों का सुलझाया जाना आवश्यक है और इसी प्रकार ३८ वीं समांतर रेखा को उत्तर में धकेलने के प्रयत्न भी आवश्यक हैं।" इसके साथ उसने कहा, "३८ वीं समांतर रेखा कोरिया प्रजातंत्र की जीवन रेखा है; यह जापान की भी जीवन रेखा है।"

१९६० में जापान की लिबरल-डेमोक्रेटिक पार्टी के भूतपूव उपाध्यक्ष ने कहा, "हमें जापान, दक्षिण कोरिया और ताइवान को मिला कर 'संयुक्त राज्य जापान' की स्थापना करनी ही चाहिए।" यह सब जापानी पत्रों में प्रकाशित हुआ था।

इकेदा मंत्रिमंडल के दिनों में भी यही स्थिति थी।

इकेदा मंत्रिमंडल के दौरान भूतपूर्व प्रधानमंत्री किशी नोबूसूके ने प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में कहा : "जापान का आत्मरक्षा क्षेत्र दक्षिण कोरिया और ताइ-वान तक फैला देना चाहिए।"

२ फरवरी १९६१ को जापान के तत्कालीन स्वदेश मंत्री कोसाका ज़ेनतारो ने कहा कि जापानी सरकार "दक्षिण कोरिया सरकार को पूरे कोरिया की एकमात्र सरकार के रूप में मान्यता प्रदान करती है क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के ३८ सदस्य राज्यों ने केवल दक्षिण कोरियाई सरकार को ही मान्यता दी है।" उन्होंने यह भी कहा, "यह खेद का विषय है कि कोरिया प्रजातन्त्र की सार्वभौमता उत्तरी अर्द्ध भाग पर निष्पादित नहीं हो रही है।"

सितम्बर १९६२ में इकेदा मंत्रिमंडल के विधिमंत्री ने कहा : "हमें हर कीमत पर कोरिया का पुनरेकीकरण रोकना चाहिए क्योंकि साम्यवाद के विरोध में कोरिया प्रजातन्त्र प्रथम पंक्ति है।"

सातो मंत्रिमंडल के अधीन तो स्थिति और भी शोचनीय है। मुझे कुछ शब्द सातों के बारे में भी कहने हैं हालांकि आपके प्रधान मंत्री की हमारी आलोचना से आपको कमोबेश उलझन हो सकती है।

एशिया में अपनी बढ़ती हुई हार के साथ-साथ अमरीकी साम्राज्यवादियों ने तथाकथित 'निक्सन सिद्धांत' प्रतिपादित किया—'एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाने' का सिद्धांत—और इसे सब से पहले स्वीकार करने वाला था सातो। सातो ही था जिसने जापानी जनता तथा लोकमत के सशक्त विरोध की अवहेलना करके आक्रामक 'जापान-संयुक्त राज्य संयुक्त वक्तव्य' पर हस्ताक्षर किए। यही नहीं जब छलकपटपूर्ण 'चुनाव' के द्वारा पाक जुंग ही ने फिर से 'राष्ट्रपति' पद संभाला तो अच्छी तरह यह जानते हुए कि दक्षिण कोरिया की तमाम जनता पाक की विरोधी है, सातो स्वयं सिअल गया पाक जुंग ही को 'बधाई' देने के लिए। मेरी राय में हमारे प्रति सातो के घोर अमैत्रीपूर्ण रुख के अनेक उदाहरणों में से यह एक है।

आपने देखा कि जापानी सरकार का हमारे प्रति अमैत्रीपूर्ण युद्धात्मक रवैया हमेशा रहा है।

हमारे देश ने कभी जापान पर आक्रमण नहीं किया, न ही उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया, न ही हमने जापान के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति बरती है। हमने हमेशा जापान के साथ मैत्रीपूर्ण और 'अच्छे पड़ोसी' संबंध बनाने की कोशिश की है। पर हमारे एक-तरफा प्रयत्नों से ही तो 'अच्छे पड़ोसी' संबंध स्थापित नहीं होंगे। जापानी सरकार की हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति ही कोरिया और जापान के बीच 'अच्छे पड़ोस' संबंध स्थापित न होने का एकमात्र कारण है।

उदाहरण के रूप में व्यापार संबंध को ही लीजिए। हम जापान के साथ व्यापार संबंध चाहते हैं, कोशिश भी कर रहे हैं। भौगोलिक रूप से जापान हमारे निकट है। आर्थिक आदान-प्रदान होने से जहाजरानी पर हमारा खर्चा कम होगा और हमें अन्य लाभ भी होंगे। लेकिन हमें अपनी आवश्यकता की वस्तुएं यूरोप के फ्रांस, इंगलैंड, आस्ट्रिया और हालैंड जैसे दूरदराज देशों से खरीदने के लिए मजबूर होना पड़ता है क्योंकि जापान तो हमारे देश के अवरोध की नीति पर चल रहा है। इन देशों से हमारे राजनयिक संबंध नहीं हैं पर वे हमारे साथ आर्थिक आदान-प्रदान पर पाबंदी नहीं लगाते। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवाद के साथ जापान हमारा विरोध किए जा रहा है।

कुछ जापानी कंपनियों से हमारे देश के व्यापारिक सौदे होते रहते हैं, पर जापानी सरकार की शत्रुतापूर्ण नीति के कारण यह व्यापार एकतरफा है। हमारे

कारखाने देखने जापानी तकनीशियन तो आ सकते हैं पर हमारे तकनीशियनों को जापान में घुसने की अनुमति नहीं है। इसलिए वे जापानी कारखानों को नहीं देख सकते और हम आवश्यक सामान के आर्डर नहीं दे पाते। न सिर्फ जापानी सरकार हमारे तकनीशियनों को जापान में घुसने नहीं देती, बल्कि सामरिक पदार्थों पर नियं-त्रण के बहाने जान बूझ कर हमारे और जापानी कम्पनियों के बीच व्यापार को सीमित करती है।

जापानी सरकार ऐसा संयुक्त राज्य या कोरिया की कठपुतलियों के डर से कर रही है—हम कह नहीं सकते। जापानी सरकार को शायद यह भय भी है कि अगर हमारे लोगों को प्रवेश की अनुमति मिल गई तो साम्यवादी प्रचार होने लगेगा। पर मेरी राय में इस संबंध में उसे चिंता नहीं करनी चाहिए। जापान में कम्युनिस्ट पार्टी और अनेक लोग हैं जो साम्यवाद का प्रचार करते हैं। हमारे तकनीशियन जापान में साम्यवाद का कितना प्रचार कर पाएंगे ?

अगर जापानी प्रतिक्रियावादी यह सोचते हैं कि अवरोध से वे हमारे देश के समाजवादी निर्माण को रोक लेंगे तो वे बड़े मूर्ख हैं। जापान के बिना भी हम अनेक देशों में व्यापार करके जितनी मशीनें और उपकरण हमें चाहिए हम खरीद पा रहे हैं। जापान हमसे व्यापार अस्वीकार भी कर दे तो हमारा समाजवादी निर्माण अव्य-वस्थित होने से रहा। फिर भी हम अपने पड़ोसी जापान से व्यापारिक संबंधों का यथासंभव विकास करना चाहते हैं।

सुना है कि जापान ने हाल ही में हमारे तकनीशियनों को जापान में आने देने की रजामंदी प्रकट की है। अगर यह सही है तो हम इस कदम का स्वागत करते हैं।

कोरिया और जापान के बीच मित्रतापूर्ण संबंध बनाने के लिए और दोनों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए जापानी सरकार का हमारे देश के प्रति पहले अपना रवैया ठीक करना चाहिए। उसे चाहिए कि जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति से बाज आए, और कोरियावासियों को कोरिया-वासियों से लड़ाने के लिए दक्षिण कोरिया को उकसाना बंद करे।

सातो मंत्रिमंडल बदलेगा या नहीं—यह जापान का आंतरिक मामला है—हम इसमें नहीं पड़ेंगे। प्रश्न यह नहीं है कि जापान का प्रधान मंत्री कौन बनता है, प्रश्न है कि हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति त्यागी जाती है या बनी रहती है। हमारे देश के प्रति जापान की नीति नहीं बदलती है तो चाहे प्रधान मंत्री भी बदल जाए कोरिया-जापान संबंधों में सुधार नहीं होगा। हमारी राय में वक्त का रुख देखते हुए अपनी गलत नीति को ठीक करना जापानी सरकार के लिए आवश्यक है।

आजकल जापान में प्रगतिशील शक्तियां चीन स्थापना और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के साथ राजनयिक संबंधों की पुनः स्थापना का आंदोलन चला रही हैं। हमारी राय में अच्छा है।

कोरिया और जापान में राजनयिक संबंधों की स्थापना, या इससे भी पहले सुसंगत प्रयासों द्वारा परस्पर मित्रतापूर्ण यात्राओं का हम स्वागत करेंगे। जापान के साथ राजनयिक संबंधों की स्थापना से भी पहले हम पत्रकारों, तकनीशियनों तथा अन्य लोगों की अधिकाधिक परस्पर यात्रा और विस्तृत आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए उत्सुक हैं। लेकिन हमारी राय है कि यह एकतरफा नहीं बल्कि लेनदेन में बराबरी के सिद्धांत पर होना चाहिए।

मैंने सुना है कि आप हमारे कला मंडल को निमंत्रित करने वाले हैं। हम इसका स्वागत करते हैं। दोनों देशों के बीच मार्ग खोलना और एक दूसरे के यहां जाना अच्छा है।

जो भी विशिष्ट कार्यप्रणाली ली जाए, हमारी राय है कि कोरिया और जापान के बीच मित्रतापूर्ण संबंध का होना या न होना केवल जापानी सरकार के रुख पर निर्भर करता है।

छठे, मैं जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान के प्रश्न पर चर्चा करना चाहता हूं।

आजकल कुछ लोग इस बहस में पड़े हैं कि जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान हुआ है या नहीं। हमारी धारणा है कि पुनरुत्थान हो चुका है। यह निराधार कल्पना नहीं है, ठोस तथ्यों के आधार पर हमारा निष्कर्ष है।

आप जानते ही हैं कि अरसा हुआ जापानी सैन्यवादियों ने "आपरेशन थ्री एरोज़,' 'आपरेशन फ्लाइंग ड्रेगन' और 'आपरेशन बुल रन' जैसी आक्रमण की विशिष्ट योजनाएं बनाई थीं और इन आक्रमण योजनाओं के अंतर्गत वे अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रमण सेना और दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना के साथ मिल कर पूर्व सागर में लगातार संयुक्त सैनिक कवायदें करते रहे हैं। इस साल वे इस तरह की कई कवायदें कर चुके हैं। उनका कहना है कि ये कवायदें वे सुरक्षा के उद्देश्यों से कर रहे हैं। पर यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि कोरिया, चीन और सोवियत यूनियन को काल्पनिक समर क्षेत्र बना कर ही ये आक्रमण सैनिक कवायदें की जा रही हैं।

जापानी सैन्यवादियों के समुद्रपारीय आक्रमण का प्रथम लक्ष्य है जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया। अपनी सशस्त्र सेनाओं को कोरिया के मोर्चे पर झोंकने के उद्देश्य से वे दक्षिण कोरियाई कठपुतली सेना के विशाल स्तर पर दैत्याकार कवायदें कर रहे हैं, और सैनिक सीमांकन रेखा तक एक शीघ्रपथ बनाने में दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों की सहायता कर रहे हैं। इस शीघ्रपथ का सीधा संबंध शिमोनेसेकी और पूसान के नौ मार्ग से है। यह सब हमारे देश पर आक्रमण के उद्देश्य से किया जा रहा है।

जापानी प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग खुले आम दावा कर रहे हैं कि अगर कोरिया में लड़ाई छिड़ गई जो वे हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रह सकते। १ दिसंबर १९६९ को जापानी डाएट में सातों ने कहा : "कोरिया प्रजातन्त्र और ताइवान जैसे जापान के पड़ोसी देशों की सुरक्षा की गारंटी देना स्वयं जापान की सुरक्षा की दृष्टि से बड़े महत्त्व का है।" इसके बाद उसने कहा, "हमारे पड़ोसियों की सुरक्षा के अति-क्रमण की स्थिति में जापान का सशक्त उत्तर देना पूरी तरह स्वाभाविक है।" और पिछले साल फरवरी में उसने कहा था : "कोरिया में लड़ाई छिड़ने पर हम मात्र दर्शक नहीं रह सकते।" उसने यह दावा भी किया था, "निवारक आक्रमण करना जापान के स्व-रक्षात्मक अधिकार का भाग है।"

ये कुछ तथ्य ही हमें यह विश्वास दिलाने के लिए काफी हैं कि जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान हो गया है और वह समुद्रपारीय आक्रमण की पूर्ण तैयारी के मुकाम तक पहुंच गया है।

इस बहस का समय तो बीत चुका कि जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान हुआ है या नहीं। जो कुछ भी वे अब कर रहे हैं उसे देखते हुए हमें यह मानना ही चाहिए कि जापान में सैन्यवाद का पुनरुत्थान हो चुका है। और कुछ समझा ही नहीं जा सकता। उसका पुनरुत्थान एक नंगा सत्य है। अतः हमारा तात्कालिक कर्त्तव्य है कि उसके आक्रामक मंसूबों को कैसे दबाया जाए और एशिया तथा विश्व की शांति की रक्षा कैसे हो।

यह सच है कि जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान हो चुका है। लेकिन वह युद्ध छेड़ने का साहस करेगा या नहीं पूर्णतः इस बात पर निर्भर है कि जापानी और एशि-याई जनता कैसे लड़ेगी।

जापानी सैन्यवादियों की आक्रामक चालों का विरोध करने में जापानी जनता के संघर्ष का बड़ा महत्त्व है। जापानी प्रतिक्रियावादी सरकार को आक्रामक युद्ध छेड़ने से रोकने के लिए हमारी राय में जापानी जनता के पास पर्याप्त शक्ति है। आज की जापानी जनता १९१० या १९२० आदिक दशकों की जनता नहीं है। वह १९७० आदिक दशक की जनता है। जापानी जनता आक्रामक जापानी सैन्यवादी शक्तियों से पूरी तरह लड़ रही है।

ऐसा लगता है कि स्वयं जापानी शासक वर्ग में आक्रामक युद्ध छेड़ने या न छेड़ने के विषय में परस्पर विरोधी विचार हैं। द्वीप देश होने के कारण जापान अपने उद्योगों के लिए विदेशी कच्चे माल पर पूर्णतः निर्भर है। युद्ध छिड़ने की स्थिति में जापान को कच्चा माल मिलना बड़ा कठिन हो जाएगा। मैं समझता हूं कि इसका कारण यह है कि कुछ जापानी एकाधिकारवादी पूंजीपति युद्ध से डरते हैं।

इस प्रकार जापान में आक्रामक शक्तियां नगण्य हैं और युद्ध-विरोधी शक्तियों

के साथ विशाल बहुमत है। युद्ध-विरोधी शक्तियां और भी संगठित हो जायं और भी शक्तिशाली युद्ध-विरोधी आंदोलन छेड़ दें तो जापानी प्रतिक्रियावादी सरकार कितना भी चाहे फिर भी युद्ध आरंभ करने का साहस न करेगी।

जहां तक जापानी सैन्यवादियों के आक्रामक उद्देश्यों का प्रश्न है, उन्हें कम नहीं समझना चाहिए। पर वे दिन लद गए जब जापान एशिया पर शासन कर सकता था। आज का कोरिया उस समय का कोरिया नहीं है जब उसे जापान में मिला दिया गया था। आज का चीन भी चीन-जापान युद्ध के दिनों का चीन नहीं है और न ही आज का सोवियत संघ भी रूस-जापान युद्ध के दिनों का रूस है। अब कोरिया, चीन और सोवियत यूनियन की शक्ति अतुलनीय रूप से बढ़ चुकी है।

हमारी राय है कि कोरिया, चीन, जापान, हिंद चीन और अन्य अनेक एशियाई देशों की जनता दृढ़ता से संगठित होकर जापानी सैन्यवादियों की आक्रामक चालों को निराश कर सकती है। लेकिन अगर यह सोचकर कि जापानी सैन्यवाद का अभी पुनरुत्थान नहीं हुआ है या यह सोचकर कि वह संघर्ष के योग्य नहीं है, एशिया की जनता भ्रम में रही और उसने संघर्ष न किया तो वह केवल जापानी सैन्यवादियों की सहायता ही करेगी।

बदली हुई परिस्थिति की अवहेलना करके जापानी सैन्यवादियों ने अगर दूसरा युद्ध छेड़ा तो एशिया की क्रांतिकारी जनता और पूरे विश्व के शांतिप्रेमी लोगों की संगठित शक्ति से टकरा कर वे इस बार और भी भारी मात खाएंगे।

पहले की तरह भविष्य में भी हमारी जनता जापानी सैन्यवादियों की आक्रामक चालों के विरुद्ध बहादुरी से लड़ेगी।

सातवें, मैं निक्सन की चीन यात्रा के संबंध में कुछ शब्द कहूंगा।

आपने पूछा था कि निक्सन की चीन यात्रा के संदर्भ में क्या हमारी विदेश नीति में कुछ परिवर्तन होंगे। हम अभी तक अपनी विदेश नीति में किसी क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं समझते। हां किसी देश की विदेश नीति अपरिवर्तनीय नहीं होती। वह अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में परिवर्तन के अनुकूल बदल सकती है। पर हमारी विदेश नीति स्वतंत्र है, हमारी अपनी राजनयिक नीति है। अतः निक्सन चीन आए या चीन कोई रुख अख्तयार करे, इससे हमारे बीच कोई महान सनसनी नहीं होगी।

जहां तक निक्सन की चीन यात्रा का प्रश्न है, यह किसी विजेता का प्रयाण नहीं है, पराजित का आगमन है।

चीन और संयुक्त राज्य के आपसी राजनयिक संबंध नहीं हैं। इतिहास में ऐसे उदाहरण नहीं हैं कि कोई राज्याध्यक्ष स्वयं उस देश की यात्रा करे जिससे उसके देश के राजनयिक संबंध न हों। इससे सिद्ध होता है कि अमरीकी साम्राज्य अंतिम छोर पर पहुँच चुका है। वर्ना वह इस सीमा तक नहीं जाता।

समाजवादी देशों के प्रति अवरोध नीति के पालन में संयुक्त राज्य के प्रतिक्रियावादी शासक हठधर्मी दिखाते रहे हैं। समाजवादी देशों के प्रति वे कई वर्षों से इस नीति का पालन करते रहे हैं। अक्तूबर समाजवादी क्रांति की विजय के बाद कई वर्षों तक अमरीकी साम्राज्यवादियों ने सोवियत यूनियन को मान्यता नहीं दी और लगातार उसका अवरोध करते रहे। उन्होंने सोवियत यूनियन को मान्यता सोलह वर्षों बाद ही दी। चीन का अवरोध उन्होंने २२ वर्षों तक किया। उनके लगातार अवरोध से चीन ढह तो नहीं गया बल्कि एशिया में क्रांतिकारी शक्ति के रूप में इसकी शक्ति लगातार बढ़ती ही रही है। जिस चीन का निक्सन अब तक शत्रु था, उस चीन को उसकी यात्रा यही दिखाती है कि अपने विनाश के पथ पर अमरीकी साम्राज्यवादी अब हांफ रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों को अब एक गंभीर आंतरिक और बाह्य संकट का सामना करना पड़ रहा है। संयुक्त राज्य में आर्थिक संकट चिंताजनक होता जा रहा है, जनता का युद्ध-विरोधी आंदोलन बहुत बढ़ रहा है और अमरीकी युद्ध से थकता जा रहा है। दक्षिण वियतनाम में लगभग सभी अमरीकी सैनिक विषैले नशों के धत्ती बताए जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि अमरीकी सैनिक युद्ध से थक चुके हैं। यही नहीं, अमरीकी साम्राज्यवादियों को अपनी समरनीति के पालन में अनेक कठिनाइयां आ रही हैं। उन्होंने अपनी आक्रामक सशस्त्र सेना को संसार के इतने सारे भागों में फैला दिया है कि वह प्रभावहीन हो गई है और इसका आर्थिक बोझ भी बहुत है।

पूंजीवादी देशों में अमरीकी साम्राज्यवाद के बहुत मित्र नहीं हैं। अमरीकी समर्थकों की संख्या धीरे-धीरे कम हो रही है। कोरिया के युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवाद १५ पिछलग्गू राष्ट्र इकट्टे कर पाया था, लेकिन आज वियतनाम युद्ध में वह दक्षिण कोरिया, फिलिपाइन, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया और थाईलैंड जैसी कठपुतलियों को ही इकट्ठा कर पाया। वियतनाम युद्ध में अब अमरीकी साम्राज्यवाद को हार पर हार ही मिल रही है। इस प्रकार सब अमरीकी साम्राज्यवाद ढलान पर नीचे लुढ़क रहा है। पहले वाली बात अब नहीं है।

अपने आप को इस अंधी गली से निकालने के लिए अब अमरीकी साम्राज्यवाद ने 'निक्सन सिद्धांत' निकाला है, एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाने की नीति का पालन आरंभ किया है और मध्यपूर्ण और अफ्रीका की जनता को भी आपस में लड़ा रहा है। हालांकि निक्सन ने संकट से निकलने के 'निक्सन सिद्धांत' बनाया था, पर यह सिद्धांत लोकप्रिय नहीं हो पाया। सातो जैसा मूर्ख आदमी ही 'निक्सन सिद्धांत' स्वीकार करता है, कोई और नहीं।

इन परिस्थितियों में अमरीकी शासक यह सोचते मालूम पड़ते हैं कि केवल युद्ध के द्वारा ही इस संकट से पार पाना कठिन है। पर आक्रमण की अमरीकी

साम्राज्यवादी नीति अभी तक अपरिवर्तित है। फिर कुछ समय के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद बचाव के कुछ और रास्तों की तलाश में है। निक्सन चीन तब आया है जब अमरीकी साम्राज्यवाद अंतिम छोर पर है। मेरी राय में उसका उद्देश्य चीन से संबंध सुधारना और तनाव को अस्थायी रूप से ढीला करना है ताकि सांस लेने का समय मिल जाए और आक्रामक युद्ध की तैयारी तेज़ की जा सके।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से चीन और अमरीका के बीच संवाद समाजवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच अपने प्रकार का पहला संवाद नहीं है। भूत काल में भी ऐसी घटनाएं हुई हैं। फिर कई देशों ने चीन के लोक गणतंत्र को चीनी जनता की एकमात्र विधिवत् सरकार के रूप में मान्यता प्रदान करना आरंभ कर दिया है। चीन संयुक्त राज्य संवाद को हम विचित्र नहीं बल्कि व्यवहार्य मानते हैं।

यह असंभव है कि संयुक्त राज्य से वार्त्ता के कारण चीन अपना समाजवादी सिद्धांत बदल दे, साम्राज्यवाद का विरोध छोड़ दे। चीन समाजवादी देश है और समाजवादी और पूंजीवादी व्यवस्थाओं में असंगत विरोध हैं। सिद्धांत के प्रश्न पर कोई समझौता नहीं हो सकता।

हां, निक्सन की चीन यात्रा से दोनों पक्षां में संवाद हो, अंतर्राष्ट्रीय तनाव एक हद तक कम हो, एशिया की अनिर्णीत समस्याओं को सुलझाने की स्थितियों का निर्माण हो तो यह अच्छी ही बात होगी, बुरी नहीं।

एशिया में तनाव कम हो जाए और वहां से अमरीकी साम्राज्यवाद हट जाए तो क्या 'निक्सन सिद्धांत' पर अमल हो सकता है? हमारी राय में तो नहीं। हम नहीं समझते कि अमरीकी साम्राज्यवाद के लिए जापानी सैन्यवाद अपनी आक्रामक भूमिका निभा पाएगा। सातो-निक्सन के संयुक्त वक्तव्य के विरुद्ध अब जापानी जनता उठ रही है। जापानी जनता तथा अन्य एशियाई देशों की जनता एक होकर लड़ें तो अंततोगत्वा 'निक्सन सिद्धांत' का दीवाला निकल जाएगा।

निक्सन की चीन यात्रा के परिणामस्वरूप अगर अंतर्राष्ट्रीय तनाव में कुछ कमी भी आई तो इसका यह अर्थ नहीं है कि युद्ध का संकट पूर्णतः हट जाएगा। ऐतिहासिक अनुभव बताता है कि समाजवादी और साम्राज्यवादी देशों के बीच अनाक्रमण संधि होने पर भी या किसी समाजवादी देश और किसी साम्राज्यवादी देश के संबंध अस्थायी रूप से सुधारने पर भी उसे युद्ध न होने की निर्णायक गारंटी नहीं माना जा सकता। पहले हिटलर के जर्मनी और सोवियत यूनियन के बीच अनाक्रमण संधि हो चुकी है। लेकिन इसके एक साल बाद ही युद्ध हो गया। १९३० आदिक दशक में सोवियत यूनियन और जापान में तटस्थ समझौता हुआ। इस समझौते पर हस्ताक्षर करने में जापानी साम्राज्यवादियों का उद्देश्य था कि वे चीन-जापान युद्ध सहूलियत से कर पाएं। हां, वर्त्तमान परिस्थिति में तब से बहुत फर्क है जब हिटलर के जर्मनी और

सोवियत यूनियन के बीच अनाक्रमण संधि हुई थी। उस समय हिटलर बढ़ रहा था और अब अमरीकी साम्राज्यवाद पतनशील है।

पर साम्राज्यवाद का स्वभाव नहीं बदला है। युद्ध साम्राज्यवाद का साथी है। यह सच है कि अमरीकी साम्राज्यवाद कमजोर हो गया है पर कोई भी यह दावेके साथ नहीं कह सकता कि वह समय प्राप्त करके एक और आक्रामक युद्ध आरंभ नहीं करेगा।

जहां तक निक्सन की चीन यात्रा के परिणामस्वरूप हमारे देश और संयुक्त राज्य के भावी संबंघों का प्रश्न है, यह पूर्णतः कोरिया के प्रति अमरीकी साम्राज्यवाद की नीति पर निर्भर है।

जैसा कि मैंने कहा है कि जनवादी जन गणतंत्र कोरिया ने हमेशा उन सब देशों से मित्रतापूर्ण संबंध बढ़ाने के सिद्धांत का पालन किया है जो कोरिया की जनता की स्वतंत्रता, स्वाधीनता का आदर करते हैं, बराबरी के सिद्धांत पर हमारे देश से राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहते हैं और हमारे प्रति मित्रवत हैं। इसकी घोषणा तभी कर दी गई थी जब हमने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना घोषित की थी और हमारे गणतंत्र की सरकार के दस-सूत्री कार्यक्रम में स्पष्ट कर दिया गया था जिसे हमने कुछ वर्ष पहले प्रसारित किया था।

चीन-संयुक्त राज्य के भावी संबंध कुछ भी हों, एशिया के अन्य देशों के प्रति अमरीकी साम्राज्यवादी नीति जो भी रहे, संयुक्त राज्य के प्रति हम अपनी स्वतंत्र नीति का पालन करेंगे और हमारी नीति का निर्धारण इस पर होगा कि संयुक्त राज्य की हमारे देश के प्रति नीति क्या है। इसीलिए हम बड़े ध्यानपूर्वक यह देख रहे हैं कि हमारे प्रति अमरीकी साम्राज्यवाद क्या रूख अपनाता है।

महत्त्व की बात यह है कि वह दक्षिण कोरिया से अपनी आक्रामक सेना हटा ले। स्पष्ट है कि जब तक दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादियों का आधिपत्य है, चीन और संयुक्त राज्य में कुछ भी संबंध हों संयुक्त राज्य से हमारे संबंध मित्रतापूर्ण नहीं हो सकते। हां अगर वे संयुक्त राष्ट्र का साइन बोर्ड उतार दें, दक्षिण कोरिया से अपनी सेना हटा लें और दक्षिण कोरिया को आक्रमण के लिए सैनिक उपकरण देना बंद कर दें तो बिलकुल अलग बात है।

कोरियाई युद्ध विराम समझौते में एक पक्ष पर कोरिया और चीन थे और दूसरे पक्ष पर था 'संयुक्त राष्ट्र कमांड'। समझौता होने पर दोनों पक्षों में सहमति हुई थी कि कोरियाई प्रश्न के शांतिपूर्ण निपटारे के लिए तुरन्त ही एक राजनीतिक कानफरेंस बुलाई जाए। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवाद ने इस समझौते को पूरा नहीं किया बल्कि तोड़ दिया और अब तक दक्षिण कोरिया छोड़ने से इनकार करता है। अगर उन्हें युद्धविराम समझौते का पालन करना हो तो कोरिया का प्रश्न कोरिया

वासियों के लिए छोड़कर या इस प्रश्न को राजनीतिक वार्त्ता द्वारा सुलझा कर उन्हें चले जाना चाहिए।

अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया से अपनी सेनाएं पूर्णतः हटालें और कोरिया का प्रश्न कोरियावासियों पर छोड़ दें तो संयुक्त राज्य के प्रति हमारा रवैया बदल जाएगा। लेकिन जब तक वे अपनी आक्रामक नीति पर अड़े हैं हमारी अमरीका नीति में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

आक्रामक युद्ध में अपने स्थान पर जापानी सैन्यवादियों को खड़ा करने के अपने षड्यंत्र से भी अमरीकी साम्राज्यवादियों को बाज आना चाहिए। मैं नहीं समझता कि जापान की जनता जापानी सैन्यवादियों को अमरीकी साम्राज्यवादियों के लिए आक्रामक कृत्य करने देगी। अगर अमरीकी साम्राज्यवाद जापान को एशिया के 'नेता' की भूमिका खेलने में सहायता न करे और कोरिया से अपनी आक्रामक सेना हटा ले तो हमारी अमरीका नीति तदनुकूल बदल सकती है।

अगर स्थिति आसान हुई तो हम उसका प्रभावी उपयोग करेंगे। नए विकासों के विपरीत जाने की इच्छा हमारी कभी नहीं है। हम स्थिति को ढीला करना चाहते हैं, तनाव का बढ़ना हम नहीं चाहते।

अमरीकी साम्राज्यवादी अब दोमुंही नीति अपना रहे हैं। उन्हें इसका अभ्यास है। ऐतिहासिक रूप से जब भी मुसीबत पड़ी है साम्राज्यवादियों ने दोरंगी नीति अपनाई है—साइन बोर्ड 'शांति' का तैयारी युद्ध की। मेरी राय में इसलिए हमें साम्राज्यवादियों की दोरंगी नीति के विरुद्ध अपनी चौकसी तेज कर देनी चाहिए।

अंत में, आपने समाजवादी देशों के मतभेद और हमारी पार्टी की स्थिति के बारे में पूछा था। मैं इस संबंध में संक्षिप्त टिप्पणी करूंगा।

आप जानते ही हैं कि समाजवादी देशों में मतभेद हैं। इन भेदों को हम संस्थागत विरोधों से उद्भूत, राज्यों के बीच शत्रुतापूर्ण मतभेद नहीं मानते। मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांतों के प्रकाश में, समाजवादी देशों के बीच शत्रुता नहीं हो सकती। समाजवादी देशों में जो विचार वैभिन्य है वह तो बस उन भाइयों के बीच सैद्धांतिक मतभेद जैसा है जो साथ-साथ समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के लिए लड़ रहे हों। इसलिए समाजवादी देशों के मतभेदों से साम्राज्यवादियों की कोशिशें मूर्खतापूर्ण मरीचिका से अधिक कुछ नहीं हैं।

हमारी पार्टी लगातार यह प्रयास करती है कि समाजवादी देशों के बीच मतभेद दूर हो जाएं और अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन की एकता सशक्त हो। हमारी धारणा है कि साम्राज्यवाद-विरोध, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग आंदोलन और उपनिवेशों के राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन को समर्थन, समाजवादी व्यवस्था की रक्षा तथा अन्य देशों के आंतरिक मामलों में अ-हस्तक्षेप के सिद्धांत पर समाजवादी देश

एक हो जाएं। बंधु पार्टियों और देशों के बीच मतभेद होते हुए भी इस सिद्धांत पर संगठित हो कर संयुक्त संघर्ष करने का हम प्रस्ताव कर रहे हैं। हम अंतरराष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन में विच्छेद को बढ़ाएंगे नहीं, हम केवल एकता की गारन्टी के लिए प्रयत्न करेंगे। यह है हमारी पार्टी की स्थिति।

इतने ध्यान से मेरी बात सुनने के लिए मैं आपका आभारी हूं। मुझे आशा है कि कोरिया और जापान की जनता के बीच मित्रता के लिए हम संयुक्त प्रयास करेंगे।

इराकी पत्रकारों के प्रतिनिधि मंडल द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

११ अक्तूबर १९७१

प्रश्न : आपके बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व में कोरिया की मजदूर पार्टी ने जो अनुभव प्राप्त किया है उसके प्रति अपनी प्रशंसा और आश्चर्य भावना हम आपको बताना चाहते हैं।

क्या आप हमें बताएंगे कि कोरिया की वीर जनता का सबसे महत्त्वपूर्ण अनुभव आप क्या मानते हैं और उसने समाजवाद के संघर्ष में मानवता के रत्नकोष को क्या योगदान दिया है ?

उत्तर : सबसे पहले तो मैं कहना चाहता हूं कि हमारे अनुभवों की आपके द्वारा उच्च प्रशंसा के लिए मैं कितना आभारी हूं।

आप जानते ही हैं कि पहले हमारा देश औपनिवेशिक और अर्द्ध-सामंती समाज था। हमारी जनता को पुरातन सामाज से पिछड़ी हुई अर्थ व्यवस्था और संस्कृति बपौती में मिली थी। और यह भी अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा छेड़े गए तीन-वर्षीय युद्ध में पूरी तरह नष्ट हो गया। यही नहीं हमें उत्तर और दक्षिण में विभक्त देश में अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं के सामने खड़े होने पर भी नव समाज के निर्माण का दायित्व पूरा करना था।

कोरिया की जनता को अपने मार्ग में बढ़ते हुए अनेक कठिनाइयों और परीक्षाओं को झेलना पड़ा पर उसे अपने उद्देश्य के औचित्य में हमेशा दृढ़ विश्वास रहा और बिना झुके संघर्ष करती रही। इस प्रकार उसने युगों पुराने पिछड़ेपन और गरीबी का अंत कर दिया और एक नए शालीन समाजवादी समाज का शीघ्र निर्माण किया। हमारे देश में जहां कभी शोषण और दमन का बोलबाला था, आज एक ऐसी विकसित समाजवादी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत सब लोग काम करते हैं, सुखी जीवन बिताते हैं और एक दूसरे की सहायता करते हैं। हमारा देश आधुनिक उद्योगों और विकसित कृषि वाला समाजवादी औद्योगिक राज्य बन गया है।

समाजवादी क्रांति और निर्माण में हमारी जनता की तमाम विजयों और

उपलब्धियों का श्रेय कोरिया की मजदूर पार्टी के बुद्धिमान नेतृत्व को जाता है।

हमारी जनता के क्रांतिकारी संघर्ष और निर्माण कार्य में कोरिया की मजदूर पार्टी का सबसे महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट मार्ग दर्शन है जूछे की दृढ़ स्थापना।

हमने अपने देश की वास्तविक स्थितियों के संदर्भ में मुख्यतः अपने ही प्रयासों पर निर्भर रह कर क्रांति और निर्माण की सब समस्याओं के स्वतंत्र संपादन के सिद्धांत का लगातार पालन किया है। हमने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विश्वजनीन सिद्धांतों को और अन्य देशों के अनुभवों को सर्जनात्मक रूप से इस प्रकार लागू किया है जो हमारे देश की ऐतिहासिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय विशिष्टताओं के अनुकूल था। इस प्रकार हमने हर परिस्थिति में अपनी आत्म-निर्भरता की भावना दिखाते हुए परोपजीवी भावना को ठुकरा कर अपने आप को अपनी समस्याएं सुलझाने का उत्तरदायी बनाया। जूछे शब्द, जिसे सारी दुनिया जानती है एक ऐसी संज्ञा है जो हमारी पार्टी द्वारा क्रांति संघर्ष और निर्माण कार्य में पालित इस सर्जनशील और स्वतंत्र सिद्धान्त और स्थिति की परिचायक है।

अनुभव ने जूछे विचार का सही होना पूर्णतः सिद्ध किया है।

अपनी सैद्धांतिकता में जूछे की स्थापना के संघर्ष से हम अपनी जनता को चाटुकारिता, हठधर्मी तथा अन्य पुराणपंथी धारणाओं की उन जंजीरों से पूर्ण आध्यात्मिक मुक्ति दिला पाए हैं जो दीर्घकाल से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की हमारी भावना को खा रही थीं। कोरियाई चीजों को मूर्खतापूर्वक ठुकरा कर विदेशी तौर तरीकों को अपनाने की हमारी जनता की जो प्रवृत्ति थी वह सब गायब हो गई है। हमारा राष्ट्रीय गौरव और स्वतन्त्रता की भावना और भी जाग उठी है और हमारी जनता अपने स्वयं के प्रयासों पर निर्भर रहने के लिए अधिकाधिक प्रोत्साहित हो रही है।

सिद्धांत में जूछे की स्थापना के साथ-साथ हमारी पार्टी ने जूछे विचार को क्रांति और निर्माण के हर क्षेत्र में मूर्त्त कर दिया हैं।

हमारी पार्टी की स्वतन्त्रता की लाइन राजनीतिक संदर्भ में जूछे विचार का मूर्त्त रूप है।

क्रांति और निर्माण की मार्गदर्शिका और नीतियां बनाने में पार्टी ने लेनिनवाद के विद्यमान फारमूलों से चिपटे रहने की या अन्य देशों के अनुभवों को पूरी तरह यथावत् स्वीकार करने की हर प्रवृत्ति का विरोध किया। पार्टी ने अपना दिमाग लगा कर कोरिया की विशिष्ट स्थितियों के अनुकूल मौलिक लाइनें और नीतियां खींची और जनता को संगठित और एकत्रित करके उन पर अमल किया। देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर भी हमारी स्वतन्त्र स्थिति है। यह प्रश्न हमारी अपनी जनता द्वारा बिना किन्हीं बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप के, दक्षिण कौरिया से अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रमक सेना हट जाने के बाद, सुलझाया जाना चाहिए।

बाह्य क्षेत्रों में भी हमारी पार्टी ने दृढ़तापूर्वक अपनी स्वतंत्रता बरकरार रखी है। हमने अन्य छोटे और बड़े देशों से पूर्ण समानता और परस्पर आदर के सिद्धांतों पर मैत्री और सहयोगपूर्ण संबंध विकसित किए हैं। अपनी ही निर्णय बुद्धि और विश्वासों के दृढ़ आधार पर अमल करके अपनी वस्तुस्थिति के अनुरूप हम साम्राज्यवाद विरोधी अमरीका विरोधी संघर्ष और हर रंग की अवसरवादिता के विरुद्ध संग्राम करते रहे हैं।

हमारी पार्टी की एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था बनाने की लाइन आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में जूछे विचार का मूर्त रूप है।

हमने मुख्यतः अपने ही तकनीकी कौशल और स्रोतों का आसरा लिया, अपने ही कर्मकर और लोग लगाए और आत्म-निर्भरता की क्रांतिकारी भावना को बरकरार रखा। देश की अर्थव्यवस्था के विकास में यही हमारा सिद्धांत रहा है। हमारी पार्टी की एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण की लाइन में हमारी जनता की पूर्णतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता और समृद्धि की सच्ची आशा परिलक्षित है और हमारे देश के समाजवादी निर्माण की चौंका देने वाली उपलब्धियों के पीछे यही लाइन है।

हमारे देश की अर्थ व्यवस्था अब स्वतंत्र है, आधुनिक तकनीक से सुसज्जित है और हर प्रकार से विकसित है। इसके परिणामस्वरूप हम राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को स्थिर और उच्च गति से विकसित करने में और स्वयं अपने प्रयासों से अपनी जनता का जीवन मान सुधारने में सफल हुए हैं। हमारी स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता की और सुरक्षा सामर्थ्य में वृद्धि की ठोस भौतिक गारंटी है।

जूछे की स्थापना और अपने प्रयासों पर निर्भरता में हमारा उद्देश्य कोई अलग-थलग पड़कर अकेले में समाजवाद का निर्माण नहीं है। हम यह पूरी तरह स्वीकार करते हैं कि राज्यों के लिए एक दूसरे की जरूरतें पूरी करना और एक दूसरे की सहायता करना आवश्यक है और हम इस प्रकार के संबंधों का विस्तार और विकास करने के लिए प्रयत्नशील हैं। हमारा विश्वास है कि राज्यों के बीच परस्पर सहयोग का उद्देश्य हर देश की स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण होना चाहिए। केवल यही तत्व विभिन्न राज्यों के बीच पूर्ण समानता और परस्पर लाभ के सिद्धांतों पर आर्थिक सहयोग का विस्तार और विकास संभव कर सकता है।

राष्ट्र की रक्षा के विकास में भी हमने आत्म-सुरक्षा की नीति का दृढ़ पालन किया है। हमारी पार्टी की आत्म-निर्भर सैनिक नीति के लागू किए जाने के ही परिणामस्वरूप आज हमारे देश के पास अपनी सुरक्षा सेना है जो इतनी मजबूत है कि हर आक्रांता और शत्रु को चकनाचूर कर सके।

जैसा कि मैंने स्पष्ट किया कि हमारी पार्टी की हर लाइन और हर नीति जूछे विचार से उद्भूत और ओतप्रोत है। सिद्धांत में जूछे, राजनीति में स्वतंत्रता,

अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता और राष्ट्र की रक्षा में स्व-सुरक्षा हमारी पार्टी की स्थिर क्रांतिकारी स्थिति की परिचायक हैं।

जूछे विचार की क्रांतिकारी पताका के नीचे हमारा देश एक विकसित समाजवादी देश बन गया जिसके पास पूर्ण राजनीतिक प्रभुसत्ता, सबल स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, सशक्त स्व-सुरक्षा सामर्थ्य और देदीप्यमान राष्ट्रीय संस्कृति है। जूछे विचार को लागू करके और अपने प्रयत्नों पर भरोसा करके अब हम अन्य देशों के साथ पूर्ण समानता के सिद्धांत पर सहयोग करने में समर्थ हैं और अंतर्राष्ट्रीय क्रांति के उद्देश्य में बेहतर योगदान कर सकते हैं।

क्रांति और निर्माण के मार्गदर्शन में जूछे की स्थापना के साथ-साथ हमारी पार्टी ने क्रांतिकारी जन संपर्क के भारी प्रयत्न किए।

लाखों जनता के स्वैच्छिक और सर्जनशील श्रम से ही समाजवाद का निर्माण हो सकता है। इसलिए हमारी पार्टी ने जनता के क्रांतिकारी उत्साह और सर्जनशील गतिविधि को प्रमुख भूमिका देकर समाजवादी निर्माण की सफलता की मूल गारंटी पक्की कर ली।

हमारे देश में क्रांतिकारी संघर्ष और निर्माण कार्य का संचालन हर क्षेत्र में लोकप्रिय जन आंदोलन के रूप में किया गया है। जनता के क्रांतिकारी उत्साह और सर्जनशील शक्ति पर उच्च स्तर का भरोसा करके ही क्रांति और निर्माण के विशाल और कठिन दायित्व में हम सफल हुए हैं। हमारे समाजवादी निर्माण की तीव्र प्रगति की एक महत्त्वपूर्ण कुंजी मूलतः इसी तथ्य में निहित है कि हमने अपनी सब समस्याओं का हल जनता पर भरोसा करने के और उसे कर्म क्षेत्र में उत्साहित करने के क्रांतिकारी उपाय से किया।

जब भी समाजवादी निर्माण में हमें किसी कठिनाई और परीक्षा का सामना करना पड़ा हमने जन समूह में अपना विश्वास स्थापित कर दिया, उनके पास गए और समस्याओं को सुलझाने और नए तरीके निकालने के लिए उनसे गंभीर परामर्श किया। इससे कर्मकर समूहों ने पार्टी के इरादों को समझा और उन्होंने नव परिवर्तन का सामूहिक आंदोलन चला कर पार्टी की लाइन और नीतियों को पूरा किया। यह कोरिया के प्रसिद्ध छलिमा आंदोलन में विकसित हुआ।

छलिमा आंदोलन हमारी जनता का अभिनव परिवर्तन का जन आंदोलन है जिसका उद्देश्य समाजवादी निर्माण को तीव्रतम गति देना है। यह समाजवादी निर्माण में हमारी पार्टी की जन समूह लाइन का उज्ज्वलतम प्रतीक है और इसी आंदोलन के माध्यम से हमारी जनता की सारी बुद्धि, उत्साह और सर्जनशील ऊर्जा को काम में लाया जा सका। छलिमा आंदोलन के प्रसार से हमारी अर्थव्यवस्था, संस्कृति, सिद्धांत और नैतिकता के सभी क्षेत्रों में अभिनव परिवर्तन हुए हैं और समाजवादी निर्माण में

शानदार उपलब्धियाँ मिली हैं ।

हमारी सब विजयें पार्टी के ज़ूछे विचार की महान विजय हैं और एक साथ उसकी क्रांतिकारी जनसमूह लाइन की दीप्तिमान विजय हैं ।

हमारा अनुभव दिखाता है कि सिद्धांत के रूप में पूर्ण दृढ़ता से स्थापित, क्रांति और निर्माण के हर क्षेत्र में पूर्णतः मूर्त्त ज़ूछे और जनता के सर्जनशील उत्साह और कौशल के उपयोग से पिछड़े से पिछड़े हुए देश में भी एक नए, संपन्न और सशक्त समाज का शीघ्र निर्माण, साम्राज्यवादी आक्रांताओं की पराजय, राष्ट्रीय स्वाधीनता और जन सम्मान की रक्षा और देश तथा जनता की समृद्धि की प्राप्ति पूरी तरह संभव हैं ।

आपने हमारे अनुभव की प्रशंसा की है । हम इसे अपने काम का प्रोत्साहन मानते हैं ।

हमने अब तक काफी काम किया है, लेकिन भविष्य में हमें काफी कुछ करना है । अभी तक हमने अपने देश का पुनरेकीकरण नहीं किया । हमारे देश के दक्षिणी अर्द्ध भाग पर अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य बनाए हुए हैं और वहां क्रूर औपनिवेशिक फासिस्टी शासन चला रहे हैं ।

कोरिया की जनता के सामने महानतम राष्ट्रीय दायित्व है । दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को खदेड़ निकालना, राष्ट्रीय स्वाधीनता क्रांति को पूर्ण करना, और देश का पुनरेकीकरण करना । इस दायित्व को पूरा करने के लिए हम गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक रूप से क्रांति का और ठोस आधार बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं, दक्षिण कोरिया में हर प्रकार से क्रांतिकारी शक्तियां बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं और इसके साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी शक्तियों से एकता को सशक्त करने के प्रयत्न कर रहे हैं ।

प्रश्न : जनवादी जन गणतंत्र कोरिया और इराकी प्रजातंत्र में संबंध बहुत पहले स्थापित हुए थे । पर १७ जुलाई १९६८ की क्रांति के बाद ही इन संबंधों में निर्णायक परिवर्तन हुए ।

क्रांति के दो वर्षों में इराकी जनता की सफलताओं के बारे में, विशेषकर कुर्द राष्ट्रीयता की समस्या के शांतिपूर्ण प्रजातांत्रिक निबटारे के बारे में और साम्राज्यवाद विरोधी लोकप्रिय मोर्चे को सशक्त करने में इसके प्रभाव के बारे में आपका क्या मत है ?

उत्तर : इराकी जनता को विदेशी साम्राज्यवाद के आधिपत्य से राष्ट्रीय स्वतंत्रता बड़े लंबे और कठिन संघर्ष के बाद मिली और उसने विशेषतः १७ जुलाई

१९६८ की क्रांति के बाद नए विकास की राह पकड़ी। यह अकेली इराकी जनता की ही महान विजय नहीं थी बल्कि उन सबकी साझी विजय भी जो साम्राज्यवाद-विरोधी राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में उठ खड़े हुए हैं। साम्राज्यवादियों और उपनिवेशवादियों को यह करारी चोट थी।

क्रांति के बाद से इराकी जनता ने साम्राज्यवाद-विरोध और स्वतंत्रता की पताका ऊंची उठाई है, राष्ट्रीय स्वतंत्रता को मजबूत करने के लिए और नव एवं संपन्न इराक के निर्माण के लिए समर्पित संघर्ष किया है। बहुत थोड़े समय में उसने महान सफलताएं प्राप्त की हैं।

नव जीवन निर्माण के संघर्ष के आरंभ में इराकी जनता के सामने कई कठिनाईयां थीं। अमरीकी तथा अन्य साम्राज्यवादियों ने इस्राइली आक्रांताओं और उनके साथियों ने और स्थानीय प्रतिक्रियावादी शक्तियों ने इराकी जनता को साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे से हटाने के लिए हर छिपे षड्यंत्र का सहारा लिया।

अपनी कुटिल साजिशों के बावजूद साम्राज्यवादी और उनके अनुचर इराकी जनता की संघर्ष भावना को नहीं दबा सके। इराकी जनता ने अपनी सर्जनशील मेहनत से अपनी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय संस्कृति का विकास किया है, शत्रु की सभी विध्वंसकारी साजिशों और गतिविधियों को निराश किया है और अपने क्रांतिकारी लाभों की सतर्कता से रक्षा की है।

इराक में कुर्द राष्ट्रीय समस्या के सफल सुलझाव का जहां तक प्रश्न है राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में इराकी जनता की महानतम उपलब्धि के रूप में इसकी प्रशंसा करते हैं।

जातियों के बीच में शत्रुता और विवाद साम्राज्यवादी राज की उपज है। उनसे केवल साम्राज्यवादियों को लाभ होता है और जनता को केवल हानि।

कुर्द राष्ट्रीय समस्या का शांतिपूर्ण प्रजातांत्रिक सुलझाव साम्राज्यवादियों को भारी चोट है और साम्राज्यवादी-विरोधी लोकप्रिय मोर्चे को सशक्त करने में महत्वपूर्ण कदम। इससे इराक में अमरीका-विरोधी, इस्राइल-विरोधी संघर्ष तेज होता है। यह इराक को आंतरिक रूप से मजबूत करेगा और देश के प्रगतिशील विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाएगा।

इराक प्रजातंत्र और उसकी सरकार साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के संघर्ष में दृढ़तापूर्वक पांत में खड़े हैं और स्वतंत्रता और स्वाधीनता की लड़ाई में एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका की जनता का सक्रिय समर्थन कर रहे हैं।

इराकी जनता का न्ययोचित संघर्ष सारे विश्व के लोगों के साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी उद्देश्य में योगदान कर रहा है।

प्रश्न : कंबोडिया में अमरीकी सैनिक हस्तक्षेप से हिंदचीन की जनता के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक साजिशें तेज हो गई हैं।

पहले से ही धधकते इस क्षेत्र में इस नवीनतम अमरीकी आक्रमण के आपकी राय में क्या प्रभाव होंगे ?

उत्तर : जैसा कि सब जानते हैं कंबोडिया में अमरीकी साम्राज्यवादियों का आक्रमण हिंद चीन और एशिया के बृहत्तर क्षेत्रों में युद्ध विस्तार की उनकी पूर्वनियोजित साजिशों की जंजीर में एक और कड़ी है। कंबोडिया पर आक्रमण करके अमरीकी साम्राज्यवादियों ने न केवल वियतनाम और लाओस बल्कि समूचे हिंदचीन में नंगे अपराधपूर्ण युद्ध का मंच तैयार कर दिया है।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की सैनिक प्रसार की नीति से हिंद-चीन महाद्वीप की पहले से ही विकृत स्थिति और विकराल हो गई है। इससे एशिया और पूरे विश्व में शांति पर गम्भीर संकट आ गया है।

लेकिन हिंद-चीन में युद्ध के इस प्रसार ने अमरीकी साम्राज्यवादियों को और भी कठिन परिस्थिति में डाल दिया है और आक्रांताओं की पराज्य को निकट कर दिया है। अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं ने अपने शैतानी पंजे हिंदी-चीन के सारे क्षेत्र में फैला दिए हैं और इस प्रकार सारे हिंद-चीनी लोगों और संपूर्ण विश्व के शांति-प्रेमी लोगों की घोर निंदा और प्रतिरोध अर्जित किया है। यह नया आक्रमण हिंद-चीन के सब लोगों को अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक साझे मोर्चे में जोड़ता है और अधिकाधिक लोगों को संयुक्त अमरीका-विरोधी संघर्ष में ला रहा है।

अब वियतनाम, लाओस और कंबोडिया की जनता और निकट से संगठित होकर अपने समान शत्रु अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांता से साहसपूर्वक लड़ रही है। वे आक्रांताओं को एक के बाद एक गम्भीर राजनीतिक और सैनिक झटके दे रही हैं और अमरीकी साम्राज्यवादियों को आशाहीन अस्तव्यस्तता में डाल रही हैं। अमरीकी साम्राज्यवादियों की आशाओं के विपरीत पूरा हिंद-चीन आक्रांताओं का कब्रिस्तान बन गया है। अमरीकी साम्राज्यवादियों की कोई भी व्यग्र चाल हिंद-चीन की वीर जनता के घुटने नहीं टिका सकती।

हिंद-चीन में युद्ध के प्रसार के परिणाम स्वरूप अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं को भारी पराजय का कड़वा घूंट पीना ही पड़ेगा। हिंद-चीन में अमरीकी साम्राज्यवादियों की हार निश्चित है। अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध संयुक्त संघर्ष में हिंद-चीनी जनता की और एशिया की सभी संघर्षशील जनता की सैनिक एकता दिन प्रति दिन सशक्त हो रही है। एशिया की जनता और संपूर्ण विश्व के प्रगतिशील लोगों के समर्थन से हिंद-चीन की जनता अमरीकी साम्राज्यवाद

और उसके अनुचरों पर और गहरी चोट करेंगी, आक्रांताओं को मार भगाएंगी, अपने देशों के लिए स्वतन्त्रता और स्वाधीनता जीतेंगी और वहां नई संपन्नता लायेगी।

हिंद-चीन की जनता के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण को कोरिया की जनता अपने ऊपर आक्रमण मानती है। हिंद-चीनी जनता के संघर्ष को हम अपना संवर्ष समझते हैं। हमारी जनता समान शत्रु अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध और दृढ़ता से लड़ेगी और वियतनाम, लाओस और कंबोडिया की वीर जनता की यथाशक्ति हर सहायता करेगी।

प्रश्न : कोरिया की मजदूर पार्टी के नेतृत्व में आपकी जनता के क्रांतिकारी संघर्ष के अनुभवों में और अरब बाथ सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व में पिछले २० से भी अधिक सालों से चलने वाले एकता, स्वाधीनता और समाजवाद के संघर्ष में अरब राष्ट्र के अनुभवों में समानता के कई बिंदु हैं।

इन दोनों प्रगतिशील आंदोलनों के बीच संबंधों के विकास की संभावनाओं और विश्व क्रांतिकारी आंदोलन पर इनका जो प्रभाव होगा—क्या उसके बारे में हमें आप कुछ बताएंगे ?

उत्तर : इराकी जनता ने अरब बाथ सोशलिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एकता, स्वाधीनता और समाजवाद के लिए साम्राज्यवाद और इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध जो संघर्ष किया है और उसमें जो अनुभव प्राप्त किए हैं उसकी कोरिया की जनता कद्र करती है।

कोरिया और इराक की जनता समान शत्रु से लड़ने वाले बंधु सैनिक हैं। इन दोनों के लोग एक दूसरे की स्थिति को भली प्रकार समझते हैं और एक दूसरे से सहानुभूति करते हैं। दोनों ही भूतकाल में अपमानित किए गए थे और दोनों का ही दमन हुआ था। इसलिए दोनों सच्ची बराबरी के सिद्धांत पर एक दूसरे से निकट सहयोग भी करते हैं।

आज हमारी जनता और इराक की जनता के बीच, जनवादी जन गणतंत्र कोरिया और इराक प्रजातन्त्र की सरकारों के बीच मित्रता और सहयोग के संबंध स्थिरगति से विस्तृत और विकसित हो रहे हैं। हमारी पार्टी और अरब बाथ सोशलिस्ट पार्टी के बीच गठबंधन मजबूत हो रहा है। हमारे दोनों देशों की पार्टियां और जनता में प्रायः परस्पर यात्राओं का और लाभप्रद अनुभवों का आदान-प्रदान होता है। यह बहुत ही अच्छा है।

हमारे राष्ट्रों के बीच यह परस्पर समर्थन, प्रोत्साहन और अनुभवों का

आदान-प्रदान पारस्परिक समझ को गहरा करने में, हमारी एकता को सशक्त करने में और एक दूसरे से काफी सीखने में बड़े काम का है।

कोरियाई अरब जनता के बीच संबंधों के विकास से हमें बड़ा संतोष है। भविष्य में भी ऐसी एकता और सहयोग को सशक्त और विकसित करने के लिए हम प्रयासशील रहेंगे। अगर हम मिलजुल कर प्रयास करें तो यह एकता और सहयोग विस्तृत होंगे और दिन प्रति दिन हर क्षेत्र में—राजनीति, अर्थव्यवस्था और संस्कृति में—और अधिक ओजस्विता का परिचय देंगे।

कोरियाई और अरब जनता की मित्रता और एकता एशिया और अफ्रीका के लोगों साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध महान एकता का भाग है। हमारे दोनों देशों के बीच एकता और सहयोग के दृढ़ होने से दोनों देशों के हितों की ही सेवा नहीं होती बल्कि इससे सारे विश्व के प्रगतिशील लोगों की एकता और उनके समान उद्देश्य में भी योगदान होता है।

प्रश्न : हमारी अरब पितृभूमि में सशस्त्र क्रांति का उद्देश्य है उस क्षेत्र में साम्राज्यवाद को दी गई छूटें समाप्त करना और अमरीकी साम्राज्यवाद के सैनिक अड्डे के रूप में इस्राइल का अस्तित्व समाप्त करना।

आपने इसी प्रकार का संघर्ष किया और साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध जनता के सशस्त्र संघर्ष में बहुत अनुभव संचित किया। अतः आप अरब जनता की क्रांति को क्या समर्थन और प्रोत्साहन दे सकते हैं ?

उत्तर : अरब जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध सशक्त सशस्त्र संघर्ष कर रही है। यह स्वाभाविक ही है कि वीर अरब जनता सशस्त्र आक्रमण का प्रतिरोध शस्त्रों से करे। जब तक साम्राज्यवादी जनता को हिंसा से लूटते और दबाते रहेंगे, जनता सशस्त्र हो कर आक्रांताओं से लड़कर ही स्वतन्त्रता और स्वाधीनता जीत सकती है और अपने अधिकार पुनः पा सकती है। यह एक स्पष्ट सत्य है, साम्राज्यवाद-विरोधी स्वाधीनता संघर्षों के इतिहास ने इसे सिद्ध किया है।

अमरीकी साम्राज्यवाद और इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध अरब जनता का संघर्ष और राष्ट्रीय स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा का, विजित अरब क्षेत्र वापस जीतने का और फिलीस्तीन की जनता की स्वाधीनता पाने का न्यायोचित संघर्ष है। इस क्रांतिकारी संघर्ष को विश्व के सभी प्रगतिशील लोगों का सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त है।

हमारी जनता अरब जनता के क्रांतिकारी संघर्ष के लगातार साथ है और

उसको समर्थन और प्रोत्साहन देती है। फिलीस्तीन के लोगों के अपनी पितृभूमि को स्वाधीन कराने के वीरतापूर्ण संघर्ष का समर्थन कोरिया की जनता दृढ़ संकल्प से करती रहेगी। हमारी जनता सियोनवाद और साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध संपूर्ण अरब जनता के संघर्ष का दृढ़ समर्थन करती है और समान शत्रु के विरुद्ध संग्राम में हमेशा अरब जनता के साथ लड़ने वाली साथी सैनिक रहेगी। हमारी जनता अरब जनता के कानूनी संघर्ष को हमेशा सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देगी।

इस अवसर पर मैं अमरीकी साम्राज्यवाद और इस्राइली आक्रांताओं के विरुद्ध उनके न्यायोचित संघर्ष में अरब जनता की महत्तर सफलताओं की कामना करता हूं।

जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया की वर्तमान राजनीतिक और आर्थिक नीतियां और कुछ अंतर्राष्ट्रीय समस्याएं

जापानी समाचारपत्र 'योमियूरी शिमबुन' के पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

१० जनवरी १९७२

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप हमारे देश में पधारे।

गत वर्षों आप हमारे देश के प्रति मित्रवत रहे हैं और जापान में हमारे नागरिकों को उनके प्रजातांत्रिक राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा सम्बन्धी गतिविधि में कार्य और उनके स्वदेश वापस लौटने के काम में बड़ी सहायता देते रहे है।

आपने कोरिया और जापान के संबंध सुधारने के लिए भी बहुत काम किया है।

इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

आपने हमारे मौके पर तत्काल मार्गदर्शन की काफी चर्चा की है। हम आम जनता के पास उसका मार्गदर्शन करने से अधिक उससे सीखने जाते हैं।

विगत काल में हम क्रांतिकारी संघर्ष में लगे रहे, और जब हम राष्ट्र निर्माण में जुटे तो हमें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन समस्याओं को हल करने के लिए हमने तय किया कि हमें आम जनता के पास, विशेषकर मजदूरों और कृषकों के पास, उत्पादकों के पास जाना चाहिए और उनसे सीखना चाहिए। यही कारण है कि हम अक्सर फैक्टरियों और गांवों में जाते हैं और मजदूरों, किसानों तथा मेहनतकश जनता से सलाह लेते हैं।

जब मजदूर वर्ग और मेहनतकश जनता के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाली मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी सत्ता संभालती है तो उसके अधिकाधिक आत्मनिष्ठ हो जाने और नौकरशाहाना गलतियां करने का खतरा रहता है। इससे बचने के लिए, उसे आम जनता के पास जाना ही चाहिए। विशेषकर जब परिस्थिति कठिन हो

उसको आम जनता में गहरे पैठना चाहिए और उसके साथ सभी मामलों पर विचार करना चाहिए तथा उससे सलाह लेनी चाहिए।

आम जनता हमारी शिक्षिका है। हम हमेशा उससे सीखते हैं।

मुक्ति के बाद शांतिपूर्ण निर्माण के दौर में, पितृभूमि के मुक्ति संग्राम के दौर में और युद्धोत्तर काल में जब हमने समाजवादी क्रांति और समाजवादी निर्माण का काम किया, तब हम सदा जनता के पास गए, अपने सामने आने वाली कठिनाइयों का हल खोजने के लिए उससे सलाह ली, और उससे विश्वास तथा साहस प्राप्त किया। इसके हम अनेक उदाहण दे सकते हैं।

हमारा यह अचल विश्वास है कि क्रांतिकारी संघर्ष हो या निर्माण कार्य, सफलता की कुंजी है—आम जनता और पार्टी की एकता।

आज हमारी फैक्टरियों और खेतिहर गांवों में अनगिनत अनाम वीर हैं। वे पार्टी का समर्थन करते हैं और क्रांति तथा निर्माण कार्य आगे बढ़ाते हैं। हमारी पार्टी आम जनता को अपने उद्देश्यों की सूचना देती है, उसके सर्जनशील सुझावों का संश्लेषण करती है और इस आधार पर अपनी नीतियां और दिशाएं निर्धारित करती है। इसलिए हमारी पार्टी की नीतियों और दिशाओं को हार्दिक जन-समर्थन प्राप्त होता है और पार्टी तथा आम जनता के संयुक्त प्रयत्नों से उन सभी को सफलतापूर्वक अमल में लाया जाता है।

हमारी पार्टी सदा आम जनता के साथ सांस लेती है। हम कह सकते हैं कि हमारी पार्टी के आत्मनिष्ठा में न फंस पाने और अब तक गलतियां न करने का रहस्य यही है। भविष्य में भी न सिर्फ आत्मनिष्ठा की गलतियां न करने के लिए, बल्कि अभी तक उपलब्ध सफलताओं का विस्तार और विकास करने के लिए भी, हमारी पार्टी आम जनता से अपने रिश्ते मजबूत करना जारी रखेगी।

मुझे कोरियाई पत्रकार संघ की केंद्रीय समिति के माध्यम से आपके प्रश्न प्राप्त हुए हैं।

उनमें अनेक समस्याएं हैं, जिनका विशाल कार्य-क्षेत्रों से संबंध है।

सुविधा के लिए मैं आपके प्रश्नों को उनकी विषयवस्तु के अनुसार कुछ समूहों में वर्गीकरण करके उत्तर देना चाहूंगा।

१. जूछे सिद्धांत के विषय में

आपने मुझसे जूछे के विचार की विस्तृत व्याख्या मांगी है।

मैं आपको संक्षिप्त उत्तर दूंगा।

मेरा ख्याल है कि अगर जूछे विचार पर आप मेरी कुछ पुस्तकें पढ़ें तो आपको उसका स्पष्टतर समाधान मिल जायेगा।

जूछे विचार हमारी पार्टी का एकमात्र मार्गदर्शक विचार और जनवादी जन-गणतंत्र कोरिया की समस्त गतिविधियों का निर्देशक सिद्धांत है। क्रांति और निर्माण में जूछे विचार को अडिग मार्गदर्शक मानकर हमने अपने सभी-क्षेत्रों में जूछे की दृढ़ स्थापना कर दी है।

जूछे की स्थापना का अर्थ है जनता द्वारा अपने देश में क्रांति और निर्माण के प्रति स्वामित्व का रुख अपनाना। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है स्वतंत्र और रचनात्मक भावना को मूर्त्त करना ताकि हमारे देश की वास्तविक स्थितियों के संदर्भ में क्रांतिकारी संघर्ष और निर्माण कार्य की सभी समस्याओं को एक स्वतंत्र तथा रचनात्मक दृष्टि से स्वयं अपने प्रयत्नों से हल किया जाए।

क्रांति का न निर्यात किया जा सकता है, और न आयात। हमारे लिए विदेशी लोग क्रांति नहीं संपन्न कर सकते। प्रत्येक देश में क्रांति की स्वामिनी स्वयं उस देश की जनता है और क्रांति की विजय के लिए निर्णायक तत्व स्वयं उस देश की शक्ति होती है।

इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे मजदूर वर्ग और आम जनता का क्रांतिकारी आंदोलन आगे बढ़ता है, कई नई, कठिन और पेचीदा कठिनाइयां और समस्याएं उठ खड़ी होती हैं।

इसलिए, प्रत्येक देश में क्रांति संपन्न करने के लिए उस देश की जनता को, उसकी स्वामिनी को ही, प्रयत्न और संघर्ष करना चाहिए, क्रांति और निर्माण कार्य में उठनेवाली समस्याओं पर स्वयं अपने मस्तिष्क, निर्णय बुद्धि और प्रयासों से, अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार स्वयं उनको हल करना चाहिए। क्रांति और निर्माण को सफलतापूर्वक संपन्न करने का यही एकमात्र मार्ग है।

इसलिए जूछे विचार का तकाजा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने देश की क्रांति को अपने चिंतन और क्रांतिकारी गतिविधि का केन्द्र बिंदु बनाए। क्रांति और निर्माण को जनता जारी रखती है। इस कारण से क्रांति की विजय के लिए जनता में सही क्रांतिकारी विश्व-दृष्टिकोण होना ही चाहिए और यह भी आवश्यक है कि स्वयं अपने देश में क्रांति और निर्माण की स्वामिनी के रूप में जनता पूरी जिम्मेदारी संभालने के लिए उत्सुक रहे।

जूछे विचार क्रांति की इन्हीं आवश्यकताओं पर आधारित है।

जूछे की स्थापना का हमारे सामने एक विशेष महत्व था। बहुत समय पहले हमारे देश में कुछ लोगों में बड़ी शक्तियों के प्रति चाटुकारिता का उदय हुआ—

अपनी शक्ति पर भरोसा न करना तथा दूसरों की उचित-अनुचित पूजा करना और बड़े राष्ट्रों की सेवा करने का दासतापूर्ण पिछलग्गू भाव जो लोग इस प्रकार के विचार से ग्रस्त थे, वे अपने स्वामियों के समर्थन से सिर्फ संकुचित झगड़ों में लगे हुए थे, और जबकि देश का भाग्य खतरे में था, तब स्वयं अपने प्रयत्नों के बल पर तथा अपनी जनता पर दृढ़तापूर्वक भरोसा कर संकट दूर करने की कोशिश किये बिना, वे दूसरों का मुंह जोहा करते थे। इसके फलस्वरूप हमारा देश दूसरों के हाथ बरबाद हुआ।

बड़े राष्ट्रों की चाटुकारिता का बाद में भी उन्मूलन नहीं हुआ और मतांधता के साथ इस प्रवृत्ति ने हमारे देश में क्रांति के विकास को बड़ा नुकसान पहुंचाया। हमारे देश में राष्ट्रवादी आन्दोलन के ढह जाने और प्रारंभिक दौर में कम्युनिस्ट आंदोलन की असफलता का मुख्य कारण यही चाटुकारिता और उससे उत्पन्न होनेवाली संकीर्ण सैद्धांतिकता ही थी।

ऐसे अनेक उदाहरण हमारे देश में ही नहीं अन्य देशों में भी मिलते हैं। अन्य देशों में कुछ संकीर्ण फूट डालने वाले प्रकट हुए जो राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन और कम्युनिस्ट आंदोलन में जूछे प्रेरित दृष्टिकोण बनाये रखने में असफल हुए और विदेशों की सैद्धांतिक धाराओं का अनुगमन करते रहे जिससे क्रांति के विकास में बड़ी बाधा पड़ी।

हमने इससे एक गंभीर पाठ सीखा कि पिछलग्गूपन अपनाने वाला व्यक्ति जड़-मूर्ख हो जाता है, राष्ट्र बरबाद हो जाता है और जब कोई पार्टी पिछलग्गूपन अपना लेती है तो वह क्रांति का गुड़-गोबर कर देती है।

अगर कोई चाटुकारिता का दास होकर दूसरों का अंधानुकरण करता है और वही काम वैसे ही करता है जैसे दूसरे करते हैं तो न तो वह अपनी भूलों का, गलतियों का कारण समझ सकता है न उन्हें दूर करने का रास्ता पा सकता है। लेकिन जब कोई व्यक्ति अपना दिमाग लगाकर सभी मामलों का लेखा-जोखा लेता है और अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप उन्हें हल करता है तो वह न सिर्फ अपनी क्रांति और निर्माण का सफलतापूर्वक संचालन कर सकता है, बल्कि गल्ती का कारण भी तुरंत पता कर लेता है और उसे सुधार लेता है चाहे फिर वह गलती स्वयं उसी ने क्यों न की हो।

इस ऐतिहासिक अनुभव के प्रकाश में कोरियाई क्रांतिकारी कटिबद्ध हो गये कि वे अपने क्रांतिकारी संघर्ष में पिछलग्गूपन में नहीं फंसेंगे और समय आने पर अपने देश में जूछे विचार पर आधारित एक सच्चे प्रभुसत्तासंपन्न और पूर्णतः स्वतंत्र राज्य की स्थापना करेंगे। कोरिया के आरंभिक क्रांतिकारियों का यही सर्वसम्मत इरादा था।

१५ अगस्त को स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जूछे की स्थापना का महत्त्व और भी बढ़ गया। दक्षिण कोरिया पर अमरीकी साम्राज्यवादी अधिकार के कारण हमारे

देश की क्रांति ने एक शटिल और दुस्साध्य रूप धारण कर लिया था, दक्षिण कोरिया में अमरीका के पिछलग्गू बनने तथा उसकी पूजा करने और उससे डरने तथा उसके सामने आत्मसमर्पण करने का भाव जड़ पकड़े हुए था और जापानी सैन्यवाद तक के विषय में एक भ्रम फैलाया जा रहा था।

क्रांति और निर्माण कार्य की निर्णयकारी मुख्य समस्या के रूप में जूछे की स्थापना के लिए हमने पिछलग्गूपन और मतांधता के विरुद्ध और जूछे की सुदृढ़ स्थापना के लिए उस पूरे दौर से आज तक निर्मम संघर्ष छेड़ा है। इस ऐतिहासिक संघर्ष द्वारा हमने उस पिछलग्गूपन के जूए से, जिसने एक लम्बे काल तक हमारी जनता की राष्ट्रीय स्वतंत्रता संबंधी चेतना तथा रचनात्मक विवेक को कुंठित किया, अपनी जनता की पूर्ण नैतिक मुक्ति उपलब्ध की। हमारे देश में क्रांति और निर्माण के सभी क्षेत्रों में जूछे विचार पूर्णतः संस्थापित हैं।

हमारी जनता तथा पार्टी सदस्य और कार्यकर्त्ता अपने को सर्वांगतः जूछे विचार से लैस करते हैं दूसरे देशों में चाहे जैसी हवा बह रही हो, वे उससे रत्ती भर नहीं हिलते और न उससे किसी भी तरह प्रभावित होते हैं। हमारी जनता के विचार बड़े स्वस्थ हैं।

आप मुझसे जूछे विचार पर आधारित हमारी नीति के बुनियादी तत्वों के बारे में पूछ रहे हैं।

हमारी पार्टी की समस्त आंतरिक और बाह्य नीतियां जूछे विचार पर आधारित हैं और उसी से निकलती हैं। राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सैनिक मामलों में हमारे उपाय विशेष तथा हमारी दिशाओं और नीतियों को जो बात रेखांकित करती है, वह है—जूछे विचार।

जूछे का विचार, सर्वप्रथम, राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय स्व-सुरक्षा की नीतियों में निहित है।

एक स्वतंत्र और प्रभुसत्तासंपन्न राज्य की प्राथमिक कसौटी है—राजनीतिक स्वतंत्रता। जब कोई राष्ट्र राजनीति में आत्मनिर्णय के अपने न्यायसंगत अधिकार का उपयोग करता है तभी वह अपने देश की पूर्ण स्वतंत्रता आश्वत करता है।

हमने सभी दिशाएं और नीतियां स्वतंत्रतापूर्वक जूछे विचार के आधार पर निर्धारित की हैं और करते हैं। हम किसी अन्य के आदेशों या हिदायतों के अनुसार काम नहीं करते और न हम विदेशी तौर तरीकों की अंधी नकल या अनुकरण करते हैं। मुक्ति के दिन से आज तक हमारी पार्टी ने जिन नीतियों का निर्धारण और अमल किया है, वे कहीं बाहर से नकल नहीं की गयीं। उनको अपने देश की क्रांति के तकाजों के अनुसार जूछे के दृष्टिकोण से स्वयं हमने बनाया है।

इसका यह अर्थ नहीं कि हम दूसरे देशों के क्रांतिकारी आंदोलनों और उनके अनुभवों को नहीं देखते-समझते। हमने विदेशी चीजों को वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण से

देखा-समझा और अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप मार्क्सवादी-लेनिनवादी सार्वभौमिक सिद्धांतों को जूछे के आधार पर रचनात्मक रूप से लागू किया। यही कारण है कि हमने गलतियां नहीं कीं और हम क्रांति तथा निर्माणकार्य को सही रास्ते पर ले जा सके।

हमने सभी मामलों को जूछे-प्रेरित दृष्टिकोण से पूरी तरह अपने देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार हल किया।

उदाहरण के लिए, एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव डालने तथा एक ऐसी स्थिति में जब प्रत्येक चीज़ युद्ध से ध्वस्त पड़ी थी, अभाव ग्रस्त जन-जीवन में तेज़ी से सुधार के अपने दायित्वों को पूरा करने के उद्देश्य से हमने भारी उद्योग के विकास को प्राथमिकता देने के साथ ही साय हलके उद्योग तथा कृषि के विकास की समाजवादी आर्थिक निर्माण की बुनियादी नीति पेश की। यह नीति हमारे देश के आर्थिक विकास के तकाज़ों और मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धांत के रचनात्मक विकास को प्रतिबिंबित करने वाली एक मौलिक नीति है।

अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के सही आकलन के आधार पर हमने तकनोलोजी संबंधी पुनर्निर्माण से पहले के आर्थिक स्वरूप को पुनर्गठित करने के लिए कृषि के सहकारीकरण की दिशा भी रखी। हमने पूंजीवादी वाणिज्य और उद्योग को समाजवादी दिशाओं में पुनर्गठित करने की नीति पर भी अमल किया। ये नीतियां रचनात्मक हैं और दूसरे देशों में अविदित। जब हमारी पार्टी ने ये दिशाएं और नीतियां रखीं तो जो लोग पिछलग्गूपन और मतांधता के रोग से ग्रस्त थे, वे लोग इन नीतियों को यह कहकर बदनाम करने लगे कि "इनका किसी पुस्तक में उल्लेख नहीं है" और "ऐसा काम करने की कोशिश किसी ने नहीं की।" मगर इन दिशाओं का सही होना इस तथ्य से ही सिद्ध हो जाता है कि हमारा देश थोड़े से समय में, विकसित कृषि संपन्न समाजवादी औद्योगिक देश बन गया है।

बुद्धिजीवियों के संबंध में भी हमने अन्य देशों से भिन्न मार्ग ग्रहण किया।

हमारे देश के पुराने बुद्धिजीवी जापानी साम्राज्यवाद के उपनिवेशी शासन में राष्ट्रीय दमन और भेदभाव के शिकार रहे, इसलिए उन में अपने भूतपूर्व वैभव के बावजूद एक राष्ट्रीय, क्रांतिकारी चेतना है।

जहां तक बूढ़े बुद्धिजीवियों का प्रश्न है जिन्हें पुरानी पद्धतियों से शिक्षा दीक्षा मिली थी और जो पूंजीवादी या सामंती समाज में काम करते थे, हमने तय किया कि अगर वे राष्ट्र के विकास में जनता के साथ काम करने को प्रस्तुत हैं, तो हम उनका क्रांतिपरक परिष्कार-पुनर्संस्कार करते हुए उनके सहयोग से क्रांति का विकास करेंगे। इस प्रकार वे सब क्रांतिकारी बुद्धिजीवी बन चुके हैं और श्रमिकवर्ग के क्रांतिकारी लक्ष्य की सेवा कर रहे हैं। अब तक वे काफी कुछ कर चुके हैं और

अब भी राष्ट्र की निष्ठापूर्वक सेवा कर रहे हैं।

आक्रमण और युद्ध के लिए साम्राज्यवाद की पैंतरेबाज़ियों की रोशनी में एक ही साथ देश की आर्थिक शक्ति और सुरक्षा-शक्ति बढ़ाने के लिए आर्थिक निर्माण और प्रतिरक्षा निर्माण का विकास और दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों को बाहर भगाने के बाद किसी भी बाहरी शक्ति के बिना स्वयं कोरियाई जनता के प्रयत्नों से देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने की नीति—ये सभी मौलिक दिशाएं और नीतियां हैं जिनमें जूछे विचार साकार है।

यही कारण हैं कि हमारी पार्टी की सभी नीतियां हमारे देश की वास्तविक परिस्थितियों और हमारी जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप है और हर संकट में अविचलित रूप से अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता दृढ़तापूर्वक कायम रखने में समर्थ हैं।

आर्थिक आत्म-निर्भरता राजनीतिक स्वतंत्रता का भौतिक आधार हैं। जो देश आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर रहता हैं, वह राजनीतिक रूप से भी दूसरों पर निर्भर हुए बिना नहीं रहता।

यही कारण है कि हमने मुक्ति के बाद से ही स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण की दिशा रखी और समस्त कठिनाइयों के बावजूद उस पर अमल किया।

स्वयं अपने प्रयत्नों से स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के निर्माण करने का यह अर्थ कभी नहीं होता कि अपने देश का द्वार बन्द कर दिया जाय। आत्म-निर्भरता के झण्डे के नीचे एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का निर्माण करते हुए हमने पूर्ण समानता और परस्पर लाभ के सिद्धांतों के आधार पर अन्य देशों से पारस्परिक आदान-प्रदान और सहयोग के आर्थिक संबंध विकसित किए।

हमारे संघर्ष का सुफल हुआ है और उसके परिणामस्वरूप अब हमारे यहां आधुनिक तकनोलीजी से सुसज्जित और सर्वांग सुविकसित एक स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था है। यह देश की राजनीतिक स्वतंत्रता की सुदृढ़ गारंटी है।

राष्ट्रीय स्व-प्रतिरक्षा देश की राजनीतिक स्वतंत्रता और आर्थिक आत्म-निर्भरता की सैनिक गारंटी है। जब तक संसार राष्ट्रीय राज्यों में विभाजित है और जब तक पृथ्वी पर साम्राज्यवाद कायम है, तब तक अगर किसी में देश और राष्ट्र की विदेशी आक्रमण से रक्षा के लिए आत्मरक्षात्मक प्रतिरक्षा-क्षमता नहीं है तो वह विश्वास के साथ अपनी स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता की बात नहीं कर सकता।

आत्म-रक्षा की सैनिक-नीति को पूरी तरह लागू करते हुए, हमने आक्रमण-कारियों के हर उत्तेजना को चकनाचूर करने के लिए और देश की सुरक्षा तथा क्रांति की उपलब्धियों की विश्वसनीय रूप से रक्षा करने के लिए एक शक्तिशाली प्रतिरक्षा शक्ति का निर्माण कर लिया है।

राजनीति में स्वतंत्रता, अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा

में आत्म-रक्षा के सिद्धांतों को पूरी तरह तरह लागू करके हमने एक संपूर्ण संपन्न, सशक्त और विश्वसनीय नए समाजवादी देश की रचना कर ली है जिसकी हम विगत काल में कामना किया करते थे। अगर हमने जूछे स्थापित न किया होता और हवा के साथ बहते तथा दूसरों की धुन पर नाचते तो हम आज की सफलताओं की आशा नहीं कर सकते थे।

पूंजीवादी देशों के कुछ समाचार पत्र स्वतंत्रता बनाए रखने वाले समाजवादी देश को "राष्ट्रीय कम्युनिज़्म" कहकर पुकारते हैं। प्रतिक्रियावादी शक्तियां जिस "राष्ट्रीय कम्युनिज़्म" की ज़ोर-शोर से बात करती हैं, उसमें और जूछे विचार में कोई बात समान नहीं है।

जूछे विचार मार्क्स द्वारा दिए गए "दुनिया के मज़दूरो एक हो" के सिद्धांत पर आधारित है और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के पूर्णतया अनुरूप है।

हम जूछे विचार के आधार पर स्वतंत्रता कायम और सुरक्षित रखने को अपना सिद्धान्त बनाते हैं, लेकिन साथ ही, अंतर्राष्ट्रवादी एकता और सहयोग सुदृढ़ करने को भी सिद्धांत मानते हैं। जिस स्वतंत्रता का हम प्रतिपादन करते हैं वह किसी भी प्रकार सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता से अलग नहीं है। जिस प्रकार स्वतंत्रता से अलग कोई अंतर्राष्ट्रीयता नहीं हो सकती, उसी तरह अन्तर्राष्ट्रीयता से अलग कोई स्वतंत्रता नहीं हो सकती। स्वतंत्रता कायम रखने के नाम पर सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयता से मुंह मोड़ना किसी कम्युनिस्ट को शोभा नहीं देता। निश्चित ही इसका अर्थ है राष्ट्रीय दंभ से ग्रस्त हो जाना।

हम अब अन्य देशों से पूर्ण स्वतंत्रता और समानता के आधार पर परस्पर संबंध कायम रखे हुए हैं।

हमारा न तो किसी अन्य राष्ट्र के हितों का उल्लंघन करने का इरादा है और न हम किसी को अपने राष्ट्र के अधिकारों और आत्मसम्मान को रौदने देंगे। हम बड़े और छोटे देशों से जो हमारे देश के प्रति मैत्रीपूर्ण रुख लेते हैं, पूर्ण समानता और पारस्परिक सम्मान के सिद्धांत के आधार पर राजनीतिक और आर्थिक संबंध विकसित कर रहे हैं।

स्वतंत्रता ही समाजवादी देशों के बीच भी एकता और सहयोग की प्राथमिक शर्त है। सच्ची एकता उपलब्ध करने के लिए सभी को स्वतंत्रता के सिद्धांत का पालन करना चाहिए। समाजवादी देशों के बीच एकता और संबद्धता उपलब्ध करने के प्रयत्नों में अपने सिद्धांतों का हम दृढ़ता से समर्थन करते हैं।

हमारे सिद्धांत हैं, पहला, साम्राज्यवाद का विरोध करना; दूसरा, उपनिवेशों में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का और विभिन्न देशों में श्रमिक वर्ग के आंदोलन का समर्थन करना; तीसरा, समाजवाद और साम्यवाद की ओर लगातार आगे बढ़ना;

और चौथा, एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, परस्पर सम्मान, समानता और पारस्परिक लाभ के सिद्धांत का पालन करना। हमारी धारणा है कि अगर मतभेद भी हों तब भी एकता प्राप्त करने के लिए इन सिद्धान्तों का पालन किया जाना चाहिए।

अन्य देशों के क्रांतिकारी संघर्ष और जनवादी आंदोलन के प्रति हमारे रुख का जहां-तक सम्बन्ध है, हम स्वतंत्रता और हस्तक्षेप न करने के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करते हैं।

प्रत्येक देश की पार्टी और जनता अपने राष्ट्रीय मामलों को अन्य सबसे अच्छी तरह जानती है। इसलिए अपने देश में क्रांतिकारी आंदोलन कैसे चलाना चाहिए, इसका फैसला वे स्वयं करें—यह स्वाभाविक ही है। हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे और न उस पर अपने विचार लादेंगे। हम न तो किसी के उदाहरण का यंत्रवत् अनुसरण करते हैं और न किसी से अपने विचारों को सर्वांग रूप से निगलने की बात कहते हैं।

इस समय अनेक देशों में जो क्रांनिकारी और जनवादी आंदोलन चल रहे हैं वे तभी सफलतापूर्वक विकसित हो सकते हैं और विजयी बनकर उभर सकते हैं जब उन देशों की पार्टियां और जनगण अपने देशों की वास्तविक परिस्थितियों के अनुरूप सही पथ-निर्देशक सिद्धांत तथा संघर्ष की वैज्ञानिक पद्धतियां स्वतंत्र रूप से निर्धारित करें और उनको अमल में लाएं।

२. हमारे देश में समाजवादी निर्माण और छ-वर्षीय योजना के केंद्रीय दायित्व

जैसा कि आप जानते हैं, हमारी पार्टी की पांचवी कांग्रेस ने सप्तवर्षीय योजना के पूरे किए जाने की सफलताओं को निष्कर्षबद्ध किया और समाजवादी निर्माण के एक और लक्ष्य के रूप में एक षड्वर्षीय योजना स्वीकार की।

मूलतः सप्तवर्षीय योजना को १९६१ और १९६७ के बीच पूरा किया जाना था। लेकिन हमारे देश के गिर्द तनावपूर्ण स्थिति से उसके पूरे होने में देरी हुई। हमारी जनता सप्तवर्षीय योजना पूरी करने में लगी थी, तभी अमरीकी साम्राज्य-वादियों ने कैरीबियन संकट पैदा किया, और वियतनामी जनता के विरुद्ध आक्रमणकारी युद्ध का और विस्तार किया तथा इस प्रकार स्थिति को घोर तनावपूर्ण बना दिया। विशेषकर अमरीकी साम्राज्यवादियों ने गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग के विरुद्ध गंभीर सैनिक उत्तेजनाएं की और उधर दक्षिण कोरिया में अपने नए युद्ध की तैयारियां तेज़

कर दीं।

इन परिस्थितियों में हमें देश की रक्षा-सामर्थ्य बढ़ानी पड़ी और शत्रु के हमले का सामने के लिए हर तैयारी करनी पड़ी।

हमारी पार्टी ने आर्थिक और प्रतिरक्षा के समांतर निर्माण की नयी दिशा पेश की और इस दिशा के अनुसार उसने समाजवादी निर्माण के सारे काम का पुनर्गठन किया और प्रतिरक्षा-निर्माण के लिए काफी धन जुटाया। परिणामतः सप्तवर्षीय राष्ट्रीय आर्थिक योजना के पूरा होने में कुछ और वर्ष लगे।

उस समय हमने देश की रक्षा-व्यवस्था सर्वांग संपन्न बनाने के लिए प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाने में काफी प्रयत्न लगाए, हालांकि इससे देश के आर्थिक विकास और जनता के रहन-सहन के स्तर के सुधार में बाधा पड़ी। यही कारण था कि हम अमरीकी साम्राज्यवादियों को अपने को छूने का साहस करने में बचाने में सफल हुए, हालांकि उन्होंने 'प्यूब्लो' और 'इ सी-१२१' कांड पैदा करके गणतंत्र के उत्तरी आधे भाग पर सशस्त्र हमला करने की खुली कोशिशें कीं।

कठिन परिस्थितियों में भी हमने सप्तवर्षीय योजना सफलतापूर्वक पूरी की। इसको पूरा करने में हमें दस वर्ष लगे, मगर हमारी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तीव्रगति से विकसित हुई। पिछले दशक में सप्तवर्षीय योजना के दौरान हमारा औद्योगिक उत्पादन प्रति वर्ष १२.८ प्रतिशत की औसत दर से बढ़ा।

मेरा ख्याल है कि अन्य देशों की तुलना में यह काफी ऊंची रफ्तार है। हमारी जनता को इस पर बड़ा गर्व है।

पिछले वर्ष हमने एक नई दीर्घकालीन योजना, षड्-वर्षीय योजना, का प्रारंभ किया।

षड्-वर्षीय योजना हमारे देश में समाजवादी व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करने तथा समाजवाद की पूर्ण विजय उपलब्ध करने का खाका है। यह योजना हमारे समाजवादी देश को एक ऐसे समृद्धतर और सशक्तर देश में, स्वतंत्र, आत्म-निर्भर और स्वरक्षित देश में रूपांतरित करने का मान-चित्र है।

जैसा कि हमारी पार्टी की पांचवीं कांग्रेस के दस्तावेज में स्पष्ट किया गया है, समाजवादी आर्थिक निर्माण के क्षेत्र में षड्-वर्षीय योजना का बुनियादी दायित्व है—औद्योगीकरण में प्राप्त सफलताओं को आगे बढ़ा कर और सुदृढ़ कर तथा तकनीकी क्रांति को एक नए, उच्चतर स्तर तक उठा कर, समाजवाद की भौतिक और तकनीकी नींव को और अधिक सुदृढ़ करना तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में मेहनतकश जनता को दुस्साध्य श्रम से मुक्त करना।

षड्-वर्षीय योजना के मुख्य वस्तुतत्व, तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं।

हमारी पार्टी द्वारा प्रस्तुत तीन प्रमुख उद्देश्य हैं : प्रथम, भारी और हलके श्रम के बीच भेद को और कम करने के लिए औद्योगिक शाखाओं में तकनीकी क्रांति को गतिशील रीति से आगे बढ़ाना; दूसरे, कृषि और औद्योगिक श्रम के भेद को कम करने के लिए गांवों में तकनीकी क्रांति को शीघ्र उपलब्ध करना जारी रखना; तीसरे, महिलाओं को घरेलू काम-काज के भारी बोझों से मुक्त करने के लिए तकनीकी क्रांति जारी रखना। एक शब्द में, नकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख कर्त्तव्य श्रमिक जनता को भारी और दुस्साध्य श्रम से मुक्त करने के सम्मानपूर्ण क्रांतिकारी कर्त्तव्य हैं।

उनमें हमारे देश में, जहां समाजवादी औद्योगीकरण उपलब्ध हो चुका है, आर्थिक विकास की आवश्यकताओं तथा मेहनतकश जनता की हार्दिक आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति है।

हमारी पार्टी ने तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख कर्त्तव्यों की कुंजी मशीनी पुर्जों के उत्पादन के रूप में पाई।

तकनीकी क्राँति एक इंजीनियरी क्रांति है। उसके लिए बड़ी संख्या में मशीनी पुर्जों की आवश्यकता है।

इसलिए हमने षड्-वर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में यानी गत वर्ष, मशीनी औजारों के उत्पादन पर प्रयत्न केंद्रित किए। पार्टी के आवाहन पर हुईखोन मशीन पुर्जे कारखाने समेत मशीनी औजार कारखानों के मजदूरों ने साज-सामान सुधार कर और उत्पादन-प्रक्रिया को सक्रिय रूप से स्वचालित बनाकर मशीनी पुर्जों के उत्पादन में वृद्धि के अभियान को उत्साहपूर्वक प्रारंभ किया। फलतः हमारे इंजीनियरिंग उद्योग ने एक वर्ष में ३०,००० मशीनी पुर्जों के उत्पादन के लक्ष्य से भी अधिक प्रगति की।

तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्वों को पूरा करने में हमने अभी ही भारी प्रगति कर ली है और अब षड्-वर्षीय योजना की सफल पूर्त्ति का हमारे सामने विशाल मार्ग खुल गया है।

तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्वों को पूरा करने के लिए हम मशीनी पुर्जों का उत्पादन तथा उनकी विभिन्न किस्में बढ़ाते हुए और उनकी क्वालिटी सुधारते हुए, उनके उत्पादन पर ध्यान केंद्रित रखना जारी रखेंगे। हम ट्रैक्टरों और मोटरगाड़ियों का उत्पादन बढ़ाने और विभिन्न प्रकार की कृषि मशीनों को अधिक संख्या में बनाने का काम भी जारी रखेंगे और तकनीकी क्रांति को लगातार गहन बनाने के लिए हम इलेक्ट्रोनिक और आटोमेशन उद्योगों के विकास के लिए और अधिक प्रयत्न करने वाले हैं।

हम इंजीनियरी उद्योग और इलेक्ट्रोनिक तथा आटोमेशन उद्योगों के लिए

इस्पात तथा अलौह धातुओं का उत्पादन बढ़ाएंगें।

पिछले वर्ष की हमारी सफलताओं तथा हमारी मेहनतकश जनता की लड़ाकू भावना का लेखा-जोखा ले कर हमें विश्वास है कि तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्वों को हम थोड़ी-सी ही अवधि में सफलतापूर्वक पूरा कर लेंगे।

षड्-वर्षीय योजना के काल में हमारी जनता के रहन-सहन का स्तर और भी अधिक सुधरेगा।

अब हमारी जनता को रोटी, कपड़ा और मकान के विषय में कोई चिंता नहीं है और वह समान रूप से अच्छी जिंदगी बिता रही है।

हम जनता के रहन-सहन को और उच्च स्तर तक उठाने के लिए षड्-वर्षीय योजना काल में कई कदम उठाएंगे। जनता के जीवन में सुधार के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण काम हमने निश्चित किया है, वह है श्रमिकों और कृषकों के जीवन-स्तर में भेद को और शहरी तथा ग्रामीण जनता के रहनसहन की परिस्थितियों में भिन्नता को शीघ्र समाप्त करना।

इस उद्देश्य से हम ग्रामीण क्षेत्रों के पूर्त्ति केंद्र के रूप में मंडलों (काउंटी) का विकास करेंगे, बस सेवा सुलभ करेंगे और खेतिहर ग्रामों में जल-सेवा की व्यवस्था करेंगे। हम शहरों और गांवों में हर वर्ष ३ लाख परिवारों के लिए मकान बनाएंगे और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का और अधिक विकास करेंगें। हम सब मजदूरों और दफ्तर कर्मचारियों के वेतन बढ़ाएंगे और उपभोक्ता सामान के उत्पादन में एक नया मोड़ लाएंगे तथा इस प्रकार मेहनतकश जनता के आम रहन-सहन में दृष्टव्य सुधार कर देंगे।

हमारे कुछ वर्ष के दक्ष काम से हमारी जनता भी संपन्न राष्ट्रों के समकक्ष जीवन बिता सकेगी।

षड्-वर्षीय योजना काल में हम तकनीकी क्रांति के साथ ही साथ सांस्कृतिक क्रांति को भी तेजी से आगे बढ़ाएंगे।

इस काल में हम तकनीशियनों और विशेषज्ञों की संख्या दस लाख से अधिक बढ़ाएंगे, मेहनतकश जनता के सामान्य ज्ञान और तकनोलोजी संबंधी स्तर को सर्वांगतः और ऊंचा उठाएंगे तथा विज्ञान, साहित्य, कला और शारीरिक प्रशिक्षण तथा खेलकूद को और अधिक विकसित करेंगे।

दस-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा लागू करना षड्-वर्षीय योजना काल में सांस्कृतिक क्रांति को आगे बढ़ाने के महत्वपूर्ण कर्त्तव्यों में से एक है।

१९६७ में हमारे देश में नौ-वर्षीय तकनीकी शिक्षा के अनिवार्य बना दिए जाने से, ८ से १७ वर्ष की आयु के बच्चे और युवक नियमित स्कूलों में मुफ्त शिक्षा प्राप्त करने लगे हैं। अनिवार्य शिक्षा का लागू किया जाना हमारे देश की सार्वजनिक

शिक्षा के विकास तथा समाजवादी संस्कृति के निर्माण के लिए एक युगांतरकारी घटना थी। परिणामस्वरूप हमारी नई पीढ़ी सर्वतोमुखी, सुयोग्य और विश्वसनीय पीढ़ी के रूप में विकसित हो रही है, जिसके पास व्यापक सामान्य ज्ञान और आधुनिक विज्ञान तथा तकनलोजी का बुनियादी ज्ञान है।

हम नौ-वर्षीय अनिवार्य तकनीकी शिक्षा से प्राप्त अनुभवों और सफलताओं के आधार पर दस-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा लागू करेंगे और अपनी पार्टी द्वारा निर्धारित समाजवादी शिक्षा-सिद्धांतों के आधार पर शिक्षात्मक काम को और अधिक सुधारेंगे।

पूरे देश से अनिवार्य दस-वर्षीय शिक्षा के लागू होने से हमारे देश में स्कूली शिक्षा का स्तर उठाने और विज्ञान तथा का विकास करने में भारी प्रगति होगी। निश्चय ही, दस-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा लागू करना कोई आसान काम नहीं है। इसके लिए राज्य को काफी बड़ी रकम लगानी पड़ेगी। लेकिन इसको लागू करने योग्य हमारे पास काफी शक्ति है। हम नयी पीढ़ी की शिक्षा के लिए कुछ भी उठा नहीं रखेंगे। गत वर्ष हमने प्रयोगात्मक रूप से उसको कुछ स्कूलों में लागू किया और अनुभव जुटाए तथा एक हद तक उसकी नींव डाली। हम दस-वर्षीय अनिवार्य शिक्षा को इस वर्ष से शुरू कर कुछ ही वर्षों में पूरे पैमाने पर तथा पूरे देश में लागू कर देंगे।

वर्ग संघर्ष के साथ जनता की राजनीतिक और सैद्धांतिक एकता को संयुक्त करना समाजवादी समाज के विकास के लिए बड़े महत्व का है।

इसीलिए हमारी पार्टी ने उस ओर बड़ा ध्यान दिया है।

हमारे देश के उत्तरी आधे भाग में काफी समय पहले मनुष्य का मनुष्य द्वारा शोषण समाप्त कर दिया गया और समाजवादी व्यवस्था स्थापित कर दी गई। फलतः मेहनतकश जनता के आपसी संबंध साथियों जैसे बन गए हैं, जिससे वे एक दूसरे से सहयोग तथा सहायता करते हैं और इससे समस्त जनता की राजनीतिक-सैद्धांतिक एकता और सुदृढ़ हो गई है।

निश्चय ही, इसका यह अर्थ नहीं है कि समाजवादी व्यवस्था स्थापित होने मात्र से आम जनता की एकता अपने आप सुदृढ़ होती जाती है। समाजवाद के अंदर शत्रु तत्व कायम रहते हैं हालांकि उनकी संख्या बहुत थोड़ी होती है और मेहनतकश जनता के दिमाग में पुराने विचारों के अवशेष भी होते हैं।

इसलिए क्रांतिकारी पांतों का सुदृढ़ता से निर्माण करने के लिए और समाजवादी निर्माण को सुचारु रूप से जारी रखने के लिए, यह आवश्यक है कि आम जनता की एकता और संगठन को सुदृढ़ करने के काम को शत्रु तत्वों की छलपूर्ण पैंतरेबाज़ियों के विरुद्ध संघर्ष के साथ उचित रीति से संयुक्त किया जाए।

यह भूलकर कि समाजवाद में मजदूर वर्ग, किसानों और बुद्धिजीवियों की मैत्री सामाजिक संबंधों का आधार होती है, अगर कोई व्यक्ति सिर्फ वर्ग संघर्ष पर

जोर देता है और उसको बढ़ा-चढ़ाकर देखता है तो वह 'वामपंथी' गलती करेगा। उस स्थिति में वह लोगों पर संदेह करेगा, निर्दोष व्यक्तियों से शत्रु तत्व की तरह व्यवहार करेगा और समाज में बेचैनी का वातावरण पैदा करेगा।

दूसरी ओर, समाजवादी व्यवस्था में शत्रु तत्व और अतीत के विचारधारात्मक अवशेष कायम रहते हैं इस तथ्य को नजरअंदाज करके कोई व्यक्ति सिर्फ आम जनता की राजनीतिक और सैद्धांतिक एकता को ही देखेगा और उसको निरपेक्ष सत्य मान लेगा तो यह 'दक्षिणपंथी' गलती होगी। उस स्थिति में, शत्रु तत्वों के विरुद्ध जागरुकता धुंधली पड़ जाएगी, पुराने विचारों के खिलाफ संघर्ष कमजोर होगा और सामाजिक जीवन में पूंजीवादी जीवन-पद्धति व्यापक रूप से फैल सकती है।

इसलिए हम श्रमिक जनता की एकता और संगठन को बरावर सुदृढ़ करते हैं। इसके लिए हम दक्षिणपंथी और वामपंथी भटकावों से बचते हैं और मेहनतकश जनता की एकता तथा भ्रातृत्व सुदृढ़ करने के काम को शत्रु तत्वों के विरुद्ध संघर्ष से कौशलपूर्वक संयुक्त करते हैं।

मेहनतकश जनता की राजनीतिक और सैद्धांतिक एकता और अधिक सुदृढ़ करने के लिए हमें सैद्धांतिक क्रांति को प्राथमिकता देते हुए सारे समाज का क्रांतिकरण तथा श्रमिक वर्गीकरण करना चाहिए।

केवल सैद्धांतिक क्रांति को प्राथमिकता देकर ही पूरे समाज के क्रांतिकरण और श्रमिक वर्गीकरण के ऐतिहासिक दायित्व को सफलतापूर्वक निभाया जा सकता है और समाजवादी तथा साम्यवादी निर्माण के क्षेत्र में भौतिक तथा सैद्धांतिक दुर्गों को जल्दी ही फतह किया जा सकता है।

पूरे समाज का क्रांतिकरण और श्रमिक वर्गीकरण समस्त सड़े-गले विचारों तथा गैर-श्रमिक वर्गीय तत्वों को सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से हटाने का वर्ग-संघर्ष है। लेकिन यह पिछले काल के वर्ग संघर्ष से बिलकुल भिन्न है और संघर्ष का स्वरूप भी भिन्न है।

जनता को क्रांतिकारी और श्रमिक वर्गी बनाने के दायित्व का मतलब है समाजवाद और साम्यवाद के शीघ्र निर्माण के संघर्ष में लगी श्रमिक जनता को सांचे में ढालना और यह कर्त्तव्य समस्त श्रमिक जनता को साम्यवादी समाज की ओर ले जाने की आवश्यकता से पैदा होता है। यही कारण है कि हमारी पार्टी सैद्धांतिक शिक्षा पर मुख्य बल देते हुए समझाव-बुझाव के तरीकों से श्रमिक जनता को क्रांतिकारी बनाने और श्रमिक वर्गीय चेतना से लैस करने का काम चला रही है।

हमने प्रत्येक ऐसे व्यक्तियों पर, जो हमारी पार्टी के रास्ते पर चलना चाहते हैं और उनको क्रांति के पक्ष में जीतने के सिद्धान्त के आधार पर, उनके पारिवारिक

मूल, उनकी पृष्ठभूमियां और उनके सामाजिक और राजनीतिक जीवन संदेहास्पद होते हुए भी पूरे साहस से विश्वास किया और अनथक प्रयास करके इस दिशा में अपने काम को आगे बढ़ाया।

चूंकि हमने पूरे समाज के क्रांतिवादीकरण और श्रमिक वर्गीकरण का संघर्ष सही रास्ते पर चलाया है, हमारी जनता के सैद्धांतिक और नैतिक गुणों में उग्र परिवर्तन हुआ है और हमारा समाज आंतरिक रूप से सदा की अपेक्षा अधिक सुदृढ़ हुआ है।

हमारे श्रमिकों, सहकारी कृषकों और श्रमजीवी बुद्धिजीवियों की एकता और अधिक मज़बूत हुई है; सारी मेहनतकश जनता एक लाल परिवार बन गई है जिसमें वे एक दूसरे की सहायता करते हुए और हाथ बढ़ाते हुए ठोस एकता के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण की प्रक्रिया मज़दूरों, किसानों और बुद्धिजीवियों समेत समाज के सभी सदस्यों को क्रांतिगामी बनाने की प्रक्रिया है—ऐसी प्रक्रिया जो सारे देश को श्रमिक वर्ग के रूप में ढाल कर रूपांतरित करते हुए समस्त वर्ग-विभेदों को समाप्त करती है।

समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण के लिए उत्पादन शक्तियों के विकास द्वारा श्रमिक वर्ग और किसानों के रहन-सहन की स्थितियों के विभेद को समाप्त करने और साथ ही, समाज के सभी सदस्यों के सैद्धांतिक और नैतिक तथा सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर में अंतरों को धीरे-धीरे मिटाने की आवश्यकता है।

इस सिलसिले में एक महत्वपूर्ण समस्या है—ग्रामीण प्रश्न का सही हल खोजना।

जब कोई समाजवादी राज्य ग्रामीण समस्या के अंतिम हल द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की पिछड़ी स्थिति का सदा के लिए उन्मूलन कर देता है तभी वह उन क्षेत्रों और कोटरों का पूरी तरह सफाया कर सकता है जहां बाहर से आने वाले प्रतिक्रियावादी, पूंजीवादी रोगाणु और सत्ताच्युत शोषक वर्गों के अवशेष पनप सकते हैं और छलपूर्ण पैंतरेबाजी में जुट सकते हैं। और सहकारी संपत्ति को समस्त जनता की संपत्ति के स्तर पर लाकर ही हम कृषि की उत्पादक शक्तियों को बड़े पैमाने पर विकसित कर सकते हैं, किसानों के दिमागों में अवशिष्ट स्वार्थ-तत्वों का उन्मूलन कर सकते हैं और समस्त मेहनतकश जनता का समाज और जनता के लिए उच्चस्तरीय स्वेच्छित उत्साह के साथ काम करने के लिए सामूहिकतावाद के पथ पर विश्वासपूर्वक चलने में पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं।

हमारी पार्टी ने "हमारे देश में समाजवादी ग्रामीण प्रश्न पर स्थापनाएं" नामक दस्तावेज में व्याख्यायित दिशाओं के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी, सांस्कृतिक और सैद्धांतिक क्रांतियों को उत्साहपूर्वक आगे बढ़ाया है। इस प्रकार, वह आधुनिक उद्योग से पिछड़ी कृषि के तकनीकी पिछड़ेपन का, उन्नत नगरों से पिछड़े

कृषि प्रधान ग्रामों के सांस्कृतिक पिछड़ेपन का और अत्यंत क्रांतिकारी वर्ग, श्रमिक वर्ग, से पिछड़े हुए किसानों के सैद्धांतिक पिछड़ेपन का उन्मूलन कर रही है। वह मजदूर वर्ग की पार्टी और राज्य की ओर से ग्रामीण क्षेत्रों का पथ-प्रदर्शन करने और सहायता पहुंचाने का काम लगातार सुदृढ़ कर रही है और सहकारी संपत्ति को सारी जनता की संपत्ति के निकट ला रही है तथा साथ ही इन दोनों के विकास को आंगिक रूप से संयुक्त कर रही है।

जब श्रमिक वर्ग और कृषकों के वर्ग-भेद समाप्त हो जाएंगे और इस प्रकार सहकारी संपत्ति सारी जनता की संपत्ति बन जाएगी तब सारा समाज समान सिद्धांत के साथ तथा समान सामाजिक-आर्थिक आधार पर पूर्ण राजनीतिक और सैद्धांतिक एकता उपलब्ध कर लेगा। हम उसी दिन की ओर शीघ्रता से बढ़ रहे हैं जब यह उपलब्ध हो जाएगा।

३. हमारे देश के पुनरेकीकरण की समस्या

आज देश के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए हमारी जनता के संघर्ष के वास्ते हमारे देश में सामान्य परिस्थिति बहुत अनुकूल रूप से विकसित हो रही है।

जूछे के विचार की पताका के नीचे देश के उत्तरी अर्द्ध भाग में उपलब्ध समाजवादी निर्माण की सफलताओं से देश के स्वतंत्र पुनरेकीकरण का राजनीतिक तथा आर्थिक आधार और अधिक सुदृढ़ हुआ है। उससे दक्षिणी अर्द्ध भाग की जनता को बड़ी आशा और विश्वास प्राप्त होता है और उसको देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए संघर्ष करने की जबर्दस्त प्रेरणा मिलती है।

हाल के दिनों में दक्षिणी कोरिया में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की प्रवृत्ति जितनी तेजी से बढ़ रही है और फासिस्ट प्रशासन के खिलाफ तथा समाज के जनवादीकरण के लिए संघर्ष जितना जोर पकड़ रहा है उतना पहले कभी नहीं था। गत वर्ष कठ-पुतली राष्ट्रपति के "चुनाव" के पहले और बाद में युवकों और जनता का विराट अभियान जिस तरह जारी रहा है और सार्वजनिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों से जिस प्रकार राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के लिए तेज बहस छिड़ी है, उससे प्रकट होता है कि वर्त-मान शासन-व्यवस्था का विरोध करने और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की मांग करने की प्रवृत्ति दक्षिण कोरिया में अदम्य शक्ति के साथ उठ रही है।

चूंकि हमारी शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की नीति को न केवल कोरियाई जनता का बल्कि सारे संसार से व्यापक जनमत का सर्वसम्मत समर्थन प्राप्त है और दक्षिण कोरिया में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है, इसलिए दक्षिण कोरियाई

अधिकारीगण, जो उत्तर और दक्षिण के किसी भी प्रकार के संपर्क के विरोधी रहे हैं, समय की धारा के दबाव से उत्तर-दक्षिण रेड क्रास की वार्त्ता में भाग लेने के लिए मजबूर हुए। हालांकि वह काफी देर से आए और उसमें विचारित समस्या का क्षेत्र सीमित है, फिर भी इस समय पानमुनजान में होने वाली उत्तरी-दक्षिणी कोरियाई रेडक्रास की प्रारंभिक वार्त्ताएं बड़ी महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यहां कोरियाई अपने राष्ट्र के आंतरिक मामलों पर विचार करने के लिए एक साथ बैठे हैं। कहा जा सकता है कि विभक्त देश को शांतिपूर्वक पुनरेकीकृत करने के लिए हमारी जनता के संघर्ष में यह आगे की ओर एक कदम है।

उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास संगठनों की वार्ता पर हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है। देश के विभाजन से हमारी जनता को जो यातनाएं सहनी पड़ रही हैं, उनको अगर हम अपनी पूरी ईमानदारी से सफल बनाकर एक दिन भी जल्दी दूर कर सकें तो कर देना चाहते हैं और उसको शुरूआत बनाकर देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का रास्ता साफ करना चाहते हैं।

लेकिन दक्षिण कोरियाई अधिकारियों का दृष्टिकोण बिल्कुल विपरीत है। पहले ही दिन से उन्हें वार्त्ता में भाग लेने आने के लिए मजबूर किया जाता रहा, वे इस या उस बहाने वार्त्ता को खींचते रहे और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की प्रवृत्ति पर यह कह कर पानी फेरते रहे कि आप इतना अधिक उत्तेजित न हों और इसका अभी समय नहीं आया है। इसके अतिरिक्त यह कहते हुए कि हम शीघ्र ही 'दक्षिण पर धावा करेंगे' क्योंकि हमने युद्ध की तैयारियां पूरी कर ली हैं, उन्होंने 'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा कर दी और उसको पुष्ट करने के लिए उन्होंने विभिन्न फ़ासिस्ट कानून जारी कर दिए तथा जान बूझकर स्थिति को बिगाड़ा।

दक्षिण कोरियाई कठपुतली गुट द्वारा इस तरह के छल-फरेब को उछालने का केवल यही अर्थ हो सकता है कि वे दक्षिण कोरिया में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की बराबर बढ़ती जाने वाली प्रवृत्ति का दमन कर अपने आखिरी दिनों को बढ़ाने की साजिश कर रहे हैं, उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और वार्ता तोड़ना चाहते हैं और विभाजन को स्थायी बनाना चाहते हैं। यह कोई आकस्मिक नहीं है कि अमरीका और जापान के प्रतिक्रियावादी शासक क्षेत्रों और उनके पैसे पर पलने वाले समाचार पत्र तक इस संबंध में यह कहते हैं कि दक्षिण कोरिया में 'आपात कालीन स्थिति' की घोषणा 'दक्षिण पर धावे' के खतरे के कारण नहीं की गई है, बल्कि उसको आंतरिक स्थिति के कारण एक राजनीतिक चाल के रूप में गढ़ा गया है।

इस तरह की मूर्खतापूर्ण चाल से दक्षिण कोरियाई शासक किसी को धोखा नहीं दे सकते और न कुछ हल कर सकते हैं।

ऐसा लगता है कि आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों में तेजी से अपने प्रति-

कूल परिवर्तनों से घबराकर वे बदहवास हो उठे हैं। लेकिन उन्हें अपने दिमाग ठंडे करने और प्रश्नों पर शांतिपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

अब समय और परिस्थिति बदल चुके हैं।

आज की स्थिति पाँचवें दशक की उस स्थिति से भिन्न है जिसमें अमरीकी साम्राज्यवादी 'संयुक्त राष्ट्र' के नाम का दुरुपयोग कर हमारे देश को उत्तरी और दक्षिणी भाग में विभाजित कर सके थे। वे दिन बीत गए जब अमरीकी साम्राज्यवादी दूसरे देशों के मामलों में हस्तक्षेप कर लेते थे और उनकी तूती बोलती थी।

अब तो अमरीकी साम्राज्यवादी और जापानी सैन्यवादी अपने ही मामले नहीं सँभाल पाते। हम समझते हैं कि वक्त आ गया है जब दक्षिण कोरियाई शासकों को वह राष्ट्र-विरोधी रुख छोड़ देना चाहिए जिससे वे अमरीकी साम्राज्यवाद का दामन पकड़ कर और जापानी आक्रमणकारियों की चाकरी कर तथा अपने देशवासियों से मुंह मोड़कर अब तक चिपके हुए हैं।

अगर दक्षिणी कोरियाई शासक सही रास्ता पाना चाहते हैं तो उन्हें राष्ट्रीय रुख अपनाना चाहिए तथा अब भी यह मूर्खतापूर्ण आग्रह छोड़ देना चाहिए कि वे उत्तर कोरिया पर बलपूर्वक अधिकार जमाने के लिए और 'कम्युनिज्म के ऊपर हावी होकर' पुनरेकीकरण उपलब्ध करने के लिए विदेशी शक्तियों की सहायता से 'शक्ति-वर्द्धन' कर लेंगे, और हमारा यह न्यायसंगत तथा निर्विवाद प्रस्ताव स्वीकार कर लेना चाहिए कि स्वयं कोरियाई जनता के प्रयत्नों में भाग लेकर देश को शांतिपूर्ण विधि से पुनः एकीकृत किया जाय।

आपने देश के पुनरेकीकरण के लिए हमारे ठोस कार्यक्रम के बारे में पूछा है राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का हमारा कार्यक्रम पिछले कार्यक्रम से भिन्न नहीं है। हम सदा इस मत के रहे हैं कि हमारे देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न को यानी हमारे राष्ट्र के आँतरिक मामले को, किसी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप से नही, स्वयं कोरियाई जनता के प्रयत्नों द्वारा और युद्ध द्वारा नहीं, शांतिपूर्ण साधनों द्वारा हल किया जाना चाहिए।

देश के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के कार्यक्रम को हमने गत वर्ष अप्रैल में जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सर्वोच्च लोक सभा के अधिवेशन में प्रस्तुत राष्ट्रीय मुक्ति के आठ सूत्रीय कार्यक्रम में, गत वर्ष ६ अगस्त को दिए गए भाषण में और इस वर्ष नव-वर्ष के संदेश में पुनः स्पष्ट किया था। हम इस कार्यक्रम को फलीभूत करने के लिए अपने सारे प्रयत्न लगातार करते रहेंगे।

पूरे राष्ट्र की गहन दिलचस्पी के बीच चल रही उत्तरी और दक्षिणी कोरियाई रेडक्रास संगठनों की वार्ता को सफल बनाने से देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होगा।

दक्षिणी कोरिया के अधिकारी, किसी प्रकार के एक 'चरण' की बात करते

हुए बड़बड़ाते हैं कि फलां काम किया जा सकता है और फलां नहीं किया जा सकता और पहले किसी प्रकार का वचन दिया जाना चाहिए और अन्य बातों को बाद के लिए उठा रखना चाहिए। यह देरी करने की चाल है और समस्याओं का हल करने का रुख नहीं है।

अगर उत्तर-दक्षिण रेडक्रास वार्त्ताओं के अच्छे परिणाम होते हैं और उत्तर तथा दक्षिण में बंटे हुए परिवारों, रिश्तेदारों तथा मित्रों के लिए मुक्त आवागमन की व्यवस्था हो जाती है तो उनकी यंत्रणाएं कम होंगी और साथ ही उत्तर और दक्षिण के बीच के जड़ मनोभावों में गरमी आएगी तथा इस क्रम में आपसी सद्भाव गहरा होगा।

देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण तथा एशिया और शेष विश्व में शांति के लिए हमारे देश में तनाव को हटाना जीवंत महत्व की बात है।

कोरिया में तनाव हटाने के लिए आवश्यक है कि प्रथमतः कोरियाई युद्ध-बिराम समझौते के स्थान पर उत्तर और दक्षिण के बीच शांति समझौता किया जाय। हमारा मत है कि ऐसी परिस्थितियों में जहां दक्षिण कोरिया से अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणकारी सेनाएं हटा ली जाएं, उत्तर और दक्षिण के बीच शांति समझौता संपन्न किया जाए और उत्तर तथा दक्षिण कोरिया की सेनाओं में भारी कटौती की जाए।

हमने एकाधिक बार यह स्पष्ट किया है कि हमारा 'दक्षिण पर धावा' करने का कोई इरादा नहीं है। अगर दक्षिण कोरियाई शासकों का 'पुनरेकीकरण के लिए उत्तर पर चढ़ाई करने' का कोई इरादा नहीं है तो उत्तर और दक्षिण के बीच शांति समझौता करने से इनकार करने का उनके पास कोई कारण नहीं होगा। अगर वे ईमानदारी से हमारे देश में शांति और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण चाहते हैं तो उन्हें काल्पनिक 'दक्षिण पर धावे के खतरे' के बारे में बड़बड़ाने के बजाय उत्तर और दक्षिण के बीच शांति समझौता करने के लिए राजी हो जाना चाहिए।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और संबंध सुदृढ़ करने के लिए तथा राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के प्रश्न को हल करने के लिए उत्तर-दक्षिण राजनीतिक वार्त्ता का आवाहन करते हैं।

राष्ट्रीय विभाजन की त्रासदी का अंत करने और देश को शांतिपूर्वक पुनः एकीकृत करने में कई समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। ये सभी समस्याएं उत्तर और दक्षिण के बीच राजनीतिक वार्त्ता से ही संतोषजनक रीति से हल की जा सकती हैं।

हम डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी, न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी और नेशनलिस्ट पार्टी समेत दक्षिण कोरिया के सभी राजनीतिक दलों से सर्व स्वीकृत समय और स्थान पर वार्ता करने के लिए तैयार हैं। लेकिन दक्षिण कोरियाई अधिकारी बैठक किए बिना ही यह या वह बात पेश किया करते हैं। 'शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण' की सिर्फ मुंहज़बानी बात करते हुए वार्त्ता के प्रस्ताव को ठुकराते जाना शांतिपूर्ण पुन-

रेकीकरण के प्रश्न को हल करने का रुख नहीं है। देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न को शांतिपूर्वक हल करने के लिए उत्तर और दक्षिण कोरिया की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के लिए आवश्यक है कि वे तेजी से उभयपक्षीय या बहु-पक्षीय वार्ताएं करें जिससे राष्ट्रीय पुनरेकीकरण पर राजनीतिक विचार विनिमय हो सके और शान्तिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए तर्कसंगत रास्ता निकाला जा सके।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और वार्त्ता के उद्देश्य से हर एक के लिए सदा अपना द्वार खुला रखते हैं। अगर कोई भी व्यक्ति, फिर चाहे उसने देश और जनता के विरुद्ध अपराध किए हों, अपने पिछले कुकृत्यों के लिए ईमानदारी से पश्चात्ताप करता है और देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए देशभक्ति का मार्ग अपनाता है तो हम उसके अपराधों की चर्चा नहीं करेंगे, बल्कि उसके साथ देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर सहर्ष वार्ता करेंगे।

जब सभी कोरियावासी एकताबद्ध होंगे और देश के पुनरेकीकरण के रास्ते पर लड़ेंगे तो हम निश्चय ही अमरीकी और जापानी आक्रमणकारियों को निकाल बाहर करेंगे, दक्षिण कोरिया में राष्ट्रीय विनाश के संकट को दूर कर लेंगे और अवश्यंभावी रूप से देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण उपलब्ध कर लेंगे। हमें विश्वास है कि यद्यपि कोरियाई पुनरेकीकरण का प्रश्न अभी भी उलझा हुआ है, उसको देर-सबेर अपनी जनता की आकाँक्षा के अनुरूप तथा राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत के आधार पर शांतिपूर्वक हल करने की संभावना है।

४. कुछ अंतर्राष्ट्रीय समस्याएं

हमारे समय में साम्राज्यवाद की शक्तियों का ह्रास हो रहा है और शांति, प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा समाजवाद के लिए जनता की शक्तियां अपना कार्यक्षेत्र और शक्ति बढ़ा रही हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों पर, जिन्होंने अपने इतिहास में पहली बार कोरि-याई युद्ध में कलंकपूर्ण हार खायी, दुनिया के सभी भागों में एक के बाद एक प्रहार हो रहे हैं और वे पीटे जा रहे हैं तथा लगातार पतन के गर्त में गिर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी अब आंतरिक और बाहरी रूप से एक गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं। अमरीका में जनता का युद्ध-विरोधी आंदोलन बड़ी शक्ति से बढ़ रहा है और शासक क्षेत्रों में आपसी विरोध गहरा हो रहा है। उसकी अर्थव्यव-

स्था पुराने गतिरोध-रोग में फंस गई है और उसकी अंतर्राष्ट्रीय अदायगी की स्थिति बराबर बिगड़ती जा रही है। अमरीकी साम्राज्यवादी हिंद-चीन में और दुनिया के अन्य भागों में एक के बाद एक हारें खा रहे हैं और वे अपने पिट्ठू देशों में तथा साम्राज्यवादी साथियों बीच अकेले पड़ते जा रहे हैं।

जो अमरीकी साम्राज्यवादी दूसरों को पारमाणविक धमकियों से और डालर की थैलियों से उत्पीड़ित और नियंत्रित किया करते थे, उनकी शक्ति अब टूट रही है। अब चूंकि पारमाणविक धमकियां कारगर नहीं होतीं और उनकी जेब में डालर खत्म हो चुके हैं, चंद मुल्क ही उनकी नीति पर चलते हैं। इस संकट से निकलने के लिए अब अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कुख्यात 'निक्सन सिद्धांत' प्रतिपादित किया है जिसका उद्देश्य है एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाना और निकट पूर्व तथा मध्य पूर्व में वहां की जनता को एक दूसरे से लड़ाना। लेकिन सातो जैसे मूर्खों के अलावा और कोई इसका समर्थन नहीं करता।

इन परिस्थितियों में अमरीकी साम्राज्यवादी फिर 'शांति' का साइनबोर्ड लगा रहे हैं और निक्सन सिर झुका कर भीख मांगने की कूटनीति के दौरे पर जाने के लिए मजबूर हुए हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह कभी नहीं है कि अमरीकी साम्राज्यवाद बिल्कुल बरबाद हो गया है या उसके असली रंग बदल गए हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद अभी भी साम्राज्यवाद का सरगना है और उसकी आक्रमणकारी प्रकृति में रत्ती भर परिवर्तन नहीं हुआ है। जब कभी साम्राज्यवादी मुसीबत में फंसते हैं वे आक्रमण और युद्ध की चाल भरी कार्रवाइयां 'शांति' के साइनबोर्ड की आड़ में करते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी अब 'मुंह में राम, बगल में छुरी' की नीति का सहारा लेकर और अधिक छलपूर्ण तरीकों से अन्य देशों पर हमला करने की कोशिशें कर रहे हैं। इसलिए क्रांतिकारी देशों के जनगण और सभी युद्धरत देशों को अमरीकी साम्राज्यवादियों के ऐसे आक्रमणकारी और युद्धोन्मुख षड्यंत्रों के विरुद्ध सदा अपनी जागरूकता बढ़ानी चाहिए जो वे 'शांति के परदे के पीछे करते हैं, और अमरीकी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध और अधिक तीव्र संघर्ष छेड़ने के लिए दृढ़तापूर्वक एकताबद्ध होना चाहिए। शांति की रक्षा करने और राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा सामाजिक प्रगति उपलब्ध करने का यही एकमात्र रास्ता है।

अमरीकी साम्राज्यवादी एशिया में 'निक्सन सिद्धांत' को अमल में लाने के लिए जापानी सैन्यवाद को विशेष महत्व देते हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी अपने एशियाई आक्रमण में 'तूफानी दस्ते' के रूप में जापानी सैन्यवाद को इस्तेमाल करने की नीति पर एक लंबे अर्से से चल रहे हैं और जापानी सैन्यवादी, इसका लाभ उठाकर अपने मंसूबे पूरे करने के लिए पैंतरेबाज़ियाँ

करते रहे हैं। कुछ दिनों पहले हुई अमरीका-जापान शिखर वार्ता पिछली वार्ताओं की तुलना में कुछ कम उत्साह के वातावरण में हुई, मगर उससे यह प्रकट हुआ कि एशियाई आक्रमण के लिए अमरीकी और जापानी आक्रमणकारियों के बीच उक्त प्रकार की सांठगांठ और साजिश में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। वार्त्ता के बाद प्रकाशित संयुक्त विज्ञप्ति में निक्सन और सातो ने कुख्यात 'अमरीका-जापान सुरक्षा संधि' की पुनः पुष्टि की ओर 'शांति' और 'स्थायित्व' के साइनबोर्ड की आड़ में एशियाई आक्रमण के लिए एक दूसरे के 'घनिष्ठ रूप से सहयोग' करने का वायदा किया।

अमरीकी साम्राज्यवाद के तत्वावधान में जापान के अंदर सैन्यवाद को फिर जीवित किया गया और अमरीकी साम्राज्यवाद की सहायता से जापानी सैन्यवाद ने एशिया में आक्रमण की खतरनाक शक्ति का रूप धारण कर लिया है। यह एक कठोर सत्य है।

जैसा कि साम्राज्यवादियों ने सदा किया है, जापानी सैन्यवादी अब अन्य देशों पर हमला कराने के लिए, उन देशों को अपने माल और पूंजी की विस्तृत घुसपैठ द्वारा आर्थिक रूप से अपना अनुचर बनाने, तीव्र सैद्धांतिक और सांस्कृतिक घुसपैठ द्वारा उन देशों की जनता की स्वतंत्रता संबंधी चेतना को कुंठित करने, तथा अपने आर्थिक अधिकारों की रक्षा के बहाने अपनी सेनाएं तक भेजने के तरीकों का उपयोग कर रहे हैं।

जापानी सैन्यवाद के समुद्र पार आक्रमणकारी कार्यक्रम में पहला निशाना है—हमारा देश।

जापानी सैन्यवादियों ने दक्षिण कोरियाई कठपुतलों के साथ साजिश और सहयोग कर अब अपना काला आक्रमणकारी शिकंजा हमारे देश के दक्षिण भाग के समस्त राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सैनिक क्षेत्रों पर फैला दिया है। और उन्होंने हमारे देश तथा एशिया के अन्य समाजवादी देशों पर हमला करने की अमली योजनाएं तैयार कर ली हैं तथा वे एक के बाद एक सैनिक अभ्यास कर रहे हैं। सातो हमारे देश के खिलाफ 'पूर्वाक्रमण' की बातें तक करने की हद तक चले गए हैं।

जैसा कि तथ्यों से प्रकट है, यह बहस करना कि जापानी सैन्यवाद का पुनरुत्थान हुआ है या नहीं, अब बिल्कुल असामयिक है। अब तो प्रश्न है पुनर्जीवित जापानी सैन्यवाद के आक्रमणकारी षड्यंत्रों का विरोध करना और उनको रोकने के लिए संघर्ष करना।

जापानी सैन्यवादियों की आक्रमणकारी योजनाओं को विफल करने में जापानी जनता का संघर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, जापानी जनता पहले जैसी नहीं रही। जापानी जनता अब ऐसी जनता है जिसने सैन्यवाद के समुद्र-पार आक्रमण के कुपरिणामों और यातनाओं को सहन किया है। वह अब जागृत जनता है। अगर जापानी सैन्यवादी एक और आक्रामक युद्ध छेड़ते हैं तो वह निष्क्रिय

नहीं रहेगी । जापानी जनता अब आक्रमण की सैन्यवादी शक्तियों के विरुद्ध और जनवाद, तटस्थता तथा शक्ति के लिए दृढ़तापूर्वक संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष से जापान के प्रतिक्रियावादी शासक क्षेत्रों पर भारी दबाव पड़ेगा।

आक्रामक युद्ध करना चाहिए या नहीं, इस पर जापानी शासक क्षेत्रों में मत-भेद हैं। जान पड़ता है कि कुछ लोग युद्ध के विरोधी हैं क्योंकि उनकी राय में अगर कभी युद्ध छिड़ जाता है तो उससे उनके लिए स्थिति बड़ी कठिन हो जाएगी—इस-लिए कि जापान एक द्विपीय देश है और लगभग सारा औद्योगिक कच्चा माल विदेशों से मंगाना पड़ता है और जिस पर आक्रमण किया जायगा, उससे निपटना कोई आसान नहीं होगा। वास्तव में, आज एशिया कल जैसा एशिया नहीं है और उसका स्वरूप उग्र रूप से बदल गया है।

अगर जापान में सारी युद्ध-विरोधी शक्तियां एकताबद्ध हो जाती हैं और कोरियाई तथा चीनी जनता समेत सारे एशियाई जनगण अपने सामूहिक प्रयत्नों से लड़ते हैं, तो जापानी सैन्यवादी युद्ध छेड़ने का साहस नहीं करेंगे और उनकी आक्रमण-कारी साज़िशों को बड़ी आसानी से विफल किया जा सकेगा।

एशिया अब साम्राज्यवाद-विरोधी क्रांतिकारी संघर्ष का बुनियादी मंच है और सारी दुनिया की बदलती हुई स्थिति पर एशिया की घटनाओं का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है।

हमारे देश तथा अन्य समाजवादी देशों के जनगण और एशिया के संघर्षरत देश अनेक कठिनाइयों और अग्नि परीक्षाओं को पार करते हुए साम्राज्यवाद के विरुद्ध क्रांति-कारी संघर्ष में और एक नए समाज के निर्माण में शानदार जीतें हासिल कर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने २० वर्ष से अधिक समय तक चीन को अकेला करने और उसकी नाकेबन्दी करने की नीति चलाई। लेकिन चीन गिरा नहीं। उलटे, वह एक सशक्त समाजवादी राज्य बन गया और एक विश्वसनीय, साम्राज्यवाद-विरोधी और क्रांतिकारी शक्ति के रूप में सुदृढ़ और विकसित हुआ। चीन के लोक गणतंत्र की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

चीन लोक गणतंत्र ने अनेक देशों के समर्थन से संयुक्त राष्ट्र में अपना न्यायोचित स्थान प्राप्त किया और च्यांग काई शेक गिरोह संयुक्त राष्ट्र के सभी संगठनों से निकाल बाहर किया गया। अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक क्षेत्र में यह एक महान घटना थी। यह चीनी जनता की और साथ ही उस विश्व जनगण की भारी जीत है जो शांति और प्रगति के लिए काम कर रहे हैं।

अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमणकारियों के विरुद्ध अपने वीरतापूर्ण संघर्ष द्वारा वियतनामी जनता ने शत्रु को असाध्य रूप से परास्त किया है और वह शांति, राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा समाजवाद के लिए विश्व की प्रगतिशील जनता के लक्ष्य में

भारी योगदान कर रही है। अब वियतनामी जनता दक्षिणी वियतनाम में अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक शक्तियों का सफाया करने तथा सच्ची स्वतंत्रता और देश का पुनः एकीकरण उपलब्ध करने के लिए और भी अधिक तेजी से लड़ रही है।

वियतनामी प्रश्न को इस प्रश्न के शांतिपूर्ण हल के लिए वियतनामी जनवादी गणतंत्र द्वारा पेश किए गए ४-सूत्रीय सिद्धांतों और दक्षिणी वियतनामी गणतंत्र की अस्थायी क्रांतिकारी सरकार द्वारा पेश किए गए ७-सूत्रीय प्रस्तावों के आधार पर हल किया जाना चाहिए। अगर अमरीकी साम्राज्यवादी वियतनामी जनता को चुनौती देना और न्यायोचित मांगों को अस्वीकार करना जारी रखते हैं तो वे और भी बुरी तरह हार खाएंगे। वियतनामी जनता साम्राज्यवाद-विरोधी, क्रांतिकारी झंडे को ऊंचा रखते हुए लड़कर निश्चय ही अंतिम विजय प्राप्त करेगी।

कंबोडिया और लाओस के लोग, जिन्होंने साम्राज्यवाद के विरुद्ध प्रतिरोध युद्ध में और राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम में अभी ही काफी बड़ी जीतें हासिल कर ली हैं, अमरीकी साम्राज्यवादियों और उनकी जरखरीद कठपुतलियों पर एक के बाद एक सशक्त हमले कर रहे हैं और शत्रु को अटूट जाल में धकेल रहे हैं।

एशिया में अमरीकी साम्राज्यवादी अपने आखिरी दिन काट रहे हैं।

कोरिया, चीन, वियतनाम, कंबोडिया, लाओस और अन्य एशियाई देशों के जनगण साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के सभी रूपों का पूर्णतया उन्मूलन करने के लिए समान साम्राज्यवाद-विरोधी और अमरीका-विरोधी संघर्ष के झंडे के गिर्द दृढ़ता से संगठित होंगें और निश्चय ही एक नए, स्वतंत्र तथा समृद्धिशील एशिया का निर्माण करेंगे।

जैसा कि आप जानते हैं कि हाल में संयुक्त राष्ट्र में भी कुछ परिवर्तन हुए हैं जिनसे दुनिया के अंदर प्रगति और प्रतिक्रिया की शक्तियों के बीच शक्ति-संतुलन के परिवर्तन का प्रतिबिंब मिलता है।

पहले जिस तरह अपनी मर्जी के मुताबिक अमरीकी साम्राज्यवादी कर लेते थे, उस तरह अब संयुक्त राष्ट्र में काम कर पाना उनके लिए कठिन होता जा रहा है। इससे प्रकट होता जा रहा है कि वे दिन बीत गए जब अमरीकी साम्राज्यवादी संयुक्त राष्ट्र के झंडे का दुरुपयोग कर अपनी मर्जी के मुताबिक जुर्म कर लिया करते थे।

जैसा कि आप कहते हैं, संयुक्त राष्ट्र संबंधी प्रश्नों के सिलसिले में, अब अनेक देश और व्यापक विश्व जन-मत १९७२ को 'कोरिया का वर्ष' कहते हैं। निश्चय ही, हमें देखना और प्रतीक्षा करनी चाहिए कि यह वर्ष 'कोरिया का वर्ष' होता है या नहीं, लेकिन हमारा ख्याल है कि यह बात राष्ट्रीय सम्मान, पुनरेकीकरण तथा स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाली हमारी जनता के संघर्ष के प्रति दुनिया की जनता के समर्थन और विश्वास-भाव की अभिव्यक्ति है।

जहां तक संयुक्त राष्ट्र के प्रति हमारे रुख का प्रश्न है, कोरिया के जनवादी लोक गणतंत्र ने अब तक संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र का सम्मान किया है और उसका कभी उल्लंघन नहीं किया है।

अगर कोई संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र का सरेआम उल्लंघन करता है और संयुक्त राष्ट्र के नाम पर कलंक लगाता है तो वह और कोई नहीं, अमरीकी साम्राज्यवाद है। हर बार जब उन्होंने आक्रमण और युद्ध की नीति का अनुगमन किया तब उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के झंडे का दुरुपयोग किया। संयुक्त राष्ट्र के इतिहास में अगर उन्होंने कोई सबसे बड़ा कलंक छोड़ा है तो वह है संयुक्त राष्ट्र की नकाब लगाकर कोरिया में आक्रमण जारी रखना।

मेरा ख्याल है कि अपने पवित्र घोषणापत्र के प्रति वफादार होने के लिए संयुक्त राष्ट्र को अतीत में कोरियाई प्रश्न पर किए गए अपने अपराधों से निवृत्ति पानी चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र को 'कोरियाई' प्रश्न पर सभी 'प्रस्तावों' को रद्द करना चाहिए जिन को संयुक्त राष्ट्र में अमरीकी साम्राज्यवादियों ने गैर कानूनी रीति से गढ़ा था। या यह अच्छा होगा कि वह कोरिया के प्रति न्यायसंगत नीति ग्रहण करे ताकि सभी पिछले गैर कानूनी 'प्रस्तावों' को नकार सके।

संयुक्त राष्ट्र को ऐसे कदम उठाने चाहिए जिनसे दक्षिणी कोरिया पर संयुक्त राष्ट्र के झंडे के नीचे कब्जा जमाने वाली अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रामक सेनाओं को हटाया जाए और 'कोरिया के एकीकरण तथा पुनर्वास संबंधी आयोग' को भंग कर देना चाहिए जो कोरिया के विरुद्ध अमरीकी साम्राज्यवाद का आक्रामक उपकरण है। संयुक्त राष्ट्र को कोरियाई प्रश्न में हर तरह की दखलंदाजी बंद करनी चाहिए।

५. जापान और कोरिया के बीच संबंधों की समस्या

जापान हमारा पड़ोसी है। किंतु, जैसा कि आप कहते हैं, हमारे दो देश 'नजदीक होते हुए भी बड़े दूर के पड़ोसी' बन गए हैं। इसको बहुत ही असाधारण स्थिति के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो हमारा देश जापान के आक्रमण से पीड़ित हुआ और जापान ही वह राष्ट्र है जिसने हमारे देश पर हमला किया। मगर वे जिन्होंने अतीत में हमारे देश पर हमला किया था, जापानी साम्राज्यवादी थे, जापानी

जनता नहीं । यह बुरी बात नहीं, अच्छी बात होगी कि जनवादी कोरियाई लोक गणतंत्र और जापान, जो परस्पर पड़ोसी हैं, सामान्य संबंध स्थापित करें।

अपनी स्थापना के दिन से ही जनवादी जन गणतंत्र कोरिया ने समाज-व्यवस्था के भेद के बावजूद जापान के साथ अच्छे पड़ोसी जैसे संबंध स्थापित करने की आशा की है। हमारा दृष्टिकोण हमारे गणतंत्र की न्यायसंगत और निर्विवाद नीति पर आधारित है, जिसके अनुसार ऐसे सभी देशों के साथ, जो हमारे देश के प्रति मित्रतापूर्ण हैं, समानता और परस्पर सम्मान के सिद्धांतों के आधार पर मैत्री स्थापित की जाती है।

किन्तु हमें खेद रहा कि जापानी सरकार प्रारंभ से ही हमारे देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रही। यद्यपि योशीदा से किशी, इकेदा और सातो तक अनेक मंत्रिमंडलीय परिवर्तन हुए, हमारे देश के प्रति जापान सरकार की शत्रुवत नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

जब से सातो ने मंत्रिमंडल बनाया है तब से हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति सदा से भी अधिक निर्मम हो गई है। दक्षिणी कोरियाई कठपुतलियों के साथ जब से 'कोरिया प्रजातंत्र जापान संधि' हुई है तब से जापानी सरकार दक्षिण कोरिया में घुसपैठ करती रही है, और देश के पुनरेकीकरण का विरोध करने तथा गृहयुद्ध भड़काने के लिए दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों को उकसाती रही है। जापानी प्रधान मंत्री सातो और उनके अनुयायी जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने की बातें खुले आम करते रहे हैं और जब मन चाहा, कोरियाई जनता को अपमानित करते रहे हैं।

हमारे देश के प्रति जापानी सरकार की शत्रुतापूर्ण नीति पर ही इस बात की पूरी जिम्मेदारी है कि हमारे देश और जापान के बीच आज तक अच्छे पड़ोसी जैसे संबंध स्थापित नही हुए।

कोरिया और जापान के बीच संबंधों की समस्या पर हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट और अडिग है। तब भी हम आशा करते हैं कि शीघ्र ही इस असाधारण स्थिति का अंत किया जा सकेगा और दोनों देशों के बीच सामान्य संबंध स्थापित होंगे। हमारा विश्वास है कि यह दोनों देशों की जनगण की आकांक्षा और उनके हितों के अनुकूल है और एशिया तथा संसार में शांति के लिए हितकर है।

कोरिया और जापान के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध के लिए पहले तो जापानी सरकार को हमारे देश के प्रति अपने रुख में परिवर्तन करना चाहिए और फिर यह कि दोनों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहिए।

जापान में मंत्रिमंडल का बदलना या न बदलना उसका आंतरिक मामला है, और इसलिए हम इस मामले में दखल नहीं देंगे। प्रश्न है जापानी सरकार के हमारे

देश के प्रति रुख का। जापान के प्रधान मंत्री बदलने पर भी दोनों देशों के संबंध तब तक नहीं सुधारे जा सकेंगे जब तक कि हमारे देश के प्रति जापान की नीति अपरिवर्तित रहती है। अगर जापानी सरकार हमारे देश के प्रति मैत्रीपूर्ण रुख अपनाती है तो सारी समस्याएं सुचारु रूप से हल हो जाएंगी।

जापानी सरकार को समय के साथ चलने के लिए अपनी गलत नीति को बदल देना चाहिए। स्वाभाविक है कि जापानी सरकार को जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण नीति छोड़ देनी चाहिए, दक्षिण 'कोरिया-जापान-संधि' को रद्द कर देना चाहिए, दक्षिण कोरिया पर पुनः आक्रमण करने की कार्रवाई बद कर देनी चाहिए और दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों को उकसाकर कोरियाइयों को कोरियाइयों से लड़ाने और उसमें अपना हिस्सा लेने के मूर्खतापूर्ण कृत्यों को तिलांजलि दे देनी चाहिए।

हाल के काल में जापानी जनता और प्रगतिशील क्षेत्रों में जनवादी कोरियाई लोकतंत्र के साथ अच्छे पड़ोसी जैसे संबंध स्थापित करने के लिए विस्तृत अभियान शुरू हुआ है। कुछ समय पहले 'जापान-कोरिया मैत्री के लिए संसद-सदस्यों की लीग' नामक संगठन स्थापित हुआ जिसमें संसद के शासक और विरोधी दलों के २३४ सदस्य शामिल हैं। और स्थानीय सभाओं में प्रस्ताव पास हुए जिनमें जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के साथ राज्य-स्तर के संबंध स्थापित करने की माँग की गई। हम इसे बहुत अच्छी बात मानते हैं और आशा करते हैं कि उनके संघर्ष का सफल होगा।

अगर कोरियाई और जापानी जनगण सफल संघर्ष छेड़ें तो हमारे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित करना संभव होगा। कोरिया और जापान के बीच राजनयिक संबंध स्थापित होने पर जापानी सरकार की अब तक की गलत नीति मिट जाएगी। हमारा ख्याल है कि राजनयिक संबंध स्थापित होने से पहले भी दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो सकते हैं। आज की विभिन्न परिस्थितियों का लेखा-जोखा लेने से लगता है कि राजनयिक संबंध स्थापित करने में कोरिया और जापान को कुछ और समय लगेगा। जापान के साथ राजनयिक संबंध स्थापित होने से पहले भी हम जितना अधिक से अधिक संभव हो उतने लोगों की यहाँ की यात्रा के लिए और आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर विनिमय और व्यापार के लिए तैयार हैं।

कोरिया और जापान के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध हर सूरत में बराबरी के आदान-प्रदान के सिद्धांत पर स्थापित किए जाने चाहिए। हालांकि दोनों देशों के बीच आंशिक रूप से विनिमय हो रहा है, फिर भी वह जापानी सरकार के गलत रुख के कारण एकपक्षीय स्वरूप का हुए बिना नहीं रह सकता। यह संदिग्ध है कि जापानी

सरकार अमरीका की कृपादृष्टि से वंचित हो जाने से डरती है या दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों की मनोवृत्ति के विरुद्ध जाने से डरती हैं। यह स्पष्ट है कि ऐसे तरीकों से दोनों देशों के संबंधों की समस्याएं हल करना बिल्कुल असंभव है।

आखिरकार कोरिया और जापान के बीच अच्छे पड़ोसी जैसे संबंध स्थापित होना या न होना जापानी सरकार के रूख पर निर्भर करता है। हमारे संबंधों के स्थापित होने की कार्यप्रणाली चाहे जो हो, संबंध कब स्थापित होंगे यह भी जापान सरकार पर ही निर्भर है।

जहां तक जापान में रहने वाले ६ लाख कोरियाइयों का प्रश्न है, सारतः यह समस्या अतीत में हमारे देश में जापानी साम्राज्यवाद के उपनिवेशी शासन के परिणाम स्वरूप पैदा हुई है। जापान में कोरियाई जाति के लोगों को विदेशियों जैसा व्यवहार सुविधा नहीं मिलते हालांकि यह कटु सत्य है कि आज उनकी पितृभूमि का अस्तित्व है। इसका श्रेय भी हमारे देश के प्रति जापानी सरकार के अमैत्रीपूर्ण रुख को ही है।

जापान में कोरियाई जाति के लोगों ने अपने जनवादी और राष्ट्रीय अधिकारों के लिए, बहुमुखी कठिनाइयां पार करते हुए, सख्त संघर्ष छेड़ा है। विशेषकर उन्होंने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के समुद्रपार वासी नागरिकों का एक संगठन खोंगरियोन (जापान-निवासी कोरियाई जन सामान्य संगठन) का निर्माण किया है और जापान स्थित कोरियावासियों के आंदोलन में जूछे विचार को शानदार रीति से प्रस्थापित किया है तथा कामरेड अध्यक्ष हान दोक सू के इर्दगिर्द घनिष्ठ रूप से एकताबद्ध होकर जनवादी, राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा के लिए, देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए और जापानी जनता तथा विश्व के प्रगतिशील जनगण के साथ अंतर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व सुदृढ करते हुए, अपने संघर्ष में भारी सफलताएं प्राप्त की हैं।

श्रेय है जापानी जनता, प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियों और सार्वजनिक संगठनों और सभी श्रेणियों के प्रमुख व्यक्तियों के सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन को कि जिसको पाकर जापान में खोंगरियोन के पथ-प्रदर्शन में कोरियाई नागरिकों ने जापानी सरकार की तमाम बाधाकारी चालों के बावजूद ये सफलताएं प्राप्त कीं। हम इसके लिए बड़े अनुग्रहित हैं और इस अवसर का लाभ उठाकर हम योमियूरी शिम्बुन द्वारा अपने जापानी मित्रों को अपना हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं।

जापान स्थित कोरियाई नागरिकों का अपने अधिकारों की रक्षा करना स्वाभाविक ही है और यह काम अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुरूप भी है। शायद अन्य देशों में रहने वाले जापानी भी अपने अधिकारों की रक्षा करेंगे और उनको त्यागेंगे नहीं। सभी राष्ट्रों के साथ यही होता है।

मैं जापान में कोरियाई नागरिकों की राष्ट्रीय शिक्षा की चर्चा करने की

अनुमति चाहता है।

जैसा कि आप जानते हैं, कोई राष्ट्र सर्वोपरि अपनी बोली और साहित्य की विशिष्टता से पहचाना जाता है। हमारी बोली जाने वाली और लिखित भाषा में अलग कोई कोरियाई राष्ट्र नहीं है। इसलिए जापान में जापानी सरकार द्वारा कोरियाई नागरिकों की राष्ट्रीय शिक्षा के दमन को एक कुत्सित राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित होने के अलावा और कुछ नहीं माना जा सकता। हम जापान में कोरियाई नागरिकों की राष्ट्रीय शिक्षा को बड़ा महत्त्व देते हैं और इस काम में, भविष्य में भी अपनी भौतिक और नैतिक सहायता देना जारी रखने का हमारा इरादा है।

जापानी सरकार के प्रतिक्रियावादी वर्ग दक्षिणी कोरियाई कठपुतली गुट से साठगांठ करके जापान-स्थित कोरियाइयों को 'स्थायी निवास' के लिए आवेदन पत्र देने के लिए मजबूर कर रहे हैं और उन पर 'कोरिया प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' थोपने का प्रयत्न कर रहे हैं। ऊपर से वे राष्ट्रीयता चुनने की 'स्वतंत्रता' देने की बातें कर रहे हैं लेकिन दरअसल अगर 'कोरियाई प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' स्वीकार कर लेते हैं तो वे उनके साथ विशेष व्यवहार करते हैं। और उन लोगों पर नाजायज दबाव डालते हैं, जिन्होंने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की राष्ट्रीयता ली है।

ऐसा लगता है कि जापान मे कुछ कोरियाई, इससे परेशान होकर, 'कोरिया प्रजातंत्र की राष्ट्रीयता' स्वीकार कर लेते हैं। फिर भी कोई संदेह नहीं रह जाता कि यद्यपि उन्हें अपनी राष्ट्रीयता परिवर्तित करने के लिए मजबूर किया गया है, तब भी वे जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया को सक्रिय समर्थन देंगे, उसी तरह जैसे आज दक्षिण कोरिया की जनता एकमत से हमारा समर्थन करती है।

जापान-स्थित कोरियाई नागरिकों की स्वदेश वापसी, जो कुछ समय तक स्थगित रही थी, अब कोरिया और जापान के रेडक्रास संगठनों के बीच समझौते के अनुसार फिर शुरू हो गई है। यह बात न सिर्फ जापान-स्थित कोरियाइयों के राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करने के लिए, बल्कि कोरियाई और जापानी जनगण के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को विकसित करने के लिए बड़ी शुभ है। हमें आशा है कि जापानी जनता के समर्थन से यह कार्रवाई भविष्य में भी जारी रहेगी ताकि जापान-स्थित वे कोरियाई नागरिक, जो स्वदेश वापस लौटना चाहते हों, अपने घर लौट सकें।

यह भी महत्वपूर्ण है कि जापान-स्थित कोरियाई नागरिकों को स्वदेश वापसी के अधिकारों के साथ ही साथ स्वदेश आने और जाने की स्वतंत्रता की गारंटी मिले। जापान-स्थित कोरियाई नागरिकों में ऐसे लोग हो सकते हैं जो किसी कारणवश अभी स्वदेश लौटने में असमर्थ हैं। तब भी उन्हें अपने स्वदेश जाने और आने के लिए यात्रा करने के अपने अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। यह अवांछनीय भेदभाव का कदम और मानव अधिकारों का उल्लंघन फौरन रोका जाना चाहिए।

खोंगयिन और नाईगाता के बीच चलनेवाले स्वदेश वापसी के जहाज़ों को न सिर्फ उन लोगों को लाने की इजाज़त होनी चाहिए जो स्वदेश वापस लौटना चाहते हैं, बल्कि उनको भी लाने-लेजाने की इजाज़त हो जो स्वदेश में अपने परिवारों, रिश्तेदारों और मित्रों से मिलना चाहेंगे और फिर जापान लौट जाना चाहेंगे।

हम जापान में कोरियाई नागरिकों के जनवादी, राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करने में खोंगरियोन की राय का सम्मान करते हैं। हमारा विश्वास है कि जापानी जनता, प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियां और सभी सामाजिक क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्ति भविष्य में भी खोंगरियोंन से सलाह-मशविरा करते रहेगें और जापान स्थिति कोरियाई नागरिकों के न्यायसंगत सतत संघर्ष को अपना अमूल्य समर्थन और प्रोत्साहन देते रहेंगें।

जापान के राष्ट्रीय समाजवादी महापौरसंघ के प्रतिनिधि मंडल से बातचीत

१४ मई १९७२

मैं सबसे पहले जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार तथा संपूर्ण कोरियाई जनता की ओर से अपने देश की यात्रा पर आपका हार्दिक स्वागत करता हूं।

हम अच्छी तरह जानते हैं कि जापानी जनता के साथ-साथ आप कोरिया और जापान के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करने के लिए काफी प्रयास कर रहे हैं तथा खास तौर पर जापान में जनवादी, राष्ट्रीय अधिकारों और पितृभूमि के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए कोरियाई नागरिकों के संघर्ष में उनका सक्रिय रूप से समर्थन, उनकी रक्षा और सहायता कर रहे हैं। इस समय मित्रों के रूप में आपका स्वागत करते हुए हम अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहे हैं।

हमें आपने जो बहुमूल्य उपहार दिए हैं उनके लिए प्रतिनिधि मंडल के नेता को और आपको हार्दिक धन्यवाद देता हूं। खास तौर पर प्रतिनिधि मंडल के नेता ने हमें गाएं भी भेजीं। इनके लिए आपको बहुत धन्यवाद।

आपने मेरी और हमारी जनता की उदारतापूर्ण प्रशंसा में जो शब्द कहे हैं उनके लिए प्रतिनिधिमंडल के नेता और आपको धन्यवाद। हम अपनी जीतों पर संतुष्ट होकर नहीं बैठेंगे बल्कि भविष्य में और बेहतर काम करेंगे जिससे आपकी अपेक्षाओं को पूरा कर सकें।

हमने अतीत में समाजवादी निर्माण में जो सफलताएं प्राप्त की हैं उनकी बहुत चर्चा की। निःसंदेह हमने पिछले काल में समाजवादी निर्माण में कुछ उपलब्धियां हासिल की हैं, किंतु मैं सोचता हूँ कि अगर हमारी जनता के तकाजों से तुलना की जाए तो अभी भी यह मात्र आंशिक सफलता से ज्यादा कुछ नहीं है और भविष्य में हमें और अधिक कार्य करना है।

हमने समाजवादी निर्माण में मुख्य रूप से कठिनाइयों पर विजय पा ली है। निःसंदेह आगे भी पथ में कठिनाइयां हो सकती हैं। किन्तु हमें पक्का विश्वास है कि हम अपने देश की अर्थव्यवस्था को तेजतर रफ्तार से विकसित कर सकते हैं क्योंकि हम एक सुदृढ़, स्वतन्त्र आर्थिक नींव डाल चुके हैं। जैसा कि आप जानते हैं, मुक्ति

के पहले हमारे देश के उद्योग-धंधे बहुत ही पिछड़े हुए थे और वह भी तीन वर्षीय युद्ध में बुरी तरह ध्वस्त हो गया था। इसका वस्तुतः अर्थ यह होता है कि हमने युद्ध के बाद नए सिरे से आर्थिक निर्माण शुरू किया। इसमें संदेह नहीं कि हमने उस मलबे पर नगरों और गांवों का निर्माण किया और कारखाने खड़े किए जहां कुछ भी साबूत नहीं बचा था।

यह सच है कि हम अभी जनता के जीवन स्तर को बहुत ऊंचे स्तर तक नहीं उठा सके हैं। किंतु हम मेहनतकशों के खाद्य, वस्त्र और रिहायश के सवाल को, दूसरे शब्दों में उन्हें रोटी, कपड़ा और मकान देने के सवाल को हल कर चुके हैं, तथा हर किसी को निःशुल्क अध्ययन करने और मुफ्त स्वास्थ्य संबंधी देखरेख पाने के लिए परिस्थिति प्रदान कर चुके हैं। यह नए समाज के निर्माण में हमारी एक बहुमूल्य सफलता है। हम पहले हासिल की जा चुकी सफलताओं से लाभान्वित होते हुए भविष्य में समाजवादी निर्माण में और भी महान सफलताएं प्राप्त करेंगे।

जहां तक हमारे देश की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास की षड्-वर्षीय योजना का सवाल है, मैं समझता हूं, आप भी इससे अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि समाचार-पत्रों में इसके बारे में कई बार समाचार छपे हैं। इसलिए मैं आपके सामने लंबी व्याख्या नहीं प्रस्तुत करूंगा।

चूंकि पहले हम इंजीनियरिंग उद्योग को धुरी बनाकर भारी उद्योग की नींव एक खास ऊंचाई तक ला चुके हैं, इसलिए हम ऐसी स्थिति में हैं कि देश की उत्पादनकारी शक्तियों को एक उच्चतर स्तर तक विकसित कर सके तथा धीरे-धीरे श्रमिकों को कठिन और कठोर श्रम से मुक्त कर सकें। इसलिए हमने पार्टी की ऐतिहासिक पांचवी कांग्रेस में श्रमिकों को कठिन और कठोर श्रम से मुक्त करने के लिए तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख कर्तव्य प्रस्तुत किए। षड् वर्षीय योजना के पूरा हो जाने पर शहर और गांव के बीच के अंतर, भारी और हलके श्रम के बीच के अंतर तथा औद्योगिक और कृषि श्रम के बीच के अंतर में उल्लेखनीय कमी आ जाएगी, गोकि तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख कर्त्तव्य षड्-वर्षीय योजना काल में पूरे नहीं किए जाएंगे। यह कार्य इस समय हमारे देश में अत्यंत सफलता के साथ संपन्न किया जा रहा है।

मुझे विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों की सोसायटी से आप द्वारा पूछे गए सवाल प्राप्त हुए। मैं संक्षेप में जवाब दूंगा।

मैं पहले अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में बोलूंगा।

जहां तक अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का सवाल है, मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा क्योंकि मैं इस विषय में अन्य अनेक मौकों पर बोलता रहा हूं।

आज अंतर्राष्ट्रीय स्थिति शांति और प्रजातंत्र; राष्ट्रीय स्वाधीनता और

समाजवाद के लिए संघर्षरत जनगण के पक्ष में तथा साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादियों के विपक्ष में विकसित हो रही है। वे दिन लद गए जब चंद शक्तियां विश्व पर हावी थीं और उस पर मनमाना प्रभुत्व दिखाती थीं। यह ऐसा युग है जबकि विश्व पर न्याय और प्रगति के लिए संघर्षरत जनगण का बोलबाला है।

इस समय अमरीकी साम्राज्यवादियों ने वियतनाम जनवादी गणतंत्र की नाकेबंदी कर रखी है और बमबारी के अपने धावे तेज कर रहे हैं। मगर इसका यह अर्थ नहीं कि अमरीकी साम्राज्यवादी एक विजय से दूसरी विजय की ओर बढ़ रहे हैं। यह हर पहलू से अपने विनाश से रू-ब-रू अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रांताओं की आखिरी दौर की उन्मत्तता के अलावा और कुछ नहीं है। अमरीकी साम्राज्यवादी चाहे जितनी बेतहाशा कोशिश करें पर वियतनाम का सवाल वियतनाम की जनता के इच्छानुसार ही हल होगा। अमरीकी साम्राज्यवादी जिस तरह चाहते हैं उस तरह यह कभी नहीं हल होगा।

आज साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच आपसी टकराव बढ़ता जा रहा है तथा साम्राज्यवाद के भीतर के अंतर्विरोध अत्यंत उग्र रूप लेते जा रहे हैं।

जापानी जनता आज अमरीकी साम्राज्यवाद की दुमछल्ला बनी हुई सातो सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति के खिलाफ जबरदस्त संघर्ष चला रही है। मैं समझता हूं कि अमरीकी साम्राज्यवाद के खिलाफ जापानी जनता की जुझारू भावना पहले से उच्चतर स्तर पर पहुंचती जा रही है। यह बिलकुल स्वाभाविक है कि जापानी जनता अमरीकी साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी सातो सरकार के खिलाफ संघर्ष करे। यह इतिहास के विकास की अवश्यंभावी घटना है।

संयुक्त राज्य अमरीका में भी प्रतिक्रियावादी हुक्मरानों और युद्ध की उनकी नीति के खिलाफ जनता का संघर्ष तेज होता जा रहा है।

उन नवजात स्वाधीन देशों की पांतें बहुत विस्तृत हो गई हैं जिन्होंने साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक हुकूमत को उखाड़ फेंका है और राष्ट्रीय स्वाधीनता हासिल कर ली है तथा इन देशों के जनगण की जुझारू भावना उत्तरोत्तर ऊंची होती जा रही है। नवजात स्वाधीन देशों के जनगण आज पुरजोर तरीके से शांति और समाजवाद की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। वे औपनिवेशिक गुलाम न बन जाने के लिए सक्रिय संघर्ष चला रहे हैं।

साम्राज्यवादियों द्वारा उत्पीड़ित औपनिवेशिक और पराधीन देशों के जनगण भी शूरता के साथ साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं।

समाजवादी देशों की शक्ति भी बढ़ रही है।

एक शब्द में वे दिन काफूर हो गए जब साम्राज्यवादी शक्तियों ने एशिया, अफ्रीका और लातीन अमरीका को बांट रखा था और विश्व पर मनमाना प्रभुत्व

कायम कर रखा था तथा वह दिन आ रहा है जब दुनिया पर जनता का प्रभुत्व होगा। सामान्य स्थिति हर गुजरते दिन के साथ विकसित होकर क्रांति में लगे जन-गण के अनुकूल तथा साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के प्रतिकूल होती जा रही है। मेरे विचार से वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का आमतौर पर इस रूप में मूल्यांकन करना सही है।

इसके बाद मैं अपने देश में प्रांत, काउंटी और 'री' समेत प्रशासनिक इकाइयों के संगठन के बारे में तथा स्थानीय शासनिक निकायों की भूमिका के बारे में बातें करूं।

आज हमारे देश की प्रशासनिक इकाइयां हैं: केंद्र, प्रांत, काउंटी और री। मुक्ति के पहले और ठीक बाद हमारे देश की प्रशासनिक इकाइयों में ५ इकाइयां सम्मिलित थीं। वे थीं केंद्र, प्रांत, काउंटी, म्योन और री। एक और मध्यवर्ती प्रशासनिक इकाई के होने पर ऊपरी इकाई के फैसले या आदेश निचली इकाई तक जल्द नहीं पहुंच पाते तथा जनता की राय जल्दी से ऊपर नहीं पहुंच पाती। इसलिए हमने म्योन को समाप्त कर दिया।

हमारे देश की स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों मे काउंटी केंद्रीय भूमिका अदा करती है, प्रांत केंद्र और काउंटी के बीच मध्यवर्ती भूमिका अदा करता है।

इस काउंटी को सुदृढ़ बनाने के लिए बहुत प्रयास कर रहे हैं जिससे वह जनता के घनिष्ठतर संघर्ष में रह सके।

हमारे देश के स्थानीय सत्ता निकायों में जन असेंबली और जन समिति हैं। जन असेंबली ऐसी सत्ता निकाय है जिसमें श्रमिकों, कृषकों, श्रमिक बुद्धिजीवियों और जनता के अन्य वर्गों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। री जन असेंबली में री के प्रतिनिधि, काउंटी जन असेंबली में काउंटी के प्रतिनिधि तथा प्रांतीय जन असेंबली में प्रांत के प्रतिनिधि होते हैं। जन समिति एक कार्यकारी निकाय है जो जन असेंबली के फैसलों की तामील करती है। जन समिति अपने कार्य के नतीजों की रिपोर्ट जन असेंबली के समक्ष पेश करती है जिसका अधिवेशन नियमित रूप में होता है।

जन सत्ता संगठनों का मुख्य उद्देश्य जनता के हितों की रक्षा करना है। हमने यह नारा बुलंद किया कि सत्ता निकाय जनता के सेवक हैं। दूसरे शब्दों में, हमारी जनता के सत्ता निकाय जनता की सेवा करते हैं।

एक बार जब जनता सत्ता स्थापित कर ले, उसके बाद इस सत्ता को सही अर्थ में जनता की सत्ता बन जाना चाहिए। इसे और कुछ नही होना चाहिए, किसी व्यक्तिगत शासक की सत्ता नहीं होना चाहिए। इसके लिए कि जनता की सत्ता जनता की सच्ची सत्ता बन सके यह जरूरी है कि जनता के बीच से चुने गए प्रतिनिधि जनता के हित में काम करें। अगर जनता के बीच से चुने गए प्रतिनिधि जनता की

इच्छा के अनुरूप कार्य करने में असफल रहते हैं तो उस सत्ता को जनता की सच्ची सत्ता नहीं पुकारा जा सकता।

हमारे देश और अन्य समाजवादी देशों के अनुभवों से यह पता चलता है कि अक्सर जनता के बीच से चुने गए सत्ता निकायों के अहलकार नौकरशाही बरतने लगते हैं।

इससे लोहा लिए बगैर जनता का सत्ता निकाय जनता के सेवक के रूप में अपनी भूमिका ठीक-ठीक अदा नहीं कर सकता।

नौकरशाही अनेक रूपों में अहलकारों के बीच प्रकट हो सकती है। अगर जीर्ण-शीर्ण विचारों के अवशेषों से ग्रस्त लोगों को पदोन्नत कर अध्यक्ष बना दिया जाता है तो वे यह सोचते हुए नौकरशाही बरतते हैं जैसे कि वे किसी सरकारी पद पर हों और सरकारी अधिकारी बन गए हों। आत्मनिष्ठता से भी नौकरशाही पैदा होती है। जब-तब कुछ अहलकार जनता के हितों के खिलाफ अपना कार्य करते हैं क्योंकि ये निचले निकायों की वास्तविक परिस्थितियों से अवगत नहीं होते, गो कि वे अच्छी तरह अपना कार्य करने की कोशिश करते हैं। हम अहलकारों को ऐसा करने से सख्ती से रोकते हैं। हम किसी शासक पार्टी की नौकरशाही बरतने की खतरनाक प्रवृत्ति को सदा जोर देकर इंगित करते हैं तथा हर सत्ता निकाय में, चाहे वह स्थानीय सत्ता निकाय हो या केंद्रीय सत्ता निकाय, नौकरशाही से लोहा लेने के सवाल पर मुख्य रूप से जोर देते हैं।

हमारे देश में स्थानीय सत्ता निकायों का मुख्य कर्तव्य है जिम्मेदारी की भावना के साथ जनता के जीवन की देखरेख करना।

प्रमुख आर्थिक निकायों को सीधे तत्संबद्ध मंत्रालयों से मार्ग-निर्देशन मिलता है। इस प्रकार स्थानीय सत्ता निकाय मुख्यत: जनता के रहन-सहन से जुड़े हुए क्षेत्रों का उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से मार्ग-दर्शन करते हैं।

स्थानीय 'सत्ता निकाय' सर्वोपरि वाणिज्य निकायों का कार्यभार संभालते और मार्गदर्शन करते हैं।

हमारे वाणिज्य निकाय पूंजीवादी वाणिज्य निकायों से मूलत: भिन्न हैं। पूंजीवादी वाणिज्य निकाय मुनाफे की टोह में रहने वाले निकाय हैं, जबकि हमारे निकाय पूरी तरह से जनता के लिए सप्लाई के निकाय हैं। हमारे वाणिज्य निकाय जनता को माल की पूर्ति करने की जिम्मेदारी संभालते हैं तथा जनता को समान रूप से माल की पूर्ति करना अपना बुनियादी फर्ज मानते हैं।

हमारे देश में वस्तुएँ एक दाम पर बिकती हैं। कीमतें एक रूप कर के हम वाणिज्य निकायो को अपनी मर्जी से कीमतें बढ़ाने या घटाने से रोकते हैं। औद्योगिक मालों की कीमतें शहरी इलाकों और पहाड़ी प्रदेशों, दोनों में ही समान हैं।

मसलन अगर एक दियासलाई की कीमत प्योंगयांग में एक जोन निर्धारित है तो पाएकटू-सान पर्वत की तलहटी के किसी भी पर्वतीय गांव में भी उसकी कीमत एक जोन ही है। पहले निजी व्यापारी एक दियासलाई प्योंगयांग में एक जोन में बेचते थे और पर्वतीय गांव में २ या ३ जोन में। यह प्रथा हमारे देश में बहुत पहले ही खत्म की जा चुकी है।

मुझे ऐसा लगता है कि ऐसा अन्य कोई देश नहीं जहां हमारे देश की तरह हर भाग में समान मूल्य हों। दूसरे देशों को बतौर मिसाल लिया जाए तो पर्वतीय क्षेत्रों में वस्तुओं का मूल्य शहरी इलाकों से ज्यादा होता है। इसलिए शहरी और पहाड़ी इलाकों में रहन-सहन की दशाओं में बहुत बड़ा अंतर होता है। दाम बराबर कर दिए जाने के बाद हमारे देश के शहरी और पहाड़ी इलाकों की रहन-सहन की परिस्थितियों में ज्यादा विषमता नहीं रह गई है।

इसी तरह हमारे देश में माल की समान रूप से पूर्ति की जाती है। केंद्रीय वाणिज्य निकाय राष्ट्र की माल पूर्ति योजनाएं तैयार करते हैं और माल प्रांतों को भेजते हैं तथा प्रांत उन्हें काउंटियों को भेजते हैं और काउंटियां उन्हें दुकानों को वितरित करती हैं। और जब स्थानीय इलाके अपनी आवश्यकता पर और अधिक माल मांगते हैं तो उन्हें अतिरिक्त सप्लाई की जाती है।

हमारे देश के वाणिज्य ने वस्तुओं का आर्डर देने की पद्धति भी लागू की है। मसलन, जब कोई देशवासी किसी माल के लिए आर्डर देता है तो वाणिज्य निकाय उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से उस आर्डर पर कार्रवाई करते हैं।

स्थानीय सत्ता निकाय वाणिज्य निकायों का इस प्रकार मार्गदर्शन करते हैं जिससे वे हमारे देश की वाणिज्य पद्धति की अपेक्षाओं के अनुरूप संतोषजनक ढंग से अपना कार्य निभा सकें।

स्थानीय सत्ता निकाय नगर प्रबंध का भी कार्यभार संभालते हैं।

राज्य और संपूर्ण जनता की आम संपत्ति-भवनों और सुविधा-साधनों की यथासमय मरम्मत करना और उनका रखरखाव करना जनता समितियों के काम में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सुचारु नगर प्रबंध के जरिए ही मेहनतकशों के जीवन की सुविधाओं को आगे बढ़ा सकना संभव है।

हमारे देश के नगर प्रबंध की सुनिश्चित व्यवस्था केंद्रीय और स्थानीय बजटों द्वारा होती है। बड़े पैमाने का नगर प्रबंध केंद्रीय बजट में सम्मिलित होता है तथा अपेक्षाकृत छोटे पैमाने का प्रबंध स्थानीय बजट में।

यही बात निर्माण कार्य के बारे में कही जा सकती है। कारखानों और उद्योगों, रेलवे, सड़क और बंदरगाह जैसे विशाल निर्माण कार्य केंद्रीय बजट से चलाए

जाते हैं तथा अपेक्षाकृत छोटे पैमाने पर निर्माण कार्य स्थानीय बजट से। गृह निर्माण का अपेक्षाकृत बड़ा कार्य स्थानीय बजट से चलाया जाता है।

स्थानीय सत्ता निकाय शिक्षा कार्य का भी मार्ग निर्देशन करते हैं।

हमारे देश में राष्ट्रव्यापी महत्व के स्कूल और स्थानीय चरित्र के स्कूल हैं।

जैसे मिसाल के लिए विश्वविद्यालयों और कालेजों को लीजिए। ऐसे विश्वविद्यालय, पॉलिटेकनीक कालेज, रसायन उद्योग कालेज, इंजीनियरिंग कालेज, कृषि कालेज और मेडिकल कालेज हैं जो राष्ट्रव्यापी पैमाने पर आवश्यक कर्मचारियों को प्रशिक्षण देते हैं तथा ऐसे कालेज भी हैं जो स्थानीय पैमाने पर आवश्यक कर्मचारियों को प्रशिक्षण देते हैं।

प्रांतों में साधारण कालेज, शिक्षक कालेज और किंडरगार्टेन शिक्षक कालेज हैं जो स्वयं अपनी आवश्यकता के अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। साधारण कालेज माध्यमिक स्कूल अध्यापकों को प्रशिक्षण देते हैं, शिक्षक कालेज प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को और किंडरगार्टेन शिक्षक कालेज किंडरगार्टेनों के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण देते हैं। इनके अलावा प्रांतों मे कृषि कालेज हैं जो कृषि के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देते हैं तथा मेडिकल कालेज हैं जा जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देते हैं। प्रांतों के लिए आवश्यक अहलकारों को प्रशिक्षण देने वाले कालेजों का मार्ग-निर्देशन और प्रबंध जिम्मेदाराना ढग से मुख्यतः प्रांतों द्वारा किया जाता है।

काउंटी जन समितियां सीधे माध्यमिक और प्राथमिक स्कूलों, किंडरगार्टेनों और शिशु विहारों का मार्ग-निर्देशन और प्रबंध करती हैं।

जन समितियां मुख्यतः स्कूल भवन-निर्माण, विद्यार्थियों की सिफारिश तथा अध्यापकों के चयन और वितरण संबंधी कार्य करती हैं।

स्कूल संबद्ध मंत्रालयों के एकरूप कार्यक्रम के अनुसार शिक्षा कार्य का संचालन करते हैं। मगर स्थानीय विलक्षणताओं के अनुसार उनमें कुछ विषय जोड़े जा सकते हैं। हर स्तर पर जन समितियां स्कूलों का इस प्रकार मार्ग-निर्देशन करती हैं जिससे कि वे एकरूप कार्यक्रम के अनुसार शिक्षा कार्य का ठीक-ठीक संचालन कर सकें।

स्थानीय सत्ता निकाय भी जन स्वास्थ्य संबंधी कार्यभार संभालते हैं।

हमारे देश की जन स्वास्थ्य प्रणाली नि:शुल्क चिकित्सा की प्रणाली है। हमारा देश रोगों की रोक-थाम की नीति पर चलता है और इस नीति की सफल तामील के लिए डाक्टर प्रखंड प्रणाली लागू करता है। डाक्टर प्रखंड प्रणाली से हमारा आशय ऐसी प्रणाली से है जिसमें हर डाक्टर एक रिहायशी क्वार्टर का कार्यभार संभालता है और रोगों की रोक-थाम के लिए चिकित्सा करता है। डाक्टर हमेशा अपने कार्यभार में आने वाले प्रखंडों में जाते हैं और रोगों की रोक-थाम के

लिए चिकित्सा करते हैं और इस प्रकार जनता के स्वास्थ्य की देखभाल करते हैं।

आज हमारे देश में प्रत्येक री में एक छोटा चिकित्सालय और प्रत्येक काउंटी में एक बड़ा चिकित्सालय है। षड्-वर्षीय योजना में हमारी योजना काउंटी अस्पतालों को संयुक्त अस्पतालों में तथा छोटे री अस्पतालों को बड़े अस्पतालों में बदल देने की है। हम कारखानों को अस्पतालों से लैस करने जा रहे हैं।

स्थानीय सत्ता निकाय पार्टी और सरकार द्वारा प्रस्तुत की गई जन स्वास्थ्य नीतियों को सीधे कार्यान्वित करते हैं।

स्थानीय सत्ता निकाय स्थानीय औद्योगिक कारखानों का भी मार्ग-निर्देशन करते हैं।

स्थानीय औद्योगिक कारखाने मुख्यतः अपने इलाकों में पाए जाने वाले कच्चे माल को प्रोसेस करते हैं।

मसलन, स्थानीय औद्योगिक कारखाने अपने इलाकों के फलों, सब्जियों और मछलियों को प्रोसेस करते हैं तथा अपने इलाकों के विशेष उत्पादन को भी प्रोसेस करते हैं। सोयाबीन और सेम की चटनी और खाने के तेल जैसी पूरक आहार साम-ग्रियां भी जनता के लिए स्थानीय औद्योगिक कारखानों द्वारा तैयार की जाती हैं।

स्थानीय औद्योगिक कारखाने अन्य इलाकों से प्राप्त कच्चे माल को भी प्रोसेस करते हैं।

स्थानीय औद्योगिक कारखाने मुख्यतः अपने उत्पादनों को स्वयं अपने इलाकों को सप्लाई करते हैं तथा उनमें से कुछ की पूर्ति शहरी क्षेत्रों और अन्य इलाकों को करते हैं।

जैसा कि आपने ऊपर देखा, हमारे देश के स्थानीय सरकारी निकाय ऐसे निकाय हैं जो जन-जीवन के लिए पूर्ण उत्तरदायित्व लेते हैं। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि स्थानीय सरकारी निकाय जनता के सेवक हैं।

जन सत्ता के निकाय ठीक से काम करते हैं या नहीं यह बात जनता के जीवन से पता चलती है और जनता ही जन सत्ता निकायों के अहलकारों के कार्य की निर्णय-कर्त्ता हैं।

अब मैं आपको अपने देश की शिक्षा प्रणाली और अंतर्वस्तु के बारे में बताना चाहूंगा।

सफलतापूर्वक समाजवाद का निर्माण करने के लिए शिक्षा कार्य का विकास करना तथा बड़ी संख्या में कार्यकर्ता तैयार करना आवश्यक है। समाज व्यवस्था, कितनी भी अद्भुत क्यों न हो, सुयोग्य कार्यकर्ताओं के बगैर उसे पुख्ता करना या विकसित करना या उसकी रक्षा करना संभव नहीं।

हमारे देश की शिक्षा में कार्यकर्ता उपदेश से नहीं बल्कि आचरण से उदाहरण

पेश करते हैं।

हमने हर हफ्ते शनिवार को कार्यकर्ताओं के अध्ययन का दिन मुकर्रर कर दिया है जिससे कार्यकर्ता नियमित रूप में अध्ययन कर सकें। शनिवार के अध्ययन के अलावा कार्यकर्ताओं के लिए सवेतन साल में एक या छह महीने विभिन्न स्तर के स्कूलों में पढ़ना लाजिमी है। आज हमारे देश में केंद्र में उच्चतर पार्टी स्कूल और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था विश्वविद्यालय, प्रांतों में कम्युनिस्ट कालेज तथा कांउटियों में काउंटी पार्टी स्कूल हैं। प्रांतीय कार्यकर्ता और काउंटी के अग्रणी अहलकार उच्चतर पार्टी स्कूलों में या राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था विश्वविद्यालय में, काउंटी के कार्यकर्ता प्रांतीय कम्युनिस्ट कालेजों तथा री के कार्यकर्ता काउंटी पार्टी स्कूलों में जाकर पढ़ते हैं।

तथा प्रांतों और काउंटियों के अग्रणी अहलकारों में से जो निम्न स्तर के होते हैं वे उच्चतर पार्टी स्कूल या राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था विश्वविद्यालय के एकवर्षीय पाठ्यक्रम या तीनवर्षीय पाठ्यक्रम में जाते हैं।

कार्यकर्ताओं के अध्ययन की विषयवस्तुएं बहुरूप हैं।

अगर कार्यकर्ता राजनीतिक अध्ययन करना चाहते हैं तो वे अपनी इच्छानुसार राजनीतिक अध्ययन करते हैं और अगर वे चाहते हैं तो तकनीक और आर्थिक प्रबंध का ज्ञान अर्जित करते हैं। अध्ययन के लिए सारी सुविधाएं राज्य ने दे रखी हैं।

हमारे देश में मजदूरों की तकनीक और व्यापार संबंधी योग्यता के उन्नयन के लिए वर्कशाप प्रधानों के लिए स्कूल और कार्यकर्ता दल प्रधानों के लिए स्कूल हैं तथा कारखानों में दक्ष मजदूरों के प्रशिक्षण के लिए स्कूल हैं।

तथा कारखाना कालेज, कारखाना उच्चतर तकनीकी स्कूल और विश्वविद्यालयों और कालेजों में पत्राचार एवं सायंकालीन पाठ्यक्रम हैं। ये उस शिक्षा-प्रणाली का गठन करते हैं जिसके तहत विद्यार्थी अपने धंधे छोड़े बगैर अध्ययन करते हैं।

हमारे देश में मेहनतकशों के माध्यमिक स्कूल भी हैं।

अगर एक ऐसा पिछड़ा देश तेजी से विकास करना चाहता है जो पूंजीवाद के चरण से नहीं गुजरा है तो उसे मेहनतकशों के ज्ञान के स्तर को ऊंचा उठाना चाहिए।

हमारे देश की युवा पीढ़ी के सारे सदस्य राज्य के अनुग्रह से माध्यमिक या इससे उच्चतर स्तर के पाठ्यक्रम पूरा कर चुके हैं। किंतु ४५ से ५० या इससे ऊपर की आयु के अधिकांश लोग अत्यंत निम्न स्तर पर हैं, क्योंकि वे मुक्ति के पहले शिक्षा नहीं पा सके थे। जब तक उनके स्तर को तेजी से ऊंचा नहीं उठाया जाएगा तब तक क्रांति और निर्माण को सफलता के साथ आगे बढ़ा सकना या नई उदीयमान पीढ़ी को अच्छी तरह प्रशिक्षित कर सकना असंभव होगा। विद्यार्थियों को स्कूल चाहे जितनी

अच्छी शिक्षा दें, अगर घर में उन पर उनके माता-पिता का बुरा प्रभाव पड़ेगा तो स्वभावत: वे दूसरों से पिछड़े रहेंगे।

इसलिए हमने पहले चरण में सारी आबादी की निरक्षरता का उन्मूलन किया और फिर उसे प्राथमिक स्कूल स्तर तक सामान्य ज्ञान दिया। अब हर री में श्रमिकों का माध्यमिक स्कूल स्थापित हो चुका है तथा पहले जिन मेहनतकशों को माध्यमिक स्कूल की शिक्षा नहीं मिल सकी है उनके सामान्य ज्ञान के स्तर को माध्यमिक स्कूल के स्तर पर लाने के लिए काम किया जा रहा है। अब यह काम सफलतापूर्वक प्रगति कर रहा है।

इस प्रकार सारी जनता को अध्ययन में लगा कर अतीत में हम इस क्षेत्र में बड़ी सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

हम नई पौध की शिक्षा पर खास तौर पर ध्यान देते हैं।

मेरा विश्वास है कि आप स्कूलों का निरीक्षण करके नौजवानों और बच्चों की स्कूल शिक्षा प्रणाली से भली भांति अवगत हो चुके हैं। इसलिए मैं इस विषय का जिक्र नहीं करूंगा।

हमारे देश में सर्वत्र स्कूल मौजूद हैं और हमारी नई पीढ़ी के सारे सदस्य स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा पा रहे हैं। हमारे देश के राजकीय बजट में स्कूल शिक्षा के विनियोग का बड़ा हिस्सा है। मेरा विश्वास है कि यह बहुत ही अच्छी बात है कि हमारे देश के राजकीय बजट में स्कूली शिक्षा के खर्चे का बहुत बड़ा हिस्सा है।

हमारे स्कूल स्कूली नौजवानों और बच्चों को उच्च विज्ञान और प्रविधि सिखाते हैं।

वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान के बगैर राजकीय आर्थिक और सांस्कृतिक निकायों का सुचारु प्रबंध या संचालन करना या देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाना असंभव है। इसलिए हमने इस बात का आह्वान करते हुए एक सिद्धांत वाक्य प्रस्तुत किया कि 'हर नौजवान, विद्यार्थी और बच्चे को एकाधिक प्रविधि जाननी चाहिए' तथा उनके बीच प्रविधि सीखने के लिए हम एक व्यापक अभियान चला रहे हैं।

नौजवानों, विद्यार्थियों और बच्चों के बीच एकाधिक प्रविधि सीखने के लिए चलाए गए विस्तृत अभियान के फलस्वरूप इस क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण सफलता मिली है।

पहले माध्यमिक स्कूल के स्नातकों को कुशल कामगार बनने के पहले कारखानों में एक या डेढ़ वर्ष तक नौसिखुआ रहना पड़ता था, लेकिन अब वे कारखानों में दाखिल होने के शीघ्र बाद दक्ष कामगार बन जाते हैं इससे हमारे लिए उद्योग के विकास के साथ-साथ दक्ष कामगारों की पांतों को संतोषजनक ढंग से पूरा करते रहना संभव होता है।

हम स्कूली शिक्षा के कार्य में पूर्ण रूप से जूछे की स्थापना के सवाल को सबसे

ज्यादा महत्व देते हैं। स्कूली शिक्षा में जूछे की स्थापना का अर्थ है अपनी चीजों को मुख्य विषयवस्तु बनाकर शिक्षा का संचालन करना, न कि अन्य देशों की चीजों को यंत्रवत अनुकरण करना।

चूंकि हमारे लोग पहले मतांधता या कठमुल्लापन के शिकार हो गए थे, इसलिए उन्होंने काफी बड़े भटकाव दिखाए।

उदाहरणार्थ संगीत में हमारे कलाकारों ने हमारे देश के राष्ट्रीय संगीत को विकसित करने पर ध्यान नहीं दिया और पाश्चात्य संगीत की ओर अत्यधिक झुक गए। संगीत को सदा जनता की सेवा करनी चाहिए और ऐसा संगीत होना चाहिए जिसे हर व्यक्ति समझ और गा सके। कला को कला के लिए विकसित करना बेमानी है।

हम ऐसी कला के विकास की समस्या पर अत्यधिक जोर देते हैं जो जनता की सेवा करती हो, ऐसी कला जो जनता की प्रिय हो। हमारा यह नियम है कि ऐसा गीत लिखा जाय जिसे हर कोई समझ सके और ऐसे संगीत की रचना की जाय जिसे हर कोई गा सके। मैं नहीं जानता कि आपने क्रांतिकारी ऑपेरा, 'रक्त सागर' देखा है या नहीं। वह ऑपेरा सर्वथा लोकप्रिय शैली का है।

साहित्य को साहित्य के लिए नहीं बल्कि जनता को शिक्षित करने के लिए होना चाहिए। इस उद्देश्य से ऐसी कृतियों की रचना की जानी चाहिए जो लोकप्रिय शैली में हों, सुबोध और शिक्षाप्रद हों।

पहले के दिनों में कुछ लोग अपने ज्ञान की शेखी में ऐसी चीजें लिखते थे जिन्हें दूसरों के लिए समझना मुश्किल होता था। वे सोचते थे कि ऐसी चीजें लिखना बड़ी बुद्धिमानी की और ऊंची बात है जो दूसरों की समझ में न आएं। मगर ऐसे लोग दरअसल ज्ञानशून्य हैं और ऐसी रचनाएं ओछी हैं। किसी रचना को तभी अच्छा समझा जा सकता है जब कि हर कोई उसको समझ सके। इसलिए हम सदा ऐसी चीजों के लिखे जाने पर जोर देते हैं जिन्हें जनता के लिए समझना यथासंभव अधिक से अधिक सरल हो।

विज्ञान और प्रविधि के क्षेत्र में भी उसी की स्थापना की जानी चाहिए जिससे कि घरेलु संसाधनों के कारगर उपयोग की शुरूआत की जा सके।

अब हमारे देश के वैज्ञानिक और तकनीशियन ऐसी वैज्ञानिक एवं तकनीकी समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान कर रहे हैं जैसे बिना धूंए वाले कोयले का बेहतर इस्तेमाल करना जो कि हमारे देश में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। चूने के प्रयोग का सदुपयोग करना तथा हमारे देश की प्राकृतिक और भूगर्भीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त बीज पैदा करना। जो वैज्ञानिक और तकनीशियन देश के सारे संसाधनों का सदुपयोग करना जानते हैं उन्हें हम जूछे के मार्गदर्शन में चलने वाले सर्वोत्तम

वैज्ञानिक और तकनीशियन मानते हैं।

पिछले दिनों हमारे वैज्ञानिक अनुसंधानों में जूछे की स्थापना हो जाने के साथ आज हमारा उद्योग मुख्यतः स्वयं अपने कच्चे माल पर निर्भर एक स्वतंत्र उद्योग में बदल चुका है। इसलिए हम कह सकते हैं कि हमारे उद्योग अत्यंत स्थायी हैं।

हम अपने विद्यार्थियों को अपने देश के प्राकृतिक संसाधनों के कारगर उपयोग के लिए वैज्ञानिक अनुसंधानों पर अपना मन लगाने को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें इस प्रकार शिक्षा देते हैं कि वे हमेशा स्वयं अपने मस्तिष्क का उपयोग करें और स्वयं अपने विचार के अनुसार कार्य करें।

मैं आपके एक मित्र के बतौर एक मजाकिया किस्सा सुनाना चाहूंगा।

पहले जिन दिनों हमारे लोगों को जूछे पर आधारित शिक्षा नहीं मिलती थी, उन दिनों उनमें इस बात का विश्वास नहीं था कि वे यूरोपीय लोगों से वालीबाल और फुटबाल खेल सकते हैं। वे कहते कि उन ऊंचे कद के लोगों को नहीं हरा सकते। किंतु जूछे पर आधारित शिक्षा पाने के बाद हमारे लोगों में यह विश्वास पैदा हो गया कि वे खेलकूद में आसानी से ऊंचे कद के लोगों से बढ़-चढ़कर साबित हो सकते हैं तथा उन्हें हराने के लिए पैंतरे निकालने लगे। खेलकूद में जीत या हार बहुत अंशों में इस बात पर निर्भर करती है कि कौन बेहतर पैंतरा खोज निकालता है। छोटे कद के लोग भी अगर तेज-तर्रार पैंतरे खोज निकालें तो हर खेलकूद में जीत सकते हैं।

चूंकि अब तक हमने विद्यार्थियों को खुद बुद्धि का इस्तेमाल करने और अपनी जगह जमे रहने की शिक्षा दी है, इसलिए आज अनेक क्षेत्रों में महान चमत्कार किए जा चुके हैं।

हम स्कूली शिक्षा में शिक्षा को उत्पादनकारी श्रम के साथ संयुक्त करने के सवाल को भी महत्व देते हैं।

स्कूलों में शिक्षा को उत्पादनकारी श्रम के साथ समन्वित करके ही उच्च विज्ञान और प्रविधि से संपन्न सुयोग्य कार्यकर्ता बड़ी संख्या में तैयार किए जा सकते हैं। अगर विद्यार्थियों को उत्पादनकारी श्रम से दूर रहकर मात्र पुस्तकों तक सीमित रखा जाता है तो वे यथार्थ से कटे हुए 'किताबी कीड़े' मात्र रह जाएंगे। हम स्कूलों में शिक्षा को उत्पादनकारी श्रम के साथ घनिष्ठ रूप से समन्वित करते हैं। जिससे विद्यार्थी ऐसे रास्ते पर न चल सकें।

उत्पादनकारी श्रम में सक्रिय भाग लेकर आज हमारे विद्यार्थी जो कुछ सीख चुके हैं उसे न सिर्फ पुख्ता करते हैं बल्कि हमारे देश की परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मशीनीउपकरणों के आविष्कार के लिए अनुसंधान कार्य करते हैं। खदान और धातु कालेजों के विद्यार्थी खदानों में जाते हैं और स्वयं उत्पादनकारी श्रम में भाग लेकर हमारी खदानों की परिस्थितियों के लिए उपयुक्त खनन मशीनों का आविष्कार

करने की कोशिश करते हैं। कृषि कालेजों के विद्यार्थी ग्रामीण जिलों में जाते हैं और किसानों के साथ काम करते हुए हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल कृषि यंत्रों के आविष्कार के लिए अनुसंधान कार्य करते हैं। विदेशी कृषि यंत्र हमारे देश की परिस्थितियों के अनुकूल नहीं होते। हमने जापान और इटली और फ्रांस से धान रोपाई की मशीनें खरीदीं और उन्हें आजमाया मगर उनमें से कोई भी हमारी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त नहीं थी। अब हमारे कृषि कालेजों के विद्यार्थी हमारे देश की परिस्थितियों के लिए उपयुक्त कार्यक्षम कृषि मशीनों के आविष्कार और निर्माण के लिए मगजपच्ची करते हैं।

मतांधता या कठमुल्लापन का विरोध करने और जूछे की स्थापना करने में शिक्षा और उत्पादनकारी श्रम का समन्वय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

पिछले दिनों हमने अध्ययन के लिए अनेक विद्यार्थियों को दूसरे देशों को भेजा। विदेशों में अध्ययन करके लौटने के बाद उन लोगों ने उन देशों के तौर-तरीकों का यांत्रिक ढंग से अनुसरण करना चाहा। मगर जिन विद्यार्थियों ने स्वदेश में सीधे उत्पादनकारी समाज में मजा लेते हुए अध्ययन किया था, उन्होंने यह प्रत्यक्ष अनुभव किया कि विदेशी पुस्तकों में जो लिखा था वह हमारे देश की परिस्थितियों के अनुरूप नहीं था। इसीलिए उन्हें विदेशी बातों का यंत्रवत् आयात नहीं करना चाहिए।

जिन कालेज के विद्यार्थियों ने स्वदेश में सीधे उत्पादनकारी श्रम में भाग लेते हुए अध्ययन किया वे उन विद्यार्थियों से कहीं ज्यादा उपयोगी हैं जो विदेश में अध्ययन करके वापस आए थे। इसलिए शिक्षा को उत्पादनकारी श्रम के साथ समन्वित करना नौजवानों और बच्चों के बीच जूछे की प्रतिष्ठापना करने और अपने देशवासियों की बेहतर सेवा करने के लिए उनका मार्गदर्शन करने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को उत्पादनकारी श्रम के साथ समन्वित करते समय हमारे स्कूल विद्यार्थियों को श्रम-प्रेम की शिक्षा-दीक्षा देने में गहरी दिलचस्पी दिखाते हैं।

समाज की समस्त संपदा की सृष्टि श्रम द्वारा होती है। इसलिए हर किसी को श्रम को प्यार करने की शिक्षा देना एक महत्वपूर्ण कार्य है। तकनीकी क्रांति को त्वरित कर के जब हम यंत्रीकरण और स्वचालन संपन्न कर लेंगे तो मेहनतकश कठिन और कठोर श्रम से मुक्त हो जाएंगे तथा मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच के भेद दूर हो जाएंगे। किंतु स्वयं श्रम कभी समाप्त नहीं होगा। अगर लोगों में श्रम के प्रति अरुचि को बढ़ावा दिया जाता है तो समाज की संपदा नहीं बढ़ाई जा सकती और कालांतर में देश विनाश के गर्त में जा गिरेगा।

इसी कारण हमने अभी तक स्कूलों को यह दिशा दी है कि वे विद्यार्थियों को श्रम के लिए प्रेम की शिक्षा देने का कार्य अथक रूप में करें। परिणामतः हमारे स्कूलों में नौजवान और बच्चे उन लोगों से घृणा करते हैं जो श्रम के प्रति अरुचि

रखते हैं तथा देश और जनता के लिए और अधिक कार्य करने में सम्मान अनुभव करते हैं। मेरा विश्वास है कि यह बहुत अच्छी बात है।

हमें इस बात का भी चिंतन रहता है कि स्कूली नौजवानों और बच्चों को राज्य और समाज की आम संपत्तियों को मूल्यवान समझने और उनकी देखरेख करने की शिक्षा दी जाए।

समाजवादी समाज में लोगों को सामूहिक संपत्तियों को मूल्यवान समझने और उनकी देखरेख करने की शिक्षा देना एक अत्यंत महत्वपूर्ण सवाल है। हमारा उत्पादन और निर्माण कितने ही बड़े पैमाने पर क्यों न हो, वह बेकार है अगर हम उन्हें लापरवाही से बरतते हैं तथा नष्ट और बरबाद करते हैं।

हमने इस बात का ध्यान रखा है कि स्कूलों में 'स्वास्थ्य रक्षकों' 'हरीतिमा रक्षकों' आदि का व्यापक तौर पर संगठन किया जाए जिससे हमारी युवा पीढ़ी अपने बचपन से ही राज्य और समाज की आम संपत्ति को मूल्यवान समझने और उनकी देखरेख करने की अभ्यस्त हो जाए तथा राज्य और समाज के लाभ के लिए व्यापक तौर पर 'सदाचरण आंदोलन' चलाए।

आज हमारे विद्यार्थियों में राज्य और समाज की सामूहिक संपत्तियों को मूल्यवान समझने और उनकी देखरेख करने की भावना अत्यधिक बलवती है। अगर डेस्क और कुर्सियां टूट जाती हैं तो वे स्वयं फौरन उनकी मरम्मत कर देते हैं और कक्षाओं को साफ-सुथरा रखने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करते हैं।

एक माध्यमिक स्कूल की एक घटना बताई जाती है : एक संवाददाता वहां गया और कक्षाओं को घूम-घूम कर देखते समय उसने कुछ दर्ज करने के लिए अपनी पेंसिल की नोक बारीक करनी शुरू कर दी। यह देख एक विद्यार्थी दौड़ते हुए उसके पास पहुंचा और पेंसिल के नीचे अपनी दोनों हथेलियां लगा दीं जिससे छीलन को अपने हाथ में ले ले। उस संवाददाता पर, जो पेंसिल छील रहा था, सहज ही इसका मार्मिक प्रभाव पड़ा।

अगर विद्यार्थियों को उचित शिक्षा-दीक्षा देनी है तो स्वयं अध्यापकों को उच्च विज्ञान और प्रविधि के ज्ञान से संपन्न होना चाहिए और उनको क्रांतिकारी भावना और मजदूर वर्ग चेतना से अनुप्राणित होना चाहिए।

अध्यापक मात्र विद्यार्थियों को पढ़ाने वाले वेतनभोगी नहीं हैं बल्कि भावी समाजवादी निर्माताओं को दीक्षित करने वाले क्रांतिकारी हैं। इस कारण हम इस बात के लिए पुरजोर ढंग से कोशिश करते हैं कि अध्यापक उच्च विज्ञान और प्रविधि का ज्ञान अर्जित करें तथा स्वयं को क्रांतिकारी भावना और मजदूर वर्ग चेतना से अनुप्राणित करें।

इसके बाद आपने मुझसे पूछा था कि क्या मुझे जापान के कोरियाई नागरिकों

और जापानवासियों से कुछ कहना है। इस विषय पर मैं चंद शब्द कहूँगा।

आज जापान स्थित कोरियाई नागरिक जापानी जनता के साथ मिल कर सफलतापूर्वक संयुक्त संघर्ष चला रहे हैं। यह सही है कि जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों के लिए खास अपने कार्य क्षेत्र हैं। किंतु चूंकि वे जापान की धरती पर रहते हैं, वे तब तक संघर्ष में सफलता नहीं प्राप्त कर सकते जब तक वे उसे जापानी जनता के साथ संयुक्त रूप से नहीं चलाते। हमें यह देखकर अत्यधिक हर्ष है कि जापान के कोरियाई नागरिक जापानी जनता के साथ मिलकर सफलतापूर्वक संघर्ष कर रहे हैं तथा मैं उनके संघर्ष में और अधिक भावी सफलताओं की कामना करता हूं।

आज जापान में अमरीकी साम्राज्यवाद के पुछल्ले प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ तथा जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान के खिलाफ जनता और प्रगतिशील जनवादी व्यक्तियों का संघर्ष उत्तरोत्तर उच्चतर होता जा रहा है। जापानी जनता का यह संघर्ष कोरियाई जनता के लिए सहायक है और जापान स्थित कोरियाई नागरिकों के लिए सहायक है।

आज जापान में कोरियाई जनता के प्रति मैत्रीपूर्ण और सौहार्दपूर्ण प्रगतिशील जनवादी विभूतियों तथा हमारे प्रति सहानुभूति और समर्थन व्यक्त करने वाले लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष की बात है। खास तौर पर हाल में जापान में कोरियाई जनता के साथ मैत्री के उद्देश्य से 'जापान कोरिया मैत्री संवर्द्धन संबंधी संसदीय लीग' गठित की गई और हमारे देश के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करने के लिए व्यापक आंदोलन मौजूद है। जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों के संघर्ष के लिए यह बहुत बड़ा समर्थन और प्रोत्साहन है।

चूंकि जापान में जापानी जनता और व्यापक जनवादी शक्तियों का और आगे विस्तार हो रहा है और दिन-प्रतिदिन उनकी शक्ति बढ़ती जा रही है, इसलिए जापानस्थित कोरियाई नागरिक किसी भी दृष्टि से अकेले नहीं हैं। जापान में रहने वाले कोरियाई नागरिकों का संघर्ष साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावादी शक्तियों के खिलाफ जापानी जनता के न्यायपूर्ण संघर्ष से जुड़ा हुआ है। इसीलिए जापान के कोरियाई नागरिकों के संघर्ष की राह में जापानी प्रतिक्रियावादी शक्तियों द्वारा उत्पन्न की जाने वाली विभिन्न प्रकार की रुकावटों के बावजूद हमें पूर्ण विश्वास है कि वे अपने सघर्ष में अवश्य विजयी होंगे।

जापान-स्थित कोरियाई नागरिक भविष्य में भी जापानी जनता के साथ सफलतापूर्वक संयुक्त संघर्ष चलाएंगे जिससे वे जनवादी राष्ट्रीय अधिकारों की रक्षा करने और राष्ट्रीय शिक्षा को और अधिक विकसित करने तथा मातृभूमि के स्वतंत्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण को आगे बढ़ाने के लिए संघर्ष में और अधिक सफलताएं प्राप्त कर सकें।

मेरा विचार है कि अगर जापान के कोरियाई नागरिक और जापान की व्यापक जनवादी शक्तियां मिल कर संयुक्त संघर्ष चलाने में सफल हो जाएं तो निकट भविष्य में ही जनवादी जन गणतंत्र कोरिया और जापान के बीच राज्यगत संबंध सुधारे जा सकते हैं और दोनों देशों के बीच अच्छे पड़ोसियों के रिश्ते अपेक्षाकृत शीघ्र कायम हो सकते हैं। अगर शुरूआती तौर पर दोनों देशों के बीच कम से कम व्यक्तियों का आवागमन होने लगे तो हमारी जनता और जापानी जनता के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध और भी विकसित हो जाएंगे।

मैं श्री इचिओ आसुकाता के नेतृत्व में जापानी समाजवादी महापौरों के प्रतिनिधि मंडल द्वारा अपने देश की वर्तमान यात्रा को भविष्य में हमारी जनता के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के और अधिक विकास की पूर्वशर्त और शुभ लक्षण मानता हूँ।

समाचारों के अनुसार जापानी विदेशी मंत्रालय का कहना है कि अगर कोरिया वाले कला मंडली भेजने को तत्पर हों तो वह उसका स्वागत करेगा। मेरे विचार से यह भी दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास की दृष्टि से एक शुभ लक्षण है।

और यह भी कोरिया और जापान के बीच संबंधों के विकास में एक बड़ी प्रगति का सूचक है कि जापान में खोंगरियोन की केंद्रीय स्थायी समिति के उपाध्यक्ष लि ग्ये बाएक के नेतृत्व में कोरियावासियों के अभिनंदन दल को स्वदेश की यात्रा के बाद जापान वापस जाने का अधिकार मिल गया।

कोरियाई कहावत है कि "अच्छी शुरूआत, काम आधा।" अब कोरिया और जापान के बीच व्यक्तियों का आवागमन शुरू होने के बाद भविष्य में पारस्परिक आवागमन और संपर्क और बढ़ जाएगा। फिर दोनों जनगण के बीच सौहार्द्र और गहन हो जाएगा। इसलिए हमारे दोनों देशों के बीच संबंधों के विकास का भविष्य सर्वथा उज्ज्वल है, और निराशा के लिए कोई आधार नहीं।

मेरा आपसे अनुरोध है कि स्वदेश वापस जाकर आप खोंगरियोन के अध्यक्ष हान दोक सु और अन्य अग्रणी कार्यकर्त्ताओं को तथा जापान के समस्त कोरियाई नागरिकों को हमारा अभिनंदन पहुंचाएं।

और मेरा अनुरोध है कि जापान समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष नारिता, उपाध्यक्ष आकामात्सु और अन्य अग्रणी कार्यकर्त्ताओं को, श्री जुनि कुनो, श्री मिनोबा और उन अन्य सारे विद्वानों और प्रगतिशीलों के प्रति जो कोरिया के प्रति हमदर्द रहे हैं, तथा संपूर्ण जापानी जनता के प्रति मैं कोरियाई जनता की ओर से शुभ कामनाएं उन तक पहुँचाऊं।

और मेरा अनुरोध है कि आप 'असाही शिम्बुन' के प्रधान संपादक श्री गोतो को, जो पिछले साल मेरे देश आए थे, तथा जापान के समाचार पत्रों के उन सारे

प्रगतिशील लोगों को भी जिन्होंने हमारे देश के प्रति सहानुभूति की भावना रखते हुए बहुत काम किया है, मेरा स्मरण दिलाएं।

इसके बाद मैं कोरियाई और जापानी जनगण के बीच मैत्री और एकता सुदृढ़ करने से संबंधित समस्याओं को उठाऊंगा।

मैं समझता हूं, यह बहुत ही अच्छी चीज है कि आपने हमारे देश के नगरों और जापान के नगरों के बीच, खास तौर से उन नगरों के बीच जहां समाजवादी महापौर हैं, नगर-बंधुता के संबंध कायम करने का प्रस्ताव रखा है। हमारे देश के नगरों और जापानी नगरों के बीच नगरबंधुता के संबंध कायम करने से कोरियाई और जापानी जनगण को एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलेगी ओर दोनों जनगण के बीच मैत्री और एकता को सुदृढ़ करने में सफलता मिलेगी।

हम अपने देश के नगरों और जापानी नगरों के बाच नगरबंधुता के संबंध कायम करने के आपके प्रस्ताव की पूरी तरह ताईद करते हैं। यह तय करने के लिए कि किन-किन नगरों के बीच आपस में नगरबंधुता के संबंध होंगे, विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंधों की कोरियाई सोसाइटी के साथ ठोस राय-मशविरा वांछनीय होगा।

आपका यह प्रस्ताव भी एक अच्छी चीज है कि हमारे देश और जापान के इलाकों के बीच खुले आर्थिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आदान-प्रदान हों।

हम सुनते हैं कि चूंकि जापान के पास कच्चे लोहे का अभाव है, इसलिए वह इसे आस्ट्रेलिया और दक्षिण अमरीका तक से खरीदता है। हमारे देश में खनिज लोहे का अक्षय भंडार है। हाल में हमारे भूगर्भीय अन्वेषण कार्यकर्ताओं ने पश्चिमी क्षेत्र में और उत्तरी अंतर्देशीय क्षेत्र में कच्चे लोहे के नये भंडार खोज निकाले हैं जो अनुमानतः अरबों टन हैं। हमारे देश में सर्वत्र कच्चे लोहे के प्रचुर भंडार पाए जाते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि हम अपने देश में बहुतायत से पाया जाने वाला कच्चा लोहा जापान को उतना बेच सकते हैं जितना वह लेना चाहे।

और बहुत-सी ऐसी चीजें हैं जिन्हें हम जापान से खरीदना चाहते हैं। चूंकि हमारे देश में कपास की अच्छी पैदावार नहीं होती, इसलिए हम नरकुल, काठ और चूना-पत्थर से धागे तैयार करते हैं। हमारी योजना भविष्य मे पेट्रोल से रासायनिक रेशे तैयार करने की है। किंतु हम अभी ऐसे रासायनिक रेशे के कारखाने के लिए उपकरण स्वतः नहीं तैयार कर सकने। हमें आशा है कि जापान से हम ऐसे कारखाने के उपकरणों का आयात कर सकेंगे। किंतु चूंकि अभी तक जापान के साथ हमारा कोई व्यापारिक संबंध नहीं है, इसलिए हमें फ्रांस और ब्रिटेन जैसे दूरस्थ देशों से इसका आयात करना पड़ता है।

आपने मुझसे पूछा कि क्या माहीगिरी के क्षेत्र में आदान-प्रदान संभव है।

इसके लिए भी मेरा उत्तर हां में है। आजकल हमारे देश में सालाना लगभग दस लाख टन सागरीय खाद्यों की पैदावार है। हमारी जनसंख्या को देखते हुए यह कोई छोटी चीज नहीं है। मगर हम सागरीय खाद्यों की प्रोसेसिंग में कुशल नहीं हैं। इसलिए हम समझते हैं कि सागरीय खाद्यों की प्रोसेसिंग के क्षेत्र में जापान के साथ तकनीकी आदान-प्रदान कर सकते हैं।

आपने यह विचार व्यक्त किया कि दोनों देश कृषि संबंधी अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। और मुझे यह बात बहुत ही दिलचस्प मालूम होती है। कृषि के क्षेत्र में भी हमारे दोनों देशों को एक-दूसरे से बहुत-सी बातें सीखनी हैं। दोनों देशों के बीच कृषि संबंधी अनुभवों का आदान-प्रदान करके एक-दूसरे से सीखना मुश्किल नहीं है।

हमारे देश के स्कूलों और जापानी स्कूलों के बीच भी आदान-प्रदान किया जा सकता है। हमारे देश और जापान के स्कूलों के बीच इस प्रकार मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना जिससे कि विद्यार्थी आपस में पत्रों और कक्षा के कार्यों का आदान-प्रदान कर सकें और एक-दूसरे से संपर्क स्थापित कर सकें, बुरी नहीं, बहुत अच्छी बात है।

आपने कहा कि आप प्योंगयांग नगरपालिका जन समिति के अध्यक्ष को आमंत्रित करेंगे। हम इसके विरुद्ध नहीं। मैं समझता हूं, यह अच्छी बात है कि आप कोरियाई और जापानी जनगण के बीच मैत्री और एकता के लिए प्योगयांग नगरपालिका जन समिति के अध्यक्ष को आमंत्रित कर रहे हैं। चूंकि प्योगयांग नगरपालिका जन समिति के अध्यक्ष इस समय यहां उपस्थित नहीं हैं, इसलिए मैं उनकी जगह नहीं बोल सकता, पर मैं समझता हूं वे आपके निमंत्रण को अस्वीकार नहीं करेंगे।

अंत में, ओकीनावा की वापसी के सवाल पर मैं चंद शब्द कहना चाहूंगा।

हमने इस मामले का गहराई से अध्ययन नहीं किया है। हो सकता है, आप इस विषय में हमसे ज्यादा जानकारी रखते हों।

हमें इस बात में संदेह है कि ओकीनावा सचमुच जापानी जनता को वापस कर दिया जाएगा। अगर अमरीकी साम्राज्यवादी ओकीनावा में अपने सैनिक अड्डे कायम रखते हैं और आक्रामक युद्ध के लिए उसका इस्तेमाल करते हैं तो वस्तुतः इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि ओकीनावा जापानी जनता को वापस कर दिया गया; और इसका कोई महत्व नहीं है।

हमें ऐसा मालूम होता है कि अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा ओकीनावा का जापान को वापस किया जाना जापानी जनता और अन्य एशियाई जनगण को झांसा देने के लिए सातो और निक्सन द्वारा अपनी गुप्त वार्ताओं में ईजाद की गई बाजीगरी चाल भर है। जैसा कि आप जानते हैं, निक्सन दुनिया के लोगों की आंखों में धूल झोंकने

के लिए बाजीगरी के तमाम खेलों पर हाथ आजमा रहे हैं। हमारे विचार से ऐसा मालूम होता है कि ओकीनावा की वापसी के सवाल पर भी निक्सन और साते एक तरह का हाथ दिखा रहे हैं। यह देखना बाकी है कि वे कौन-सा जादू दिखा रहे हैं।

हमारा विचार है कि ओकीनावा सचमुच जापानी जनता को वापस कर दिया जाना चाहिए और उनके हित के लिए उसको इस्तेमाल होना चाहिए। ओकीनावा को किसी भी दशा में एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों के आक्रामक सैनिक अड्डे के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए।

हम सदा जापानी जनता के दृष्टिकोण और संघर्ष का समर्थन करते हैं क्योंकि जापान के प्रश्न को जापानी जनता बेहतर जानती है। ओकीनावा की वापसी के प्रश्न पर भी हम अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी प्रतिक्रियावादियों द्वारा की जा रही ओकीनावा की वापसी की चकमेबाजी के खिलाफ आपके संघर्ष का सक्रिय समर्थन करते हैं।

आपके प्रश्नों के उत्तर में मैं संक्षेप में यही कुछ कहना चाहता था।

अमरीकी समाचार पत्र न्यू यार्क टाइम्स के पत्रकारों से बातचीत

२६ मई १९७२

मुझे विश्वास है कि आपने स्वयं देख और समझ लिया होगा कि यहाँ हमारे देश में अमरीका के प्रति कोरियाई जनता की भावनाएं क्या हैं।

उसमें अमरीका के प्रति अच्छे मनोभाव नहीं हैं। हमारी जनता में बड़ी सख्त अमरीका-विरोधी भावनाएं हैं। शायद कोरियाई जनता की इस भावना से आप अमरीकियों को क्षोभ हुआ हो।

यह स्वाभाविक है कि अमरीका के प्रति कोरियाई जनता की भावनाएं बुरी हों। अमरीकी साम्राज्यवाद वह आक्रमणकारी है, जिसने हमारे देश पर धावा किया। कोई भी जनता ऐसे आक्रमणकारी के प्रति, जो उनके देश पर चढ़ाइयां करता हो, अच्छे मनोभाव नहीं रख सकती, कि रख सकती है ?

कोरियाई जनता की अमरीका-विरोधी भावनाएं इसलिए और अधिक बिगड़ीं कि उसको पितृभूमि मुक्ति युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों बहुत भारी क्षति उठानी पड़ी।

इस युद्ध में हमारी जनता को अमरीकी साम्राज्यवादियों के बर्बर आक्रामक कृत्यों के कारण सचमुच भारी क्षति भोगनी पड़ी। मेरा विश्वास है कि कोई भी कोरियाई ऐसा नहीं था, जिसको पितृभूमि मुक्ति युद्ध में कोई क्षति न उठानी पड़ी हो। प्रत्येक कोरियाई को किसी न किसी रूप में हानि सहनी पड़ी। अगर उसने व्यक्तिगत रूप से नहीं भोगी तो कम से कम उसके परिवार या रिश्तेदारों या मित्रों को भोगनी पड़ी।

उदाहरण के लिए प्योंग्यांग को लीजिए। अमरीकी साम्राज्यवादियों की अंधाधुंध बमबारी से चंद ही मकान साबुत बचे; पूरा शहर पूरी तरह ढेर हो गया और हजारों लोग निर्मम रूप से मारे गए। यही बात वोनसान, हामहंग और अन्य नगरों के बारे में सच थी। युद्ध के अंतिम दिनों में हमारे गांव भी जलकर खाक हो गए।

जिस कोरियाई जनता को अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों ऐसी भारी

क्षति भोगनी पड़ी हो, वह अमरीका के प्रति अच्छे मनोभाव नहीं रख सकती ।

युद्ध-विराम के बाद भी अमरीका ने हमारे देश के प्रति निरपवाद रूप से अमैत्रीपूर्ण रूख रखा ।

युद्ध-विराम समझौते में कोरियाई प्रश्न को शांतिपूर्ण उपायों से हल करने के लिए युद्ध के तुरंत बाद एक राजनीतिक सम्मेलन आयोजित करने की व्यवस्था थी । किंतु अमरीका ने इस व्यवस्था का पालन नहीं किया । फलतः हमारा देश आज भी युद्ध-विराम की स्थिति में है । अभी तक कोई शांति समझौता नहीं हुआ और कोरियाई प्रश्न को शांतिपूर्वक तय करने के प्रयत्नों में कोई प्रगति नहीं हुई । इसलिए मैं सदा अपनी जनता से कहता हूं कि हमारी पीढ़ियां बदल रही हैं, मगर हमारे संघर्ष के लक्ष्य वही बने हुए हैं ।

अमरीकी अधिकारियों ने युद्ध-विराम समझौते का उल्लंघन करते हुए हमारे देश के विरुद्ध आक्रमणकारी गतिविधियां जारी रखी हैं । 'प्यूबलो' कांड के बाद भी, अमरीका इस देश की विमानों से टोह लेता रहा है । इससे हमारा देश लगभग सतत युद्ध-स्थिति में बना हुआ है ।

चूंकि मुठभेड़ों के रुक जाने के बाद भी यह युद्ध-स्थिति जारी है, हम सुरक्षा निर्माण तेज़ करने और इस क्षेत्र में बड़े पैमाने पर खर्च करने के लिए मजबूर हुए हैं । स्पष्ट कहा जाय कि सुरक्षा निर्माण पर भारी खर्चे का जनता के रहन-सहन के स्तर पर कुछ बुरा प्रभाव पड़ा है । हमारी जनता समझती है कि इसका कारण भी अमरीका ही है ।

इस प्रकार हमारी जनता में सख्त अमरीका-विरोधी भावनाएं हैं तो इसलिए कि उन्हें पितृभूमि मुक्ति युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों के हाथों भारी क्षति भोगनी पड़ी और इसके अतिरिक्त उनमें अमरीका के प्रति दुर्भावनाएं हैं तो इसलिए कि अमरीकी साम्राज्यवादी इस देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रहे और युद्ध के बाद विराम समझौते का उल्लंघन कर आक्रामक गतिविधियां करते रहे ।

चूंकि स्थिति तनावपूर्ण है, इसलिए हम युद्ध की तैयारियाँ तेज किए बिना नहीं रह सकते । हम इसको बिल्कुल नहीं छिपाते । कौन गारंटी कर सकता है कि अमरीकी साम्राज्यवादी इस देश पर पुनः हमला नहीं करेंगे ? न आप कर सकते हैं, और न मैं, और न कोई और । इसलिए हम खुले आम युद्ध की तैयारी कर रहे हैं ताकि शत्रु के आक्रमण से अपने देश की रक्षा कर सकें ।

हमारी युद्ध-तैयारियों में जो अत्यंत महत्वपूर्ण है वह है अपनी सारी जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद से नफरत करना सिखाना । अन्यथा हम इन अमरीकी साम्राज्यवादियों को परास्त नहीं कर सकेंगे, जो अपनी तकनोलोजी-श्रेष्ठता की डींग हाँकते हैं ।

इसलिए हम जनता में अमरीकी साम्राज्यवाद से घृणा-भाव भरने के लिए सैद्धांतिक शिक्षा तेज कर रहे हैं। मेरा ख्याल है कि जनता को अमरीकी साम्राज्यवाद से घृणा करने की शिक्षा देना हमारे लिए अत्यंत स्वाभाविक और सही है। सिर्फ इसलिए कि आप लोग यहां आ रहे हैं, हम वह अमरीका-विरोधी शिक्षा बंद कर दें जो हम अभी तक देते आ रहे हैं या इस तथ्य को छिपाएं कि हम उन्हें अमरीका-विरोधी भावना की शिक्षा दे रहे हैं, तो हमें इसकी आवश्यकता नहीं है, या है?

अमरीका के प्रति हमारी जनता की दुर्भावनाओं को आपको समझना चाहिए।

आपने अभी कहा कि आप आशा करते हैं कि हमारे देश तथा अमरीका के बीच इस असामान्य स्थिति में सुधार होगा। हम भी यही आशा करते हैं। हम बहुत से शत्रु नहीं बनाना चाहते।

अब मुझे कुछ प्रश्नों का उत्तर देने दीजिए, जो आपने उठाए हैं।

प्रारंभ में, मैं जनवादी जन गणतंत्र कोरिया तथा अमरीका के बीच संबंधों के प्रश्न को लेना चाहता हूं।

आपने पूछा है कि कोरिया और अमरीका के बीच असामान्य स्थिति को समाप्त करने के लिए कौन से सकारात्मक कदम उठाए जाने चाहिएं? हमारी राय में यह बड़ा ही सरल मामला है।

हमारे देश और अमरीका के बीच संबंध पूर्णतया अमरीकी सरकार के रुख पर निर्भर करते हैं। अगर वह हमारे प्रति अपनी नीति बदलती है तो हम भी अमरीका के प्रति वही करेंगे।

अगर अमरीकी सरकार हमारे देश के साथ अपने संबंध सुधारना चाहती है तो उसको सबसे पहले हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बंद करना चाहिए, ताकि कोरियाई जनता कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न को स्वतंत्रतापूर्वक तय कर सके। हमारे देश में युद्ध विराम समझौते को हुए लगभग बीस वर्ष हो चुके हैं। अमरीकी फौजें 'संयुक्त राष्ट्र की फौजों' के बाने में क्यों दक्षिणी कोरिया पर अधिकार बनाए हुए हैं? कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि अमरीकी फौजें दक्षिणी कोरिया को बचाने के लिए पड़ी हुई हैं, क्योंकि हम 'दक्षिण पर धावा' कर सकते हैं। यह झूठ है। हम बार-बार घोषित कर चुके हैं कि हमारा 'दक्षिण पर धावा' करने का कोई इरादा नहीं है। अब इस स्थिति का अंत करने का समय आ गया है, जिसमें फौजें 'संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं' के झंडे के नीचे खड़ी होकर दक्षिणी कोरिया में पुलिस का काम कर रही हैं।

अमरीकी सरकार हमें सिर्फ इस कारण ही चिंतित नहीं बनाती है कि वह दक्षिणी कोरिया में अपनी सेनाएं तैनात किए हुए है, बल्कि इसलिए भी कि वह जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान में सहायता दे रही है। हम जापानी सैन्यवाद के

पुनर्जीवित किए जाने में अमरीकी सहायता से प्रसन्न नहीं हैं। १९६९ में प्रकाशित निक्सन-सातो संयुक्त विज्ञप्ति से पता चलता है कि अमरीका कोरियाई आक्रमण के लिए एजेंट के रूप में जापानी सैन्यवाद को दक्षिणी कोरिया में ला रहा है और उसको हमारे देश के आंतरिक मामलों में दखलंदाजी के लिए उभार रहा है। संयुक्त विज्ञप्ति के प्रकाशन के बाद सातो ने खुलेआम घोषणा की कि वह कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करेगा। यह हमारे देश के प्रति अमरीकी सरकार के अमैत्रीपूर्ण रुख का एक और पहलू है।

संयुक्त राष्ट्र के मामले में भी अमरीकी सरकार इस देश के प्रति अवांछित रुख ले रही है। अमरीकी सरकार दक्षिणी कोरिया को संयुक्त राष्ट्र में आने का निमंत्रण बिना शर्त दिए जाने की वकालत करती है। मगर हमें निमंत्रण दिए जाने के बारे में शर्तें लगाती है। उसका आरोप है कि हम संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र का सम्मान नहीं करते, जब कि हमने कभी उसका उल्लंघन या उपेक्षा नहीं की। अमरीका का आग्रह है कि वह हमें संयुक्त राष्ट्र सहासभा में भाग लेने की इजाजत देगा बशर्ते हम कोरियाई प्रश्न पर उस अवैधानिक प्रस्ताव को स्वीकार करें, जिसको संयुक्त राष्ट्र में पास किया गया था। इस शर्त पर हम संयुक्त राष्ट्र महासभा में कैसे जा सकते हैं? इसके अतिरिक्त अमरीका 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास संबंधी संयुक्त राष्ट्र आयोग' को झूठ और मनगढ़ंत बातों से भरी वार्षिक रिपोर्ट देने के लिए उभारता है और हमारे विरुद्ध अमैत्रीपूर्ण प्रचार करता है।

चूंकि अमरीकी सरकार ने हमारे देश के प्रति निरपवाद रूप से यह अमैत्रीपूर्ण नीति बरती है, इसलिए कोरिया-अमरीका संबंधों में कोई सुधार नहीं हुआ और हमारे देश के पुनरेकीकरण में भारी बाधा पड़ी।

अगर अमरीका हमारे देश से संबंध सुधारना चाहता है तो उसको हमारे आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने से बाज आना चाहिए ताकि कोरियावासी स्वयं अपने प्रयत्नों से अपने देश का पुनरेकीकरण कर सकें, 'संयुक्त राष्ट्र सेना' के बाने में जमी हुई अमरीकी फौजों को वापस बुला लेना चाहिए और 'कोरिया के एकीकरण तथा पुनर्वास संबंधी संयुक्त राष्ट्र आयोग' को भंग कर देना चाहिए। उसको कोरियाई राष्ट्र के विभाजन को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए, बल्कि उसके पुनरेकीकरण का समर्थन करना चाहिए। अगर अमरीका हमारे देश को विभाजित रखता है, तो अमरीका के प्रति हमारा रुख कभी नहीं बदलेगा। आज कोरियाई प्रायद्वीप दो भागों में विभाजित है। अगर अमरीकी सेनाएं दक्षिणी कोरिया से चली जाएं और विदेशी हस्तक्षेप रुक जाए तो कोरियावासी ऐसा सामान आधार खोज लेंगे, जिससे वे स्वयं अपने बल पर अपने देश का एकीकरण करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त, अगर अमरीकी सेना दक्षिणी कोरिया से बाहर चली जाएं तो मेरा ख्याल

है कि कोरियाई जनता बिना किसी कठिनाई के आपसी सद्भावना पैदा कर लेगी और हमारी जनता की अमरीका विरोधी भावनाएं धीरे-धीरे शांत हो जाएंगी।

अपनी चीन-यात्रा के दौरान विशाल दीवार देखते हुए अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन ने कहा था कि राष्ट्रों को विभाजित करने वाली दीवारों को गिरा दिया जाना है। अगर अमरीकी सरकार इन शब्दों पर अमल करना चाहती है तो उसे कोरिया से शुरू करना चाहिए। इन दिनों निक्सन घोषणा करते हैं कि वे चीन तथा सोवियत संघ से संबंध सुधारने जा रहे हैं। तब वे दक्षिणी कोरिया में अपने सैनिक अड्डे क्यों रखते हैं? अमरीका तर्क देता है कि वह कम्युनिस्ट विस्तार रोकने के लिए दक्षिणी कोरिया में सैनिक अड्डे कायम रखता है। अब चूंकि अमरीका बड़े समाजवादी देशों से अच्छे संबंध बनाने जा रहा है, इसलिए मेरा ख्याल है कि दक्षिणी कोरिया में फौजी अड्डे कायम रखने के लिए उसके पास कोई आधार नहीं है। इसलिए अमरीका को यथासंभव शीघ्र अपने सारे सैनिक अड्डे तोड़कर और अपनी आक्रमणकारी सेना वापस ले जाकर दक्षिणी कोरिया छोड़ देनी चाहिए।

अगर अमरीका हमारे देश से अपने संबंध बेहतर बनाना चाहता है तो उसको जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान में सहायता देना और उसको दक्षिणी कोरिया में लाना भी बंद करना चाहिए। अमरीका दक्षिणी कोरिया में हमले के लिए और दक्षिणी कोरिया को जापान के माल का बाजार, उसका उपांग बनाने के लिए जापानी सैन्यवाद को अपने एजेंट के रूप में खड़ा करने का प्रयत्न कर रहा है। यह हमारी जनता के विरुद्ध एक अमैत्रीपूर्ण और शत्रुतापूर्ण कार्य है। अमरीकी सरकार को हमारे देश के खिलाफ यह अमैत्रीपूर्ण कार्रवाई बंद करनी चाहिए।

अगर अमरीकी सरकार हमारे देश के खिलाफ सहानुभूति-शून्य गतिविधियाँ त्याग देती है और हमारे राष्ट्रीय पुनरेकीकरण में बाधा डालना बंद कर देती है तो हमारे अमरीका के विरुद्ध रहने का कोई कारण नहीं होगा। इसलिए हम कहते हैं कि अमरीका और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के संबंध हमारे ऊपर निर्भर नहीं करते, बल्कि पूर्णतया अमरीकी सरकार के रुख पर निर्भर हैं। भविष्य में अमरीका हमारे देश की ओर क्या नीति बरतता है, इसको हम गौर से देखते रहेंगे।

अमरीकी सरकार को न सिर्फ बड़े देशों से, बल्कि छोटे देशों से भी संबंध सुधारने चाहिए। हम नहीं समझते कि बड़े देशों से अमरीकी संबंध सुधरने से छोटे देशों से उसके संबंधों पर कोई बड़ा प्रभाव पड़ेगा। लेकिन अमरीकी सरकार ने छोटे देशों से अपने संबंधों में अपने पिछले रुख में अभी तक कोई परिवर्तन नहीं किया है।

चीनी लोक गणतंत्र और अमरीका की संयुक्त विज्ञप्ति में अमरीका ने घोषित किया था कि वह कोरियाई प्रायद्वीप में तनाव कम करने और उत्तर तथा दक्षिण कोरिया के संपर्कों का समर्थन करता है। इस मामले में अमरीका दक्षिणी कोरिया

पर कैसा प्रभाव डालता है, इसका हम इंतजार करेंगे और इस पर नजर रखेंगे। अगर अमरीका भविष्य में कोरिया के अंदर तनाव में कमी और उत्तर-दक्षिण में संपर्क का समर्थन नहीं करता है तो इसका अर्थ होगा कि वे दबाव में आकर खोखली बातें कर रहे थे।

हमारी जनता को याद है कि निक्सन ने चीन में क्या कहा था। मुझे जो बात सब से दिलचस्प लगी, वह यह कि किसी बाधा से दुनिया की जनता में विभाजन नहीं होना चाहिए। हम देख रहे हैं कि निक्सन अपने शब्दों पर कैसे अमल करते हैं।

आपने सुझाव दिया कि दक्षिणी कोरिया से अमरीकी फौजें वापस जाने से पहले ही तनाव कम करने और पारस्परिक सद्भावना बढ़ाने के लिए दोनों देशों द्वारा पत्रकारों के विनिमय और सांस्कृतिक संपर्क बढ़ाने की संभावनाएं हो सकती हैं। मैं संक्षेप में इस प्रश्न का उत्तर दूंगा।

स्पष्ट कहूं कि मैं हैरान रहता हूं कि अमरीकी लोगों को हमारे देश में आने में क्यों दिलचस्पी है ? और मैं नहीं समझता कि मौजूदा स्थिति में अगर हमारे लोग अमरीका जाएं तो वे कोई दिलचस्प चीज यहां ला सकते हैं।

इसका अर्थ यह नहीं कि हम अमरीका से अपने संबंधों का द्वार बंद रखना चाहते हैं। मगर मेरा विचार है कि जब तक दोनों देशों के बीच की बुनियादी समस्याएं हल नहीं होतीं तब तक पत्रकारों का विनिमय और सांस्कृतिक आदान-प्रदान अल्प महत्व का ही रहेगा।

लोग कहते हैं कि आपको हमारे देश में अच्छा महसूस नहीं हुआ। अगर भविष्य में अन्य अमरीकी यहां आएंगे तो वे भी ऐसी ही अरुचिकर भावनाएं लेकर लौटेंगे।

अब हम अपनी नई पीढ़ी में अमरीका-विरोधी शिक्षा सुदृढ़ कर रहे हैं, ताकि वे अपने शत्रु को न भूलें। जब तक हमारे देश के प्रति अमरीकी सरकार की शत्रुतापूर्ण नीति अपरिवर्तित रहती है तब तक हमारी अमरीकी नीति भी नहीं बदलेगी। इसलिए जब तक दोनों देशों के बीच की बुनियादी समस्याएं हल नहीं हो जातीं तब तक हमारे देश में अमरीकियों की धारणा अच्छी नहीं बन सकेगी। अगर भविष्य में बहुत सारे अमरीकी हमारे देश आते हैं और अरुचिकर भावनाएं लेकर लौटते हैं तो मेरा ख्याल है कि ऐसी यात्राएं लाभदायक नहीं होंगी।

चूंकि अमरीकी सरकार हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति नहीं बदलती है, इसलिए सीमित उद्देश्यों के लिए आपसी यात्राएं करना बेहतर होगा, जैसा कि इस समय हो रहा है। हमारा यह ख्याल नहीं है कि हमारे पत्रकारों को अमरीका जाने की कतई आवश्यकता नहीं है। मेरी राय है कि उनके लिए वहां जाना आवश्यक है, ताकि अमरीकी जनता को हमारी सही आवाज सुनाई दे, क्योंकि इस समय आप सिर्फ

दक्षिणी कोरिया के शासकों की आवाज सुनते हैं। हम सीमित कार्य-क्षेत्र तक अपने देश में अमरीकी पत्रकारों और जनतांत्रिक नेताओं की यात्रा का भी स्वागत करते हैं। इन यात्राओं और विनिमय से दोनों जनगण के बीच सद्भावना बढ़ाने में सहायता मिलेगी।

इस बार आपका स्वागत करने के अपने अनुभव की रोशनी में मेरा ख्याल है कि आगे से अमरीकी यात्रियों को, उनके निरीक्षण दौरे पर जाने से पहले, यह स्पष्ट बताना अच्छा होगा कि हम अपनी जनता के बीच किस प्रकार अमरीका-विरोधी शिक्षा चला रहे हैं।

अब मैं कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर कुछ बातें कहना चाहूंगा।

आपने मुझ से पूछा कि क्या कोरियाई प्रश्न को उसी तरह हल करना संभव है कि जिस तरह वियतनाम प्रश्न को १९५४ में जेनेवा सम्मेलन में किया गया था। मेरी राय में हमारे लिए कोरियाई प्रश्न को ऐसे तरीके की आवश्यकता नहीं है।

कोरियाई प्रश्न को बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत के आधार पर स्वयं कोरियावासियों द्वारा हल किया जाना चाहिए। केवल तभी हमारे देश का पुनरेकीकरण शांतिपूर्वक किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के हमारे इस कार्यक्रम का सोवियत संघ और चीन सक्रिय समर्थन करते हैं। शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के हमारे देश के कार्यक्रम का समर्थन करते हुए सोवियत और चीनी सरकारों ने अनेक अवसरों पर वक्तव्य प्रकाशित किए हैं।

कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न के विदेशी हस्तक्षेप के बिना स्वतंत्र हल के लिए प्रथमतः अमरीकी सेनाएं दक्षिणी कोरिया से हटा ली जानी चाहिएं। अगर वे चली भी जाएं तो कोरिया में कोई युद्ध नहीं छिड़ेगा।

जब दक्षिणी कोरिया से अमरीकी सेनाएं चली जाएंगी और उत्तरी तथा दक्षिणी कोरिया की सारी जनता एकताबद्ध हो जाएगी, तब हम कोरिया को शीघ्र पुनः एक कर सकेंगे और कोरिया पर फिर हमला करने की जापानी सैन्यवादियों की चालों को विफल कर देंगे। कोरियाई जनता स्वयं अपने प्रयत्नों से राष्ट्रीय एकता उपलब्ध करने में समर्थ है।

जैसा कि आप जानते हैं, उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के रेड क्रास संगठनों के बीच प्रारंभिक वार्त्ताओं द्वारा हम दक्षिणी कोरिया से संपर्क कर रहे हैं। निश्चय ही, वार्त्ता की संभावनाओं और परिणामों के लिए हमें प्रतीक्षा करनी होगी और नजर रखनी पड़ेगी। लेकिन हमारी राय में अगर हम कोरियाई एक सम्मेलन की मेज पर बैठें तो हम उत्तर और दक्षिण के बीच के अविश्वास और गलतफहमियों को दूर करने के उपाय पा सकेंगे और राष्ट्रीय एकता उपलब्ध कर लेंगे।

हमारा ख्याल है कि उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के बीच अनेक प्रश्नों पर अविश्वास और गलतफहमियां हैं।

हमारी धारणा है कि दक्षिणी कोरिया के शासक अमरीकी और जापानी सैन्यवादियों की शक्तियों की सहायता से गणतंत्र के उत्तरी भाग पर हमला कर सकते हैं। दक्षिणी कोरिया के शासकों को गलतफहमी है कि हम दक्षिणी कोरिया पर हमला कर सकते हैं। वे यह कहते हुए कि हम दक्षिणी कोरिया का 'कम्युनिस्टीकरण' करने की कोशिश कर रहे हैं, 'कम्युनिस्ट-विरोधी' शोरगुल भी मचा रहे हैं। ऐसे अविश्वास तथा गलतफहमियों के कारण कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर अभी तक कोई प्रगति नहीं हो सकी।

मेरा विश्वास है कि अगर हम कोरियावासी एक साथ बैठें तो हम अविश्वास और गलतफहमियां दूर कर सकेंगे और समान आधार खोज सकेंगे तथा उसके आधार पर राष्ट्रीय एकता उपलब्ध कर सकेंगे।

इन दिनों दक्षिणी कोरिया के शासक 'आत्म-सहायता', 'आत्म-निर्भरता' और 'आत्म-रक्षा' की वकालत करते हुए, हालांकि सिर्फ शब्दों में, देश के पुनरेकीकरण के के लिए शोरगुल मचाते हैं। अगर हम इसकी अनुकूल रूप में व्याख्या करें तो हम स्वतंत्रता आत्म-निर्भरता और आत्म-रक्षा के जिस विचार का प्रतिपादन कर रहे हैं, उससे कुछ समानता देखी जा सकती है। अगर हम इन समान आधारों को खोजें और विकसित करें तो राष्ट्रीय एकता उपलब्ध करने के विषय पर समझौता करना संभव होगा।

उत्तर और दक्षिण में समाज-व्यवस्था के विभेदों को राष्ट्रीय एकता बढ़ाने तथा राष्ट्रीय पुनरेकीकरण उपलब्ध करने में बाधा नहीं बनना चाहिए।

इन दिनों कुछ पत्रकार कहते हैं कि आज कोरिया में दो ध्रुव हैं—एक है उत्तरी कोरिया की कम्युनिस्ट व्यवस्था और दूसरा है दक्षिणी कोरिया की पूंजीवादी व्यवस्था—और इन दोनों ध्रुवों को एकात्मक नहीं किया जा सकता। वे कहते हैं कि जहां वे एक-दूसरे के संपर्क में आएंगे, कोरिया में फिर युद्ध छिड़ जाएगा।

हम दक्षिणी कोरिया के पूंजीवादी समाज को सही अर्थों में पूंजीवादी समाज नहीं मानते। दक्षिणी कोरिया में कोई बड़े इजारेदार पूंजीपति नहीं हैं; सिर्फ थोड़े से कंप्रेडोर (दलाल) पूंजीपति हैं। ठीक है कि हम कंप्रेडोर पूंजीपतियों के खिलाफ हैं। हम उनका विरोध इसलिए करते हैं कि वे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विकास में बाधा डालते हैं। लेकिन हम राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग और तथा मंझोले-व्यावसायिकों के विरुद्ध नहीं हैं। हम कह सकते हैं कि दक्षिणी कोरियाई समाज ऐसे समाज से अधिक कुछ नहीं है, जिसने अभी पूंजीवादी विकास के मार्ग पर बढ़ना शुरू किया है या जिसका झुकाव पूंजीवाद की ओर है या जो पूंजीवाद द्वारा प्रभावित हो रहा है या

जो पूंजीवाद में विश्वास करता है या ऐसा ही कुछ है। इसका अर्थ यह नहीं कि उत्तर और दक्षिण की व्यवस्थाओं में कोई भेद नहीं है।

यह सच है कि इस समय उत्तर और दक्षिण में विभिन्न आदर्श और विश्वास हैं। लेकिन हमारा ख्याल है कि राष्ट्रीय एकता की खातिर हमें इन मतभेदों को पार कर लेना चाहिए। हमारा दक्षिणी कोरिया पर समाजवादी व्यवस्था लादने का कोई इरादा नहीं है। जब तक कि उसके शासक हमें अपनी समाजवादी व्यवस्था की जगह दूसरी व्यवस्था लागू करने के लिए विवश नहीं करते, तब तक कोई कारण नहीं होगा कि हम राष्ट्रीय एकता उपलब्ध न कर सकें।

अगर उत्तर और दक्षिण अपनी व्यवस्था को दूसरे पर न लादने का सिद्धांत स्थापित कर लेते हैं तो एक-दूसरे से फौजी लड़ाई करने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी। अगर किसी भी पक्ष को अपने राजनीतिक विश्वास छोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जाता तो एक ही देश की जनता के लिए एक-दूसरे से लड़ने का क्या कारण रह जाता है?

यह संभव है कि एक देश में विभिन्न समाज-व्यवस्थाएं हों। विभिन्न विश्वासों वाले लोग एक देश में मिल कर रह सकते हैं। दक्षिणी कोरिया में कैसी समाज-व्यवस्था हो, इस प्रश्न पर स्वयं दक्षिणी कोरिया की जनता को फैसला करना है। इसलिए हमारा विचार है कि देश का पुनरेकीकरण हो जाने के बाद भी उत्तरी और दक्षिणी कोरिया में जैसी समाज-व्यवस्थाएं हैं, वे वैसे ही कायम रह सकती हैं और ऐसे लोग, जिनके विश्वास भिन्न हैं, एक साथ रह सकते हैं। इस मामले में जो आवश्यक है, वह है आपसी विश्वास और सम्मान।

हम सदा कहते हैं कि हमारे देश को स्वतंत्रापूर्वक और विदेशी हस्तक्षेप के बिना पुनः एकताबद्ध होना चाहिए। इसके अतिरिक्त हम बल देते हैं कि उत्तर और दक्षिण की समाज-व्यवस्थाओं के बीच मतभेद होने के बावजूद, दोनों पक्षों को एक दूसरे का विश्वास और सम्मान करते हुए पूरे राष्ट्र की एकता उपलब्ध करनी चाहिए।

गत वर्ष ६ अगस्त के अपने भाषण में मैंने बताया था कि हम दक्षिणी कोरिया की शासक पार्टी, डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी, के साथ संपर्क बनाने के लिए भी तैयार हैं। यह सुझाव भी परस्पर सम्मान की हमारी आकांक्षा से पैदा हुआ था।

अगर उत्तर और दक्षिण हाथ मिलाएं और अनथक प्रयत्न करें तो हम धीरे-धीरे आपसी अविश्वास और गलतफहमियां दूर कर लेंगे तथा जनतांत्रिक आधार पर स्वतंत्रतापूर्वक देश का पुनरेकीकरण उपलब्ध कर लेंगे। अगर बाहरी शक्तियां कोरियाई प्रश्न में दखल देती हैं तो हमारा देश पुनः एक नहीं हो सकता। विदेशी हमारे राष्ट्र को अविश्वास और गलतफहमी से मुक्त नहीं कर सकते। यही कारण है कि

हम कोरियाई प्रश्न में किसी भी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप का विरोध करते हैं।

हमारा विश्वास है कि अगर कोरियाई प्रश्न में कोई बाहरी दखलंदाजी न हो और अन्य देश भविष्य में बाधक षडयंत्र करना बंद कर दें तो जिस तरह हम कह रहे हैं उस तरह निश्चय ही कोरिया का पुनरेकीकरण हो जाएगा, चाहे उसमें कुछ समय लगे।

आपने कहा कि आप जानना चाहते हैं कि देश का स्वतंत्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने के लिए हम कौन से अमली कदम उठा रहे हैं ? मैं संक्षेप में उनका उल्लेख करूंगा।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच डाक विनिमय और आपसी यात्राओं का तथा साथ ही व्यावहारिक और आर्थिक सहयोग स्थापित करने का आवाहन कर रहे हैं।

हमारा ख्याल है कि हमारी सर्वोच्च लोक सभा के सदस्यों तथा दक्षिणी कोरिया की 'राष्ट्रीय असेंबली' के सदस्यों की एक-दूसरे के यहां यात्राएं भी वांछनीय हैं।

अगर दक्षिण कोरिया की 'राष्ट्रीय असेंबली' के सदस्य गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में आएं और हमारे संसद सदस्य दक्षिणी कोरिया जाएं तथा दोनों साथ बैठें और खुले हृदय से अपने विचारों का आदान-प्रदान करें तो वह पितृभूमि के पुनरेकीकरण के लिए अनुकूल होगा। यह बुरा विचार नहीं है। हम सिर्फ दक्षिणी कोरिया के 'असेंबली सदस्यों' से ही नहीं, बल्कि दक्षिणी कोरिया के राजनीतिक तथा सार्वजनिक क्षेत्र के व्यापक हिस्सों के प्रमुख व्यक्तियों से भी संपर्क स्थापित करना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारा मत है कि उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के समस्त राजनीतिक दल और सामाजिक संगठन एक साथ एक राजनीतिक सलाहकारी सम्मेलन में बैठें और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के प्रश्न पर व्यापक रूप से विचार विनिमय करें।

इसके अतिरिक्त, हमने सुझाव रखा कि अगर देश का पुनरेकीकरण तुरंत संभव न हो तो एक परिसंघ स्थापित किया जाए। प्रस्तावित परिसंघ का अर्थ है कि दक्षिणी और उत्तरी कोरिया की जैसी भिन्न समाज-व्यवस्थाएं इस समय हैं उनको कायम रखते हुए, मुख्यतः कोरिया के राष्ट्रीय हितों से संबंधित मामलों पर सलाह-मशविरा करने तथा उनमें तालमेल बैठाने के लिए उत्तरी और दक्षिणी कोरियाई सरकारों के प्रतिनिधियों की एक सर्वोच्च राष्ट्रीय परिषद बनायी जाय।

हमने एकाधिक बार उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक आदान-प्रदान का भी सुझाव रखा जो तात्कालिक राष्ट्रीय हितों से शुरू किया जाय। अगर उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच आर्थिक सहयोग फलीभूत किया जाए और हम दक्षिण कोरिया को वे चीजें दें जो हमारे पास काफी हैं तथा उससे वे चीजें लें जिनकी उसके पास बहुतायत है, तो दोनों भागों की अर्थव्यवस्था और तेजी से विकसित होगी।

इसके साथ ही, हमने उत्तर और दक्षिण के बीच सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आदन-प्रदान का भी प्रस्ताव रखा है।

हमारा यह भी मत है कि एक दूसरे के विरुद्ध हथियारों का प्रयोग न किए जाने के विषय में उत्तर और दक्षिण के बीच एक शांति समझौता हो और दक्षिण कोरिया से सभी विदेशी फौजें हटाए जाने के बाद दोनों पक्षों की सेनाओं की संख्या कम की जाए। उत्तर और दक्षिण के बीच मौजूदा हथियारों की दौड़ से जनता के रहन-सहन के स्तर पर काफी असर पड़ रहा है।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच तनाव कम करने तथा संपर्क और आदान-प्रदान शुरू करने के लिए यथासंभव सब कुछ कर रहे हैं। यह सच है कि अगर उत्तर और दक्षिण में पारस्परिक यात्राएं होती हैं तो गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग में पूंजी-वादी प्रभाव आ सकता है। लेकिन हमें इससे रत्ती भर भय नहीं है। हम अपना द्वार खुला रख रहे हैं, ताकि दक्षिण कोरिया लोक गणतन्त्र के उत्तरी अर्द्ध भाग की किसी भी समय यात्रा कर सकें। अब हम नहीं, दक्षिण कोरिया के शासक द्वार बंद रख रहे हैं। जब दक्षिण कोरिया-अधिकारी द्वार खोल देंगे तो हर बात आसानी से तय हो जायेगी।

लेकिन दक्षिण कोरिया-शासक ऐसा करने से बहुत अधिक डरते हैं। जब कि उत्तरी और दक्षिणी कोरिया के रेडक्रास संगठनों के बीच प्रारंभिक वार्ता चल रही है, वे—उत्तर से 'दक्षिण पर धावे' के मनगढ़ंत खतरे के बहाने 'आपातकालीन स्थिति' घोषित करने के बाद तमाम तरह की चालें खेल रहे हैं। वे उन दक्षिणी कोरियाइयों का निर्मम दमन कर रहे हैं, जो देश के पुनरेकीकरण की आकांक्षा करते हैं। उन्होंने कठपुतली राष्ट्रीय असेंबली के, डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी के सदस्यों पर अपने न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के सहयोगियों से बात करने तक पर पाबंदी लगा दी है। दक्षिण कोरियाई शासक अब 'कम्युनिस्ट-विरोधी' शोरगुल मचा रहे हैं और 'साम्यवादी-विरोधी रैलियां' तथा दक्षिणी कोरिया के सभी भागों में 'साम्यवाद के उन्मूलनार्थ तथा ज़ासूसी गतिविधियों के विरुद्ध सभाएं' कर रहे हैं।

हमारा दक्षिण कोरिया पर हमला करने का कोई इरादा नहीं है और न हम दक्षिण कोरिया पर अपनी समाजवादी व्यवस्था लागू करना चाहते हैं। तब भी दक्षिण कोरिया के शासकों ने 'उत्तर से दक्षिण पर धावे के खतरे' के नाम दर 'आपात-कालीन स्थिति' घोषित कर दी है और दक्षिण कोरिया की जनता पर फासिस्टी दमन तेज कर दिया है और 'साम्यवाद पर हावी होकर पुनरेकीकरण' उपलब्ध करने की बातें कर रहे हैं। यह रुख राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के अनुकूल नहीं हैं। वे, जो गुलगपाड़ा मचा रहे हैं, वह उत्तर और दक्षिण के बीच घनिष्टतर संबंध बनाने के उद्देश्य से नहीं, उनको और अधिक अलग करने के उद्देश्य से किया जा रहा है। इस गतिविधि का

उद्देश्य है देश के पुनरेकीकरण को रोकना। साम्यवाद पर हावी हो कर पुनरेकीकरण से दक्षिणी कोरियाई शासकों का अर्थ है कि कोरिया में कम्युनिस्टों का सफाया कर पुनःएकीकरण उपलब्ध किया जाए। अंतिम विश्लेषण से यह अर्थ निकलता है कि वे देश के पुनरेकीकरण का विरोध करते हैं और विभाजन को स्थायी बनाना चाहते हैं। मैं नहीं जानता कि दक्षिण कोरिया में इस छल-प्रपंच का रचनाकार कौन है, मगर मेरा ख्याल है कि इससे उनकी कमजोरी प्रकट होती है।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और वार्त्तालाप के लिए धैर्यपूर्ण प्रयत्न जारी रखेंगे।

इस समय हमें इस तथ्य पर गभीर चिंता हैं कि दक्षिणी कोरिया पर आर्थिक रूप से जापान को हावी किया जा रहा है। अगर दक्षिण कोरिया के शासक उत्तर और दक्षिण के बीच द्वार बंद रखते हैं तो जापानी पूंजी दक्षिण कोरिया में घुसपैठ कर लेगी, जिससे वह आर्थिक रूप से पूर्णतया जापान का आश्रित बन जाएगा।

हमें अपने देश पर जापानी साम्राज्यवादियों के हमले का इतिहास याद है। १८९४ में जापानी साम्राज्यवादियों ने जापानी निवासियों की रक्षा के बहाने कोरिया में घुसना शुरू किया था। तब से हमारे देश का जापानी उपनिवेश बनना प्रारंभ हो गया था।

अमरीकी साम्राज्यवाद के साये में पुनर्जीवित जापानी सैन्यवाद अब फिर कोरिया पर हमला करने का षड्यंत्र कर रहा है। मैंने जापानी पत्रिका 'विश्व साप्ताहिक' (वर्ल्ड वीकली) में एक लेख पढ़ा है जिसमें जापानी सैन्यवादी नेताओं को यह कहते बताया गया है कि कोरिया को कम से कम अगली एक-चौथाई शताब्दी तक और पुनः एक नहीं होने देना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि जापानी सैन्यवादी कोरिया पर फिर चढ़ाई करने के मौके की घात में हैं।

हम जापानी सैन्यवादियों के विरुद्ध अपनी जागरूकता तेज किए बिना नहीं रह सकते। हम अपनी जनता को और नई पीढ़ी को अपने देश पर जापानी सैन्यवादी आक्रमण के इतिहास की पूरी सूचना दे रहे हैं, ताकि वे याद रखें और जापानी सैन्यवाद के विरुद्ध कड़ी निगरानी रखें।

हमारा देश पुनः एकीकृत नहीं हुआ और उत्तर तथा दक्षिण में बंटा हुआ रह गया है तो दक्षिण कोरिया की प्रतिक्रियावादी पैंतरेबाजियों तथा विदेशी शक्तियों की बाधक गतिविधियों के कारण।

आपने हमारे देश और जापान के बीच संबंध के विषय में पूछा है। अब मैं संक्षेप में इस पर प्रकाश डालूंगा।

हमारे देश और जापान के बीच संबंधों में सुधार इस पर निर्भर है कि जापानी सरकार क्या रुख लेती है।

कोरिया और जापान के बीच अच्छे पड़ोसियों जैसे संबंध आज तक कायम नहीं हुए तो एकमात्र इस कारण कि जापानी सरकार ने हमारे देश के प्रति शत्रुता की नीति बरती। योशिदा ने सातो तक एक के बाद एक जापानी सरकार के मंत्रि-मंडलों ने हमारे देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रुख लिया। उन्होंने शत्रुतापूर्ण नीति का पालन किया।

अगर जापानी सरकार हमारे देश के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण नीति से बाज आती है और हमारे साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहती है तो हम उसका अनुकूल प्रत्युत्तर देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

किंतु जब तक जापानी सरकार शत्रुतापूर्ण नीति पर चलती रहेगी और हमारे देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रुख लेगी तब तक हम चाटुकारिता और कूटनीति का सहारा लेकर दोनों देशों के संबंध नहीं सुधारना चाहेंगे। कोई राष्ट्र जितना छोटा हो, उसमें उतना ही अधिक आत्म-सम्मान होना चाहिए। अत्म-सम्मान के बिना तो छोटे राष्ट्र जीवित भी नहीं बच सकते। हम दाएं गाल पर चांटा खाकर और दूसरा गाल भी पेश कर स्वर्ग नहीं जाना चाहते। अपना आत्म-सम्मान त्यागने की हमारी कोई इच्छा नहीं है।

आपने पूछा है कि अपनी जनता को मैं कौन-सी सर्वश्रेष्ठ भेंट दे सकता हूँ। वह है देश का पुनरेकीकरण।

कोरिया की जनता एक ही रक्त की जनता है। लेकिन वह विभाजित रह रही है, इसलिए कि उसका देश अभी पुनः एकताबद्ध नहीं हो सका। हमारे लिए यही बड़े शोक की बात है।

हमारे देश में एक कृत्रिम दीवार के कारण अनेक लोग अनेक वर्षों से अपने परिवारों और रिश्तेदारों से अलग रह रहे हैं। वे एक दूसरे से मिल नहीं पाते, एक दूसरे की चिट्ठियां या संदेश प्राप्त नहीं कर सकते। जिस कृत्रिम दीवार ने यह दुखद स्थिति पैदा की है, उसको यथाशीघ्र गिराया जाना चाहिए और हमारी पितृभूमि को अनिवार्यतः पुनः एक किया जाना चाहिए।

जब हमारा देश पुनः एकताबद्ध हो जाएगा, तब हमारी जनता बढ़िया जीवन बिताएगी और समानता तथा पारस्परिक सम्मान के सिद्धांतों के आधार पर सारी दुनिया के विभिन्न जनगण के साथ शांतिपूर्वक रहेगी।

कोरिया की जनता प्राचीन काल से परिश्रमी और प्रतिभा संपन्न जनता है। हमारी जनता ने बहुत कष्ट भोगा और उसको एक लंबे अर्से तक राष्ट्रीय अपमान, उत्पीड़न और शोषण तथा विदेशी हमलावरों के आक्रमण का शिकार बनाया गया। इसलिए अगर उत्तरी और दक्षिण की कोरिया जनता अपने प्रयत्नों में सहयोग करे और एक नए समाज के निर्माण की चेष्टा करे तो वह एक बढ़िया जिंदगी बिता

सकेगी और उसका देश एक समृद्ध, सशक्त, स्वतंत्र तथा प्रभुतासंपन्न राज्य बन जाएगा।

हमारे देश की आबादी कम नहीं है और वह प्राकृतिक साधनों से समृद्ध है। हमने बड़ी संख्या में अपने स्वयं के सुयोग्य कार्यकर्त्ता तैयार कर लिए हैं। मुक्ति के तुरंत बाद हमारे पास थोड़े ही तकनीकी विशेषज्ञ थे। जापानी साम्राज्यवादियों ने कोरियाइयों को तकनोलोजी नहीं सीखने दी और उन्हें उसको सीखने से रोका। जापानी साम्राज्यवादी हम कोरियावासियों को तकनोलोजी उपलब्ध न करने देने के लिए इतने हठी थे कि मुक्ति से पहले सिर्फ चार रेलवे इंजन ड्राइवर थे। वे सिर्फ जापानियों को ही इंजन ड्राइवर बनने देते थे और कोरियाइयों को हद से हद फायरमैन बनाते थे। यह कटु अनुभव फिर न दुहराए जाए, इसलिए मुक्ति के बाद हमने स्वयं अपने कार्यकर्मी विकसित करने की ओर काफी प्रयत्न किए। फलतः आज हमारे यहां ५,००,००० तकनीशियन और विशेषज्ञ हैं। कार्यकर्मी प्रशिक्षित करने में प्राप्त अब तक की सफलताओं के आधार पर हमने षड्-वर्षीय योजना के काल में उनकी संख्या दस लाख तक बढ़ाने की योजना बनाई है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, हमारे पास बड़ी आबादी, समृद्ध प्राकृतिक साधन और तकनीशियनों की भारी फौज है। इसलिए अगर हमारा देश पुनः एकीकृत हो जाए तो हम अपनी जनता के लिए समृद्धशील जीवन की गारंटी कर सकते हैं और थोड़े से समय में ही एक समृद्ध और सशक्त देश का निर्माण कर सकते हैं।

आपके इस प्रश्न का कि हमारे संघर्षों में सबसे कठिन बात क्या थी, मैं संक्षेप में उत्तर देना चाहूंगा।

हमने अनेक कठिन संघर्षों का सामना किया है। मैं उन सभी के बारे में यहां आपको नहीं बता सकता।

मेरे ख्याल से अब तक हमने जो सर्वाधिक कठिन संघर्ष किए हैं, उन में से एक था युद्ध के बाद ध्वंसावशेषों के ऊपर निर्माण करने का संघर्ष।

तीन वर्ष के युद्ध के कारण हमारे शहर और गाँव पूरी तरह धूल में मिल गए थे और सारे औद्योगिक संस्थान राख हो गए थे। युद्ध के बाद हमें शहरों और गांवों का निर्माण करना था। ऐसे खंडहरों पर, जहाँ कुछ नहीं रह गया था, फैक्टरियाँ बनानी थीं और तेजी से जनता के रहन-सहन की स्थिति को स्थिर बनाना था। लेकिन हम इन कठिनाइयों और परीक्षाओं में खरे उतरे तथा आर्थिक निर्माण में महान जीत हासिल कर सके, इसलिए कि हम जनता के साथ दृढ़ता से एकताबद्ध थे।

हमने समाजवादी निर्माण में कठिनाइयों को बुनियादी रूप से दूर कर लिया है। अब हमारी जनता के जीवन में स्थायित्व है। यह सच है कि हमारा जीवन-स्तर अभी उतना ऊँचा नहीं है। लेकिन इस देश में अब कोई व्यक्ति चिथड़ों में नहीं है, न

भूखा है और न बिना रोजगार है। हमारी सारी जनता काम करती है, मुफ्त शिक्षा पाती है और मुफ्त चिकित्सा का उपयोग करती है। समाजवादी निर्माण में हमारी जनता ने यह भारी जीत हासिल की है।

हमने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के तीव्रगामी विकास के लिए तथा भविष्य में जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आधार तैयार कर लिया है।

जैसा कि मैंने उल्लेख किया, हमारे पास सुयोग्य कोरियाई कार्यकर्मी हैं, हमने शक्तिशाली भारी उद्योग की नीव डाल ली है, जिसका मूल केंद्र इंजीनियरी उद्योग है और हमने काफी बड़ी संख्या में हल्के उद्योगों की फैक्टरियों का निर्माण कर लिया है। हमने विशेष रूप से सुदृढ़, स्वतंत्र उद्योग के रूप में अपने उद्योग विकसित किए हैं, जो हमारे अपने कच्चे माल पर निर्भर हैं। हमने पशुपालन विकसित करने की बुनियाद भी डाल ली है।

यह सभी हमारे देश की अर्थव्यवस्था के और अधिक तीव्र विकास की तथा जनता के रहन-सहन में और अधिक उन्नति की सुदृढ़ गारंटी है।

आपने मेरी बातों पर ध्यान दिया, इसके लिए धन्यवाद। अब मैं आपके प्रश्नों के उत्तर का समापन करता हूं।

हम अमरीकी सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियों के विरोधी हैं, मगर अमरीकी जनता का विरोध नहीं करते। हम अमरीका में अपने बहुत से अच्छे दोस्त बनाना चाहते हैं।

जापान की स्वच्छ सरकार पार्टी के प्रतिनिधि मंडल से बातचीत

१ जून १९७२

अपने गणतंत्र की सरकार और संपूर्ण कोरिया की जनता की ओर से मैं आपका, जापान की स्वच्छ सरकार पार्टी (क्लीन गवर्नमेंट पार्टी) के प्रतिनिधि मंडल का अपने देश में हार्दिक स्वागत करता हूं।

हमारे देश की आपकी इस यात्रा से कोरिया और जापान के जनगण की मित्रता और एकता में महान योगदान होगा। कोरिया की जनता के अपने देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के और समाजवाद निर्माण के संघर्ष में आपकी यात्रा महान प्रोत्साहन का काम देगी।

हमारे देश में स्थिति के बारे में आपको अपनी बातचीतों से काफी जानकारी मिली होगी। आपकी जानकारी भी हमें मिली है।

आज मैं आपसे कुछ प्रश्नों पर बात करूंगा।

पहले तो मैं कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न को लेता हूं।

आपने कहा कि आप चाहते हैं कि कोरिया के पुनरेकीकरण का प्रश्न शांतिपूर्वक, बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के कोरियावासियों द्वारा स्वयं ही सुलझना चाहिए। स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण उत्तर और दक्षिण कोरिया की संपूर्ण जनता की सर्वसम्मत आकांक्षा है। हमारा देश जापान के समीप है अतः मेरी धारणा है कि कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न में आपकी भी महान रुचि है। हमारे देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न पर एशिया के और संपूर्ण विश्व के जनगण का ध्यान केंद्रित है। हमें पूरा विश्वास है कि विश्व जनगण और पड़ोस में अपने अनेक मित्रों के समर्थन और प्रोत्साहन से हम स्वतंत्र-शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण अवश्य ही संपन्न कर लेंगें।

विगत में काफी लंबे अर्से तक उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता में कोई संपर्क नहीं था। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति में भारी परिवर्तन के साथ, कुछ ही अरसा हुआ कि उत्तर और दक्षिण के अलगाव को शीघ्रातिशीघ्र दूर करने की हमारी जनता की तीव्र आकांक्षा के अनुकूल उत्तर और दक्षिण कोरिया के रेडक्रास संगठनों में संपर्क आरंभ हुआ। यह सही है कि इन संपर्कों का अभी कोई उल्लेखनीय परिणाम

नहीं आया है पर उनसे पुनरेकीकरण प्रश्न के शांतिपूर्ण निपटारे की संभावनाएं उज्ज्वल हो गई हैं। इसलिए हम इन संपर्कों को अर्थहीन नहीं मानते।

गणतंत्र के उत्तरी अर्द्धभाग और दक्षिण कोरिया इतनी देर से जुदा रहे हैं इसलिए आपसी अविश्वास और गलतफहमी वाली कई समस्याएं हैं। शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के हित में यह अविश्वास और गलतफहमी हटाई जानी चाहिए।

कई मामलों पर उत्तर और दक्षिण को एक दूसरे पर अविश्वास और गलतफहमियां हैं। हम सोचते हैं कि अमरीकी साम्राज्यवादियों और जापानी सैन्यवादी शक्तियों की सहायता से दक्षिण कोरिया के शासक शायद गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग पर आक्रमण कर दें, जबकि दक्षिण कोरिया के शासकों को आशंका है कि हम 'दक्षिण पर धावा' कर देंगे। उत्तर और दक्षिण कोरिया के बीच अविश्वास और गतलफहमी का यह अत्यंत आधारभूत पहलू है। हमने बार-बार यह घोषणा की है कि दक्षिण पर धावा करने का हमारा कोई इरादा नहीं है। फिर भी दक्षिण कोरिया के शासक 'उत्तर से आक्रमण' की बात जोरशोर से किए जाते हैं।

उत्तर और दक्षिण के बीच अविश्वास और गलतफहमी २५ वर्षों से भी अधिक समय के अलगाव के परिणाम हैं। इसलिए हमारे विचार से इन्हें एक दिन में दूर नहीं किया जा सकता। लेकिन हमारा विश्वास है कि क्योंकि अब दोनों क्षेत्रों में संपर्क शुरू हो गए हैं तो इन संपर्कों के द्वारा हम अविश्वास और गलतफहमी दूर करने में सफल होंगे और स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की आकांक्षा पूरी करने के लिए किसी समझौते पर भी पहुंच सकेंगे।

अविश्वास और गलतफहमी के अलावा उत्तर और दक्षिण कोरिया में अलग समाज व्यवस्थाएं और भिन्न धार्मिक विश्वास भी हैं। फिर भी हमारा विचार है कि भिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं और धार्मिक विश्वासों से ऊपर उठ कर हम राष्ट्रीय एकता प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि हमारा राष्ट्र एक ही है।

हम उत्तर और दक्षिण के बीच अविश्वास और गलतफहमी मिटाने की और विभिन्न समाज व्यवस्थाओं और धार्मिक विश्वासों के बावजूद राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने की पैरवी कर रहे हैं।

इस संबंध में सबसे महत्व की बात है बाहरी हस्तक्षेप को पूर्णतः ठुकरा देना। अब दक्षिण कोरियाई शासक यह कोशिश कर रहे हैं कि दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवादी सेनाएं बनी रहें, और यह हमारी समझ से परे है।

अमरीकी साम्राज्यवादी सेनाओं के दक्षिण कोरिया में बने रहने का कोई आधार नहीं है। अमरीकी साम्राज्यवादियों का कहना है कि कोरियावासियों को आपस में लड़ने से रोकने के लिए 'संयुक्त राष्ट्र सेनाओं' को दक्षिण कोरिया में पुलिस कर्त्तव्य की भूमिका अदा करनी चाहिए। वे ये भी कहते हैं कि अमरीकी

सेनाएं दक्षिण कोरिया में वहां की जनता की 'रक्षा' के लिए रह रही हैं। ये बातें बेतुकी बहानेबाजी मात्र हैं—और कुछ नहीं।

हमारे देश में युद्धविराम समझौता हुए लगभग २० वर्ष हो गए हैं। युद्ध-विराम समझौते की शर्त थी कि कोरियाई प्रश्न के शांतिपूर्ण निपटारे के लिए समझौते के तीन महीनों के भीतर ही दोनों पक्षों के प्रतिनिधियों का राजनीतिक सम्मेलन होगा। लेकिन अभी तक अपने शस्त्रों के जोर पर अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण कोरिया पर अपना आधिपत्य बनाए हुए हैं।

हमने बार-बार घोषणा की है कि दक्षिण पर धावा बोलने का हमारा कोई इरादा नहीं है और पिछले २० वर्षों में उत्तर और दक्षिण आपस में बिना किसी युद्ध के शांतिपूर्वक रह रहे हैं। तो फिर अभी तक 'संयुक्त राष्ट्र सेना' के नाम से अमरीकी साम्राज्यवादी सेनाएं दक्षिण कोरिया में क्यों बनी हैं और क्यों दक्षिण कोरियाई शासक अमरीकी सेना को दक्षिण कोरिया में रोकना चाहते हैं? दक्षिण कोरिया में अमरीकी सेनाओं को रुकने का कोई भी, कैसा भी आधार नहीं है।

अपनी चीन यात्रा के दौरान अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन ने विशाल दीवार की सैर करते हुए कहा था कि विश्व के जनगण को कोई बाधा अलग न करे। अगर निक्सन ने यह वक्तव्य गंभीरतापूर्वक दिया था तो 'मिलिट्री पुलिस' के कनटोप लगाए अमरीकी सेना को दक्षिण कोरिया में नहीं रहना चाहिए, कि रहना चाहिए? अगर इन शब्दों को व्यावहारिक रूप देना है तो उसे चाहिए कि दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाएं हटा ले और हमारे देश को उत्तर और दक्षिण में विभाजित करने वाली सैनिक सीमांकन रेखा को मिटा देना चाहिए।

विगत में अमरीकी साम्राज्यवादियों का तर्क था कि एशिया में साम्यवाद का विस्तार रोकने के लिए दक्षिण कोरिया में उन्हें सैनिक अड्डों की आवश्यकता है। लेकिन आजकल तो वे सोवियत यूनियन और चीन से अपने संबंध सुधारने का दम भर रहे हैं। तब उन्हें आधा कोरिया अपने सैनिक अड्डे के रूप में क्यों चाहिए? उन्हें चाहिए तो नहीं।

प्रश्न यह है कि अभी तक अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अपने आक्रामक सपनें नहीं छोड़े हैं। अगर उन्होंने अपने सपने छोड़ दिए होते तो उन्हें दक्षिण कोरिया से अपनी सेनाएं हटानी चाहिए थीं।

कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के मार्ग में मुख्य बाधा है अमरीकी साम्राज्यवादियों द्वारा दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य। अगर दक्षिण कोरिया पर उनका आधिपत्य न होता तो कोरियावासियों को एक-दूसरे से संपर्क करना इष्ट होता और समझौता-वार्त्ता करना सरल हो जाता।

अमरीकी साम्राज्यवादियों की ही तरह जापानी सैन्यवादी भी हमारे देश के

शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में बाधाएं डाल रहे हैं। आपकी सरकार की आलोचना करने का मुझे खेद है। १९६९ में निक्सन के साथ संयुक्त विज्ञप्ति जारी करने के बाद सातो ने यह आक्रामक वक्तव्य दिया था कि अगर कोरिया में युद्ध छिड़ गया तो वह उसे उदासीनता से नहीं देखेगा। यह स्पष्टतः हमारे देश में जघन्य हस्तक्षेप है।

अब अमरीकी साम्राज्यवादी और जापानी सैन्यवादी हमारे राष्ट्र का विभाजन दृढ़तर करने के लिए दक्षिण कोरियाई शासकों और प्रतिक्रियावादियों को भड़का रहे हैं। उनका यह कृत्य भी हमारे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में बाधा है। अगर किसी अन्य देश को कोरियाई प्रश्न पर कोई स्थिति ग्रहण करनी है तो वह हमारे राष्ट्र के विभाजन को बढ़ाने के बजाए पुनरेकीकरण को शीघ्र लाने की इच्छा से उपजनी चाहिए। यह सही है कि साम्राज्यवादियों और सैन्यवादियों से हम इसकी आशा नहीं कर सकते। आप और हम प्रतिक्रियावादियों से लड़ने वाली शक्ति हैं, अतः हमें कोरिया के पुनरेकीकरण के प्रश्न में विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध लड़ना चाहिए।

कोरिया का प्रश्न स्वयं कोरियावासियों द्वारा सुलझाया जाना चाहिए। हमारे राष्ट्र में जो अविश्वास और गलतफहमी है इसे हटाने में और कोरियावासियों में आपसी समझ पैदा करने में बाहरी शक्तियां कुछ नहीं कर सकतीं। इसलिए हमारी धारणा है कि उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता को आपसी अविश्वास और गलतफहमी दूर करने के लिए और परस्पर समझ प्राप्त करने के लिए धैर्यपूर्वक बातचीत करनी चाहिए और इस आधार पर एकता का प्रयत्न करना चाहिए।

हमारा विश्वास है कि अगर हम दक्षिण कोरियाई शासकों और सभी वर्गों की हस्तियों से खुली बात करें तो पूरे राष्ट्र की एकता संपन्न करने के उद्देश्य से विचारों की समानता प्राप्त हो सकती है।

बहुत पहले हमने राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय आत्म-प्रतिरक्षा के सिद्धांत रखे थे और जिन सिद्धांतों का हम अपने राज्य की हर गतिविधि में पालन कर रहे हैं। आजकल दक्षिण कोरिया के शासक 'आत्म-सहायता' 'आत्म-निर्भरता', 'आत्म-प्रतिरक्षा' जैसे शब्दों की रट लगा रहे हैं हालांकि स्वतंत्रता पर खामोश हैं। फिर भी यह बड़ी संतोषप्रद स्थिति है। हम समझते है यहां कुछ सामान मापदंड ढूंढ़े जा सकते हैं। अगर हम अपने राष्ट्र के ढांचे में एक दूसरे की सहायता करें, अपने पैरों पर खड़े हों, बाहरी हस्तक्षेप से स्वतंत्र हों, अगर दक्षिण कोरिया के शासक साम्यवाद से 'अपनी रक्षा' न करें और दक्षिण कोरियाई प्रतिक्रियावादी शक्तियों के उत्तर पर आक्रमण के विरुद्ध प्रतिरक्षात्मक कदम न उठाएं, बल्कि हम सब मिल कर स्वदेशी आक्रमण से अपनी रक्षा करें तो हमें समान मापदंड मिल सकते हैं और हम राष्ट्रीय एकता प्राप्त कर सकते हैं।

महान राष्ट्रीय एकता प्राप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण चीज है कि हम दक्षिण कोरियाई पक्ष पर अपनी समाजवादी व्यवस्था लादने की कोशिश न करें और वे भी हम पर पूंजीवादी व्यवस्था न थोपें, और एक दूसरे के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई से बचने के लिए हम उत्तर और दक्षिण के बीच एक शांति समझौता कर लें।

अगर दोनों पक्ष उत्तर और दक्षिण में अपनी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्थाओं को यथावत् बनाए रखते हुए, अपने विभिन्न राजनीतिक विचारों, धार्मिक विश्वासों और सामाजिक व्यवस्थाओं के बावजूद महान राष्ट्रीय एकता स्थापित कर लें तो न शस्त्रों की होड़ आवश्यक रहेगी न युद्ध और हम संपूर्ण राष्ट्र की शक्तियों के द्वारा अपने देश को शांतिपूर्वक फिर से एक कर सकेंगे।

पानमुनजोन में जो अब उत्तर और दक्षिण कोरिया के रेडक्रास संगठनों में प्रारंभिक वार्त्ताएं हो रही हैं। उनके बारे में हमारे विचार बहुत उच्च हैं। वार्त्ताओं में अभी तक दोनों पक्षों के बीच पूरी समझदारी नहीं बन सकी है पर मेरा विश्वास है कि शीघ्र ही दोनों को आपसी समझ के समान मापदंड मिल जाएंगे और वार्ता में प्रगति होगी। अगर उत्तर-दक्षिण रेडक्रास वार्ता की कृपा से परिवारों, संबंधियों और मित्रों का आवागमन खुल जाए और भविष्य में इसका विस्तार होता रहे तो उत्तर दक्षिण की समझ गहरी होगी और महान राष्ट्रीय एकता के और भी समान मापदंड मिलेंगे।

इतिहास में ऐसे उदाहरण हैं जब किसी देश, किसी राष्ट्र ने विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं और धार्मिक विश्वासों से ऊपर उठ कर एकता प्राप्त की है। इसलिए मैं समझता हूं कि अगर एकता की इच्छा से दोनों पक्ष अपने इरादे एक दूसरे पर न लादें और आपसी अविश्वास और गलतफहमी को दूर करने की कोशिश करें तो हम राष्ट्रीय एकता प्राप्त कर सकते हैं।

आपने पूछा है कि क्या हम दक्षिण कोरिया के वर्त्तमान शासकों से बातचीत के लिए तैयार हैं। यह प्रश्न पिछले वर्ष के हमारे ६ अगस्त के भाषण में स्पष्ट कर दिया गया था। महान राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से हमें एक दूसरे के विगत को नहीं उधेड़ना चाहिए बल्कि परस्पर विश्वास और सम्मान के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। इसलिए हमने पिछले वर्ष के अपने ६ अगस्त के भाषण में संकेत किया था कि दक्षिण कोरियाई शासक पार्टी डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी तक से संपर्क के लिए तैयार हैं। इसके मूल में हमारा यह विश्वास है कि अगर हम आपस में मिल बैठें, गड़े मुर्दे उखाड़े बिना खुल कर बात करें तो हम उत्तर और दक्षिण के बीच के अविश्वास और गलतफहमी को मिटा सकते हैं।

आपने पूछा है कि क्या 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान परस्पर प्रतिरक्षा समझौता' और 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान संधि' हमारी महान राष्ट्रीय एकता में बाधा हैं और क्या उत्तर और दक्षिण के बीच राजनीतिक समझौता वार्त्ता से पहले इनका रद्द

किया जाना आवश्यक शर्त है। मेरी राय में फिलहाल ये हमारी राष्ट्रीय एकता में बाधा नहीं हैं। जहां तक भविष्य की बात है, वह तब देखा जा सकता है।

'कोरिया प्रजातंत्र जापान परस्पर प्रतिरक्षा समझौता' एक सैनिक समझौता है। 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान संधि' पर सैनिक समझौते के तौर पर हस्ताक्षर नहीं किए गए थे, पर १९६९ की सातो और निक्सन की संयुक्त विज्ञप्ति के बाद इसका सैनिक स्वरूप उभर कर आया। लेकिन हमारे देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न को सुलझाने में जिस चीज को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है वह यह है कि पूरे राष्ट्र की एकता के लिए हमें क्या करना चाहिए, न कि इन संधियों का रद्द किया जाना। मैं समझता हूं कि अगर बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के राष्ट्रीय एकता और देश का पुनरेकीकरण करना तय हो जाता है तो इन संधियों को रद्द करने में कोई बड़ी समस्या नहीं होगी। अगर ये संधियां राष्ट्रीय एकता के आड़े आईं तो उत्तर और दक्षिण कोरिया स्वयं इन्हें रद्द करने की बात उठाएंगे। सोवियत यूनियन और चीन से हमारे भी सैनिक समझौते हैं। अगर हमारी महान राष्ट्रीय एकता और देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के रास्ते में ये आए तो हम इन्हें रद्द कर देंगे। इसलिए सैनिक संधियों का रद्द किया जाना अभी कोई बड़ी समस्या नहीं है, बल्कि प्रमुख उद्देश्य है महान राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति। राष्ट्रीय एकता के बाद शायद सैनिक समझौते अनावश्यक हो जाएंगे।

अब मैं संक्षेप में संयुक्त राष्ट्र के प्रश्न की चर्चा करूंगा।

'योमयूरी शिमबुन' के पत्रकारों से बातचीत में हमने कहा था कि संयुक्त राष्ट्र को अपने कोरिया संबंधी अवैध 'प्रस्ताव' रद्द कर देने चाहिए या उसे चाहिए कि कोरिया के बारे में सही नीति अपनाए जिससे वर्तमान अवैध 'प्रस्ताव' स्वयमेव रद्द हो जाएं। आपने पूछा है कि सही नीति से विशिष्ट तात्पर्य क्या है। हम अभी तक इसका अध्ययन कर रहे हैं। इस प्रश्न का संबंध हमारी संयुक्त राष्ट्र संबंधित दांवनीति से है।

संयुक्त राष्ट्र में कोरिया के प्रश्न के साथ जो होगा उसी के अनुसार हम उचित दांव चलेंगे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात है कि स्वयं कोरियावासियों द्वारा राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति में जिस बात से भी रोड़ा अटकता है उससे संयुक्त राष्ट्र अपने को अलग रखे। हम विशेषकर यह कहते हैं कि कोरिया के प्रश्न को सुलझाते समय संयुक्त राष्ट्र को किसी एक पक्ष की ओर नहीं झुकना चाहिए।

आपने कहा कि कोरिया के प्रश्न पर बहस में भाग लेने के लिए अगर संयुक्त राष्ट्र जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के प्रतिनिधियों को भाग लेने के लिए बिना शर्त निमंत्रित करे तो अवैध संयुक्त राष्ट्र 'प्रस्तावों' को रद्द समझना संभव होगा, ठीक वैसे ही जैसे संयुक्त राष्ट्र में चीनी लोक गणतंत्र को अपना स्थान पुनः प्राप्त होने पर तत्संबंधी अवैध संयुक्त राष्ट्र 'प्रस्ताव' व्यवहार में रद्द हो गए थे। पर हम

ऐसा नहीं मानते।

संयुक्त राष्ट्र में चीन का प्रश्न हमारे प्रश्न से प्रकृति में कुछ भिन्न था।

आरंभ से ही चीन लोक गणतन्त्र को संयुक्त राष्ट्र में उसका वैध स्थान मिलना चाहिए था। लेकिन अमरीकी साम्राज्यवाद के छलकपट के कारण जो स्थान चीनी लोक गणतन्त्र का था उस पर संयुक्त राष्ट्र में च्यांग काई शेक गिरोह ने कब्जा कर लिया। इसलिए संयुक्त राष्ट्र में चीनी लोक गणतन्त्र के प्रवेश का मतलब है उसे अपने स्थान की पुनः प्राप्ति। दूसरे शब्दों में चीनी लोक गणतंत्र ने संयुक्त राष्ट्र में अपना वह स्थान फिर से पा लिया जिस पर किसी और ने कब्जा कर लिया था। अतः हम कह सकते हैं कि संयुक्त राष्ट्र में चीन का प्रश्न किसी कदर एक आसान प्रश्न था।

पिछले वर्ष चीन को निक्सन की यात्रा की घोषणा के बाद अनेक देशों ने चीनी लोक गणतन्त्र को मान्यता प्रदान कर दी। इससे संयुक्त राष्ट्र में चीन को स्थान पुनः प्राप्त करने में शीघ्रता बरती जा सकी।

लेकिन हमारे देश का मामला चीन के मामले से कुछ भिन्न है।

पहले तो हमारा देश संयुक्त राष्ट्र का सदस्य राज्य नहीं है। दक्षिण कोरिया के पास भी संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता नहीं है, वहाँ उसका कोई पर्यवेक्षक नहीं है। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह सब अमरीकी सम्राज्यवादियों के षड्यंत्रों और जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया के प्रति उनके वैर के ही कारण है। अगर भविष्य में संयुक्त राष्ट्र महासभा के किसी अधिवेशन में भाग लेने के बिना शर्त बुला भी लिया जाए तो इससे संयुक्त राष्ट्र में हमारा प्रवेश तो नहीं हो जाएगा। हम केवल पर्यवेक्षक की हैसियत से भाषण देने ही वहाँ जाएंगे। इसलिए अगर हमें संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में उपस्थित होने के लिए बिना शर्त निमंत्रित किया भी जाए तो कोरिया पर संयुक्त राष्ट्र के अवैध 'प्रस्ताव' रद्द नहीं हो जाएंगे।

आजकल दक्षिण कोरियाई अधिकारी संयुक्त राष्ट्र में कोरिया के प्रश्न पर बहस को स्थगित करवाने की मुहिम चला रहे हैं। पूरे पिछले वर्ष वे यह मुहिम चलाते रहे और अभी तक वे यह मुहिम चला रहे हैं। वे कोरिया के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र में बहस स्थगित कराने के लिए यह बहाना लगा रहे हैं कि क्योंकि आजकल जब कोरियावासी रेडक्रास वार्त्ताएं कर रहे हैं तो कोरिया के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र में बहस करना अनावश्यक है। हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए और देखना चाहिए कि कोरिया के प्रश्न पर संयुक्त राष्ट्र में बहस स्थगित होगी या नहीं। संयुक्त राष्ट्र में कोरिया के प्रश्न को संभालने में कई पेचीदा समस्याएं साथ-साथ हैं।

हम यह देख रहे हैं कि संयुक्त राष्ट्र कोरिया के प्रश्न को हाथ में लेगा या नहीं।

अगर संयुक्त राष्ट्र ने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के प्रतिनिधियों के बिना शर्त निमंत्रित किया तो हम संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने प्रतिनिधि भेजेंगे।

जापानी सरकार को यह मनवाने की जो मुहिम आप चला रहे हैं कि वह संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में हमारे प्रतिनिधियों को बिना शर्त निमंत्रित करने की मांग रखे उसके लिए हम आपके आभारी हैं।

आपने यह भी पूछा है कि सामरिक शस्त्रों को सीमित करने के सोवियत-अमरीकी समझौते का एशियाई देशों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। आपने सोवियत-अमरीकी शिखर-वार्त्ता पर हमारे विचार भी पूछे हैं। मैं इन पर संक्षिप्त टिप्पणी करूंगा।

जैसा कि हमने पिछले वर्ष ६ अगस्त के अपने भाषण में पहले भी कहा है, अमरीका पतनोन्मुख है। वह गहरे राजनीतिक और आर्थिक संकट से ग्रस्त है। सच तो यह है कि अब उसके पास अन्य देशों से शस्त्रास्त्र की होड़ करने लायक धन नहीं है। चीन और सोवियत यूनियन को निक्सन की यात्राओं का इस स्थिति से सीधा संबंध था।

पिछले वर्ष जब जापानी पत्रकार हमारे देश आए थे उन्होंने हम से निक्सन की सोवियत यूनियन यात्रा के उद्देश्य के विषय में पूछा था। मैंने उनसे कहा था कि निक्सन धनाभाव के कारण शस्त्रों की दौड़ बंद करने का वादा करने सोवियत यूनियन जा रहा है। हम अब भी यही सोचते हैं; और हमारी धारणा है कि इस बार निक्सन ने अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए सोवियत यूनियन की यात्रा की। अंतिम विश्लेषण में, निक्सन भिक्षा की कूटनीति में घूम रहा है क्योंकि अमरीकी साम्राज्यवादियों को धनाभाव सता रहा है और कई प्रकार से शस्त्रों की दौड़ अब उन्हें हानिकर लगती है।

पैसों के बिना अमरीकी साम्राज्यवादी अन्य देशों के साथ शस्त्रों की दौड़ कैसे करते रह सकते हैं? हमारी कल्पना है कि शस्त्रास्त्र घटाने के विश्वस्त बहाने से से निक्सन ने सोवियत यूनियन के साथ सामरिक शस्त्रास्त्र सीमित करने का समझौता शायद कर लिया हो।

इस समझौते का एशियाई देशों पर कैसा प्रभाव पड़ेगा—इसके और अध्ययन की आवश्यकता है। अभी तक हम सोवियत यूनियन और संयुक्त राज्य की संयुक्त-विज्ञप्ति का सूक्ष्म अध्ययन नहीं कर पाए हैं। भविष्य में मैं इसका और अध्ययन करूंगा।

आपने पूछा है कि क्या जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया का आणविक शस्त्र बनाने का कतई इरादा नहीं है—चाहे अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में कैसा भी परिवर्तन आए। यह बड़ा स्पष्ट प्रश्न है।

परमाणु शस्त्र बनाने का हमारा कोई इरादा नहीं है। स्पष्ट बात तो यह है कि हमारा देश छोटा है कि अगर हम परमाणु शस्त्र बना भी लें तो कहीं उसका परीक्षण करने की जगह नहीं है।

हमें परमाणु शस्त्रों की आवश्यकता नहीं है, न ही हमारी राय में हमें उनकी आवश्यकता पड़ेगी। हम उनका क्या करेंगे? जिन देशों के पास परमाणु शस्त्र हैं

भी, उन्हें भी उनके इस्तेमाल की चिंता सताती मालूम पड़ती है। परमाणु शस्त्र कोई ऐसी चीज तो हैं नहीं जिन्हें खा कर जनता अपना पेट भर सके।

हम परमाणु शस्त्रों के पूर्ण विनाश का दावा करते हैं। हमारा विश्वास है कि इस प्रश्न पर आपकी स्थिति भी यही है।

इसके अलावा आपने पूछा कि 'न्यूयार्क टाइम्स' के पत्रकार सैलिसबरी की हमारे देश की यात्रा का जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया और संयुक्त राज्य के भावी संबंध पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। मैं संक्षेप में कहता हूं।

सैलिस्बरी की हमारे देश की यात्रा को वास्तविक रूप देने में लगभाग दस वर्ष लगे। हर वर्ष वह हमें लिखता था कि वह हमारे देश आना चाहता है, हर वर्ष हम इनकार कर देते। इस वर्ष हमने पहली बार उसे हमारे देश आने की अनुमति दे दी।

सैलिसबरी ने हमारे देश में जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाया वह जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया और संयुक्त राज्य के संबंधों को संभावनाओ के बारे में था।

जैसा कि हमने सैलिसबरी को पूरे ब्योरे के साथ समझाया भी, हमारे और संयुक्त राज के बीच संबंध पूर्णत अमरीकी सरकार के रुख पर निर्भर हैं। संयुक्त राज्य के प्रति हम अपनी नीति इस पर निश्चित करेंगे कि अमरीकी सरकार हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति बरतती है या नहीं। अगर हमारे देश के पुनरेकीकरण के प्रश्न में हस्तक्षेप न करे, दक्षिण कोरिया से 'संयुक्त राष्ट्र' के साइन बोर्ड वाली अपनी सेनाएं हटाले. जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान में सहायता न करे, संयुक्त राष्ट्र में हमारे देश के प्रति बेजा रवैया न अपनाए। कहने का तात्पर्य यह कि अगर संयुक्त राज्य हमारे देश के प्रति अपनी शत्रुतापूर्ण नीति त्याग दे और हमारी जनता द्वारा स्वतन्त्र रूप से देश के पुनरेकीकरण में हस्तक्षेप न करे तो हमारे देश और संयुक्त राज्य में संबंध सुधर सकते है। जब तक आज की तरह अमरीकी सरकार हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति बरतती रहेगी, हमारी जनता अमरीका को कभी भी सद्भावना से नहीं देख सकती है।

मेरे ख्याल में सैलिसबरी से हमारी बात 'न्यूयार्क टाइम्स' में छप गई होगी। शीघ्र ही यह हमारे समाचारपत्रों में भी छप जाएगी। उसे पढ़ने से आपको जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया और संयुक्त राज्य के बीच संबंधों पर हमारी स्थिति की स्पष्टतर झांकी मिल जाएगी।

अब मैं कोरिया और जापान के प्रश्नों पर आता हूं।

जापानी पत्रकारों ने लिखा कि जापान और कोरिया पड़ोसी देश हैं—लेकिन एक दूसरे से बहुत दूर। मेरी राय में उन्होंने ठीक ही लिखा है। कोरिया और जापान के एक दूसरे से लगे देश होते हुए भी इतने दूर होने के तथ्य का संबंध कोरिया के

शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के प्रश्न से है और कोरिया और जापान के बीच संबंधों के सामान्य होने के प्रश्न से है।

कोरिया और जापान में संबंध सामान्य होने की संभावनाओं के बारे में आपने पूछा है। लेकिन इस समय अनुमान लगाना कठिन है। कोरिया-जापान संबंधों की संभावना सर्वोपरि तो जापानी सरकार के हमारे देश के प्रति अमित्रतापूर्ण रवैये के विरुद्ध जापानी जनता के संघर्ष पर निर्भर करती है।

जापानी जनता में अब कोरिया और जापानी जनता के बीच मित्रता को दृढ़ करने का संघर्ष धीरे-धीरे बढ़ रहा है। जापान की स्वच्छ सरकार पार्टी, समाजवादी पार्टी तथा अन्य राजनीतिक पार्टियां जापानी सरकार के हमारे देश के प्रति अमित्रतापूर्ण रवैये के विरुद्ध और बेहतर संबंधों के लिए लड़ रही हैं। पिछले पतझर के बाद से तो जापान की कई विभूतियां और राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि-मंडल हमारे देश की मित्रता-यात्रा पर आए हैं। मुझे इसका बड़ा संतोष है।

कोरिया-जापान संबंधों को सामान्य बनाने में और दोनों जनगण की मित्रता के विकास में जापानी जनता के इन तमाम आंदोलनों का जापानी सरकार के हमारे देश के प्रति रवैये पर जो प्रभाव पड़ेगा उससे कोई इनकार नहीं कर सकता। अगर जापानी सरकार ने हमारे देश के प्रति अपनी निरंतर शत्रुतापूर्ण नीति न भी बदली तो उसके लिए यह असंभव होगा कि जापानी जनता की दोनों देशों के बीच सुधार की मांग को पूरी तरह नजरअंदाज कर दे और चाहे दिखावे के लिए सही धीरे-धीरे वह उसकी मांग पूरी करने को मजबूर होगी।

आप जानते ही हैं अभी हाल तक जापानी सरकार खोंगरियोन (जापान में रहने वाले कोरियावासियों की जनरल असेंबली) के स्वदेश की यात्रा पर आने वाले प्रतिनिधि मंडलों को जापान लौटने की अनुमति नहीं देती थी। लेकिन इस बार, बिलकुल पहली बार कोरियावासियों के बधाई-मंडलों को जापान वापस लौटने की अनुमति दी गई है। यह है एक बहुमूल्य सुपरिणाम आपके, प्रगतिशील व्यक्तियों के, अखबार वालों के और जापान की जनता के विभिन्न वर्गों के सबल संघर्ष का।

अगर भविष्य में जापान की जनता कोरिया और जापान की जनता के मैत्री आन्दोलन का दौर सशक्त बना कर जापान की सरकार पर दबाव डालती रहे तो दोनों देशों के संबंध कदम-कदम करके सुधरेंगे।

हम कोरिया और जापान के संबंधों को सामान्य बनाना चाहते हैं पर इसके लिए जापानी सरकार के सामने भिक्षा पात्र लेकर जाने का इरादा नहीं है। हमारी भिक्षुक कूटनीति के बगैर ही जापानी जनता के संघर्ष और दबाव के बढ़ने पर जापानी सरकार को हमारे प्रति अपनी नीति को किंचित-मात्र भी न बदलना असंभव हो जाएगा।

हमारी राय में हमारे देश के प्रति जापानी सरकार के भावी रवैये का संबंध इससे भी है कि क्या आज की तरह वह भविष्य में भी अमरीकी दिशाओं पर चलती रहेगी । हमें यह भी देखना होगा, और इसके लिए हमें इंतजार करना होगा कि सातो मंत्रिमंडल के बाद जापानी सरकार की अमरीकी दिशाओं पर चलने की नीति का क्या होगा। इससे कई प्रश्न जुड़े हैं।

अब हमें लगता है कि जापानी शासक वर्गों में कई लोग यह भी सोचते हैं कि अंधों की तरह अमरीकी पूंछ में बंधे रहने से उन्हें कोई लाभ नहीं होगा, उलटे भारी हानि की संभावना अवश्य है। वे यह भी सोचेंगे कि अगर सशक्त जन संघर्ष के बावजूद जापानी सरकार अमरीकी साम्राज्यवादियों के पीछे चलती रही और कोरिया को विभक्त रखने की नीति पर अड़ी रही तो परिणामस्वरूप उत्तर और दक्षिण कोरिया के सब लोग संगठित हो कर जापान से न लड़ने लगें ।

कोरिया और जापान के बीच भावी संबंधों को सामान्य करने का प्रश्न स्वयं कोरियावासियों पर भी निर्भर करता है। अगर उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता सही कदम उठा कर देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण संपन्न कर सके तो भविष्य में कोई भी सत्ताधारी हो जापानी सरकार के लिए हमारे पुनरेकीकृत देश के प्रति अमित्रतापूर्ण व्यवहार पर अड़े रहना संभव नहीं होगा ।

मेरी राय में कोरिया और जापान के बीच संबंधों के सामान्यीकरण की संभावना का इस विहंगम परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना ठीक ही है ।

आपने प्रस्ताव किया है कि फिलहाल कोरिया और जापान के संबंधों को सामान्य करने के लिए विस्तृत सांस्कृतिक आदान-प्रदान हो, पत्रकारों की परस्पर यात्राएं व ऐसी ही और चीजें हों। हम ऐसा करने के लिए सदा प्रस्तुत हैं। जापानी सरकार द्वार खोले तो हम सांस्कृतिक आदान-प्रदान, पत्रकारों के यात्रा विनिमय किसी भी और प्रकार के आदान-प्रदान के लिए सहमत हो जाएंगे। यह प्रश्न जापानी सरकार के रुख पर निर्भर करता है ।

आपने कहा कि आप ओकीनावा में तमाम अमरीकी साम्राज्यवादी सैनिक अड्डों को पूर्णतः हटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। आप का संघर्ष न्यायोचित है। जापान को ओकीनावा की वापसी तब तक अर्थहीन है जब तक ओकीनावा में अमरीकी साम्राज्यवादी अपने सैनिक अड्डे बनाए रखते हैं और उन्हें उपयोग में लाते हैं ।

जापान और एशिया में शांति की यह तात्कालिक आवश्यकता है कि जापानी जनता 'अमरीका प्रतिरक्षा समझौते' को रद्द करने के लिए और जापान से अमरीकी साम्राज्यवाद के तमाम सैनिक अड्डों को हटाने के लिए संघर्ष करे । हम जापानी जनता के संघर्ष का सक्रिय समर्थन करते हैं ।

अमरीकी समाचार-पत्र 'वाशिंगटन पोस्ट' के एक पत्रकार से बातचीत

२१ जून १९७२

आपसे इतनी अधिक प्रतीक्षा कराने का मुझे खेद है। अगर मैं किसी स्थान पर सरकारी दौरे पर जाने से पहले मिल लिया होता तो हम कुछ पहले मिल सकते थे। पर मुझे अचानक जाना पड़ा। अपने गंतव्य पर पहुंच कर मुझे मालूम पड़ा कि शीघ्र लौटना असंभव है। फिर मेरा वहां का प्रवास बढ़ गया। इसीलिए मुझे मजबूरन आपको इंतजार करवाना पड़ा। आशा है आप समझ गए होंगे।

आपकी प्रश्नावली मुझे मिल गई थी।

स्पष्ट है कि आप चाहते हैं कि मैं वे चीजें न दोहराऊं जो पहली प्रेस-वार्ताओं में कह चुका हूं। मैं भी यही चाहता हूं। इसलिए मेरे पास हमारी भविष्य की गतिविधियों की पूर्व रेखा खींचने के अलावा कोई और चारा नहीं है। अंतिम विश्लेषण में तो यह हुआ कि आप अमरीकी पत्रकार हमारे देश में आकर मालूम कर लेते हैं कि भविष्य में हमारी नीतियां क्या होंगी।

आपने मुझसे पूछा है हमारे देश के उत्तर और दक्षिण के बीच शांति समझौते के बारे में, दोनों पक्षों की सेना में कटौती के बारे में और कोरिया के दोनों भागों के बीच संबंधों के बारे में। मैं इनका उत्तर दूंगा।

आप जानते ही हैं काफी समय से विभक्त हमारे देश के उत्तर और दक्षिण में कोई संपर्क नहीं हुआ था। पिछले वर्ष दोनों भागों के रेडक्रास संगठनों के प्रतिनिधियों की वार्त्ताओं के द्वारा पहला संपर्क हुआ था।

लेकिन बाद में दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने 'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा कर दी। इससे हमारे देश में तनाव बढ़ गया। अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी उचित व्यवहार करना चाहते हैं तो जब उत्तर और दक्षिण कोरिया अलगाव के इतने लंबे वर्षों बाद संपर्क में आए हैं तो उन्हें तनाव कम करने के प्रयास करने चाहिए। पर उन्होंने 'आपातकालीन स्थिति की घोषणा करके तनाव बढ़ा दिया।

हमारे देश के सामने तात्कालिक समस्या है तनाव कम करने की।

हम अपने देश में तनाव कम करने के प्रयास कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि उत्तर और दक्षिण के बीच तनाव मिट जाए ताकि दक्षिण कोरियाई अधिकारी हमारी

तरफ अपनी गलतफहमियां साफ कर सकें, दक्षिण कोरिया को डराना, धमकाना और दबाना बंद कर सकें और हमारे 'दक्षिण पर धावे' के झूठ न गढ़ सकें।

अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी हम से विचार-विमर्श के लिए तैयार हों तो हम कई नए प्रस्ताव देंगे।

हमारी राय में तनाव कम करने के लिए दोनों पक्ष आपसी समझौते के द्वारा पहले तो विसैन्यीकृत क्षेत्र से अपने सैनिक और सैनिक प्रतिष्ठान हटा सकते हैं। इस समय दोनों ही पक्षों के भारी सैनिक जमाव और सैनिक प्रतिष्ठान विसैन्यीकृत क्षेत्र में हैं। ये हट जाएं तो स्थिति में सुधार होगा।

उत्तर और दक्षिण की सेनाओं में कटौती भी हम तनाव कम करने के लिए आवश्यक मानते हैं। अब हमारे देश में हालत यह है कि लड़ाई छिड़ते ही दोनों पक्ष बंदूक का घोड़ा दबा सकते हैं। मेरी राय में यह युद्ध का वातावरण हलका करने के लिए दोनों पक्षों को समझौता करके अपनी-अपनी सशस्त्र सेना में १,५०,००० की कमी कर देनी चाहिए। अगर २,००,००० की कटौती की जाए तो भी ठीक रहेगा। इससे युद्ध का खतरा दूर करने में सहायता मिलेगी।

ये हैं नए प्रस्ताव। इन्हें इससे पहले हमने प्रकाशित नहीं किया था। सबसे पहले आपको इनकी सूचना दी है।

इसके बाद हमारे देश में तनाव कम करने के लिए उत्तर और दक्षिण को एक शांति समझौता करना चाहिए जो इस बात की गारंटी करे कि देश का पुन-रेकीकरण शांतिपूर्वक किया जाएगा और दोनों ही पक्ष एक दूसरे के विरुद्ध शस्त्रों की आजमाइश नहीं करेंगे। हालांकि हमने एक से अधिक बार शांति समझौते का प्रस्ताव रखा है पर यह अभी तक हो नहीं सका है क्योंकि दक्षिण कोरियाई अधिकारी सहमत नहीं होते।

शांति समझौता हो जाने पर अमरीकी सेनाओं को दक्षिण कोरिया से हटना पड़ेगा। इस समझौते से हमारे देश में युद्ध का संकट नहीं रहेगा और परिणामस्वरूप अमरीकी सेना के पास दक्षिण कोरिया में रहने का कोई बहाना नहीं बचेगा।

हम कहते हैं कि दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाएं हट जाने के बाद उत्तर और दक्षिण में से प्रत्येक की सशस्त्र सेनाएं कुल १,००,००० या इससे भी कम रह जानी चाहिएं। जब शांति समझौते के परिणामस्वरूप यह हो चुकेगा तो हमारे देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की और भी दृढ़ गारंटी हो जाएगी।

हमारी राय में आवश्यकता हो तो दोनों पक्षों के समझौते के अंतर्गत भविष्य में नागरिक सशस्त्र सेनाएं कम की जा सकती हैं।

ये हैं वे कदम जो हम अपने देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए लेने वाले हैं।

ये समस्याएं उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास संगठनों के बीच वार्त्ताओं से नहीं सुलझाई जा सकतीं। इन्हें उत्तर और दक्षिण कोरिया के अधिकारियों के बीच या हमारी सर्वोच्च लोक सभा और दक्षिण कोरिया की राष्ट्रीय असेंबली के प्रतिनिधियों के बीच बैठकों में सुलझाना चाहिए।

यही नहीं, उत्तर और दक्षिण के बीच जो अविश्वास और गलतफहमियां हैं उन्हें साफ करने के लिए यह आवश्यक है कि राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं और राजनीतिक हस्तियों के बीच यात्राओं और संपर्क को यथार्थ रूप दिया जाए या बहुस्तरीय समझौता वार्त्ताएं हों। यह करके हम मतभेद कम कर सकते हैं और देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की विशिष्ट समस्याओं को सुलझा सकते हैं।

हमारे देश का पुनरेकीकरण राष्ट्रीय आत्मनिर्णय और प्रजातंत्र के सिद्धांतों पर बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के स्वयं कोरियावासियों द्वारा ही होना चाहिए। अखिल कोरिया चुनाव के द्वारा संयुक्त सरकार की स्थापना से या अंतर्कालीन स्थिति में एक परिसंघ की स्थापना से देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण हो सकता है।

जिस चुनाव की हम पैरवी कर रहे हैं वह विदेशी हस्तक्षेप से रहित स्वतंत्र चुनाव है। संयुक्त सरकार की स्थापना ऐसे प्रजातांत्रिक चुनाव के द्वारा होनी चाहिए जो सार्वजनीन, समान और सीधे मतदान के सिद्धांत पर किया जाए। अगर एकीकृत सरकार की स्थापना अभी असंभव हो तो पुनरेकीकरण के लिए यह उचित रहेगा कि उत्तर और दक्षिण की विद्यमान सामाजिक व्यवस्थाओं को यथावत् बनाए रखते हुए एक परिसंघ की स्थापना की जाए। हम समझते हैं कि इस प्रकार कदम-ब-कदम हम देश के पुनरेकीकरण को यथार्थ कर सकते हैं।

देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं, राजनीतिक विचारों और धार्मिक विश्वासों से ऊपर उठ कर महान राष्ट्रीय एकता प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक हैं। इसलिए उत्तर और दक्षिण के अविश्वास और गलतफहमी को दूर करके परस्पर समझ, सम्मान और भरोसे का वातावरण बनाया ही जाना चाहिए।

यह है हमारी स्थिति।

आपने पूछा है कि क्या हम देश के पुनरेकीकरण के इन प्रस्तावों पर बात करने के लिए दक्षिण कोरिया के शासकों से मिलने को तैयार है। यदि वे चाहें तो हम उनसे मिलने के लिए हर समय तैयार हैं।

आपने यह भी पूछा है कि उत्तर और दक्षिण के अपनी-अपनी सशस्त्र सेनाओं को कम करके १,००,००० कर देने से क्या लाभ होगा। जब अमरीकी साम्राज्यवाद, जापानी सैन्यवाद और दक्षिण कोरियाई प्रतिक्रियावादियों से हमारे देश की सुरक्षा को कोई खतरा न हो तो हमारी अपनी सशस्त्र सेना को १,००,००० या और भी

कम कर देने से स्पष्ट है कि हमारी जनता को महान लाभ होगा।

पिछले वर्ष हमारे राष्ट्र का प्रतिरक्षा व्यय राष्ट्रीय बजट के कुल व्यय का ३१.१ प्रतिशत था। इस वर्ष हालांकि दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने 'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा कर दी थी फिर भी हमने अपना प्रतिरक्षा व्यय कम करके १७ प्रतिशत कर दिया। क्योंकि दक्षिण कोरिया में 'आपातकालीन स्थिति' से हमें कुछ लेना-देना नहीं। एक बार उत्तर और दक्षिण अपनी-अपनी सशस्त्र सेनाएं १,००,००० या उससे भी कम कर दें तो हमारा प्रतिरक्षा व्यय राज्य के बजट व्यय का बहुत ही थोड़ा प्रतिशत रह जाएगा।

हमारा देश औद्योगिक देश है, इसलिए कुल राजस्व आय बहुत अधिक है। इसलिए अगर हम अपना प्रतिरक्षा व्यय राज्य के कुल बजट व्यय का पाँच से सात प्रतिशत कर सकें और शेष धन जनता के जीवन पर लगा दें तो उसे आज से अधिक लाभ होगा।

सशस्त्र सेनाओं में कटौती से हमें जनता का जीवन स्तर ऊंचा करने के लिए अधिक राजस्व लगाने में सुविधा ही नहीं होगी बल्कि अन्य कई पहलुओं से भी महान लाभ होगा। सेना से काफी संख्या में युवा और अधेड़ लोगों को हटा कर हम उनको श्रम के मोर्चे पर लगा सकेंगे ताकि और फैक्टरियां और निवास स्थान बनाए जा सकें तथा और अधिक राष्ट्रीय संसाधनों का उपयोग किया जा सके। प्रतिरक्षा व्यय में कटौती करके जनता का जीवन-स्तर सुधारने के साथ यह उससे भी बड़ा लाभ होगा।

अभी हमें बहुत काम करना है। हमें आशा है कि अमरीकी सरकार को हमें धमकियां देने से हतोत्साहित करके आप हमारी सहायता करेंगे।

जहां तक उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक विनिमय के बारे में आपका प्रश्न है, उस पर मेरा उत्तर बहुत संक्षिप्त होगा क्योंकि इसकी चर्चा मैं कई अन्य अवसरों पर कर चुका हूं।

मेरा विश्वास है कि उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक विनिमय उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता के जीवन के लिए बहुत लाभप्रद होगा। दक्षिण कोरिया की आर्थिक स्थिति के सुधार के लिए तो यह अत्यंत आवश्यक है।

गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग के पास दक्षिण कोरिया की अपेक्षा अधिक विकसित भारी उद्योग हैं और हमारे पास प्राकृतिक संसाधन बहुतायत में हैं। इसलिए अगर उत्तर और दक्षिण कोरिया साथ मिल कर काम करें, आर्थिक क्षेत्र में पर्याप्त विनिमय करें और हमारे विकसित भारी उद्योग और बहुल प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करें तो अनेक समस्याओं को सुलझाना संभव हो सकेगा। इस आर्थिक विनिमय से विशेष लाभ दक्षिण कोरिया के लघु और मध्यम स्तर के उद्योगपतियों को होगा क्योंकि हम उन्हें कच्चा माल देंगे और इस प्रकार उनकी कच्चे माल और

बाजार की कमी की समस्या दूर हो सकती है।

उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक विनिमय से हमारा देश समृद्ध और सशक्त बनेगा।

अब उत्तर और दक्षिण रेडक्रास वार्त्ता पर आपका प्रश्न। फिलहाल उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास संगठनों के बीच प्रारंभिक वार्त्ताएं संतोषजनक हैं। पूर्ण वार्त्ताओं के एजेंडा पर रखे जाने वाले विषयों पर बहस के बाद हाल ही में उनमें पूर्ण सहमति हो गई है। अलगाव के दीर्घ अंतराल के बाद उत्तर और दक्षिण के बीच यह दरवाजा चाहे थोड़ा ही खुला है, पर दोनों पक्ष इसे बहुमूल्य मानते हैं। हमें विश्वास है कि उत्तर और दक्षिण के रेड क्रास संगठनों के प्रतिनिधियों के बीच पूर्ण वार्त्ताएं अब शीघ्र होंगी। उत्तर और दक्षिण की संपूर्ण जनता इसकी प्रतीक्षा कर रही है। प्रगति मंद है, पर वार्त्ताओं की संभावनाएं उज्ज्वल हैं।

दक्षिण कोरिया के अधिकारी भी अगर वैसा ही करें तो बाहरी देशों से सैनिक समझौते रद्द करने की हमारी तैयारी की घोषणा के संबंध में आपने पूछा है कि यह कब संभव है—उत्तर-दक्षिण वार्ता के दौरान या शांति समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद या परिसंघ की स्थिति में। इस प्रश्न पर दोनों पक्षों में बात होनी चाहिए। अभी इसे नहीं सुलझाया जा सकता; दोनों पक्षों में भावी विचार-विमर्श से इसे सुलझाया जा सकेगा।

जहाँ तक यह प्रश्न है कि देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के बाद हमें कौन से सैनिक समझौते करने चाहिए, कौन से नहीं, इस पर तभी बात की जाएगी। फिर भी हम सोचते हैं कि अगर दोनों पक्ष सहमत हों तो वे संधियां अभी रद्द की जा सकती हैं जो शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के आड़े आती हैं।

आपका अगला प्रश्न है कि कोरिया और संयुक्त राज्य के बीच संबंध कैसे सुधारे जाएं। मैं कुछ शब्द कहता हूं।

कोरिया-अमरीका संबंध सुधारने के लिए अमरीकी सरकार को कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बंद करना चाहिए। उसे हमारे देश के विभाजन को प्रोत्साहन न दे कर उसके पुनरेकीकरण में सहायता देनी चाहिए। हमारे देश के पुनरेकीकरण में बाधा न डालने के लिए अमरीका को दक्षिण कोरिया से पहले तो अपनी सेनाएं हटा लेनी चाहिए और हमारी सुरक्षा को धमकी देने से बाज आना चाहिए। हमारी राय में तब हमारे देश और अमरीका में संबंध शीघ्रता से सुधरेंगें।

मेरे पास समय कम है इसलिए मैं कोरिया के विरुद्ध अमरीकी आक्रमण के लंबे इतिहास में नहीं जाऊंगा।

द्वितीय विश्व युद्ध में फासिस्टों के विरुद्ध मोर्चे में सम्मिलित होकर अमरीकी जनता ने फासिस्ट जर्मनी और साम्राज्यवादी जापान से युद्ध किया था। तब कोरिया

की जनता ने उसकी प्रशंसा और समर्थन किया था। उसके बाद अमरीका ने कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के प्रति शत्रुतापूर्ण और आक्रामक नीतियां बरतीं और परिणामस्वरूप कोरिया-अमरीका संबंध बिगड़ गए।

हमारे देश के प्रति अमरीका अपनी शत्रुतापूर्ण आक्रामक नीतियां त्याग दे और कोरिया के पुनरेकीकरण में बाधा न डाले तो हम अब भी अपनी अमरीका नीति बदलने को तैयार हैं।

हम कोरिया के लोग अमरीका की जनता को अमरीकी साम्राज्यवादियों से अलग मानते हैं। अब भी कोरिया की जनता अमरीकी जनता से मित्रता बढ़ा रही है और भविष्य में भी बढ़ाती रहेगी।

आपने हमारे पत्रकारों की अमरीका यात्रा के बारे में पूछा था।

हम इसके विरुद्ध नहीं हैं। समुचित परिस्थितियों में हम अपने पत्रकारों के संयुक्त राज्य जाने और वहां के अधिकारियों से मिलने पर आपत्ति नहीं उठाएंगे।

आपने यह भी पूछा था कि अगर दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाएं हट जाएं और कोरिया प्रायद्वीप में तनाव न रहे तो क्या हमारा देश अमरीका से व्यापार संबंध स्थापित करेगा। ऐसी स्थिति में हमें अमरीका से व्यापार तथा आर्थिक संबंध स्थापित करने में आपत्ति नहीं होगी। हम इसका स्वागत करेंगे।

हमारे देश और जापान के व्यापार संबंधों की संभावनाएं भी जापानी पक्ष पर निर्भर हैं। अगर वे हमसे व्यापार करना चाहते हैं तो हम अवश्य करेंगे।

इसके बाद आपने मुझ से पूछा है कि जापान और संयुक्त राज्य के संबंधों और विरोधों का हमारा आकलन क्या है। इन दोनों में से कोरिया को अधिक खतरा किससे है?

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के 'राजनीतिक कार्यक्रम' में यह सिद्धान्त स्थिर किया था कि हम उन सब देशों से मैत्री संबंध बढ़ाएंगे जो हम से समानता और परस्पर लाभ के सिद्धान्तों पर हमसे संबंध बनाना चाहेंगे और हमारे बारे में जिनके इरादे नेक होंगे। लेकिन जो देश हमारे प्रति शत्रुतापूर्ण हैं, हमें बराबर नहीं मानते, और हमारे प्रति जिनकी आक्रामक नीतियां हैं उनके प्रति हमारे इरादे भी नेक नहीं हो सकते।

हमारे यहां कहावत है कि भले से भले रहो, दुश्मन को दुश्मन समझो। इसका मतलब है जो तुम्हारे घर में चाकू लेकर आए उसका स्वागत चाकू से करो और जो चावल-रोटी लेकर आए उसे चावल-रोटी भेंट करो।

हमारे इरादे उसके प्रति ही नेक हो सकते हैं जिसके इरादे हमारे लिए नेक हों। जो हम पर आक्रमण कर रहे हों उन पर हम कृपा कर सकते हैं क्या?

अमरीका और जापान से हमारे संबंध इसी बात पर निर्भर करते हैं कि उनकी नीतियां हमारे प्रति क्या हैं। अगर वे शत्रुतापूर्ण नीति अपनाते हैं तो हम भी वही करेंगे। इस नीति को वे त्याग दें तो हम उन पर भरोसा करेंगें, अच्छे संबंध बनाएंगे। फिलहाल हमारे देश के प्रति उनकी नीति शत्रुतापूर्ण है। इसलिए हम अमरीकी साम्राज्यवाद और पुनर्जीवित जापानी सैन्यवाद को समान रूप से खतरनाक मानते हैं।

जहां तक संयुक्त राज्य और जापान में विरोधों का संबंध है, हम समझते हैं कि यह अमरीकी और जापनी स्वयं हम से अधिक जानते हैं।

जहां तक संयुक्त राष्ट्र के बारे में हमारे रुख पर आपके प्रश्न का संबंध है हम यह मानते हैं कि इस संस्था को कोरिया की जनता के अपने देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने के संघर्ष में सहायता के प्रयास करने चाहिए। आज उत्तर और दक्षिण कोरिया की जनता एकमत हो कर देश का पुनरेकीकरण करना चाहती है और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के प्रति उसका झुकाव अभूतपूर्व तेजी से बढ़ रहा है। ऐसी हालत में संयुक्त राष्ट्र को ऐसे कदम उठाने चाहिएं जो पुनरेकीकरण में सहायक हों।

पहले तो संयुक्त राष्ट्र को वे सब प्रस्ताव रद्द कर देने चाहिए जो कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण को रोकते हैं अर्थात् वे सब प्रस्ताव जो कोरिया के विभाजन को प्रोत्साहन देते हैं। 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास के लिए संयुक्त राष्ट्र आयोग' कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के रास्ते में बाधा है। संयुक्त राष्ट्र को इस आयोग का विघटन कर देना चाहिए। दक्षिण कोरिया में संयुक्त राष्ट्र के साइन बोर्ड के नीचे जो अमरीकी सेनाएं खड़ी हैं उनके सिर से 'संयुक्त राष्ट्र सेना' की टोपी उतार लेनी चाहिए। कोरियावासी शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण चाहते हैं। उत्तर और दक्षिण एक दूसरे के संपर्क में आकर स्वच्छंद यात्रा की कोशिश में लगे हैं। वे एक दूसरे से न लड़ने का आश्वासन दे रहे हैं। तो यह 'आयोग' क्यों रहे और 'संयुक्त राष्ट्र सेना' के साइन बोर्ड के नीचे दक्षिण कोरिया में अमरीकी सेनाएं पुलिस ड्यूटी क्यों करें ? ये सब बाधाएं दूर होनी चाहिएं।

राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धान्त पर कोरिया का पुनरेकीकरण होना ही चाहिए और किसी को भी कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

आपने यह भी पूछा कि 'आयोग' के विघटन के अलावा संयुक्त राष्ट्र कोरिया के पुनरेकीकरण के लिए क्या कर सकता है। हमारी राय में उसे पहले वे सब काम बंद कर देने चाहिए जो पुनरेकीकरण को रोकते हैं। उदाहरण के लिए उसे कोरिया के दोनों भागों में ऊंच-नीच बरतना और कोरिया के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना बंद करना चाहिए।

आपने निक्सन की पीकिंग और मास्को यात्राओं के बारे में हमारे विचार

पूछे। हम इसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि पीकिंग और मास्को यात्राओं के दौरान उसके वक्तव्यों और संयुक्त विज्ञप्तियों पर अमल कैसे किया जाएगा।

इसके बाद आपने पूछा कि क्या एशिया के समाजवादी देशों का नया समूह बनाना आवश्यक हैं। हमारी राय में ऐसा समूह बनाना इसलिए अनावश्यक है कि हममें वैसे ही अच्छी एकता है। एशिया के समाजवादी देश वियतनाम, चीन और कोरिया—आपस में दृढ़तापूर्वक संयुक्त हैं। ऐसी ही एकता कंबोडिया और लाओस की जनता की वियतनाम, चीन और कोरिया की जनता से है। अब ये सब देश दृढ़तापूर्वक संगठित हैं, एक दूसरे को समर्थन और प्रोत्साहन देते हैं और साम्राज्य-वाद-विरोधी संघर्ष में एक समान मोर्चे की रचना कर रहे हैं। इसलिए हमें किसी नए समूह की आवश्यकता नहीं है।

बदलती हुई अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में आपने जूछे विचार के महत्त्व के बारे में पूछा है।

जूछे विचार का संबंध कोरिया की क्रांति से है। इस विचार से तात्पर्य है कि कोरियावासी अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुकूल मूलतः स्वयं अपने प्रयासों से अपने ही मस्तिष्क के उपयोग से अपने क्रांतिकारी संघर्ष और निर्माण कार्य समस्याओं को हल करें और कोरियावासी स्वयं कोरियाई क्रांति का उत्तरदायित्व उठाएं। हम अपना जूछे विचार दूसरों पर नहीं लादेंगे, न इसका निर्यात करेंगे और न इस विचार के लिए दूसरों की स्वीकृति लेने वाले हैं।

अंत में आपने पूछा कि क्या मैं अमरीकी जनता से कुछ कहना चाहूंगा। कृपया उनसे कहिए कि हमें आशा है कि अमरीका की जनता कोरियाई जनता और विश्व की शांतिप्रेमी जनता से मिलेगी और आक्रामक युद्ध के विरूद्ध साझे संघर्ष में साथ देगी ताकि विश्व के सभी जनगण शांतिपूर्वक रह सकें। जनता चाहे वह कोरिया की हो या अमरीका की, हमेशा मित्रता का विकास चाहती है। अमरीकी साम्राज्य-वादियों और प्रतिक्रियावादी अमरीकी सरकार के प्रति हमारी जनता की दुर्भावना है, अमरीकी जनता के प्रति नहीं।

मुझे प्रसन्नता है कि आप हमारे देश की यात्रा पर आए और मुझ से भेंट-वार्ता के लिए इतनी देर धीरजपूर्वक आपने मेरी प्रतीक्षा की इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

हमारी पार्टी के जूछे विचार संबंधी कुछ समस्याएं और गणतंत्र सरकार की गृह और विदेशी नीतियां

जापानी समाचारपत्र 'मैनिची शिमबुन' के पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

१७ सितंबर १९७२

हमारे देश की यात्रा पर मैं आपका हार्दिक स्वागत करता हूं ।

कोरिया पत्रकार संघ की केंद्रीय समिति द्वारा मुझे आपकी प्रश्नावली मिल गई है ।

अब मैं आपके प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर देना आरंभ करता हूं ।

१. जूछे विचार से संबद्ध कुछ समस्याएं

आपने मुझ से जूछे विचार की उत्पत्ति कैसे हुई यह बताने की प्रार्थना की है।

संक्षेप में जूछे विचार का मतलब है कि क्रांति और निर्माण की स्वामी जनता होती है और वही क्रांति और निर्माण की संचालक शक्ति है। दूसरे शब्दों में हर कोई अपनी नियति का उत्तरदायी है और हर किसी में अपनी नियति को गढ़ने की सामर्थ्य है ।

हम इस विचार के निर्माता नहीं हैं। हर मार्क्सवादी-लेनिनवादी का यही विचार है। मैंने सिर्फ इस विचार पर विशेष बल दिया है।

जूछे की स्थापना की आवश्यकता की तीव्रता और उस पर दिया जाने वाला बल जनता पर और किसी देश की सामाजिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर निर्भर कर सकता है।

स्वतंत्रता और स्वाधीनता के मेरे संघर्ष काल में मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि हमें अपने ही प्रयासों में अपनी नियति का निर्माण करना चाहिए और हम कर सकते हैं। हमें हर चीज का हल अपने आप करना था और अपना ही दिमाग लगा

कर संघर्ष की दिशाओं और उपायों का निर्धारण करना था।

स्वाभाविक ही था कि इसलिए हमें अवर्णनीय कठिनाइयां मिलीं और कठिन परीक्षाओं में से गुज़रना पड़ा। लेकिन इसके माध्यम से हमें एकदम अद्वितीय अनुभव और शिक्षा प्राप्त हुई। हमें यह ज्ञान हुआ कि क्रांतिकारी सजगता से संपन्न हो कर सीधे सादे श्रमिक वर्ग सचमुच महान शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं और हर प्रतिकूल और कष्टकारी परिस्थिति में भी अपने प्रयासों से क्रांति का संपादन कर सकते हैं।

स्वाधीनता प्राप्ति के तुरंत बाद हमारी हालत बहुत खराब थी। न तो हमें राज्य चलाने का अनुभव था न ही अर्थव्यवस्था के प्रबंध का। हमारा देश बहुत पिछड़ा हुआ था और उत्तर और दक्षिण में विभक्त। इस पेचीदा परिस्थिति में नए देश के निर्माण की समस्याएं सुलझाने के पूर्व-निर्धारित हल खोजने की कोई जगह हमारे पास नहीं थी।

इस कुटिल स्थिति से शीघ्र मुक्ति पाने के लिए हम पूंजीवाद का रास्ता पकड़ें या समाजवाद पर चलें—हमारे सामने पहली समस्या यही थी।

पूंजीवाद के रास्ते के माने थे शोषण और दमन को बरकरार रखना। इस रास्ते के माने थे कि हम नए देश के निर्माण के लिए विशाल सर्वहारा समूह को जाग्रत नहीं कर पाएंगे और एक बड़ा खतरा यह भी था कि हमारा देश फिर किसी और साम्राज्यवादी शक्ति के अधीन न हो जाए। अतः यह स्पष्ट था कि हम पूंजीवाद के रास्ते पर नहीं चल सकते थे।

लेकिन हम तुरंत ही समाजवाद के मार्ग पर भी नहीं चल सकते थे। समाजवाद हमारी आवश्यकता थी। पर केवल इच्छा से ही तो समाजवाद नहीं आता। हमारा तात्कालिक दायित्व था प्रजातांत्रिक क्रांति जिसे किए बिना हम समाजवाद की तरफ नहीं बढ़ सकते थे। अतः हम समाजवादी व्यवस्था की कोरी नकल नहीं कर सकते थे।

आरंभ से ही हमें अपना दिमाग एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था के निर्धारण में लगाना पड़ा जो मजदूर वर्ग तथा अन्य कर्मशील जनता के हितों की सेवा करे और विशाल जनसमूह को संगठित कर सके। हमें प्रजातांत्रिक समाज सुधारों को लागू करने के ऐसे उपाय भी तय करने थे जो हमारे देश की विशिष्ट परिस्थितियों में ठीक रहें। इसलिए कृषि सुधार के लिए हम कृषक-ग्रामों में गए, कई दिन किसानों के साथ रहे और अपने ग्राम्य अंचल में ठीक बैठने वाले तरीकों की तलाश करते रहे।

हमारे अनुभव ने दिखाया कि अपनी वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी समस्याओं को हल करना विदेशी तरीकों की यंत्रवत् नकल करने से कहीं बेहतर है। स्वाधीनता के बाद नए देश-निर्माण के संघर्ष ने हमारे जूछे विचार को पुष्ट

किया और उसमें हमारे विश्वास को दृढ़ता प्राप्त हुई।

इसके बाद हमें अमरीकी साम्राज्यवादियों से तीन वर्ष कठोर युद्ध करना पड़ा। हमारा देश राख का ढेर हो गया। इससे हमारा समाजवाद निर्माण का कार्य और भी कठिन हो गया।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने न सिर्फ हमारे श्रमिकों और कृषकों के घर, जायदाद नष्ट कर डाले बल्कि छोटे और मध्यम उत्पादकों और धनी किसानों की अर्थ व्यवस्था भी ध्वस्त कर दी। और राष्ट्रों ने समाजवादी क्रांतियों में अपने पूंजीपति और धनी कृषक वर्गों को समाप्त करने के लिए उनकी संपत्ति अपने अधिकार में कर ली, पर हमें इसकी आवश्यकता नहीं थी। स्वाधीनता के बाद से ही हम छोटे और मध्यम उत्पादकों की अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने की नीति पर दृढ़ता से चल रहे थे—ताकि वे भी श्रमिकों और कृषकों के साथ मिल कर साम्राज्यवाद से लड़ सकें। तब हमारे उद्योग पूर्णतः विकसित नहीं थे, अतः राष्ट्रीय पूंजी की रक्षा भी आवश्यक थी। पर युद्ध के दौरान छोटे और मध्यम पूंजीपतियों और धनी कषकों की अर्थ-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई थी। हमारी सरकार ने इसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता नहीं समझी।

युद्ध ने हर चीज को ध्वस्त कर दिया था। छोटे और मध्यम उत्पादक और शहरी कारीगर के बीच कोई फर्क नहीं रह गया था। कहा जा सकता है कि हर व्यक्ति सर्वहारा बन चुका था। सबको मिल जुल कर काम करना था और समाज-वाद के रास्ते पर बढ़ना था। जीवित रहने का एक यही रास्ता था। पूर्णतः ध्वस्त कृषि को उबारने के लिए कृषकों को भी यही करना था।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद की एक प्रस्तावना है कि आदिम तकनीक के सहारे भी सहकारी कृषि निजी कृषि से बेहतर है। इस प्रस्तावना पर और मुसीबत से उबरने के लिए हमारे कृषकों को साथ काम करने की मजबूरी को देखते हुए हमने एक मौलिक रास्ता अपनाया। औद्योगीकरण से भी पहले हमने साहस करके कृषि का सामाजिक रूपांतरण कर डाला। छोटे और मध्यम उत्पादकों और धनी कृषकों के लिए भी हमने एक अद्वितीय मार्ग पकड़ा—उन्हें भी सहकारी आंदोलन का भाग बना दिया और उन्हें समाजवादी सांचे में ढाल दिया, आखिर उनसे कुछ छीनने की आव-श्यकता तो थी ही नहीं।

पूर्वस्थापित धारणाओं या फारमूलों का सहारा लिए बगैर अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुकूल अपनी जनता के हित में समस्याएं सुलझाने की पार्टी की दिशा को एक बार फिर अनुभव ने सही सिद्ध कर दिया।

इस मार्ग पर चल कर हमें यह और गंभीर विश्वास हो गया है कि क्रांति और निर्माण में सही रास्ता और रुख यही है कि क्रांति के स्वामी होने की पूरी

चेतना से अपनी शक्ति में विश्वास और भरोसे के साथ अपने देश की विशिष्ट परि-स्थितियों के अनुकूल अपनी जनता के हित में हर समस्या को सुलझाया जाए।

हमारी क्रांति ने बड़े पेचीदा और कठिन मरहले पार किए हैं और अभी और करने हैं। जब भी हमारे सामने कठिनाइयां और परीक्षाएं आतीं हमने क्रांतिकारियों की तरह महान विजय प्राप्त की। इससे हमारी धारणा और अडिग हो गई—यह धारणा कि केवल जूछे विचार पर दृढ़ आश्रय से ही श्रमिक वर्ग की क्रांतिकारियों स्थिति पर पूर्णतः टिका जा सकता है और अपने देश की वस्तुस्थिति के अनुकूल मार्क्सवाद-लेनिनवाद का सर्जनशील पालन किया जा सकता है।

आपने मुझसे पूछा कि क्या आप राजनीति में स्वतंत्रता, अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा में स्व-सुरक्षा को जूछे विचार का मूर्त्त रूप समझें। आपने बिलकुल ठीक समझा है।

जूछे की स्थापना का मतलब है कि क्रांति और निर्माण के प्रति स्वामी भाव ग्रहण करना। जन समूह ही क्रांति और निर्माण के स्वामी हैं अतः उन्हें क्रांति और निर्माण के प्रति स्वामी जैसा उत्तरदायी रुख अपनाना चाहिए। स्वामी भाव की अभिव्यक्ति एक स्वतंत्र और सर्जनशील स्थिति में होती है।

क्रांति और निर्माण जन समूह का काम है। यह काम केवल वही कर सकते हैं। इसलिए प्रकृति और समाज के रूपांतरण को उनकी स्वतन्त्र स्थिति और सर्जन-शील गतिविधि की मांग रहती है।

हमारी पार्टी का आधार है हमारी जनता के और हमारी क्रांति के हित। इसीलिए सभी दिशाओं और नीतियों का अपने प्रयासों से पालन करने में और आत्म-निर्भरता के सिद्धांत पर पूरी जिम्मेदारी से क्रांति और निर्माण संपादन में हमारी पार्टी ने अपनी दृढ़ स्वतन्त्रता बनाए रखी है। हमारी पार्टी हमेशा इसीलिए विजयी हुई है कि उसे जनता की शक्ति में विश्वास था कि इसने हमेशा जनता के क्रांतिकारी उत्साह और सर्जनशील गतिविधि को खुल कर खेलने का पूरा अवसर दिया और इस प्रकार अपनी सच्ची वस्तुस्थिति के अनुरूप ही क्रांति और निर्माण की समस्याओं को स्वयं सुलझाने और अपनी शक्तियों और संभावनाओं को समझने का प्रोत्साहन दिया।

क्रांति और निर्माण में स्वामित्व-भाव ग्रहण करना और स्वामित्व की भूमिका को बढ़ाना—ये विभिन्न पहलुओं वाली समाविष्ट अवधारणाएं हैं। कह सकते हैं कि स्वतंत्र स्थिति का संबंध स्वामित्व के अधिकारों और कर्त्तव्यपालन की रक्षा से संबद्ध है जबकि सर्जनशील स्थिति का संबंध प्रकृति के पुनर्निर्माण और समाज के पुनर्संगठन में स्वामिनी अर्थात् जनता की भूमिका के विकास से है। दूसरे शब्दों में स्वतंत्र स्थिति वह आधारभूत स्थिति है जो हमें क्रांति और निर्माण में बनाए रखनी होगी और

सर्जनशीलता वह आधारभूत उपाय है जो हमें प्रकृति और समाज के रूपांतरण में प्रयुक्त करना ही होगा।

स्वतंत्र स्थिति बनाए रखने के लिए राजनीति में स्वतन्त्रता की पूर्ण गारंटी करना अत्यावश्यक है।

स्वतंत्रता ही मानव को जीवित रखती है। समाज में स्वतन्त्रता खो कर वह मानव नहीं कहला सकता। उसमें और जानवर में अंतर नहीं रहता। हम कह सकते हैं कि मानव के लिए सामाजिक-राजनीतिक जीवन भौतिक जीवन से कहीं अधिक महत्त्व का है। वह सामाजिक प्राणी है। समाज से परित्यक्त और राजनीतिक स्वतंत्रता से विहीन हो कर वह जीवित भले ही दिखाई दे पर सामाजिक मनुष्य के रूप में उसे पूर्णतः मृत ही समझना चाहिए। तभी तो क्रांतिकारी दासता के जीवन से स्वतंत्रता संग्राम में मरण को अधिक सम्मानजनक मानते हैं।

स्वतंत्रता की अवहेलना स्वयं मानव की अवहेलना जैसा है। दूसरों की शृंखलाओं में बंध कर रहना कौन चाहता है? पुराने दिनों में सामंती व्यवस्था तोड़ने के लिए लोग क्यों लड़े और आजकल पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध श्रमिक वर्ग क्यों लड़ रहे हैं? यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्रमिक जन अपने आप को सामंती दासता से मुक्त करना चाहते थे ठीक वैसे ही जैसे अब वे अपने आपको पूंजीवादी शोषण और दमन से मुक्त करना चाहते हैं। हम साम्राज्यवाद से लड़ रहे हैं ताकि हमारा राष्ट्र इसके जूए से पूर्णतः छुटकारा पा सके और प्रभुसत्ता राष्ट्र के समान स्वतंत्रता भोग सके। एक शब्द में, सभी क्रांतिकारी संघर्षों का लक्ष्य वर्ग अथवा राष्ट्रीय दासता से मुक्ति पाना होता है, वे स्वतंत्रता की रक्षार्थ जनता के संघर्ष होते हैं। समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण का हमारा संघर्ष भी अंततोगत्वा जनता का अनेक प्रकार की दासताओं से मुक्ति पाने का और प्रकृति तथा समाज की स्वामिनी बन कर स्वतंत्र और सर्जनशील जीवन व्यतीत कर पाने का संघर्ष है।

अपनी स्वयं की नियति के स्वामित्व के लिए हर राष्ट्र की एक स्वतंत्र सरकार होनी चाहिए और राजनीतिक स्वतंत्रता की दृढ़ गारंटी देनी चाहिए। इसीलिए जूछे विचार को सर्वप्रथम राजनीति में स्वतंत्रता के सिद्धांत के रूप में मूर्त किया जाना चाहिए।

राजनीति में ठोस स्वतंत्रता की गारंटी के लिए अपनी स्वयं की निर्णय बुद्धि के अनुसार, अपने देश की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप और अपनी जनता के हितों के ही लिए हर नीति और दिशा निर्धारण का मार्गदर्शक विचार और सामर्थ्य विशेष रूप से होनी चाहिए। जो सरकार दूसरों के दबाव या आदेशों पर काम करती हो उसे जनता की नियति की दायित्वपूर्ण सच्ची जन सरकार नहीं कहा जा सकता। जिस देश में ऐसी सरकार हो उसे स्वतंत्र प्रभुसत्तासंपन्न देश नहीं माना जा सकता।

राजनीति में स्वतंत्रता के सिद्धांत की मांग है सब राष्ट्रों के बीच पूर्ण समानता और परस्पर सम्मान। दूसरों को दास बनाना या दूसरों का दास बनाना इस सिद्धान्त के विरुद्ध है। जो राष्ट्र दूसरों को दास बनाता है वह स्वयं कभी स्वतंत्र नहीं रह सकता।

देश की स्वतंत्रता दृढ़ करने के लिए राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ अर्थ-व्यवस्था में आत्म-निर्भरता को दृढ़ करना आवश्यक है। अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता के बिना जनता की बढ़ती हुई भौतिक आवश्यकताएं पूरी करना और राज्य तथा समाज की स्वामिनी की यथार्थ भूमिका की भौतिक गारंटी देना असंभव है। आर्थिक पराधीनता राजनीतिक स्वतंत्रता की गारंटी नहीं कर सकती और स्वतंत्र आर्थिक शक्ति के बिना राष्ट्रीय प्रतिरिक्षा में स्व सुरक्षा की नीति का पालन असंभव है।

आत्म-प्रतिरक्षा और स्व-सुरक्षा मानव स्वभाव में अंतरस्थ हैं। किसी देश के पास अपनी प्रतिरक्षा के साधन होना आवश्यक है। किसी भी स्वतंत्र और प्रभुसत्ता-संपन्न राज्य के पास राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के लिए स्व-सुरक्षा की नीति होना अत्यंत आवश्यक है। साम्राज्यवादी आक्रांताओं के होते हुए जिस राज्य के पास आंतरिक एवं बाह्य शत्रुओं से अपनी प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए प्रतिरक्षा सामर्थ्य न हो वह पूर्णतः स्वतंत्र और प्रभुसत्ता संपन्न राज्य नहीं है।

राजनीति में स्वतंत्रता, अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय प्रतिरक्षा में स्व-सुरक्षा की हमारी पार्टी की दृढ़नीति को हमारी जनता ने अपने क्रांतिकारी व्यवहार से सही और आवश्यक सिद्ध कर दिया है।

अब मैं आपके इस प्रश्न पर आता हूं कि अपनी वर्तमान आंतरिक नीति में जूछे विचार का अवमूर्त्तन हम क्या मानते हैं।

जूछे विचार के अवमूर्त्तन का मतलब है स्वतंत्र और सर्जनशील कोण से क्रांति और निर्माण कार्य की गति में तीव्रता लाना।

कोरिया की क्रांति में जूछे विचार के अवमूर्तन में हमारे सामने सर्वाधिक तात्कालिक समस्या है हमारे देश का स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करना।

दीर्घकाल से हमारी जनता साम्राज्यवादी जुआ उतार फेंकने के लिए संघर्ष कर रही है लेकिन अब भी हमारी भूमि के आधे भाग में राष्ट्रीय प्रभुसत्ता अभी तक पैरों तले रौंदी जा रही है। विदेशी आक्रांताओं को बाहर खदेड़ने और पूरे देश में राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की स्थापना करने से अधिक तात्कालिक हमारी जनता के लिए कुछ और नहीं है।

लगभग तीस वर्षों से दक्षिण कोरिया के शासक बाहरी शक्तियों पर निर्भरता की नीति का पालन कर रहे हैं और देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में रुकावटें डाल रहे हैं। बाहरी शक्तियों पर निर्भरता का रास्ता राष्ट्रीय विनाश का रास्ता

है। राष्ट्रीय उत्पीड़न के लंबे इतिहास से यही गंभीर पाठ हमारी जनता ने सीखा है; यह एक ऐसा यथार्थ भी है जो हम अमरीकी साम्राज्यवादी आधिपत्य से दक्षिण कोरिया की जनता को मिलने वाले कष्टों और दुर्भाग्य में स्पष्टतः देख भी सकते हैं। हमारा तात्कालिक दायित्व है कि उत्तर और दक्षिण कोरिया की संपूर्ण जनता स्वतंत्रता और आत्म-निर्भरता की भावना से बाहरी शक्तियों से लड़े और देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के शक्तिशाली संग्राम के लिए जाग्रत हो जाए। आज कोरिया की क्रांति में जूछे विचार के अवमूर्त्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है पुन-रेकीकरण की प्राप्ति।

गणतंत्र के उत्तरी अर्द्धभाग में जूछे विचार की स्थापना का केंद्रीय कर्त्तव्य है जनता को कठिन श्रम से मुक्ति दिलाने के तकनीकी क्रांति के तीन मुख्य दायित्वों कों पूरा करने के लिए तेजी से आगे बढ़ना।

हमारी जनता शोषण और दमन से मुक्ति पा चुकी है अब उसके सामने अपने आप को कष्टसाध्य श्रम से मुक्ति पाने का दायित्व है।

जनता के सामाजिक जीवन में श्रम का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। कार्य स्थितियों में जो आधारभूत अंतर है उन्हें समाप्त करना और जनना को कड़ी मेहनत से मुक्त करना, उसके जीवन को और स्वतंत्र और सर्जनशील बनाने में बड़े प्रभावशाली होंगे।

जनता को कमरतोड़ श्रम से मुक्ति दिलाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्वों को शीघ्र पूरा किया जाए। प्रस्तावित तीन दायित्वों के उद्देश्य हैं : हलके और भारी श्रम के अंतर को कम करना, कृषि और उद्योग के श्रम का अंतर कम करना और हमारी स्त्रियों को घर के भारी कामों से मुक्त करना—और यह सब अपने स्वयं के प्रयासों से तकनीक के पूर्ण विकास के द्वारा प्राप्त करना। जब ये दायित्व पूरे कर लिए जाएंगे तो शहर और गांव में कड़ी मेहनत अधिकांशतः समाप्त हो चुकी होगी और श्रमिक वर्ग और कृषकों के बीच श्रम का वर्गभेद भी समाप्त हो जाएगा।

हमने तकनीकी क्रांति के इन तीन प्रमुख दायित्वों की प्रस्तावना अपनी जनता को कष्टसाध्य श्रम से मुक्ति दिलाने के अपने लक्ष्य के रूप में की है। भारी उद्योग या हलके उद्योग के विकास के सामान्य संदर्भ के स्थान पर हमने यह किया। इससे हमारी पार्टी की यह दृढ़ स्थिति स्पष्टतः सिद्ध होती है कि आर्थिक निर्माण या तक-नीकी क्रांति का आयोजन मात्र अपने आप में नहीं किया जाना चाहिए बल्कि उसे राज्य और समाज की स्वामिनी जनता के संपन्न जीवन की सेवा में लगाया जाना चाहिए। हर क्षेत्र में जनता को महत्त्व देना और उसकी सेवा करना—यही जूछे विचार की मूल आवश्यकता है।

इसके बाद आपने मुझसे जूछे विचार पर आधारित हमारे युवकों और बच्चों की शिक्षा के बारे में पूछा है।

युवकों और बच्चों की शिक्षा पर हमारा अधिक ध्यान है। वे ही हमारी क्रांति की रिजर्व शक्ति हैं जो आनेवाली पीढ़ियों में क्रांति को आगे ले जाएंगे। यही नहीं सामाजिक प्रगति के लिए जनता की शिक्षा और ट्रेनिंग से अधिक महत्त्व का कोई और काम नहीं होता।

यह सही है कि भौतिक साधनों के बिना जनता न रह सकती है, न विकास कर सकती है। इस संदर्भ में अर्थव्यवस्था सामाजिक जीवन का भौतिक आधार है। पर इन साधनों का आयोजन हमेशा जनता के लाभ के लिए होता है, उसके बिना ये निरर्थक हैं। फिर जनता ही जीवन साधनों की रचना करती है और जीवन की परिस्थितियों को सुधारती है। इसलिए समाज के विकास में सबसे महत्त्व की चीज है जनता को और गतिशील होने की ट्रेनिंग देना। क्रांति और निर्माण को पूर्ण शक्ति से आगे बढ़ाने में लोगों के साथ काम को अर्थात् लोगों को नए सांचे में ढालने को प्रमुखता मिलनी चाहिए।

जूछे विचार का आधार है कि मनुष्य हर चीज का स्वामी और निर्णायक तत्त्व है। प्रकृति और समाज का पुर्ननिर्माण भी जनता के लिए ही है और जनता द्वारा किया जाने वाला काम है। विश्व का सबसे बहुमूल्य रत्न मनुष्य ही है, और वही सर्वाधिक शक्तिशाली है। हमारा सारा काम ज़नता के लिए है और उसकी सफलता इस पर निर्भर करती है कि उसके बीच हम कैसे काम करते हैं। लोगों के साथ काम एक महत्वपूर्ण तत्व शिक्षा है।

तन, मन और नीति से पूर्ण सामाजिक प्राणी होने की ट्रेनिंग शिक्षा में निहित है। सामाजिक प्राणी होने के लिए पहले सही सामाजिक चेतना होनी चाहिए। इस क्रांतिकारी युग में जन्मी युवा पीढ़ी को अगर क्रांतिकारी विचारों में सज्जित नहीं किया गया, अगर हमारे समाजवादी निर्माण के इस युग के मानव की हैसियत से वे विज्ञान और तकनीक, साहित्य और कला से अपरिचित रहे तो उन्हें सामाजिक प्राणी नहीं कहा जा सकता।

सामाजिक प्राणी के रूप में जो सैद्धांतिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होनी चाहिए वह प्राप्त हो जाने पर ही लोग स्वामी के रूप में सामाजिक जीवन के हर पहलू में भाग ले सकते हैं और क्रांति और निर्माण को सोत्साह तीव्र कर सकते हैं। इसीलिए हमारी पार्टी और किसी काम के मुकाबले शिक्षा पर अधिक जोर देती है।

शिक्षा के केंद्र में हम समाजवादी शिक्षा सिद्धांत को स्थान देते हैं। इसका आधारभूत सिद्धांत इसमें निहित है कि जनता को सिद्धांत, ज्ञान और दृढ़ शरीर से सुसज्जित विश्वसनीय क्रांतिकारी कार्यकर्त्ता बनने की शिक्षा दी जाय ताकि वे क्रांति

और निर्माण के स्वामी की भूमिका निभाने योग्य बन सकें।

लोगों की शिक्षा और ट्रेनिंग में उनकी सैद्धांतिकता को क्रांति के सांचे में ढालना बहुत महत्व का है। किसी आदमी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो, पर वह सिद्धांत में पिछड़ा हुआ और नैतिक रूप से पतित हो तो हमारे समाज में पूर्णतः निरर्थक और मस्तिष्क से अयोग्य ही समझा जाएगा। इसलिए हमारी पार्टी जनता की सैद्धांतिकता को क्रांतिकारी सांचे में ढालने की ओर ध्यान देना प्राथमिक महत्त्व का मानती है।

युवकों और बच्चों की शिक्षा में हमें क्रांतिकारी विचारों में उनकी ट्रेनिंग को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। अगर वे काम से घृणा करें और राज्य और समाज की सेवा न करें तो उनका ज्ञान और कौशल कितने ही श्रेष्ठ हों पर निरर्थक हैं। उन्हें एक ऐसी समाजवादी देशभक्ति और क्रांतिकारी विश्व दृष्टिकोण से सुसज्जित किया जाना चाहिए कि वे निजी उन्नति और धन लाभ के बजाए देश और जनता के लिए काम करें। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे जो कुछ सीखें वह उपयोगी हो और सब युवा और बच्चे बड़े होकर साम्यवादी नैतिकता वाले ऐसे नव मानव बनें जो काम करने को, राज्य और समाज की संपत्ति की रक्षा करने को, उसका ध्यान रखने को, और क्रांति और निर्माण में आगे बढ़ने को उत्सुक हों। समाजवादी शिक्षा की यह आधारभूत आवश्यकता है।

आज हम सार्वजनीन अनिवार्य दस-वर्षीय अपर मिडिल स्कूल शिक्षा लागू करने का महत् प्रयास कर रहे हैं। यह पूरा होने पर हमारी जो नई पीढ़ी आएगी वह क्रांतिकारी विश्व दृष्टिकोण के मुख्य तत्वों से सुसज्जित, प्रकृति और समाज के मौलिक ज्ञान से संपन्न और एक से अधिक हुनर वाली और समाजवाद के निर्माण में समर्थ पीढ़ी होगी। हमारे समाजवादी निर्माण को बढ़ाने में, और संपूर्ण समाज के क्रांतिकरण और श्रमिक-वर्गीकरण में इसका भारी प्रभाव होगा।

आपने मुझसे जूछे विचार का विस्तृत विवरण देने को कहा था। पर इसका कोई अंत नहीं है। हमारी पार्टी की सभी नीतियां और दिशाएं जूछे विचार से उद्भूत हैं और उसका मूर्त्त रूप हैं। जूछे विचार केवल सिद्धांत के लिए सिद्धांत नहीं है। यह हमारे देश की क्रांति और निर्माण का मार्गदर्शक विचार है। इसका जन्म हमारे पेचीदा क्रांतिकारी संघर्षों में मिले अनुभवों और पाठों से हुआ है। हमारे देश में जूछे विचार सामाजिक जीवन के हर पहलू में स्थापित इतिहास का दृढ़ यथार्थ है। जूछे विचार की गहरी समझ के लिए हमारी पार्टी की नीति और हमारे देश की वस्तुस्थिति का विवरणशील अध्ययन आवश्यक है।

२. गणतंत्र सरकार की विदेश नीति

आपने मुझसे पूछा है कि जूछे विचार पर आधारित हमारी विदेश नीति का समाजवादी देशों से एकता सुदृढ़ करने में, साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में और अंतर्राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक शक्तियों को मजबूत करने में क्या प्रभाव पड़ा है। मैं इस प्रश्न पर कुछ विचार प्रकट करूंगा।

आपने ठीक ही कहा है कि गणतंत्र सरकार अपनी विदेश नीति जूछे विचार के आधार पर बनाती है और बाह्य गतिविधि के आचरण में इसी विचार से मार्ग-दर्शन लेती है। एक शब्द में हमारा गणतंत्र बाह्य गतिविधि में दृढ़तापूर्वक स्वतंत्रता का पालन करता है।

गणतंत्र सरकार की स्वतंत्र विदेश नीति हमारी जनता की और विश्व की जनता की उच्च आकाँक्षाओं की दर्पण है। अपनी बाह्य गतिविधि में अपनी स्वतंत्रता को दृढ़तापूर्वक बनाए हुए हम अंतर्राष्ट्रीय एकता और सहयोग की वृद्धि के सिद्धांत का पालन करते हैं। हम हर उस छोटे-बड़े देश से मित्रता और सहयोग के संबंध बढ़ा रहे हैं जो हमारे देश के प्रति मित्रवत् है। न हम किसी अन्य देश के हितों का अतिक्रमण करते हैं और न ही किसी अन्य देश को अपने राष्ट्र के अधिकार या सम्मान का अतिक्रमण या हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने देते हैं। हमारी गणतंत्र सरकार की यह नीति न केवल हमारे देश में क्रांति और निर्माण के हितों के अनुरूप है बल्कि विश्व क्रांति के हित में भी पूरी तरह अनुकूल है।

बाह्य गतिविधि में हमारी गणतंत्र सरकार का स्वतंत्रता का सिद्धांत किसी भी तरह सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के विरुद्ध नहीं है। स्वतंत्रता के बिना अंतर्राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता के बिना स्वतंत्रता का अस्तित्व नहीं हो सकता।

सबसे पहले तो जूछे विचार पर आधारित हमारी सरकार की विदेश नीति समाजवादी देशों की एकता को सुदृढ़ करने में सक्रिय योगदान कर रही है।

हमारी गणतंत्र सरकार समाजवादी देशों से अपने संबंधों में स्वतंत्रता के सिद्धांत का दृढ़तापूर्वक पालन करती है। समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांत के आधार पर हम समाजवादी देशों के साथ मित्रता और सहयोग के संबंधों का विकास कर रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग आंदोलन में उभरने वाली हर रंग की अवसर-वादिता के विरुद्ध हम भी अपने देश की वस्तुस्थिति के अनुरूप और हमेशा अपने स्वतंत्र निर्णय और विश्वास के आधार पर संघर्ष कर रहे हैं।

समाजवादी देशों में एकता और संपर्क संपादन के प्रयासों में विशेषकर हम स्वतंत्रता पर आधारित अपने सिद्धांत का पालन करते हैं। हमारा कहना है कि

समाजवादी देशों को पहले तो साम्राज्यवाद का विरोध करना चाहिए; दूसरे, उपनिवेशों में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन का और अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग आंदोलन का समर्थन करना चाहिए; तीसरे, समाजवाद और साम्यवाद की ओर बढ़ते रहना चाहिए; और चौथे, एक दूसरे के आंतरिक ममलों में अ-हस्तक्षेप, परस्पर सम्मान, समानता और विनिमय के सिद्धांत पर एकता प्राप्त करनी चाहिए। हालांकि बिरादराना पार्टियों और समाजवादी देशों में मतभेद हैं, पर हम इन चार सिद्धांतों के अनुरूप संयुक्त संघर्ष कर रहे हैं और एकता बढ़ा रहे हैं।

साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में भी हमारी गणतंत्र सरकार हमारे अपने विश्वासों और हमारी वस्तुस्थिति के अनुरूप संघर्ष कर रही है। आंतरिक रूप से हम अपनी जनता के कट्टर शत्रु अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष को प्रमुख क्रांतिकारी दायित्व मानते हैं, और अपनी बाह्य गतिविधि में भी हम अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण और उसकी युद्ध की नीतियों को रोकने और निराश करने के लिए और विश्व-शांति और सुरक्षा की रक्षा करने के लिए सक्रिय रूप से लड़ रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध विश्व की जनता के संघर्ष को सक्रिय समर्थन और प्रोत्साहन देने को हमारी सरकार अपनी लौह नीति मानती है और सभी साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों से हमारी एकता बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रजातांत्रिक आंदोलन के संबंध में भी हमारी गणतंत्र सरकार स्वतंत्रता और अ-हस्तक्षेप के सिद्धांत का पालन करती है। शांति और प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के लिए विश्व जनता के क्रांतिकारी संघर्ष और प्रजातांत्रिक आंदोलन के समर्थन और प्रोत्साहन में हमारी सरकार जो कुछ भी कर सकती है कर रही है, उनमें हस्तक्षेप करने या उन पर अपने विचार लादने का हमारा कोई इरादा नहीं है।

नव-स्वाधीन देशों तथा अन्य सभी देशों से पंचशील के सिद्धांतों—क्षेत्रीय अखंडता और प्रभुसत्ता के प्रति सम्मान, अनाक्रमण, एक दूसरे के आंतरिक मामलों में अ-हस्तक्षेप, समानता और परस्पर लाभ, और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—के आधार पर हमारी सरकार एकता के लिए प्रयत्नशील है।

हमारी पार्टी के जुछे विचार और हमारी सरकार की स्वतंत्रत विदेश नीति को विश्व की जनता का सक्रिय समर्थन और सहानुभूति प्राप्त है। हर दिन विश्व भर में अधिकाधिक लोग हमारी पार्टी के क्रांतिकारी जूछे विचार के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहे हैं और हमारी गणतंत्र सरकार के स्वतंत्रता के सिद्धांत का सुस्पष्ट समर्थन कर रहे हैं।

आज संसार के प्रगतिशील लोग जूछे विचार के अनुरूप रहना चाहते हैं और अनेक देश स्वतंत्रता की मांग कर रहे हैं। कोई भी दूसरों का दास नहीं बनना चाहता।

कोई राष्ट्र अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप और अपने सम्मान का अतिक्रमण सहन नहीं करेगा। समाजवादी देश ही नहीं नव स्वाधीन देश भी विदेशी हस्तक्षेप और बाधाओं का विरोध करते हैं, और स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की राह पर चल पड़े हैं। पूंजीवादी देश भी बड़ी शक्तियों का अंधानुकरण नहीं करना चाहते और कार्य स्वतंत्रता की मांग कर रहे हैं। विश्व जनता अब जूछे विचार की मांग कर रही है और कई देश स्वतंत्रता की राह पर हैं। यह हमारे युग का अदम्य बहाव है।

आप वियतनाम शांति और इस संदर्भ में अमरीकी साम्राज्यवाद की एशिया नीति पर हमारे विचार सुनना चाहते हैं। अब मैं इस विषय पर संक्षेप में कहूंगा।

अभी शांति नहीं हुई है, वियतनाम में युद्ध अभी चल रहा है। यह केवल आप ही के लिए नहीं, सारे एशिया की जनता और विश्व के शांति प्रेमी लोगों के लिए खेद की बात है। वियतनाम का युद्ध वहां की जनता को कष्ट और पीड़ा पहुंचा रहा है।

वियतनाम में शांति नहीं हो सकी तो केवल अमरीकी साम्राज्यवादियों की कुटिल और धूर्त आक्रमण नीति के ही कारण।

आप जानते ही हैं कि पिछले वर्षों में वियतनाम युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवाद को भारी धक्के खाने पड़े और घर और बाहर उसे एक गंभीर राजनीतिक, आर्थिक और सैनिक संकट से गुजरना पड़ा है। इस अंधी गली से तिकलने के लिए अमरीकी साम्राज्यवाद ने तथाकथित 'निक्सन सिद्धांत' को जन्म दिया। यह और भी धूर्त्त और घातक आक्रमण नीति है और इसका उद्देश्य है एशिया में एशियावासियों को एशियावासियों से लड़ाना और अफ्रीका में अफ्रीकावासियों को अफ्रीकावासियों से लड़ाना।

पर 'निक्सन सिद्धांत' बड़ा घिसा-पिटा हथियार है जो किसी काम का नहीं है। जब कभी प्रतिक्रियावादी शासकों पर मुसीबत आई है उन्होंने हमेशा इस हथियार का इस्तेमाल किया है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि वियतनामी जनता के वीरतापूर्ण प्रतिरोध संघर्ष में 'निक्सन सिद्धांत' का दिवाला निकल रहा है। इस समय एक तरफ तो अमरीकी साम्राज्यवादी दक्षिण वियतनाम में युद्ध के 'वियतनामीकरण' के षड्यंत्र को बढ़ाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं और दूसरी तरफ वियतनाम जनवादी गणतंत्र के तट की नाकेबंदी के अपराधपूर्ण कृत्य पूरी धूर्त्तता से कर रहे हैं और उसके शहरों, गांवों, और आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थानों पर बेतहाशा बमबारी कर रहे हैं। इसके बावजूद उन्हें भारी सैनिक और राजनीतिक हार भोगनी पड़ रही है क्योंकि अमरीकी आक्रमण के विरुद्ध राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए वियतनामी जनता एक होकर उठ खड़ी हुई है और बहादुरी से लड़ रही है।

वियतनाम में शांति पक्की करने के लिए अमरीकी साम्राज्यवादियों को तुरंत

ही अपना आक्रामक युद्ध बंद कर देना चाहिए, युद्ध के 'वियतनामीकरण' की अपनी नीति त्यागनी चाहिए और अपनी और अपने पिछलग्गू देशों की सेनाएं और घातक शस्त्र भंडार उठा कर दक्षिण वियतनाम से चले जाना चाहिए। वियतनाम के प्रश्न का हल स्वयं वियतनामी जनता द्वारा बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के सुलझाया जाना आवश्यक है।

वियतनाम की जनता को एशिया और शेष विश्व की क्रांतिकारी जनता का शक्तिशाली समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त है। वह अमरीकी साम्राज्यवादियों की 'वियतनामीकरण' की नीति को निरर्थक कर देगी, और दक्षिण की मुक्ति उत्तर की प्रतिरक्षा और देश के पुनरेकीकरण के संघर्ष में महान विजय हासिल करेगी।

अब मैं संक्षेप में संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस वर्ष कोरिया प्रश्न पर होने वाली बहस के संबंध में गणतंत्र सरकार की स्थिति की चर्चा करूंगा।

इस समय इस विषय पर हमारी स्थिति शत्रु की स्थिति से बिलकुल भिन्न है।

पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी अमरीकी साम्राज्यवादी और दक्षिण कोरिया शासक संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोरिया प्रश्न पर बहस को अटकाने टालने की चालें चल रहे हैं। उनका कहना है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोरिया का प्रश्न उठाने और उस पर बहस करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उत्तर और दक्षिण कोरिया के रेडक्रास संगठनों में वार्त्ता आरंभ हो गई हैं और उत्तर और दक्षिण के बीच संवाद हो रहा है।

यह दावा कोरिया की जनता की इच्छाओं के विपरीत है। यह दावा पूरी तरह गलत है और इसका उद्देश्य कोरिया के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण को रोकना है। उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और संवाद का बहाना लगा कर इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोरिया के प्रश्न पर विचार-विमर्श टालने के पीछे अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरियाई शासकों के कुटिल षड्यंत्र छिपे हैं। बहस को स्थगित करके अमरीकी साम्राज्यवादी कोरिया में अपनी आक्रामक नीति छिपाना चाहते हैं और दक्षिण कोरियाई शासक दक्षिण कोरिया में अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रमण सेना को बनाए रखना चाहते हैं। अतः संयुक्त राष्ट्र के संदर्भ में अमरीकी साम्राज्यवादियों और दक्षिण कोरियाई शासकों की चालें पूर्णतः आक्रामक और अलोकप्रिय हैं।

शत्रु की इन चालों का विरोध करने के लिए गणतंत्र की सरकार ने निर्णय किया है कि वह इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा अधिवेशन में कोरिया के प्रश्न पर बहस के लिए जोर देगी।

हमारी मान्यता है कि क्योंकि उत्तर और दक्षिण के बीच संवाद हो रहा है, उत्तर और दक्षिण कोरिया के रेडक्रास संगठनों में वार्ता चल रही है और विदेशी

हस्तक्षेप के बिना देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए कोरियाई राष्ट्र की एकता की मांग करने वाला संयुक्त वक्तव्य उत्तर और दक्षिण दे चुके हैं, इसलिए संयुक्त राष्ट्र को कोरियाई जनता के अपने राष्ट्र के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के संघर्ष की सहायता करनी चाहिए।

अगर संयुक्त राष्ट्र कोरिया के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण में सहायता करना चाहता है तो उसे इस वर्ष महासभा के अधिवेशन में कोरिया के प्रश्न पर बहस को स्थगित नहीं करना चाहिए, बल्कि ऐसे सुस्पष्ट कदम उठाने चाहिए कि राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत पर देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने का कोरियाई जनता का संघर्ष सफल हो सके।

पहले तो संयुक्त राष्ट्र को 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास के लिए संयुक्त राष्ट्र आयोग' का विघटन करना चाहिए, दक्षिण कोरिया में संयुक्त राष्ट्र के साइन बोर्ड के नीचे आधिपत्य जमाने वाली अमरीकी साम्राज्यवादी आक्रमण सेना से 'संयुक्त राष्ट्र सेना' की टोपी छीन लेनी चाहिए और उसे दक्षिण कोरिया से हटने पर मजबूर करना चाहिए। इसके साथ-साथ उसे कोरियाई जनता के राष्ट्रीय पुनरेकीकरण संघर्ष के विरुद्ध अपने सब प्रस्ताव और कृत्य रद्द कर देने चाहिए और कोरिया के स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के पक्ष में एक प्रस्ताव पारित करना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र अगर ये कदम उठाए तो कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की संभावना बढ़ सकती है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रति हमारी नीति का आज अनेक देश समर्थन कर रहे हैं। भविष्य में हमारी न्यायोचित नीति को और भी अन्य देशों का समर्थन मिलेगा।

हमारी मान्यता है कि विश्व के प्रगतिशील लोगों के सक्रिय समर्थन के साथ-साथ देर सबेर संयुक्त राष्ट्र कोरिया के स्वतन्त्र शांतिपर्ण पुनरेकीकरण के लिए सुस्पष्ट उपाय करेगा।

३. कोरिया के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का प्रश्न

हमारे विभक्त देश का स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण हमारी पार्टी और गणतन्त्र सरकार की अपरिवर्तनीय नीति है। हमारे देश के विभाजन के पहले ही दिन से हमारे शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए पूर्ण निष्ठा से हर संभव प्रयत्न किया है।

फिर भी हमारा देश अभी तक उत्तर और दक्षिण में बंटा है; स्वतंत्रता के २७ वर्ष बीत जाने पर भी पुनरेकीकरण नहीं हो पाया है। हमारी जनता इस क्षेत्रीय

विभाजन और राष्ट्रीय अलगाव के कष्ट भोग रही है और एकमत से देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण चाहती है।

शांतिपूर्ण राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की आकांक्षा गणतंत्र के उत्तरी अर्द्धभाग की जनता में ही नहीं, दक्षिण कोरिया की जनता में भी तेजी से बढ़ रही है।

जब दक्षिण कोरिया की जनता में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की भावना तेजी से बढ़ रही थी तो पिछले वर्ष ६ अगस्त के भाषण में हमने घोषणा की कि हम दक्षिण कोरिया की सभी राजनीतिक पार्टियों से, डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी से भी, सभी सामाजिक संस्थाओं से और प्रमुख व्यक्तियों से संपर्क के लिए तैयार हैं।

जब हमने दक्षिण कोरिया की डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी तक से संपर्क में आने की उत्सुकता प्रकट करते हुए अपने नए प्रस्ताव रखे तो उसके बाद दक्षिण कोरिया की जनता ने ऐसे संपर्क के पक्ष में अपना दबाव बढ़ा दिया और पूरा विश्व की आवाज उठाने लगा। इससे मजबूर हो कर दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने उत्तर-दक्षिण रेडक्रास संगठनों की वार्त्ता और परिवारों को खोजने के आंदोलन का प्रस्ताव रखा। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारा प्रस्ताव दक्षिण कोरिया के पक्ष से राजनीतिक समझौता वार्त्ता का था। पर हम स्वाधीनता के दिन से ही उत्तर-दक्षिण संपर्क की आकांक्षा संजोए थे इसलिए हमने इस प्रस्ताव को इसकी सीमाओं के बावजूद स्वीकार कर लिया और बातचीत के लिए राजी हो गए हालांकि उसकी सीमा केवल बिछुड़े हुए परिवारों को खोजने तक ही थी। परिणामस्वरूप पिछले वर्ष २० सितम्बर को उत्तर और दक्षिण कोरिया के रेडक्रास संगठनों में प्रारंभिक वार्ताएं आरंभ हुईं।

वार्त्ता आरंभ होने पर दक्षिण कोरिया की जनता ने, गणतंत्र की उत्तरी अर्द्धभाग की जनता का तो कहना ही क्या, उत्तर-दक्षिण संपर्क के आरंभ का स्वागत किया और उत्तेजनापूर्ण हर्ष प्रकट किया। उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास संगठनों की प्रारंभिक वार्त्ता के आरम्भ के बाद दक्षिण कोरिया की जनता में शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की भावनाएं और भी ऊंची बढ़ने लगी।

शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए दक्षिण कोरिया की तेजी से बढ़ती आकांक्षाओं से घबरा कर दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने 'उत्तर से धावे की धमकी' का जाली बहाना लगा कर 'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा करदी और जनता पर दमन चक्र चला दिया। दक्षिण कोरियाई शासकों द्वारा 'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा दक्षिण कोरिया की जनता में तेजी से बढ़ती हुई शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की भावना और प्रजातांत्रिक आकांक्षा को दबाने की छलछद्म से भारी एक चाल मात्र थी।

'आपातकालीन स्थिति' की घोषणा के बाद भी हमने राष्ट्रीय अलगाव के काले बादल हटाने और देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने की इच्छा से नए सुस्पष्ट

प्रस्ताव रखे।

दक्षिण कोरियाई जनता के दबाव और विश्व के दृढ़ जनमत से मजबूर हो कर दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने उत्तर और दक्षिण की प्रारम्भिक रेडक्रास वार्त्ताओं से अलग उत्तर-दक्षिण के गुप्त उच्च-स्तरीय संवाद का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार जैसा कि सारी दुनिया जानती है उत्तर-दक्षिण उच्च स्तरीय वार्त्ताएं हुई और उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य प्रकाशित किया गया जिसकी मुख्य विषय वस्तु थी राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के हमारे तीन सिद्धांत।

उत्तर और दक्षिण के बीच उच्चस्तरीय वार्त्ता से और उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य से हमारे राष्ट्र के सामने देश का स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण प्राप्त करने के संघर्ष में उज्ज्वल संभावनाएं उभर कर आई हैं। बिना किसी विदेशी हस्तक्षेप के स्वयं कोरिया-वासियों के अपने प्रयासों से देश के शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की उत्तर-दक्षिण संयुक्त-वक्तव्य की भावना को संपूर्ण कोरियाई जनता और पूरे विश्व की सहानुभूति प्राप्त हुई है।

पर उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य की घोषणा का यह अर्थ नहीं है कि राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की सब समस्याएं आसानी से सुलझ जाएंगी। देश का स्वतंत्र शांति-पूर्ण पुनरेकीकरण प्राप्त करने के लिए संपूर्ण कोरियाई जनता को बड़े धैर्यपूर्वक अन-वरत संघर्ष करना पड़ेगा।

संयुक्त वक्तव्य के बाद से दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने मुंह फेर लिया है और अब दोमुंही बातें कर रहे हैं। संयुक्त वक्तव्य में जो समझौते हुए थे, उन्हें वे ईमानदारी से लागू नहीं कर रहे हैं। हमारे सामने वे अच्छी अच्छी बातें करते हैं लेकिन पीठ फेरते ही वे हमारी निंदा करते हैं और ऐसे वक्तव्य देते और काम करते जो संयुक्त वक्तव्य की मूल भावना के विपरीत हैं।

उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य में राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का जो पहला सिद्धांत स्पष्ट किया गया था वह था कि बाहरी शक्तियों का सहारा लिए बिना, उनके हस्तक्षेप के बिना, राष्ट्रीय आत्म-निर्णय के सिद्धांत पर स्वतन्त्र रूप से देश का पुनरेकीकरण किया जाएगा। स्पष्ट बात तो यह है कि देश के स्वतन्त्र पुनरेकीकरण का मतलब है अमरीकी साम्राज्यवादियों को दक्षिण कोरिया से निकलने को मजबूर करना और अन्य विदेशी शक्तियों को हमारे देश के पुनरेकीकरण में हस्तक्षेप करने से रोकना।

सोवियत यूनियन और चीन से हमारी संधि है, पर वे हमारे देश के आंत-रिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करते। हमारी प्रभुसत्ता का अतिक्रमण करने वाली और हमारे राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के रास्ते में खड़ी होने वाली शक्तियां और कोई नहीं बस अमरीकी साम्राज्यवाद और कुछ जापानी प्रतिक्रियावादी हैं। अतः अपने देश का स्वतंत्र पुनरेकीकरण करने के लिए हमें अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी

सैन्यवाद का विरोध करना होगा क्योंकि वे हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप कर रहे हैं।

फिर भी दक्षिण कोरियाई अधिकारी स्वतंत्र राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के सिद्धांत पर सहमत होने के बावजूद यह अनर्गल दावा कर रहे हैं कि संयुक्त राष्ट्र बाहरी शक्ति नहीं है, कि अमरीकी सेना को दीर्घकाल तक दक्षिण कोरिया में रहना चाहिए या यह कि कोरिया का पुनरेकीकरण संयुक्त राष्ट्र की देखरेख में चुनावों के द्वारा होना चाहिए।

उत्तर-दक्षिण वक्तव्य यह दृढ़ स्थापना भी करता है कि राष्ट्रीय पुनरेकीकरण एक दूसरे के विरुद्ध शस्त्र संचालन के बिना शांतिपूर्ण उपायों से होना चाहिए। यदि इस सिद्धांत का पालन करना है तो दोनों पक्षों को ऐसी बात और काम नहीं करने चाहिए जिनसे स्थिति बिगड़े।

हमने कई बार स्पष्ट किया है कि 'दक्षिण पर धावा' करने का हमारा कोई इरादा नहीं है। लेकिन दक्षिण कोरियाई शासकों का कहना है कि वे हमारे वक्तव्यों पर भरोसा नहीं कर सकते, और वे यह भी शोर मचा रहे हैं कि उन्हें सैनिक मोर्चे पर और पृष्ठभूमि में सैनिक प्रतिष्ठानों को सुदृढ़ करके और शस्त्रों का आधुनिकीकरण करके उत्तर-दक्षिण के मुकाबले के लिए 'शक्ति वर्द्धन' करना होगा। यही नहीं वे अनेक सैनिक अभ्यास भी कर रहे हैं। यह एक ऐसा गंभीर काम है जिससे उत्तर और दक्षिण के बीच तनाव बढ़ेगा।

आखिरकार दक्षिण कोरियाई शासकों का यह अनर्गल गाली गलौज और उनकी उत्तेजनाएं हमारी जनता और जनसेना में रोष को बढ़ा रहे हैं और संवाद के साथ तनाव बढ़ा रहे हैं। इस काम से केवल युद्ध का वातावरण ही बनेगा, पुनरेकीकरण का वातावरण नहीं।

उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य में राष्ट्रीय पुनरेकीकरण का जो प्रमुख सिद्धांत स्पष्ट किया गया है वह है सैद्धांतिक, आदर्श और समाज व्यवस्था के भेदभावों से ऊपर उठ कर महान राष्ट्रीय एकता बढ़ाना।

अगर हम उत्तरी आधे भाग की समाजवादी व्यवस्था दक्षिण कोरिया पर न लादें और दक्षिण कोरियाई अधिकारी हमें पूंजीवादी व्यवस्था बहाल करने पर मजबूर न करें तो हम जो एक ही राष्ट्र के अंग हैं आपस में क्यों लड़ेंगे ? हम दक्षिण कोरिया पर समाजवाद नहीं लाद रहे हैं। भविष्य में दक्षिण कोरिया में कैसा समाज होगा यह दक्षिण कोरिया की जनता अपनी इच्छा से तय करेगी। दक्षिण कोरियाई शासक अब शोर मचा रहे हैं कि 'स्वतंत्रता का झोंका' उत्तर की ओर भेजा जाना चाहिए। यह हेकड़ी भरा रवैया शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण को रोक रहा है।

सैद्धांतिकता, आदर्श और समाज व्यवस्था के मतभेद से ऊपर उठ कर महान

राष्ट्रीय एकता प्राप्ति के सिद्धांत की मांग है समाज का जनवादीकरण और सभी पार्टियों, समूहों और स्तर के व्यक्तियों को राजनीतिक गतिविधि की स्वतंत्रता। जब समाज का जनवादीकरण होगा, तभी स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण की इच्छुक सभी शक्तियां अपने विचारों, राजनीतिक दृष्टिकोणों, धार्मिक विश्वासों और राजनीतिक गठजोड़ों के बावजूद संगठित हो सकती हैं।

लेकिन उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य की घोषणा के बाद भी दक्षिण कोरियाई शासक इस दावे के साथ कि 'साम्यवाद-विरोधी कानून' और 'राष्ट्रीय सुरक्षा कानून' के बदलने की आवश्यकता नहीं है, हमेशा की तरह प्रजातांत्रिक स्वाधीनता का हनन कर रहे हैं और जनता पर अपना फासिस्ट दमन चक्र तेज कर रहे हैं। वे विरोधी पक्ष की गतिविधियों पर रोक लगा रहे हैं, विरोधी पार्टी के सदस्यों को हमसे संपर्क नहीं करने देते और 'साम्यवाद-विरोधी कानून' का उल्लंन करने के नाम पर ऐसे अनेक लोगों को पकड़ कर जेल में डाल रहे हैं जो उत्तर और दक्षिण के बीच संपर्क और आदान-प्रदान की और राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की पैरवी करते हैं। कुछ अरसा हुआ दक्षिण कोरियाई अधिकारी इस हद तक चले गए कि उन्होंने उन देशभक्तों को प्राणदंड दे दिया जो दक्षिण कोरिया में प्रजातन्त्र और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण का प्रयास कर रहे थे। हमारे लिए यह नंगी उत्तेजना है।

हालांकि दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने राष्ट्र के सामने कसम खाई थी कि वे संयुक्त वक्तव्य के समझौतों का निष्ठापूर्वक पालन करेंगे फिर भी वे बेहिचक उनका उल्लंघन कर रहे हैं। राष्ट्र के प्रति अपनी गद्दारी के परिणामों के बारे में वे कुछ नहीं सोचते।

दक्षिण कोरियाई अधिकारियों की उन उत्तेजनाओं से संपूर्ण कोरिया की जनता का रोष बढ़ रहा है। राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के हित में हम अपने क्रोध को दबा रहे हैं और दक्षिण कोरियाई शासकों की हम हैकड़ीपूर्ण गुंडागर्दी के प्रति धीरज दिखा रहे हैं। अंततोगत्वा उनके कृत्यों के प्रति संपूर्ण कोरियाई जनता का रोप और बढ़ जाएगा।

अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी ऐसे कामों से बाज आएं, उस उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य की धाराओं का पालन करें जिसकी प्रमुख विपयवस्तु राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के तीन सिद्धांत हैं, अविश्वास दूर करने और पारस्परिक समझ बढ़ाने के प्रयास करें, पुनरेकीकरण प्रश्न का हल ढूंढने की ईमानदार कोशिशें करें, तो हम देश के स्वतन्त्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए धैर्यपूर्वक काम करते रहेंगे।

पहले तो हम हर संभव कोशिश करेंगे कि उत्तर और दक्षिण के रेडक्रास संगठनों के बीच अब जो वार्त्ताएं हो रही हैं और जिनसे पूरे राष्ट्र को बहुत आशाएं हैं, वे यथा शीघ्र सफल हो सकें। इस प्रकार हमारे राष्ट्र के अप्राकृतिक विभाजन से

परिवारों और संबंधियों को जो मुसीबतें और कष्ट सहने पड़ रहे हैं उन्हें कम करने का और देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाने का हमारा इरादा है।

इसके साथ-साथ उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य की धाराओं को लागू करने के लिए और देश के शीघ्र पुनरेकीकरण की अनेक समस्याओं को सुलझाने के लिए हम उत्तर-दक्षिण संयोजन आयोग की स्थापना करके उसे चलाएंगे।

लेकिन देश के पुनरेकीकरण का प्रश्न केवल उत्तर-दक्षिण रेडक्रास वार्त्ता जैसे सीमित संपर्कों और समझौतों और उत्तर-दक्षिण संयोजन आयोग से पूरी तरह नहीं सुलझ सकता। देश के पुनरेकीकरण में इतनी अधिक समस्याएं हैं जिन्हें उत्तर-दक्षिण रेडक्रास वार्त्ता या उत्तर-दक्षिण संयोजन आयोग के कार्यक्षेत्र में नहीं सुलझाया जा सकता। देश के पुनरेकीकरण की मूल समस्याओं को सुलझाने के लिए आवश्यक है कि एक बृहद् स्तर पर अन्य कई क्षेत्रों में संपर्क और समझौता वार्त्ता की जाए, उत्तर-दक्षिण के बींच दीर्घकालीन अविश्वास और गलतफहमियों को दूर करने के लिए ऐसे विशिष्ट उपायों पर बातचीत की जाए जिनसे आपसी समझ बढ़े और स्वतन्त्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण प्राप्त हो सके। इसीलिए हम तत्काल ही राजनीतिक समझौता वार्त्ताओं पर जोर दे रहे हैं, जैसे उत्तर और दक्षिण कोरिया की राजनीतिक पार्टियों और सामाजिक संस्थाओं की संयुक्त कान्फ्रेंस या उत्तर और दक्षिण के अधिकारियों की कान्फ्रेंस या हमारी सर्वोच्च लोकसभा के सदस्यों और दक्षिण कोरिया की असेंबली के सदस्यों की संयुक्त कान्फ्रेंस।

शीघ्रातिशीघ्र देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण प्राप्त करने के लिए हम फिलहाल उत्तर और दक्षिण कोरिया के एक परिसंघ की स्थापना आवश्यक समझते हैं।

हमारे द्वारा प्रस्तावित उत्तर-दक्षिण परिसंघ के अंतर्गत एक सर्वोच्च राष्ट्रीय कौंसिल की स्थापना होनी चाहिए जिसमें जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की सरकार और 'कोरिया प्रजातंत्र की सरकार' के प्रतिनिधि होंगे और जो उत्तर और दक्षिण के बीच उठने वाली राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक और सांस्कृतिक समस्याओं को निपटाएंगे, और इस प्रकार उत्तर और दक्षिण की विद्यमान समाज व्यवस्थाओं को यथावत् बनाए रखकर राष्ट्रीय एकता प्राप्त करेंगे। दोनों की व्यवस्था में भेद है। लेकिन अगर उत्तर और दक्षिण इस सिद्धांत का पालन करें कि वे एक-दूसरे पर अपनी व्यवस्था नहीं लादेंगे तो उत्तर-दक्षिण परिसंघ की स्थापना न करने का कोई कारण नहीं है।

परिसंघ की स्थापना के बाद और अधिक संपर्क और यात्राएं होंगी और उत्तर और दक्षिण के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान बड़ी सहजता से हो सकेगा। उत्तर और दक्षिण कोरिया के एक साथ आर्थिक काम और आदान-प्रदान से यह संभव

हो सकेगा कि गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग के विकसित भारी उद्योग और बहुल भूमिगत संसाधनों के उपयोग से दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था का शीघ्र विकास हो। इससे कोरिया के दोनों भागों की जनता का बड़ा लाभ होगा। खिलाड़ी और कलाकार उत्तर दक्षिण की यात्रा पर जा खेल कद और कलाओं का प्रदर्शन कर सकते हैं और अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं तथा अंतर्राष्ट्रीय कला उत्सवों में पूरे कोरिया की एक खेल की टीम या कला मंडली के रूप में भाग ले सकते हैं। समाचार एकत्रित करने के लिए पत्रकार इच्छानुसार यात्रा कर सकेंगे और प्योंगयांग तथा सियोल में प्रेस केंद्रों अथवा समाचार पत्र ब्यूरो की स्थापना भी की जा सकेगी, जिनके द्वारा उत्तर और दक्षिण में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का विनिमय हो सकेगा।

अगर उत्तर-दक्षिण परिसंघ की स्थापना हो जाए और आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अन्य क्षेत्रों में विस्तृत संपर्क और यात्राएं होने लगें तो उत्तर और दक्षिण के बीच अविश्वास और दूरी की भावना हट जाएंगी, आपसी समझ और विश्वास का वातावरण तैयार होगा और राष्ट्रीय एकता आसानी से प्राप्त होगी। विश्वास का वातावरण तैयार होने पर और उत्तर और दक्षिण के बीच राष्ट्रीय एकता प्राप्त होने पर बिना बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप के, प्रजातांत्रिक आधार पर उत्तर-दक्षिण में आम चुनाव के द्वारा एक अखिल-कोरिया संयुक्त सरकार की स्थापना करके देश का स्वतन्त्र, शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण यथार्थ बनाया जा सकता है।

४. कोरिया और जापान के सम्बन्ध

आप जानते ही हैं कि सातो मंत्रिमंडल के दिनों में जापानी सरकार हमारे देश के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति का पालन करती थी। लेकिन अब ऐसा संकेत मिलता है कि तनाका मंत्रिमंडल की नीति सातो मंत्री के मुकाबले कुछ कम शत्रुतापूर्ण है। सातो ने बड़े हठपूर्वक जापान स्थित कोरियाई नागरिकों की स्वदेश और स्वदेश से तथा अन्य देशों कीं यात्राओं का विरोध किया। अब जापान स्थित कोरियावासियों को एक हद तक विदेश यात्रा की अनुमति है और आंशिक रूप से वे स्वदेश यात्रा भी कर सकते हैं। मेरी राय में यह अच्छी चीज है।

लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि कोरिया और जापान के बीच संबंधों की हर चीज तय हो गई है। दोनों देशों के बीच संबंध सामान्य करने के लिए अभी कई समस्याओं को सुलझाना बाकी है।

कोरिया और जापान के बीच मैत्री संबंध बनाने के लिए और सामान्य

राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए पहले तो जापानी सरकार को हमारे देश के प्रति अपना रवैया बदलना होगा। जापानी सरकार की शत्रुतापूर्ण नीति के कारण ही कोरिया और जापान के बीच अभी तक मैत्री संबंध नहीं बन सके हैं। जापानी सरकार कोरिया प्राय द्वीप के आंतरिक मामलों में पड़ना बंद कर दे और हमारे देश के प्रति मैत्री का रवैया अपनाए तो कोरिया और जापान के बीच हर चीज बड़ी आसानी से सुलझ जाएगी।

कोरिया-जापान संबंधों पर हमारी स्थिति एक-सी रही है। पहले ही दिनों से जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया जापान से अच्छे-पड़ोसी संबंध बनाने की आशा करता रहा है—हालांकि दोनों देशों की समाज व्यवस्था भिन्न है; अब भी हम यथा-शीघ्र दोनों देशों के बीच असामान्य स्थिति समाप्त करके सामान्य संबंध स्थाप्ति करना चाहते हैं।

अगर जापानी सरकार हमारे देश से अच्छे पड़ोसी संबंध बनाना चाहती है तो उसे अपनी एकतरफा नीति त्यागनी चाहिए, कोरिया प्रायद्वीप के उत्तरी और दक्षिणी भागों में से किसी के भी प्रति अपने आक्रामक लक्ष्य भूल कर पूर्वाग्रहहीन नीति अंगीकार करनी चाहिए और ऐसा करके उसे कोरिया के शीघ्र पुनरेकीकरण में सहायता करनी चाहिए।

एकतरफा नीति का पालन करके, एक पक्ष को दूसरे के विरुद्ध उकसा कर जापानी सरकार कोरिया प्रायद्वीप में वैर के बीज बोने की कोशिश कर रही है। यह अत्यंत अनपेक्षित है। जापान सरकार को तो यह आशा करनी चाहिए कि उसका पड़ोसी कोरिया प्रायद्वीप स्थिर हो, और उत्तर और दक्षिण कोरिया फिर से एक हो कर सुख शांति से रहें। पड़ोसी घर के लोग कष्ट में हों, आपस में लड़ रहे हों तो इससे जापान को भी लाभ नहीं होगा; होगा क्या ? हम समझते हैं कि स्वयं अपने लाभ के लिए जापानी सरकार को अपने पड़ोसी हमारे देश के प्रति मित्रता की नीति बरतनी चाहिए।

यह सही है कि हमारे देश और जापान की समाज व्यवस्था में अंतर है। पर हमारी राय में जापान के लिए यह उचित ही होगा कि वह हमारे देश के साथ बराबरी का व्यवहार करे और यह अस्तित्व के पांच सिद्धांतों अर्थात् पंचशील के आधार पर हमसे राजनयिक संबंध स्थापित करे। आखिर विभिन्न समाज-व्यवस्था वाले अन्य देशों से भी तो उसने राजनयिक संबंध स्थापित कर रखे हैं।

जापान से राजनयिक संबंधों की स्थापना से भी पहले हम पत्रकारों, तक-नीशियनों तथा अन्य क्षेत्र के लोगों की बहुधा यात्राओं के लिए और विस्तृत आर्थिक और सांस्कृतिक विनिमय के लिए प्रस्तुत हैं। यह विनिमय एकतरफा नहीं होना चाहिए; यह समानता और परस्पर लाभ के सिद्धांतों पर होना चाहिए।

आप जानते ही हैं कि अब भी कोरिया और जापान के बीच कुछ विनिमय होता है। पर जापानी सरकार के अमित्रतापूर्ण रुख के कारण यह एकतरफा ही रह जाता है। उदाहरण के लिए, पत्रकारों का आदान-प्रदान ही लीजिए। आप जापानी पत्रकार हमारे देश आ सकते हैं, पर हमारे पत्रकार जापान नहीं जा सकते। जब तक यह एकतरफा वार्तालाप चलता रहेगा, दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध कभी विकसित नहीं हो सकेंगे।

हमारी राय में, कोरिया और जापान के बीच अच्छे-पड़ोसी संबंध का होना, न होना विशिष्ट कार्यप्रणाली के अलावा भी, पूर्णत: जापानी सरकार के रुख पर निर्भर करता है।

कोरिया और जापान के बीच मैत्री संबंधों की स्थापना में इसका भी बहुत महत्त्व है कि जापानी सरकार जापान-स्थित कोरियाई नागरिकों को उनके राष्ट्रीय अधिकार देगी या नहीं।

विदेशियों को उनके राष्ट्रीय अधिकारों की गारंटी मिलनी चाहिए। यह अंतर्राष्ट्रीय कानून की मांग है। लेकिन आज जापान में कोरियावासियों को विदेशियों जैसा व्यवहार नहीं मिलता हालांकि उनके पास जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की नागरिकता है। हमारे देश के प्रति जापानी सरकार के अमैत्रीपूर्ण व्यवहार की यह एक और अभिव्यक्ति है।

सबसे पहले हम मांग करते हैं कि जापान स्थित कोरियाई नागरिकों के राष्ट्रीय शिक्षा के पूर्ण अधिकारों की, स्वदेश वापसी के अधिकार की और स्वदेश आने-जाने की स्वतंत्रता की गारंटी दी जाए।

आपने कहा कि हाल के वर्षों में जापान को अपने शीघ्र आर्थिक विकास के कारण विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय आलोचना मिली है और आपने जापान की वर्तमान स्थिति और विदेश नीति पर हमारे विचार जानना चाहे हैं। इस पर मैं संक्षेप में कुछ कहता हूं।

हम जापान के आर्थिक विकास का बुरा नहीं मानते। हम अपने पडोसी के आर्थिक विकास का बुरा क्यो मानें? अगर जापान की विकसित अर्थव्यवस्था का उपयोग सैन्यवाद के पुनरुत्थान और दूसरे देशों पर आक्रमण के लिए न किया जाए और अगर उससे जापानी जनता का भौतिक तथा सांस्कृतिक जीवन-स्तर ऊंचा उठाने में तथा अन्य देशों से मैत्री संबंधों का विकास करने में योगदान किया जाए तो निश्चय ही यह अच्छी चीज होगी।

लेकिन विगत काल में जापान की एकाधिकारवादी पूंजी के पुनरुत्थान का और उसकी शासन व्यवस्था की स्थापना का उपयोग जापान के प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों ने जापानी शीघ्र सैन्यीकरण तथा अन्य देशों के आक्रमण के लिए धूर्त षड्यंत्र बनाने में किया था। जापानी प्रतिक्रियावादियों ने अभी अपनी सेनाएं समुद्र पार नहीं

भेजी हैं पर वे अन्य देशों पर भावी सैनिक आक्रमण की तैयारी कर रहे हैं। इससे जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान का खतरा नजर आता है।

अब भी जापानी प्रतिक्रियावादी बड़ी सक्रियता से देश का शीघ्र सैन्यीकरण कर रहे हैं और 'सहायक' के भेष में दूसरे देशों पर आक्रमण की राह पर चलने में उन्होंने कोई संकोच नहीं दिखाया है। दक्षिण पूर्वी एशिया के कुछ देशों की आर्थिक कठिनाइयों का लाभ उठाकर वे इन देशों में 'सरकारी कर्ज' 'सीधे पूंजी निवेश' और 'संयुक्त उद्योग' जैसे विभिन्न नामों से इन देशों को पूंजी का निर्यात बढ़ा कर वे इनकी अर्थव्यवस्था की प्रमुख शाखाओं पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। नव स्वाधीन देशों को दक्षिणपंथी बनाने की और साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे से हटाने की कोशिश में वे अपनी 'आर्थिक सहायता' के साथ बड़ी राजनीतिक शर्तें जोड़ते हैं।

अपराधपूर्ण 'कोरिया प्रजातंत्र-जापान संधि' गढ़ कर तो जापानी प्रतिक्रियावादी शासक वर्गों ने विशेषकर दक्षिण कोरिया में बड़े स्तर पर आर्थिक घुसपैठ आरंभ कर दी। वे आर्थिक घुसपैठ के साथ-साथ राजनीतिक और आर्थिक घुसपैठ तेज करके दक्षिण कोरिया को जापान का विशिष्ट उपनिवेश बनाने की बेतहाशा कोशिश में लगे हैं।

कुछ समय पहले ऐसी खबरें छपी थीं कि जापानी अधिकारी सियोल गए और दक्षिण कोरियाई शासकों के साथ 'उन्होंने कोरिया प्रजातंत्र-जापान पर मंत्री स्तरीय कानफरेंस' की जिसमें तथाकथित 'सहायता' के मूल्य स्वरूप वे दक्षिण कोरियाई प्रतिक्रियावादियों के साथ 'औद्योगिक स्वामित्व पर समझौते' के लिए राजी हो गए। यह भी खुले आक्रमण की कार्रवाई है, जिसका उद्देश्य आर्थिक रूप से दक्षिण कोरिया को जापान के पराधीन करना है। जापान और दक्षिण कोरिया के बीच 'औद्योगिक स्वामित्व पर समझौता' जापानी एकाधिकारवादियों को दक्षिण कोरिया में व्यापारिक गतिविधि के विशेषाधिकार प्रदान करेगा और दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था को लालची जापानी एकाधिकारवादी पूंजी के साथ और दृढ़ता से बांध देगा। इससे दक्षिण कोरिया पर जापान के एक और अधिकार का खतरा बन जाएगा, जैसे १८९४ में जापानी साम्राज्यवादियों ने जापानी संपत्ति और निवासियों की रक्षा के बहाने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया था। आपने देखा कि जापानी एकाधिकारवादी पूंजी विदेशों पर जापानी सैन्यवाद के आक्रमण का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

इसीलिए हमारी जनता बढ़ती हुई जापानी एकाधिकारवादी पूंजी के प्रति और चौकस होती जा रही है और जापानी अर्थव्यवस्था के सैन्यीकरण और समुद्रपारीय आक्रमण के विरुद्ध दृढ़ता से लड़ रही है।

जापानी प्रतिक्रियावादियों को इतिहास का पाठ नहीं भूलना चाहिए और जापानी अर्थव्यवस्था का सैन्यीकरण और समुद्रपारीय आक्रमण के षड्यंत्र बंद करने

ही चाहिएं। अब अगर इतिहास का पाठ भूल कर जापानी प्रतिक्रियावादी समुद्रपारीय आक्रमण की राह पर बढ़ते रहे तो हमारी जनता और विश्व की प्रगतिशील जनता के संघर्ष के सामने पड़कर उन्हें एक और शर्मनाक हार खानी पड़ेगी।

जापानी सैन्यवाद के पुनरुत्थान और जापानी प्रतिक्रियावादियों की आक्रामक पैंतरेबाजी के विरुद्ध जापानी जनता के न्यायोचित संघर्ष के प्रति कोरिया की जनता अपनी एकता की अभिव्यक्ति करती है।

इस अवसर पर मैं उस जापानी जनता और जापानी प्रेस के उन प्रगतिशील लोगों को अभिनंदन भेजता हूं जो जापान-स्थित कोरिया के नागरिकों को उनके प्रजातांत्रिक राष्ट्रीय अधिकारों के संघर्ष में सहायता कर रहे हैं और हमारे देश की जनता के देश के स्वतंत्र शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के संघर्ष का सक्रिय समर्थन कर रहे हैं।

जापान की राजनीतिक-सैद्धान्तिक पत्रिका 'सेकाई' के प्रबन्ध संपादक से बातचीत

६ अक्तूबर १९७२

हमारे देश की यात्रा के लिए मैं आपका आभारी हूं। आपके निर्देशक ने मेरे नाम जो पत्र भेजा है उसके लिए मैं उनका भी आभारी हूं। घर पहुंचने पर आप मेरा अभिवादन उनसे अवश्य कहें।

आपने मुझसे कई प्रश्न किए हैं। अब मैं उन पर अपने विचार प्रकट करता हूं।

आपने पूछा है कि जूछे विचार कब आया और स्थापित हुआ।

इस विषय पर मैं आपको एक विहंगम वृत्तांत देता हूं जैसा कि मैंने "मैनिचि शिमबुन" के पत्रकारों को दिया था।

आपने कहा कि क्या आप जूछे विचार के इतिहास को जनवादी जन गणतन्त्र कोरिया का इतिहास कह सकते हैं। मैं आप से सहमत हूं।

हमारे देश में जूछे विचार पूरी तरह यथार्थ तभी किया जा सका जब जनता ने सत्ता ग्रहण कर ली। हम कह सकते हैं कि तब से गतिविधि के सब क्षेत्रों में जूछे विचार को यथार्थ करने का संघर्ष किया जा रहा है।

जहां तक जूछे विचार के जन्म की पृष्ठभूमि का संबंध है, अनेक उतार-चढ़ाव, पेचोखम वाले लम्बे क्रान्तिकारी संघर्ष काल में इसका विचार हमारे मन में आया।

जूछे विचार की रचना मैंने कैसे की इसका उदाहरण देने के लिए मुझे दो तथ्य आपको बताने पड़ेंगे जो मैंने अपनी कम उम्र में देखे थे। अपनी कच्ची उम्र में, विशेषकर तब जब मैं छात्र था मैंने जो कुछ देखा उसमें दो चीजें मुझे बिलकुल अनुचित लगीं।

एक तो यह था कि उन दिनों के कम्युनिस्ट और राष्ट्रवादी लोग जो कोरिया के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में लगे होने का दावा किया करते थे वे जनता से कटे हुए थे—वे उच्चस्तरीय हस्तियां थीं शब्दों से खिलवाड़ और आपस में झगड़ने में दक्ष, जनता को वास्तविक क्रांतिकारी संघर्ष के लिए जगाने में नहीं।

क्रांतिकारी आन्दोलन की सफलता के लिए जनता को संगठित करना, युद्धरत करना अत्यन्त आवश्यक होता है। पर वे लोग जनता से कटे थे। वे आपस में लीडरी के लिए लड़ते रहते, एक दूसरे से 'सैद्धान्तिक' बहस में उलझे रहते और एक दूसरे से अपने को श्रेष्ठ बताते रहते। उनकी 'सैद्धान्तिकता' उनकी, 'थ्योरियां' क्रान्ति को बढ़ाने के लिए नहीं थीं, बल्कि वह कुतर्क थी जिसका क्रान्तिकार्य से कोई सम्बन्ध नहीं था। मैं यही सोचा करता था कि ये लोग आपस में ही मिल-बैठ कर, जनता के आन्दोलन न चलाकर बस हर समय आपस में बहस-मुबाहसा करके क्रान्ति को किस प्रकार सफल कर पाएंगे। और में ऐसी गतिविधि को आलोचनात्मक दृष्टि से देखने लगा।

क्रान्तिकारी संघर्ष की स्वामिनी तो जनता है। जन समूह के उठे जाग्रत होने पर ही संघर्ष में विजय संभव है। पर हालत यह थी कि जनता से कटे हुए गिने-चुने नेता बकवास कर रहे थे। इससे क्या होने वाला, बनने वाला था। हम इस पर गंभीरता से सोचते रहे। इन लोगों को चाहिए था कि जनता में जाते, उसे जगाते ताकि जनता क्रान्तिकारी संघर्ष की स्वामिनी बन पाती। जब तक कुछ लीडर शब्दों से खिलवाड़ करते रहेंगे, कोई समस्या नहीं सुलझाई जा सकती। इससे हम जूछे को बहुत महत्त्वपूर्ण समझने लगे। हमारा दृष्टिकोण यह बन गया कि जनता ही हर समस्या को सुलझाने का प्रमुख तत्त्व है।

उस समय जिस एक और तथ्य को मैंने देखा, वह यह था कि तत्कालीन कम्युनिस्ट आन्दोलन में तब कई गुट थे। अब मुझे यह पूरा भरोसा नहीं रहा कि ऐसा क्या कम्युनिस्ट आन्दोलन के रहस्यवाद के कारण था, सत्ता की होड़ के कारण था या चाटुकारिता के कारण। लेकिन हमारे देश में तब कई गुट थे —जैसे मार्क्सवादी लेनिनवादी ग्रुप, मंगलवार ग्रुप और 'उत्तरी पवन संघ ग्रुप'। ये सभी गुट कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के पास अपने प्रतिनिधि भेजा करते थे और उसकी मान्यता प्राप्त करने की कोशिश करते थे। अगर वे कम्युनिस्ट आन्दोलन का सही संचालन करते तो यह कष्ट उठाए बिना भी उन्हें मान्यता प्राप्त हो जाती। पर वे तो तीन-चार बंदे इकट्ठे करके अपना ग्रुप बनाते और क्रान्तिकारी आन्दोलन करने के बजाए कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की मान्यता प्राप्त करने में व्यस्त हो जाते। हर ग्रुप पूरे जोर से यह दावा करता कि वही प्रामाणिक, शास्त्रसम्मत और असली मार्क्सवादी ग्रुप है। परिणाम यह हुआ कि १९२८ में कोरियाई कम्युनिस्ट पार्टी को कम्युनिस्ट इंटरनेशनल से निकाल दिया गया और अन्ततोगत्वा उसका विघटन हो गया। हमें लगा कि यह कोरिया राष्ट्र के लिए बड़े अपमान की बात है। अगर कोई क्रान्तिकारी आन्दोलन का सुचारु संचालन करे तो दूसरे स्वयं उसे मान्यता प्रदान करेंगें, मान्यता मांगने का कष्ट करने की आवश्यकता ही क्या है। क्या कोई कम्यु-

निस्ट पार्टी तभी मानी जाती है जब उसे दूसरों की मान्यता प्राप्त हो जाए ? हमें अपना क्रान्तिकारी आन्दोलन आरम्भ करने से पहले दूसरों की मान्यता आवश्यक तो नहीं है। हमारी अपनी इच्छा होती है तो हम क्रान्ति करते हैं। अगर हम यह ठीक से करते हैं तो दूसरे हमें मान्यता दें या न दें—इससे क्या अन्तर पड़ता है ? अगर हम क्रान्ति ठीक से करें तो दूसरे स्वभावत: हमें मान्यता देने वाले हैं। दूसरों की मान्यता प्राप्त करने के लिए इतनी हायतोबा करने की क्या जरूरत है ?

इन दो तथ्यों ने कोरिया के राष्ट्रीय स्वाधीनता और कम्युनिस्ट आंदोलनों में गंभीर गुटबाजी और जनता से कटे हुए नेतृत्व ने—हमें यह दृढ़ विश्वास दिला दिया कि हमें अपनी क्रान्ति इस तरह नहीं करनी है। हमें यह तीव्र अनुभूति होती कि हमें जनता में जाना होगा और अपने संघर्ष में उस पर भरोसा करना होगा, कि हमें अपनी समस्याओं का हल अपने ही प्रयासों से करना होगा और यह भी कि अगर हमारा काम ठीक रहा तो दूसरों की मान्यता निस्संदेह प्राप्त होगी।

ऊपर मैंने जिन दो पहलुओं का जिक्र किया उनका मेरे क्रान्तिकारी चिंतन के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ा। तब से हमने इस पर जोर देना शुरू किया कि जनता क्रांति की स्वामिनी है और तदनुरूप हमें जनता में जाना होगा और अगर हम अपने देश में अपने प्रयासों से पूरी जिम्मेदारी से क्रांति को बढ़ाएं तो दूसरों की मान्यता हमें प्राप्त हो या न हो, यह स्वाभाविक है कि हमें अन्य देशों से सहानुभूति, मान्यता और सहायता मिलेगी। हम कह सकते हैं कि यह हमारे जूछे विचार का आरंभ था।

जैसा कि मैंने उस दिन 'मैनिची शिमबुन' के पत्रकारों से भी कहा था कि दीर्घकालीन क्रांतिकारी संघर्ष में हमारी यह धारणा और भी गहरी हो गई कि सभी समस्याओं को सुलझाने में जनसमूह की शक्ति ही मुख्य तत्व है। हमें हर समस्या को जनसमूह की शक्ति पर भरोसा करके सुलझाना चाहिए। क्रांति जनता द्वारा अपनी मुक्ति का संघर्ष है तो उन्हें संगठित होकर उठना ही चाहिए। इसी आधार पर हमने अपना क्रांतिकारी संघर्ष चलाया।

हमने यह भी सोचा कि सभी समस्याओं का प्रस्तुतीकरण जनता की राजनीतिक जागरूकता के अनुरूप होना चाहिए।

१९३६ में हमने पितृभूमि उद्धार संघ की स्थापना की और उसका दस-सूत्री कार्यक्रम आगे बढ़ाया। अब मैं इसके विवरण में नहीं जाऊंगा। उस समय हमने जन-एकता का कार्यक्रम प्रस्तुत किया था ताकि सारा देश एकजुट हो सके, सारी जनता संगठित हो सके। साम्राज्यवादियों और राष्ट्रद्रोहियों के विरुद्ध यह एक साम्राज्य-वादी-विरोधी, सामंतशाही-विरोधी संयुक्त मोर्चा बनाने का कार्यक्रम था। उस समय हमारी जनता के लिए यह बिलकुल सही नारा था। स्वाधीनता के बाद भी हमने

अपनी कई नीतियों को पूरा करने के लिए इसी दिशा का आधार लिया है।

हमारी आधारभूत समस्या थी कि क्रान्तिकारी आंदोलन में और देश के निर्माण में अधिकाधिक जनता को कैसे लाया जाए। स्वाधीनता के बाद के आरंभिक दिनों में हमने कम्युनिस्ट पार्टी और यंग कम्युनिस्ट लीग की स्थापना की। लेकिन स्वाधीनता के तुरंत बाद हमारे देश का श्रमिक वर्ग बहुत छोटा था और उसमें भी कुछ ही लोगों को साम्यवादी सिद्धांत से परिचय था। अगर उस स्थिति में हम कम्युनिस्ट पार्टी या यंग कम्युनिस्ट लीग के नारों से चिपके रहते तो जनता और युवक वर्ग के कई ग्रुपों में बंट जाने का खतरा था। हमने स्थिति का जायजा लिया और इस निर्णय पर पहुँचे कि कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना जनता की जागरूकता के अनुरूप नहीं है। अतः हमने शीघ्रता से उसे मजदूर पार्टी के रूप में पुनर्संगठित कर लिया। हमने यंग कम्युनिस्ट लीग को बदल कर डेमोक्रेटिक यूथ लीग बनाने में भी पहल की, जिसके साथ हर स्तर के नवयुवक और नवयुवतियाँ हैं।

किसी भी देश का क्रांतिकारी आंदोलन और निर्माण गिने-चुने कम्युनिस्टों के ही प्रयासों से नहीं हो सकता। उनके साथ अनेक युवक ओर प्रगतिशील लोग होने चाहिए। इसलिए हमने अपनी संकुचित स्थिति त्याग दी और वस्तुस्थिति की मांग के अनुरूप अपनी संस्थाओं में सुधार कर लिया।

जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना के बाद हमने सब समस्याओं को अपने ही प्रयासों से सुलझाने पर अधिक जोर दिया।

अन्य देशों से हमारी स्थिति बिलकुल अलग थी। एशिया में हमारा ही देश था जिसने युद्ध के तुरंत बाद सत्ता पर अधिकार कर लिया। उस समय तक चीन में क्रांतिकारी संघर्ष चल रहा था। यूरोप के देशों से भी हमारी हालत बिलकुल अलग थी। कोरिया राष्ट्र के तौर पर हममें पूर्वी राष्ट्रों वाली विशिष्टताएं हैं। अतः हम यूरोपीय चीजों का अंधानुकरण नहीं कर सकते थे। यह सही है कि हमें यूरोपीय देशों द्वारा प्राप्त अनुभव का अध्ययन करना चाहिए, देखना-परखना चाहिए, पर हम उनका अंधानुकरण नहीं कर सकते। हमारा तो एक पिछड़ा हुआ देश था, एक लंबे अरसे से जिसने सामंतशाही शासकों का भ्रष्टाचार सहा था और जो ३६ वर्षों से अधिक उपनिवेश रहा था। पिछड़ेपन से मुक्ति पाने के लिए आवश्यक था कि हम वे नीतियां और दिशाएं अपनाएं जो कोरिया की वस्तुस्थिति के अनुकूल हों। अतः हमें हर समस्या को अद्वितीय, अभूतपूर्व तरीके से सुलझाना था। वस्तुनिष्ठ यथार्थ की हमसे यही मांग थी। अन्य शब्दों में वास्तविकता की हमसे मांग थी कि हम स्वतंत्रता और सर्जनशीलता का प्रदर्शन करें। इसलिए हमारा यह और भी दृढ़ विश्वास हो गया कि हमें अपने देश की स्थितियों और हमारी जनता की मांग के अनुरूप ही नीतियों का पालन करना चाहिए।

अन्य अनेक चीजों में आपने पूछा है कि जूछे के निर्माण में सबसे बड़ा सिर-दर्द क्या था। यह बड़ा दिलचस्प प्रश्न है। मेरी राय में इसके दो पहलू हैं।

जूछे की स्थापना में सर्वाधिक महत्व है आदमियों के साथ ठीक से काम करने का, क्योंकि आदमी ही हर चीज का निर्णय करता है। समाज और प्रकृति के रूपांतरण संघर्ष सफलता की अंततोगत्वा इस पर निर्भर करती है कि आप आदमियों में कैसा काम कर पाते हैं।

आदमियों के साथ काम अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मैं हमेशा के कहता हूं कि पार्टी का काम है आदमियों के बीच काम। यही बात जन संगठन की है। आर्थिक गतिविधि तभी ठीक चलती है जब आदमियों के साथ काम ठीक हो। पर यह काम अक्सर ठीक नही किया गया। आदमियों को समझाने, शिक्षित करने के बजाए प्रशासनिक उपाय किया गया। यह हमारी सबसे बड़ी कठिनाई है।

प्रशासनिक तरीके से आदमियों के साथ काम करना गलत है। प्रशासनिक तरीका नौकरशाही का तरीका है। प्रशासनिक तरीके से क्रांति कभी नहीं की जानी चाहिए। हम इस गलती को अभी तक पूरी तरह ठीक नहीं कर पाए हैं।

हम पार्टी के अंदर हमेशा यह कोशिश करते रहते हैं कि पार्टी का काम आदमियों के साथ काम बन जाए। पर कई बार आदमियों के साथ काम के स्थान पर होता यही है कि आदेश दिए जाते हैं, या बहस होती है या सभा बैठकें कर ली जाती हैं। मेरी राय में यह एक भारी कमी है जो हमें दूर करनी है। इसे ठीक करने की कोशिश हम अब कर रहे हैं।

जूछे विचार की स्थापना के लिए आदमियों की सैद्धांतिकता में परिवर्तन आवश्यक है। अत्यंत आवश्यक है। प्रशासनिक तरीकों से यह असंभव है। अगर हम प्रशासनिक तरीके से आदेश दें तो लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते हालांकि ऊपरी तौर पर वे स्वीकार कर लेते हैं। अगर हम ऐसे आदेश देते हैं जो उन्हें पसंद नहीं हैं तो जनसमूह उन्हें हृदय से स्वीकार नहीं करते, वे केवल उन्हें स्वीकार करने का दिखावा करते हैं। हम प्रशासनिक तरीकों का उन्मूलन करने पर जोर देते हैं। हम यह पक्का कर लेना चाहते हैं कि आर्थिक और राज्यीय मामलों में या और किसी गतिविधि में सही दायित्वों को देने से पहले, बहुत पहले, राजनीतिक कार्य किया जाए।

कर्मचारी प्रशासन में हमें कार्यकर्त्ताओं को काम देने से पहले शिक्षित करना चाहिए। केवल तभी हम उन्हें गलतियां करने से बचा सकते हैं। उन्हें काम देकर भी शिक्षित न करना और फिर उनसे गलती हो जाए तो पदच्युत कर देना गलत है। इससे आदमियों के साथ काम का अज्ञान और अशक्यता ही प्रदर्शित होती है।

जूछे विचार की स्थापना में एक और प्रमुख रोड़ा है चाटुकारिता। चाटुकारिता बड़ी पुरानी चीज है जो हमारे देश में सदियों से चली आ रही है। चाटुकारों

का दावा है कि हमारे देश में हर चीज खराब है, कि हमारे पास कोई भी उपयोगी चीज नहीं है और हर बिदेशी चीज अच्छी है। हर अपनी चीज के प्रति उनका यही शून्यवादी-विनाशवादी रुख रहता है।

निस्संदेह विरोधी चीजों में भी अच्छा बुरा होता है और हमें अच्छी चीजों से शिक्षा लेनी चाहिए। यह बात नहीं कि चाटुकारिता का विरोध करते हैं तो हम संकुचित राष्ट्रवादी हैं।

हमें विदेशी चीजों में से अच्छी चीजों से कुछ सीखना चाहिए, और बुरी को दरकिनार करना चाहिए। स्वीकृति में भी हमें उन्हें इस प्रकार लेना चाहिए कि वे हमारी रुचि के अनुरूप हों। हमें उन चीजों का हड़पने की कोशिश नहीं करनी चाहिए जो हमें पसंद नहीं हैं। विगत में कुछ कोरियावासियों में चाटुकारिता के कीटाणु इतने गहरे चिपक गए थे कि उन्हें उखाड़ने के लिए हमें कठिन संघर्ष करना पड़ा।

एक समय हमारे देश में चाटुकारिता का बोलबाला था। साहित्य और कला के क्षेत्र में चाटुकारिता के रूप क्या थे यह मैं आपको बताता हूं।

तब की बात है जब चाटुकारिता और मतांधता हमारे देश मे बुरी तरह फैली थी। घायलों की पूछताछ करने, युद्ध के दौरान मैं एक स्थानीय सैनिक अस्पताल गया। वहां दीवार पर एक चित्र टंगा था। इसमें साइबेरिया की पृष्ठभूमि थी। बरफ से ढंकी भूमि पर एक विशाल देवदार वृक्ष के नीचे एक भालू दिखाया गया था। मैंने सैनिकों से पूछा कि चित्र में कौन-सा स्थान दिखाया गया है। उन्होंने कहा कि चित्र में एक जंगल में भालू को रेंगते हुए दिखाया गया है पर उन्हें यह नहीं मालूम कि यह जंगल कहां का है। फिर मैंने उनसे पूछा कि क्या हमारे जंगलों में भालू बहुतायत से होते हैं। उन्होंने कहा कि कुछ भालू होते तो हैं पर उन्हें कोरियाई पशु नहीं कहा जा सकता।

मैंने सैनिकों से पूछा कि उन्हें कौन-सा चित्र अधिक अच्छा लगेगा—यह चित्र या हमारे कुमगांग-सान पर्वत का कोई सुंदर चित्र। उन्होने उत्तर दिया कि अपने पर्वत का चित्र उन्हें अधिक पसंद आएगा। अतः मैंने उस टुकड़ी के राजनीतिक विभाग के प्रमुख से पूछा कि उसने यह चित्र क्यों लगाया, हमारे कुमगांग-सान पर्वत का चित्र क्यों नहीं लगाया जो सैनिकों को अधिक पसंद आता। उसका उत्तर सुन कर मुझे धक्का लगा। उसने बताया कि उसे वह चित्र इसलिए खरीदना पड़ा कि हमारे चित्र-विक्रेता केवल ऐसे ही चित्र बेचते हैं।

इस घटना से हमारे मस्तिष्क में विचारोत्तेजन हुआ। हमने सोचा कि यह सब चाटुकारिता के कारण है। अतः हमने यह देखना शुरू किया कि उन दिनों कला के क्षेत्रों में क्या चल रहा था। हमारी जांच-पड़ताल से मालूम पड़ा कि हमारे लगभग

सभी चित्रकार पाश्चात्य चित्रकला में लगे थे।

उन दिनों हमारे संगीत क्षेत्र में केवल कुछ ही राष्ट्रीय वाद्ययंत्र थे। कुछ स्थानों पर राष्ट्रीय वाद्ययंत्र थे लेकिन वे बिलकुल वैसे ही थे जैसे पुरातन काल में। कुछ कलाकारों ने कहा कि हमारा राष्ट्रीय संगीत पुरातन है और पश्चिमी संगीत आधुनिक है। वास्तव नें इन्हीं नामों से उन्हें पुकारा करते थे। अतः मैंने कलाकारों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा कि आप वर्तमान में रहते हुए भी क्यों नहीं समकालीन संगीत की रचना कर सकते, जबकि हमारे पूर्वजों ने अपने समकालीन संगीत की रचना की, क्यों वे पाश्चात्य संगीत को एकमात्र आधुनिक संगीत मानते हैं, आधुनिक राष्ट्रीय संगीत क्यों नहीं है और किस आधार पर वे पाश्चात्य संगीत को आधुनिक संगीत मानते हैं। मैंने उनसे पूछा कि राष्ट्रीय कोरिया संगीत पुरातन संगीत क्यों हो और पाश्चात्य संगीत आधुनिक संगीत क्यों हो और क्यों नहीं हम कोरियावासी अपनी वर्तमान राष्ट्रीय रुचि के संगीत की रचना कर सकते। वे मेरे प्रश्नों के उत्तर नहीं दे सके।

इसके अलावा मैंने अपने कलाकारों से 'यथार्थवाद' शब्द का अर्थ पूछा जिसका वे अक्सर इस्तेमाल करते थे। उन्हें केवल शब्द मालूम था, उसका असली अर्थ नहीं। अतः मैंने उनसे कहा कि इस तरह उन्हें चीजों को हड़प नहीं करना चाहिए। फिर मैंने उन्हें हमारे देश में समाजवादी यथार्थवाद की परिभाषा दी : रूप में राष्ट्रीय, विषय से समाजवादी।

मैंने उन्हें बताया कि उन्हें हर किसी चीज पर यूं ही समाजवादी यथार्थवाद का लेबल नहीं लगा देना चाहिए। मैंने उन्हें यह भी बताया कि ऐसे संगीत की रचना निरर्थक है जो कोरिया की जनता की समझ में न आए। मैंने कलाकारों से यह भी कहा : "निस्संदेह, मैं आपके केवल इतालवी तथा अन्य यूरोपीय गीत गाने के विरुद्ध नहीं हूं। लेकिन मैं यही सोचता हूं कि उन्हें कितने कोरियावासी पसंद कर पाएंगे। आप जनता के लिए कला की रचना में असफल हुए हैं। कला के लिए कला की रचना करने का लाभ क्या है? कला को जनता की सेवा करनी चाहिए। संगीत सुनने में अच्छा होना चाहिए; उससे जनता को आनंद मिलना चाहिए; वह जनता की समझ में आना चाहिए और उसे जनता की स्वीकृति मिलनी चाहिए। लेकिन जनता कहती है कि वह आपका संगीत नहीं समझती। अगर आप राष्ट्रीय संगीत का पुनरुद्धार करने के नाम पर पुरातन संगीतकला में पड़ जाएंगे तो हमारे युवाजनों को वह पसंद नहीं आएगा। आपको जीर्णोद्धार नहीं करना होगा। अगर आप करेंगे तो अंततोगत्वा आपका झुकाव पश्चिम की प्रशंसा की तरफ हो जाएगा। ऐसा आपको कभी नहीं करना चाहिए।"

अपने राष्ट्र और जनता की सेवा करने की बजाए कुछ लोग सोचते थे कि

वे हर विदेशी चीज का प्रवेश करा दें तो काम चल जाएगा, क्योंकि उनकी नजर में हर विदेशी चीज अच्छी थी। यह बड़ी समस्या थी।

हमारे देश में चाटुकारिता निर्माण, औद्योगित प्रबंध और शिक्षा में भी परिलक्षित थी।

इस प्रकार पहले हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में काफी चाटुकारिता के लक्षण थे और उस पर पार पाना कठिन था। एक लंबे अरसे में हमने चाटुकारिता से जद्दोजहद की है।

जैसा कि मैंने कहा हमारे देश में जूछे विचार की स्थापना में दो प्रमुख बाधाएं हैं। एक है चाटुकारिता और दूसरी है आदमियों के साथ काम करने में प्रशासनिक तरीका। मेरी राय में इन पर विजय दीर्घकालीन संघर्ष से ही मिलेगी।

हम अभी तक इन पर विजय पाने की कोशिश कर रहे हैं और मेरी राय में हमें ये कोशिशें करते रहना चाहिए। हम नहीं मानते कि हम इन बाधाओं पर अभी तक पूर्ण विजय पा सके हैं। इसलिए हम अभी तक जोर दे रहे हैं कि पार्टी का काम और श्रमिक जनता के संगठनों की गतिविधियां दोनों के संचालन में प्रशासनिक तरीकों से काम नहीं लेना चाहिए बल्कि उन्हें आदमियों के साथ काम में बदल देना चाहिए। इसके साथ-साथ हम इस पर मह़त्व दे रहे हैं कि सबको अपने देश और जनता की सेवा करनी चाहिए और अपनी चीजों के प्रति शून्यवादी, विनाशवादी दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए, यह नहीं कहना चाहिए कि हमारे पास कोई भी उपयोगी चीज नहीं है और हमें हर विदेशी चीज को स्वीकार करके उसकी पूजा नहीं करनी चाहिए। संक्षेप में, हम अपनी स्वयं की शक्ति में भरोसा न करके दूसरों पर आश्रित रहने के विचार का उन्मूलन करने वाले हैं। इसका मतलब राष्ट्रीय साम्यवाद नहीं है। अगर हर राष्ट्रीय इकाई के स्तर पर क्रांति और निर्माण का कुशल संपादन हो तो वे विश्व स्तर पर भी सफल होंगे या कि नहीं ? मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन ने भी कहा है कि मार्क्सवाद मतांधता नहीं हैं, उसका प्रयोग सर्जनशील होना चाहिए।

अपने अगले प्रश्न में आपने पूछा है कि राष्ट्रीय दायित्व और अंतर्राष्ट्रीय एकता के दायित्व के अन्योन्याश्रय में जूछे विचार क्या एक नया दर्शन है। आप यह अत्यधिक प्रशंसा कर रहे हैं।

मेरी राय में सच्चे मार्क्सवादी को स्वतंत्र और सर्जनशील होना ही चाहिए। जहां तक मेरा प्रश्न है मैंने इस नुक्ते पर केवल जोर दिया है।

इस विषय पर मैं लंबी-चौड़ी बात नहीं करूंगा। जूछे विचार की विषय वस्तु से संबंधित समस्याओं पर मैं पहले ही बहुत कुछ कह चुका हूँ। जापानी 'मैनिची' और 'योमयूरी शिमबुन' के पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर में मैंने इन पर पूरी तरह बात की है अतः मुझे विश्वास है कि आप इन्हें समझते हैं। पुनरावृत्ति बचाने के

लिए मैं और अधिक नहीं कहूंगा।

मैंने जूछे विचार को यथार्थ में उतारने की समस्याओं के बारे में कहा है। निस्संदेह कई और समस्याएं भी हैं पर आज मैंने आधारभूत बिन्दुओं को ही केंद्र बनाया है। जूछे विचार की समस्याओं पर बस इतना ही।

अब मैं आपके शिक्षा संबंधी प्रश्न का उत्तर दूंगा।

हम इस समस्या को दूसरों से अधिक महत्त्व देते हैं। जैसा कि मैंने आप से अभी कहा कि जूछे विचार की स्थापना में जो महत्वपूर्ण है वह है आदमियों के साथ काम। इस काम को ठीक से करने के लिए पहले हमें ठीक से शिक्षा का काम करना चाहिए।

शैक्षणिक गतिविधि आदमियों के साथ काम का आरंभ है। इसीलिए हमारी पार्टी और सरकार ने आरंभ से ही इस समस्या पर इतनी शक्ति लगाई है।

हमारे देश को पिछड़ेपन से उबारने के लिए और शीघ्र प्रगति के लिए हमारे सब लोगों को शिक्षा मिलना आवश्यक था। समाजवादी और साम्यवादी निर्माण के लक्ष्य की ही मांग है कि शिक्षा का संचालन अच्छा हो। आखिरकार समाजवाद और साम्यवाद के निर्माण का उद्देम्य है संपूर्ण जनता के लिए संपन्न जीवन। इस उद्देश्य के लिए सबका भौतिक स्तर उठाना ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि सैद्धांतिक और सांस्कृतिक स्तर उठाना भी आवश्यक है।

क्रांति का उद्देश्य है कि सब लोग सुखी समृद्ध जीवन-यापन कर सकें। इसके लिए हर एक को अच्छा काम करना होगा और अच्छा काम करने के लिए उसमें चेतना होनी चाहिए।

जन चेतना का विकास शिक्षा के आरंभ से होना चाहिए। यह स्पष्ट है कि हर एक के सचेतन कर्म से महान शक्ति का प्रदर्शन होगा। मैं सोचता हूं कि अगर हर व्यक्ति निर्माण कार्य और क्रांतिकारी संघर्ष में सजग सचेतन भाग ले तो इससे महान शक्ति का उदय होगा और हर आदमी शीघ्र संपन्न होगा।

अच्छी जन-शिक्षा के अभाव में ऐसे लोग उभर सकते हैं जो राज्य और समाज की संपत्ति की लापरवाही करें, उसका नाश करें या उसे खा जाएं। तब तो हम कितना ही निर्माण कर लें निरर्थक है। कुछ लोग खाली कर्महीन रहना चाहते हैं। हमने ऐसा किया तो हमारी जनता को समान रूप से संपन्न बनाना असंभव होगा।

हमारी पार्टी की धारणा है कि हमें साम्यवाद के मार्ग पर पदार्थ और सिद्धांत के गढ़ फतह करने चाहिए। सिद्धांत के गढ़ पर विजय पाए बिना अकेले पदार्थ के किले पर कब्जा करना गलत होगा। सिद्धांत के गढ़ को काबू किए बिना पदार्थ का किला जीतना असंभव है। इसीलिए हमने यह नारा दिया : "पूरा देश पढ़े

पूरी पार्टी पढ़े, और संपूर्ण जनता पढ़े।" इस नारे के अंतर्गत हर कोई पढ़ रहा है।

हमारे देश में चालीस से ऊपर के लोग श्रमिक जनों के मिडिल स्कूल जाते हैं और मिड़िल स्कूल के स्नातकों का ज्ञान प्राप्त करते हैं। चालीस वर्ष से कम के लोग तो अनिवार्य सेकंडरी शिक्षा के कारण मिडिल स्कूल स्नातक या उससे ऊपर के स्तर के हैं ही।

जनता की शिक्षा हेतु कार्यकर्त्ता को वास्तविक उदाहरण पेश करना चाहिए। हमने जो व्यवस्था बनाई है उसके अंतर्गत कार्यकर्त्ता प्रतिदिन दो घंटे पढ़ते हैं। शनि-वार के अपराह्न में भी वे पढ़ते हैं और उनके हर वर्ष एक महीने पढ़ने की भी व्यवस्था है। यह है कार्यकर्त्ताओं के पुनर्शिक्षा के लिए। इस व्यवस्था के अंतर्गत कार्यकर्त्ता अपना सैद्धांतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी स्तर ऊंचा उठाने के लिए पढ़ते हैं।

युवकों और बच्चों की शिक्षा बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस उद्देश्य से हमने सार्व-लौकिक अनिवार्य दस-वर्षीय ऊपर मिडिल स्कूल शिक्षा आरंभ की है। हमारे यहाँ कोरियाई कहावत है : "दस साल में पहाड़ों और नदियों का रूप भी बदल जाता है।" मेरी राय में उचित दस-वर्षीय शिक्षा आनेवाली पीढ़ियों में क्रांतिकारी विश्व दृष्टि-कोण की बुनियाद डाल देगी।

हमारी अनिवार्य शिक्षा पूंजीवादी देशों की शिक्षा से भिन्न है। हम सब छात्रों को मुफ्त शिक्षा देते हैं, स्कूल के दौरान हम उन्हे शारीरिक श्रम में नहीं लगाते। राज्य के कानून द्वारा १६ वर्ष से कम के लड़के-लड़कियों के श्रम पर पाबंदी है। हमारे बच्चे जो श्रम करते हैं वह है सड़कों पर, स्कूल और पहाड़ों पर बृक्ष रोपना। बस ! यह स्कूलों द्वारा आयोजित किया जाता है, बच्चों में श्रम प्रेम के विकास के लिए। इसे सच्चे अर्थों में श्रम नहीं कहा जा सकता। हमारे बच्चों ने 'हरीतिमा संरक्षक' ओर 'स्वास्थ्य संरक्षक' का संगठन किया है—मक्खियां मारना, खिड़की के शीशे साफ करना और कक्षागृहों को साफ करना। यह सब तमाम बच्चों और युवकों में श्रम के प्रति प्रेम जाग्रत करने के लिए किया गया है।

हमारे देश में, किंडर गार्टनों, प्राइमरी स्कूलों, अपर मिडिल स्कूलों तथा उच्च विशेषज्ञ स्कूलों में सरकारी खर्चे पर उभरती पीढ़ी के लगभग ६० लाख सदस्य शिक्षा पा रहे हैं। इससे राज्य पर काफी बोझ पड़ जाता है। अभी बोझ भारी है, पर संभावनाएं उज्ज्वल हैं। दस वर्ष बाद फल आएगा।

पुराने समाज में बुद्धिजीवी समाज का एक स्तर माना जाता था। निस्संदेह, पूंजीवादी देशों में अभी तक ऐसा ही है। लेकिन भविष्य में बुद्धिजीवी गायब हो सकते हैं। जब सभी जनता बुद्धिजीवी हो जाएगी तो बुद्धिजीवी वर्ग कहां बचेगा ? फिलहाल हमारे देश में ५,००,००० तकनीशियन और विशेषज्ञ हैं। हमने नारा दिया

है : 'षड्-वर्षीय योजना में ५,००,००० और को ट्रेनिंग दो और दस लाख तकनीशियनों और विशेषज्ञों की सेना तैयार करो।' यह दायित्व हमारी पार्टी ने अपनी पांचवीं कांग्रेस में प्रस्तावित किया है।

हर स्तर के पार्टी संगठन अब इस लक्ष्य को पूरा करने के प्रयास तीव्र कर रहे हैं। कारखानों के कालेजों के साथ-साथ हम उच्चतर शिक्षा के नियमित संस्थानों की संख्या बढ़ा रहे हैं। कारखानों के कालिजों में हमारे श्रमिक दिन और रात में अपनी शिक्षा के हिसाब से पढ़ते हैं। इस तरह हम बुद्धिजीवियों की एक विशाल सेना बनाएंगे। भावी दृष्टिकोण से जब हमारे सब लोग भविष्य में कालेजों में पढ़कर स्नातक बन जाएंगे तो समाज में बुद्धिजीवियों का अलग वर्ग नहीं रहेगा। एक जमाने में बुद्धिजीवी को अस्थिर वर्ग या अवसरवादी वर्ग कहा जाता था लेकिन भविष्य में ऐसी कोई समस्या नहीं रहेगी।

हमारी सार्वलौकिक अनिवार्य दस-वर्षीय शिक्षा अनिवार्य अपर मिडिल शिक्षा है। इसके द्वारा हमारा उद्देश्य संपूर्ण जनता को श्रेष्ठ मिडिल स्कूल शिक्षा देना है।

हमने सार्वलौकिक अनिवार्य दस-वर्षीय अपर मिडिल स्कूल शिक्षा इस वर्ष आरंभ की है। हमारी योजना इसे प्रति वर्ष २० प्रतिशत लागू करने की है ताकि यह पांच वर्षों में पूर्णतः लागू हो जाए। हमारी राय में यह संभव है। निस्संदेह स्थानीय भेद हो सकते है। कुछ स्थानों में यह अनिवार्य शिक्षा चार वर्षों में पूर्णतः लागू हो सकती है, किन्ही अन्य स्थानों में तीन या दो वर्षों में ही। हमारा मतलब है कि पूरे राष्ट्र के स्तर पर यह पांच वर्षों में लागू होगी। कुछ समय हुआ मैं मुंदोक काउंटी गया था। वहां पार्टी के मुख्य सचिव ने मुझे बताया कि वे लोग इसे दो वर्षों में ही पूरा लागू कर लेंगे। मैंने कहा मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

एक बार तमाम युवा वर्ग को अनिवार्य अपर मिडिल स्कूल शिक्षा द्वारा मिडिल स्कूल स्तर तक का श्रेष्ठ ज्ञान मिल जाए तो वे लोग और आसानी से आगे पढ़ सकेंगे। वे अपने आप पढ़कर कालेज कोर्स पूरा कर सकते हैं या कालेजों में पढ़ना जारी रख सकते हैं। मेरी राय में जब उन्हें यह आधारभूत शिक्षा मिल जाएगी तो विशेषज्ञ ज्ञान प्राप्त करने में उन्हें अधिक कठिनाई नहीं होगी।

इसके बाद आपने मुझसे पूछा है कि क्या हम प्रतिष्ठा शिक्षा देते हैं, अर्थात् क्या हम उन बच्चों को जिनके पास कोई उल्लेखनीय प्रतिभा हो कोई विशेष शिक्षा देते हैं। हम अब भी ऐसी शिक्षा देते हैं। आधारभूत रूप से मैं ऐसी शिक्षा के विरुद्ध हूं क्योंकि लोगों को प्रतिभाशाली या प्रतिभाहीन वर्गों में बांटना कठिन है।

पर यथार्थ में हम इससे इनकार नहीं कर सकते कि कुछ में किसी विशेष क्षेत्र की विशिष्ट प्रतिभा होती है। छात्र और बाल भवन में एक लड़की है जो झेलोफोन बजाती है। शायद आपने उसका वादन सुना हो। वह ११ या १२ साल की ही है पर

झेलोफोन बहुत अच्छा बजाती है । इस लड़की जैसे कुछ लोग होते हैं जिनम किसी विशेष क्षेत्र का बेजोड़ गुण होता है। इस तथ्य की हम अवहेलना नहीं करते। ऐसी उल्लेखनीय प्रतिभा वाले बच्चे उचित स्कूलों में भेजे जाते हैं।

उदाहरणार्थ हमारे देश में विज्ञान संस्थान है। इस संस्थान में मिडिल स्कूलों के ताजे स्नातक दाखिल होते हैं जबकि हमारे उच्चतर शिक्षा संस्थानों में उन्हीं मिडिल स्कूल स्नातकों को दाखिल करने का नियम है जिन्हें या तो कारखानों में काम करने के बाद भेजा जाता है या जिन्होंने सेना में अपना कार्यकाल पूरा कर लिया है। हमारे यहां ऐसी व्यवस्था भी है। कला तथा अन्य क्षेत्रों में भी ऐसी व्यवस्था है। कई उदाहरणों में स्कूलों के शिक्षक कुछ युवकों को छांटकर उनकी उज्ज्वल प्रतिमा को देखकर सिफारिश करते है कि उन्हें सीधे कारखानों या सेना में न भेजकर विशेषज्ञ शिक्षा देना राज्य के लिए लाभप्रद रहेगी। ऐसे युवकों-युवतियों को स्नातक होने के बाद सीधे ही उच्चतर शिक्षा संस्थानों में दाखिल होने की अनुमति दी जाती है।

सामाजिक संस्थाओं के भी अपने स्कूल होते हैं। ग्रामों में महिला संघ के मांओं स्कूल हैं। पढ़ी-लिखी और अपढ़ महिलाएं इन स्कूलों में आती हैं। इन स्कूलों की स्थापना औरतों को उपयुक्त शिक्षा देने के लिए की गई थी। इनमें स्त्रियों की मुक्ति जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। समाजवादी श्रमिक युवा लीग के भी युवकों के स्कूल हैं। देश के सब भागों में प्रौढ़ शिक्षा होती है। अतः सरकार को शिक्षा के बहुत बड़ी धन राशि देनी पड़ती है। एक तरह से हम लगभग सारा राजस्व शिक्षा पर लगा रहे हैं।

अब हम समाजवादी शिक्षण का अध्ययन कर रहे हैं। समाजवादी शिक्षण में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज है लोगों को स्वेच्छा से काम करना सिखाना जो समाजवादी निर्माण का आधारभूत प्रश्न है। अच्छा काम करने के लिए पढ़ना और अपना तकनीकी स्तर ऊंचा करना जरूरी है। समाजवादी समाज में सारी संपत्ति जनता की होती है, अतः संपूर्ण जनता को सामाजिक संपत्ति की रक्षा करना सिखाना भी महत्त्वपूर्ण है। इस तरह हम सब लोगों को श्रम के प्रति प्रेम और समाजवादी समाज में जनसंपत्ति की रक्षा करना सिखाने को बड़ा महत्व देते हैं।

इसके अतिरिक्त हम जनता को व्यक्तिगत जीवन के बजाए सामूहिक जीवन को अधिक मूल्यवान समझने की शिक्षा देते हैं हालांकि व्यक्तिगत जीवन भी महत्त्वपूर्ण है। हम अपनी जनता को इन विषयों की शिक्षा देते हैं।

जिन देशों में अच्छी शिक्षा कई वर्षों से मिल चुकी है वहां भी श्रम के प्रति घृणा, काम के प्रति लापरवाही, चोरी और राज्य की संपत्ति को बरबाद करना जैसी आदतें देखने में आती हैं। मैं सोचता हूं कि जनता को श्रम— प्रेम, जन संपत्ति की रक्षा, और अपनी संस्थाओं और सामूहिकों को महत्त्व देने की शिक्षा दी जानी

चाहिए।

हमने उपरोक्त तथा अन्य पहलुओं वाली समाजवादी शिक्षा के अध्ययन का प्रस्तात्र रखा है और धीरे धीरे इस पर अमल आरंभ कर रहे हैं। संभवतः आपने हमारे साथियों से इस विषय पर भाषण सुना है, अतः मैं अपनी टिप्पणी यहीं समाप्त करता हूं।

पूंजीवादी समाज में पुलिस व्यवस्था का अंत नहीं किया जा सकता। पुलिस व्यवस्था का उद्देश्य है जन व्यवस्था बनाए रखना। दूसरे शब्दों में पुलिस का काम है चोरों को पकड़ना, ट्रेफिक के नियमों के पालन पर नजर रखना, पहाड़ो में पेड़ों को गैर कानूनी तौर पर काटे जाने से रोकना, जुर्माना वसूल करना, आदि। भविष्य में इन चीजों को रोकने के लिए जनता नें उच्च स्तर की चेतना होनी चाहिए और हर एक को इसका ख्याल रखना चाहिए कि वह दूसरों को तंग न करे।

हमारे देश में फारेस्ट रेंजर नहीं हैं। पर कोई मनमाना वृक्ष नहीं काटता हमारे देश में अंधाधुंध पेड़ गिराने की प्रथा नहीं है। मेरी राय में ऐसा इसलिए है कि जनता में चेतना है।

संपत्ति में वृद्धि के साथ पुलिस में वृद्धि करना क्या अच्छी बात होगी ? हमारे देश में पुलिस नहीं है। जन-व्यवस्था बनाए रखने के लिए हमारे यहां जन रक्षक हैं। भविष्य में उन्हें भी नहीं रखना चाहिए। जनता को अपने आप सब करना चाहिए। अतः हमें उसको अच्छी तरह शिक्षित करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त संगठित जीवन को तीव्र करना महत्त्वपूर्ण है ताकि लोग एक-दूसरे को सिखा सकें, गलतियां दूर कर सकें। समाजवादी शिक्षा के आरंभ के बाद से हमारे देश में कई पहलुओं में सुधार हुआ है।

आपने हमारे आर्थिक विकास के बारे में पूछा है। मैं संक्षेप में इसका जिक्र करूंगा।

आप जानते ही हैं कि युद्ध के बाद हमें राख में से उठना पड़ा। इसीलिए आर्थिक निर्माण में हमें अनेक कठिनाइयां आईं और हम यह नहीं कह सकते कि अभी तक हमने अपनी सब समस्याओं को सुलझा लिया है।

पर एक बात हम आपसे कह सकते हैं : अब हम अपने-आप चल सकते हैं। सबसे महत्त्व की बात यह है कि हमारे पास अपने कार्यकर्त्ता हैं। पहले हमारे पास अपने कार्यकर्त्ता थे ही नहीं। लेकिन अब बड़ी संख्या में राष्ट्र के कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। हमारे देश ने अनेक युवा कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया है ये बड़े सर्जनशील हैंक्योंकि इनका विकास निर्माण संघर्ष के दौरान हुआ है। क्योंकि अब हमारे पास ऐसे अनेक कार्यकर्ता हैं, मेरी राय में भविष्य में शीघ्र आर्थिक विकास की भूमिका बन गई है और सही परिस्थितियां प्राप्त हो चुकी हैं।

आपने पूछा है कि षड्-वर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है । एक शब्द में यह है स्वचालन प्राप्त करना और औद्योगीकरण की सफलता को सुदृढ़ और विकसित करके जनता का कठोर श्रम से मुक्ति दिलाना ताकि वह आसानी से काम कर सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमारी जनता को और अधिक सर्जनशीलता दिखलानी पड़ेगी, पर विकसित विदेशी तकनोलोजी का प्रवेश भी आवश्यक है ।

आपने पूछा है कि क्या अब हम उत्पादन में परिमाण से उत्कर्षता की ओर जाने की प्रक्रिया में हैं । हमें परिमाण और उत्कर्षता दोनों का ही विकास करना है।

इसके बाद आपने औद्योगिक निर्माण होने वाले वातावरण दूषण की समस्या के बारे में पूछा है। हम भी इसे गंभीर समस्या मानते हैं। उद्योग निर्माण में हमने इसे अपना सिद्धांत बना लिया है कि वातावरण दूषण से यथासंभव बचा जाए ।

एक उदाहरण लीजिए । कहते हैं कि म्योह्यांग-सान पर्वत में स्वर्ण का भंडार है । एक बार हमारे लोगों ने वहां से स्वर्ण खोद निकालने का प्रस्ताव रखा । लेकिन सरकार ने मना कर दिया । कुछ टन स्वर्ण के लिए हम उस सुँदर पहाड़ को नष्ट नहीं करना चाहते थे ।

हमारे देश में संपूर्ण जनता की संपत्ति के रूप में उद्योग राज्य के अधीन हैं। हमारे यहां एकाधिकारवादी पूंजी नहीं है । अतः हम उद्योगों के विकास में जनता को हानि से और वातावरण को दूषित होने से बचा सकते हैं । हम प्योंगयांग में भारी उद्योग नहीं लगाते । अतः इस नगर में ऐसे संयंत्र नहीं हैं। प्योंगयांग में बस कपडा मिलें, मशीन पुर्जे बनाने के संयंत्र और अन्य कारखाने हैं जिनसे जनता को क्षति नहीं होती । इन कारखानों में औरतें भी काम कर सकती हैं । इसलिए प्योंगयांग में वातावरण कभी दूषित नहीं होता ।

उद्योगों का कुछ जमाव हामहुंग में है । उस शहर में कारखानों की भीड़ है और उनसे जनता को कुछ क्षति हो सकती थी । इसलिए हमने निवास क्षेत्र को फिर पहाड़ी की तलहटी में बना दिया ।

हमने पहले से ही इस समस्या का अंदाजा कर लिया था और कारखानों को छितरा दिया । स्वाधीनता के तुरंत बाद और जब युद्ध विराम के तत्काल बाद हमने अपने उद्योग का पुनर्वास और निर्माण किया, हमने कारखानों से जनता की क्षति और वातावरण का दूषण बचाने की नीति का पालन किया है। हमने राष्ट्र की उत्पादन शक्तियों को इसी तरह योजनाबद्ध रूप से बांटा है । इसी नीति के अंतर्गत हमने कारखानों को छितरा दिया और संयंत्रों के चुने हुए सुनिश्चित क्षेत्रों में लगाया अतः अब हमारे देश का वातावरण दूषण से मुक्त है ।

मैं आपको बस इतना ही बताऊंगा क्योंकि मुझे बताया गया है कि आप हमारी आर्थिक समस्या से सुपरिचित हैं ।

आपका प्रश्न है कि एशिया में गत वर्ष के घटनाक्रम का हमारा आकलन क्या है। मैं समझता हूं कि वह अनुकूल है।

पिछले वर्ष जापानी जनता ने भी सशक्त संघर्ष किया। यह संघर्ष इतना शक्तिशाली था कि सातो की प्रतिक्रियावादी सरकार को जाना पड़ा और ननाका सरकार ने कार्यभार संभाला। मैं इसे जापानी जनता के संघर्ष का परिणाम मानता हूं।

हम जापानी जनता के संघर्ष की खूब प्रशंसा करते हैं और उसका पूर्ण समर्थन करते हैं। मेरे दृष्टिकोण से जापानी जनता के संघर्ष का महत्त्व इसी में नहीं है कि सातो मंत्रिमंडल को त्यागपत्र देना पड़ा। जापानी सरकार को स्वतंत्रता की ओर ले जाने में भी इसका महान प्रभाव होगा। मेरी राय में यह बहुत ही अच्छी बात है।

कुछ समय पहले चीन-जापान वार्ताएं हुईं और चीन-जापान संयुक्त वक्तव्य दिया गया। संयुक्त वक्तव्य को अच्छा माना जा रहा है। मेरा विश्वास है कि इन दोनों देशों के संबंधों के हाल ही में सामान्य होने का एशिया की शांति में महान योगदान होगा।

जापान की जनता ने कोरिया की जनता से भी मित्रता और सौहार्द्र के संबंध स्थापित करने के लिए सक्रिय युद्ध किया है। परिणामस्वरूप जब दोनों देशों में परस्पर यात्राएं आरंभ हो गई हैं जिनसे आपसी समझ गहरी हुई है। आर्थिक विनिमय में वृद्धि की संभावना है। मेरी राय में इससे भी हमारी जनता के लिए स्थिति अनुकूल हुई है और तनाव घटा है।

वियतनाम युद्ध के संबंध में मैं अपने विचार 'मैनिची शिमबुन' के पत्रकारों को बता ही चुका हूँ और फिलहाल मेरे पास कुछ नया कहने को नहीं है।

आम तौर पर हम कह सकते हैं कि गत वर्ष एशिया की स्थिति एशिया के लोगों के अनुकूल विकसित हुई और अमरीकी साम्राज्यवाद को एशिया में भारी धक्का पहुंचा।

अब अमरीकी साम्राज्यवाद जब जी चाहे जापान को मूर्ख बनाने की स्थिति में नहीं है। यह सही है कि जापान संयुक्त राज्य के अधीनस्थ की भांति संधि में है पर वह अपने आप को अमरीकी बंधन से मुक्त करने के प्रयास कर रहा है।

अमरीकी साम्राज्यवाद को चीन की नाकेबंदी की नीति त्यागने के लिए भी मजबूर होना पड़ा। परिणामस्वरूप चीन की अंतर्राष्ट्रीय ख्याति बढ़ी है।

इस सबका एशिया के लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। मैं नहीं समझता कि इसका बुरा प्रभाव होगा।

अमरीकी साम्राज्यवादियों ने वियतनाम पर बमबारी तीव्र कर दी है और हर उपाय से उसे ब्लैकमेल कर रहे हैं। लेकिन वियतनामी जनता ने घुटने नहीं टिकाए हैं, बल्कि इसके विपरीत वह और शक्ति से लड़ रही है। इससे मालूम पड़ता है कि

अमरीकी साम्राज्यवाद के पास बचने की राह नहीं है।

एशिया में एशियावासियों को ही स्वामी बनाना होगा। अमरीकी साम्राज्यवादियों को स्वामियों जैसा व्यवहार नहीं करने दिया जाना चाहिए। एशिया में कदम रखती हुई अमरीकी साम्राज्यवादी शक्तियों को हमें जबरन बाहर खदेड़ देना चाहिए। निस्संदेह इस खातिर हमें भविष्य में शक्तिशाली संघर्ष करना चाहिए। एक बात मैं पूरे निश्चय से कह सकता हूं : एशिया की जनता की जागृति और संघर्ष की शक्ति बढ़ी है और वह अमरीकी साम्राज्यवाद से शासित होना नहीं चाहती।

संक्षेप में मेरा विश्वास है एशिया में स्थिति इस प्रकार विकसित होगी कि एशियावासी आपस में शांतिपूर्वक रह सकें और इस प्रकार बदलेगी कि जो एशियावासी स्वतंत्रता और स्वाधीनता, राष्ट्रीय मुक्ति और शांति के लिए लड़ रहे हैं वे जीत सकें।

इसके बाद आपने मुझसे राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के बारे में पूछा है। इस प्रश्न पर मुझे उससे आगे कुछ नहीं कहना है जो मैं 'मैनिची शिमबुन' के प्रतिनिधियों से कह चुका हूं।

यह सच है कि उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य हमारे तीन सिद्धांतों के आधार पर किया गया था। पर इसकी घोषणा के यह मतलब नही हैं कि हर चीज सुलझ गई है। हमने बंद दरवाजा खोला भर है। हम पहली बार मिले हैं और परस्पर अभिवादन किया है। हमने बस आगे की बातचीत के लिए सिद्धांत निश्चित किए हैं। हालांकि स्वयं दक्षिण कोरियाई शासकों ने उत्तर-दक्षिण वार्ताएं शुरू की हैं, फिर भी वे अनुचित कृत्य कर रहे हैं। 'दक्षिण के धावे' के खतरे का बहाना बना कर उन्होंने 'आपातकालीन स्थिति' घोषित कर दी। उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य की घोषणा के बाद भी, जिसमें समस्याओं के शांतिपूर्ण निपटारे की व्यवस्था है, उन्होंने 'आपातकालीन स्थिति' को हटाया नहीं है। यही नहीं वे संयुक्त वक्तव्य की धाराओं का पालन भी नहीं कर रहे और यह कह रहे हैं कि वे कम्युनिस्टों का भरोसा नहीं कर सकते या कहते हैं कि उन्हें इंतजार करना होगा और देखना होगा।

अगर वे हमारा विश्वास नहीं कर सकते तो हम क्या कर सकते हैं ? अगर वे हमसे निरस्त्रीकरण की और हमारे हथियार उन्हें देने की मांग करते हैं तो यह अनुचित मांग ही है। हम तो उनसे ऐसी मांग नहीं कर रहे। समस्याओं के शांतिपूर्ण निपटारे पर सहमत होकर उन्हें 'आपातकालीन स्थिति' हटा देनी चाहिए थी और अच्छी प्रतिक्रिया करनी चाहिए थी। लेकिन वे तो अनवांछित कृत्य कर रहे हैं, और दावा कर रहे हैं कि क्योंकि वे कम्युनिस्टों पर विश्वास नहीं कर सकते इसलिए 'आपातकालीन स्थिति' नहीं हटाएंगे, 'कम्युनिस्ट-विरोधी कानून' रद्द नहीं करेंगे और शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण के लिए राजनीतिक समझौता वार्त्ताओं के लिए सहमत

नहीं होंगे। हालांकि दक्षिण-कोरिया के शासकों ने बाहरी हस्तक्षेप के बिना पुनरेकीकरण के संयुक्त वक्तव्य को प्रकाशित किया है फिर भी वे दावा कर रहे हैं कि संयुक्त राष्ट्र बाहरी शक्ति नहीं है।

इस समय अमरीकी साम्राज्यवाद दक्षिण कोरिया से अपनी सेनाएं हटाने से रोकने के बहाने खोज रहा है। हमारी पुनरेकीकरण की समस्या के सुलझाने में यह सबसे बड़ी रुकावट है। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने कहा कि वे उत्तर-दक्षिण वार्त्ताओं का स्वागत करते हैं, पर इसके शीघ्र ही बाद उन्होंने घोषणा की कि वे दक्षिण कोरिया को शस्त्रास्त्र देना जारी रखेंगे और यह भी कि दक्षिण कोरिया से नहीं जाएंगे। अंतिम विश्लेषण में अमरीकी साम्राज्यवादी और उनके पीछे चलने वाली प्रतिक्रियावादी शक्तियां हमारे देश के पुनरेकीकरण को रोक रही हैं।

उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य के बाद कई लोग हमारे देश के पुनरेकीकरण की आशा करने लगे। लेकिन जन-आकांक्षा को साकार होने से रोकने की कोशिश करने वाले कुछ प्रतिक्रियावादी अब दावा कर रहे है कि शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण असंभव है, और कुछ लोग कह रहे हैं कि उत्तर और दक्षिण के बीच राष्ट्रीय एकता नहीं हो सकती।

अब प्रश्न यह है कि बाहरी शक्तियां और उनके चमचे उत्तर और दक्षिण के बीच संवाद में रोड़े अटका रहे हैं। बाहरी शक्तियां हैं अमरीकी साम्राज्यवादी, और जापान के कुछ प्रतिक्रियावादी तत्त्व भी इसी वर्ग में गिने जा सकते हैं। मुख्य बाहरी शक्ति हैं अमरीकी साम्राज्यवादी। संक्षेप में, अमरीकी साम्राज्यवादी कहते तो ये हैं कि वे उत्तर-दक्षिण संवाद के पक्ष में हैं, पर वास्तव में वे इसे रोक रहे हैं।

मेरी राय में एशिया की तथा अन्य जनता को अपनी शक्ति एकत्रित करके अमरीकी साम्राज्यवाद पर दबाव डालना चाहिए। अमरीकी साम्राज्यवादियों का कहना है कि वे चीन से और सोवियत यूनियन से अपने संबंध सुधारेंगे। हमारी भूमि के आधे भाग दक्षिण कोरिया में तब वे अपने सैनिक अड्डे बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं? उनका कहना है कि वे दक्षिण कोरिया में उसकी रक्षा के लिए टिके हैं, कहीं हम हमला न कर दें। हमारी इस घोषणा के बाद भी कि हम देश का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करेंगे, वे वहां क्यों टिके रहेंगे? संयुक्त राष्ट्र में उन्होंने कोरिया के प्रश्न पर बहस को एक वर्ष के लिए टालने पर स्पष्ट जोर दिया। हमने मांग की कि कोरिया प्रश्न पर बहस स्थगित न की जाए, कि क्योंकि अब उत्तर और दक्षिण कोरियावासियों में संवाद आरंभ हो गया है तो कोरिया की एकता की पूर्ण गारंटी के लिए कोरिया के पुनरेकीकरण के रास्ते के सब बाधक तत्त्व हटा दिए जाने चाहिए और यह भी कि ऐसा करने से कोरिया के पुनरेकीकरण में सहायता पहुंचाना संभव होगा। आल्जीरिया का प्रस्ताव इसी आधार पर पेश किया गया था, पर अमरीकी

आपत्ति के कारण वह अस्वीकृत हो गया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के वर्त्तमान अधिवेशन में हमें सहायता देने के इरादे से अनेक देशों ने अल्जीरिया के प्रस्ताव का समर्थन किया। हमारी स्थिति के समर्थन में महान प्रयासों के लिए हम इन देशों के आभारी हैं।

संयुक्त राष्ट्र में दक्षिण कोरिया के प्रतिनिधियों को अपनी गतिविधियां जारी रखने की पूरी छूट है पर हमारे प्रतिनिधियों को इसकी अनुमति नहीं दी गई है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोरिया के प्रश्न पर बहस एक वर्ष के लिए स्थगित कर दी गई, अतः कोरिया के पुनरेकीकरण में इतना ही रुकावट होगी। बात यह है कि बाधक षड्यंत्रों का नेतृत्व अमरीकी साम्राज्यवादी कर रहे हैं। स्पष्ट है कि क्योंकि हमारे देश के एक भाग में विदेशी सेना का आधिपत्य है तो वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से अपना पुनरेकीकरण नहीं कर सकता। अमरीकी साम्राज्यवादियों का दावा है कि वे दक्षिण कोरिया की 'रक्षा' कर रहे हैं क्योंकि हम उस पर धावा कर सकते हैं। जब हम राष्ट्र का शांतिपूर्ण पुनरेकीकरण करने के लिए तैयार हैं तो उनके वहां रहने का क्या कारण है ? वे अपने आक्रामक इरादे स्पष्ट दिखा रहे हैं। यह साम्राज्यवाद की प्रकृति का भाग है।

यह आकस्मिक नहीं है कि हम कोरियावासी अमरीकी साम्राज्यवाद के विरुद्ध इतनी तीव्रता से लड़ रहे हैं। अमरीकी साम्राज्यवाद हमारे राष्ट्र का पुनरेकीकरण रोक रहा है और दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य किए है, तो हम उसके प्रति अनुकूल रवैया नहीं अपना सकते, या अपना सकते हैं ?

मुझे विश्वास है कि बाधक शक्तियां न हों तो कोरियावासी आपस में समान मापदंड पा सकते हैं। उत्तर और दक्षिण के बीच व्यवस्था का भेद तथा अन्य समस्याएं हैं, लेकिन मेरी राय में फिर भी हम समान मापदंड पा सकते हैं और और राष्ट्रीय एकता प्राप्त कर लेंगे क्योंकि हम एक ही राष्ट्र हैं। जैसा कि मैंने 'मैनिची शिमबुन' के प्रतिनिधियों को बताया था कि तुरंत पुनरेकीकरण असंभव होने की स्थिति में हमने अपनी वर्त्तमान समाज व्यवस्थाओं को यथावत् बनाए रखते हुए परिसंघ का प्रस्ताव किया था।

मुझे आशा है कि जापान की जनता तथा अन्य एशियाई देशों की जनता कोरिया का पुनरेकीकरण करने में हमें सहायता देने के लिए संयुक्त प्रयास करेगी।

किसी भी राष्ट्र को उसकी इच्छा के विरुद्ध दो भागों में विभक्त नहीं किया जाना चाहिए। हम कोरियावासी एक ही राष्ट्र हैं, हमारी एक ही भाषा है, एक ही लिपि है और एक ही परंपराएं हैं। जबरन इस राष्ट्र को दो में बांटना अन्यायपूर्ण है; है कि नहीं ? अब हम एक पीड़ा भोग रहे हैं। यह सच ही बड़ा कष्टदायक है। पुनरेकीकरण के लिए हमें संगठित होकर लड़ना होगा।

दक्षिण कोरियाई शासकों की वर्त्तमान नीति टालमटोल की चालों की है। वे अपने दिन यथासंभव लंबे करना चाहते हैं। राष्ट्रीय पुनरेकीकरण के हमारे तीन सिद्धांतों ने उनके अनुचित कृत्यों के सब बहाने खत्म कर दिए हैं। इसीलिए अब वे संयुक्त राष्ट्र में कोरिया के प्रश्न पर बहस को स्थगित करने की चालें चल रहे हैं और हर प्रकार के कुतर्क कर रहे हैं। इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र में कोरिया के प्रश्न पर बहस को एक वर्ष के लिए टालने में उन्हें सफलता मिल गई है। पर मैं नहीं समझता कि उनकी चालें अधिक चल पाएंगी। वे जनता को अधिक समय तक धोखा नहीं दे सकते। जनता जागेगी और उसका संघर्ष दृढ़ होगा।

हमें बताया गया है कि हाल ही में विरोधी पक्ष की कुछ दक्षिण कोरियाई हस्तियों ने कहा कि वे उत्तर-दक्षिण संयुक्त वक्तव्य का समर्थन करते हैं, कि हमारे परिसंघ के विचार को स्वीकार करना आवश्यक है, कि उत्तर और दक्षिण की राजनीतिक पार्टियां और सामाजिक संस्थाओं में राजनीतिक समझौता वार्त्ताएं होनी चाहिएं। दक्षिण कोरिया में पुनरेकीकरण के प्रश्न में जनमत बढ़ रहा है। दक्षिण कोरिया के अखबारों पर इतनी पाबंदियां हैं कि वे सत्य का उद्घाटन नहीं कर सकते। अगर जापान का प्रेस दक्षिण कोरिया की जनता और विरोधी सदस्यों की न्यायवाणी की खबरें छापें तो लाभदायक रहेगा। पुनरेकीकरण में बाधक प्रतिक्रियावादी शक्तियां घोर दमन कर रही हैं और स्वयं उनमें पेचीदगियां हैं, इसलिए दक्षिण कोरिया में भिन्न मतोच्चारण हो रहा है, पर जनता जानती है कि ठीक क्या है।

एक राष्ट्र के अलगाव को स्थिर करने की और एक देश को विभक्त करने की इच्छुक शक्तियां दक्षिण कोरिया में नगण्य हैं; वहां का विशाल बहुमत हर प्रकार पुनरेकीकरण की मांग कर रहा है। अतः हमें आशावान होना चाहिए, पर कुछ समय लगेगा। पहले तो दक्षिण कोरियाई शासकों ने सुझाव दिया कि परस्पर निंदा और गाली-गलौज न किया जाए फिर स्वयं ही समझौता तोड़ दिया। 'मैनिची शिमबुन' के प्रतिनिधियों से अपनी हाल ही की बातचीत में मैंने इसका जिक्र किया था। बाद में ली हु राक के हस्ताक्षरों से एक 'पत्र' दक्षिण कोरियाई प्रेस के नाम लिखा गया था जिसमें उनसे उन शब्दों का इस्तेमाल न करने की प्रार्थना की गई थी जिनसे पुनरेकीकरण में बाधा पड़ सके। मुझे नहीं पता कि यह कोई चाल है या नहीं। अगर जो वे कहते हैं वही सच में उनकी इच्छा भी है तो हम भी अच्छा रवैया रखेंगे।

पहले उत्तर और दक्षिण में संपर्क नहीं हो सकता था, लेकिन अब रेडक्रास वार्त्ताओं और संयोजन आयोग के द्वारा संपर्क बन रहे हैं। विगत के मुकाबले यह अच्छी चीज है। मेरा विचार है कि इन संपर्कों के द्वारा समान मापदंड मिल जाएंगे।

अब मैं संक्षेप में कोरिया-जापान संबंधों की चर्चा करूंगा।

इस प्रश्न के संबंध में मैं इतना अधिक कह चुका हूं, लंबा कथन नहीं करूंगा।

मेरी राय है कि अगर उत्तर और दक्षिण कोरिया वाले देश के पुनरेकीकरण प्रश्न को शीघ्र ही निपटा लें तो कोरिया-जापान संबंधों की समस्या आसानी से सुलझ जाएगी।

मेरी धारणा है कि जापानी जनता से हमारे संबंधों में गतवर्ष फीका प्रगति हुई है। आज कोरिया और जापान की जनता में संबंध संतोषजनक विकसित हो रहे हैं।

यह देखते हुए कि तनाका सरकार के सहअस्तित्त्व के पांच सिद्धांतों के आधार पर समाजवादी देशों से संबंध हैं, मुझे नहीं लगता कि भविष्य में वह हमारे देश के प्रति अमैत्रीपूर्ण रवैया अपनाएगी। फिलहाल तनाका सरकार जापान और हमारे देश के बीच व्यक्तियों की पारस्परिक यात्रा की अनुमति देती हैं; हाल ही में उसने हमारे छात्रों को जापान में प्रवेश की अनुमति भी दी। यह भी कहा जा रहा है कि वह हमारे पत्रकारों का प्रतिनिधि मंडल निमंत्रित करने वाली है और भविष्य में हमारे तकनीशियनों की यात्राओं की भी अनुमति देगी। सातो मंत्रिमंडल के दिनों में हमारे देश के प्रति जो शत्रुतापूर्ण नीति थी, उसे इस प्रकार तनाका मंत्रिमंडल ने ढीला कर कर दिया है। मेरी राय में यह निस्संदेह अच्छी चीज है।

'मैनिची शिमबुन' और 'असाही शिमबुन' सहित जापानी प्रेस कोरिया-जापान संबंधों के पुनराकलन की आवश्यकता का सुझाव दे रहा है। विशेषतः जापानी जनता की हमारे देश की समझ गहरी होती जा रही है।

इन सब पहलुओं से हम दोनों देशों के भावी संबंधों को निकटतर होते हुए देख सकते हैं।

हम समझते हैं कि अगर जापानी सरकार सच ही एशिया में शांति के लिए काम करना चाहती है तो उसे कम से कम ऐसी नीति नहीं बरतनी चाहिए जो देश के पुनरेकीकरण में बाधा डाले। हमें आशा है जापानी सरकार ऐसा ही करेगी। इसके लिए जापानी सरकार को अपनी एक-तरफा नीति त्यागनी चाहिए और कोरिया प्रायद्वीप में उत्तर और दक्षिण दोनों के प्रति आक्रामकता से रहित पूर्वाग्रहहीन नीति अपनानी चाहिए। मेरा विचार है कि उसके ऐसा करने से हमारे देश के शीघ्र पुनरेकीकरण में सहायता होगी।

हमें यह आशंका नहीं है कि कोरिया और जापान के बीच व्यापार संबंधों के विकास से हमारा देश जापान को केवल कच्चा माल सप्लाई करने वाला या उसके माल की मंडी मात्र रह जाएगा। हमारा स्वतंत्र देश है। औद्योगिक आधार वाला हमारा देश आर्थिक रूप से स्वतंत्र है। अतः हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारा देश जापान को केवल कच्चा माल सप्लाई करने वाला देश या अन्य देशों के माल की मंडी मात्र नहीं बनेगा।

निस्संदेह हम कुछ कच्चा माल जापान को बेच सकते हैं। इसके माने यह नहीं हैं कि हमारा देश जापान को कच्चा माल सप्लाई करने वाला देश मात्र रह जाएगा। हमारे देश में खनिज लौह के अनंत भंडार हैं। अगर इसका कुछ अंश हम जापान को बेच भी दें तो यह नहीं कहा जा सकता कि हमारा देश जापान को कच्चा माल सप्लाई करने वाला देश मात्र रह जाएगा। जो देश स्वतंत्र या आत्मनिर्भर नहीं है केवल वही विदेशों को कच्चा माल सप्लाई करने वाला देश मात्र बन सकता है। लेकिन हमारा देश इस स्तर तक कभी नहीं पहुँचेगा क्योंकि हम स्वतंत्र हैं और हमारे पास आत्म-निर्भर अर्थव्यवस्था है।

हमें इसकी चिंता नहीं है। इसके विपरीत हम सोचते हैं कि समानता और परस्पर लाभ के सिद्धांतों पर जापान व्यापार बढ़ाना दोनों देशों की जनता के हितों के अनुरूप और लाभप्रद होगा। अगर जापानी अधिकारी हमसे व्यापार करना चाहें तो हम प्रस्तुत हैं।

जापान से आर्थिक विनिमय से हमें किसी बहुत बड़े लाभ की आशा नहीं है। फिर भी हम मानते हैं परस्पर लाभ के सिद्धांत पर कोरिया और जापान यथासंभव अधिक आर्थिक विनिमय कर सकते हैं।

कोई भी विनिमय समानता और परस्पर लाभ के सिद्धांतों के आधार पर होना चाहिए, आक्रामक उपायों से नहीं। हम अन्य पूंजीवादी देशों से परस्पर लाभ के आधार पर व्यापार कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि हमारी स्वतंत्रता पर आंच नहीं आएगी।

दक्षिण कोरिया की बात बिलकुल अलग है। दक्षिण कोरिया आर्थिक विनिमय इस तरह कर रहा है कि वह जापान से संयंत्रों का आयात करके उनका संयुक्त संचालन करता है या संचालन का अधिकार पूर्णतः जापानी पक्ष पर छोड़ देता है। इसे दासतापूर्ण आर्थिक विनिमय समझना चाहिए।

हम किसी ऐसी चीज को नहीं सह सकते। अगर हम जापान से संयंत्रों का आयात करेंगे तो उनकी कीमत देंगे। हम जापान से आर्थिक विनिमय बराबरी के सिद्धांत पर करना चाहते हैं। न तो हम जापान को अपने देश में औद्योगिक संचालन या स्वामित्व का अधिकार देंगे, न हम जापान से दीर्घकालीन ऋण लेना चाहते हैं। हम तो अँतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांतों के अनुरूप व्यापार करना चाहते हैं।

आपने पूछा है कि जापान और दक्षिण कोरिया के बीच हुई 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' के बावजूद क्या हम जापान से राजनायिक संबंध स्थापित करेंगे। हमने यह कभी नहीं कहा है कि 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' के रहते हम जापान से राजनयिक संबंध स्थापित करेंगे। इस 'संधि' की तीसरी धारा सबसे खराब है। इसके अनुसार 'कोरिया प्रजातंत्र' ही कोरिया प्रायद्वीप की एकमात्र वैध सरकार है।

यह हमारे देश के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप है ।

जब गवर्नर मिनोबे हमारे देश आए थे तो मैंने उनसे कहा था कि मैं 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' को मान्यता नहीं दे सकता। यह कहा जा सकता है कि जापान-कोरिया प्रायद्वीप में 'कोरिया प्रजातंत्र सरकार' को एकमात्र वैध सरकार इसलिए मानता है कि जापान की नीति संयुक्त राज्य के पीछे-पीछे चलने की है और जापान की प्रतिक्रियावादी सरकार की नीति हमारे प्रति शत्रुतापूर्ण है। अतः हम यह नहीं कह सकते कि जब तक 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' बरकरार है जापान हमारे प्रति समानता का बरताव करेगा।

यहां कई समस्याएं हैं। उदाहरण के लिए अगर कोरिया प्रायद्वीप में 'कोरिया प्रजातंत्र' को एकमात्र 'सरकार' मानने वाला 'संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव' रद्द हो जाए तो 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' का प्रभाव एकदम समाप्त हो जाएगा। क्योंकि 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' का आधार ही है 'संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव'।

अभी तक हमने जापानी सरकार के साथ राजनयिक संबंध बनाने का प्रस्ताव नहीं रखा है। हम चमचागीरी की कूटनीति पर नहीं चलेंगे। अगर जापानी सरकार हमारे देश के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना चाहती है तो करे, नहीं चाहती तो न करे। यह है हमारी स्थिति। निश्चय ही दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना बेहतर रहेगी। अगर जापान जनवादी जन गणतंत्र कोरिया के साथ अपने संबंध सामान्य बना ले तो 'जापान-कोरिया प्रजातंत्र संधि' की तीसरी धारा रद्द और खारिज समझी जा सकती है। इस संबंध में कई समस्याएं उठ खड़ी हो सकती हैं। हमने अभी तक यह मामला औपचारिक रूप से जापान सरकार के सामने नहीं रखा है। हमारे प्रति जापान सरकार का रवैया देखते हुए हम कोरिया जापान संबंधों की समस्या समझाएंगे।

हमारे देश में आपकी यात्रा के अवसर पर आपसे लंबी बातचीत करके मुझे प्रसन्नता है। इस प्रकार विचार-विनिमय से मुझे प्रसन्नता हुई है।

जापान के इवानामी प्रकाशन गृह के प्रबंध निदेशक और प्रमुख संपादक से बातचीत

१९ सितम्बर १९७३

श्री मिदोरीकावा तोरू, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप हमारे देश आए और जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की स्थापना के रजतजयंती उत्सव में सम्मिलित हुए।

हमारे देश को आपकी यह यात्रा कोरिया की जनता के प्रति आपके गंभीर प्रेम और विश्वास की अभिव्यक्ति है। आप जैसे एक और जापानी मित्र प्राप्ति पर मुझे बहुत हर्ष है और आपकी हमारे देश की यात्रा के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

मैं आपके प्रकाशन गृह के प्रति भी आभार प्रकट करता हूं जिसने जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की उपलब्धियों का इतने विस्तृत क्षेत्र में परिचय करा के अपनी मैत्री और बंधुत्व का परिचय दिया है। हमारे प्रति सहानुभूति की भावना से आपके प्रकाशन गृह ने हमारे देश के लिए कई अच्छे काम किए हैं। मुझे आशा है कि स्वदेश वापस लौटने पर आप इवानामी के अध्यक्ष तथा सभी कर्मचारियों को मेरी शुभ कामनाएं अवश्य देंगे।

कुछ अरसा हुआ, इवानामी द्वारा प्रकाशित 'सेकाई' पत्रिका में 'आज का दक्षिण कोरिया' शीर्षक से एक लेख छपा था। मैंने वह लेख पूरा पढ़ा। बड़ा दिलचस्प था। इससे हमें बहुत जानकारी मिली। हमें दक्षिण कोरिया के बारे में काफी जानकारी रहती है, पर आपके लेख में दक्षिण कोरियाई अधिकारियों के भ्रष्टाचार का जो नंगा चित्रण किया गया था, उससे हम कोरियावासियों की हैसियत से खौल उठे।

यह युक्तियुक्त ही है आप अपना कलम उठा कर दक्षिण कोरियाई अधिकारीगण के अपराधों और भ्रष्टाचारों का पर्दाफाश करें, उनकी निंदा करें। इससे आप जापानी और दक्षिण कोरिया की जनता और शेष विश्व की जनता की जानकारी बढ़ा रहे हैं और कोरिया और जापान की जनता के बीच मैत्री-संबंधों को दृढ़ करने में इसका महान योगदान होगा। यही नहीं, इस तरह के काम से आप पूरे विश्व में

प्रगतिशील विचारों के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

हमें अच्छी तरह पता है कि 'सेकाई' पत्रिका का संपादकीय विभाग और इवानामी के कर्मचारी विश्व की प्रगति के लिए महा प्रयास कर रहे हैं।

आपने मुझसे जनवादी जन गणतंत्र कोरिया की २५ वीं जयंती पर मेरे विचार जानने चाहे हैं। अभी हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति का पूर्ण अधिवेशन हुआ था। इसमें हमारे गणतंत्र की स्थापना से पिछले २५ वर्षों में हमारी सैद्धांतिक, प्राविधिक और सांस्कृतिक क्रांतियों की उपलब्धियों का विश्लेषण किया गया था। इसलिए अगर मैं आपको वही बताऊं तो मैं समझता हूँ कि आपके प्रश्न का पूरा उत्तर मिल जाएगा। पूर्ण अधिवेशन में एक सप्ताह तक जो विचार विमर्श हुआ वह सब मैं थोड़े से समय में नहीं कह सकता, अतः मुख्य विषयों पर संक्षेप में चर्चा करूंगा।

पार्टी की केंद्रीय समिति के पूर्ण अधिवेशन की धारणा है कि गणतंत्र की स्थापना से हमारी पार्टी ने जिन दिशाओं और नीतियों का पालन किया है वे बहुत सही हैं। अब जबकि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति शीघ्र परिवर्तित और अनेक दिशाओं में विकसित हो रही है, हमारी दिशाओं और नीतियों का सही होना और भी सिद्ध हुआ है। विशेषतः हमारी पार्टी की राजनीति में स्वतंत्रता, अर्थव्यवस्था में आत्म-निर्भरता और राष्ट्र की सुरक्षा में आत्म-प्रतिरक्षा की दिशा बिलकुल सही सिद्ध हुई है। हमारी सारी उपलब्धियां हमारी पार्टी की जूछे विचार में पूर्ण निष्ठा और इस विचार की मूर्त्त रूप स्वतंत्रता, आत्म-निर्भरता और स्व-सुरक्षा की दिशा की कृपा के फल हैं।

हमारी पार्टी द्वारा राजनीतिक स्वतंत्रता, आर्थिक आत्म-निर्भरता और राष्ट्रीय स्व-सुरक्षा के सिद्धांतों का पालन कितना सही है यह अब पहले से भी अधिक सिद्ध हो गया है। आज विश्व के अनेक देश स्वतंत्रता के मार्ग पर चलना चाहते हैं— हमारी राय में तीसरी दुनिया के राष्ट्र ही नहीं, बल्कि दूसरी दुनिया के जापान, कनाडा और फ्रांस जैसे राष्ट्र भी। हमारा विचार है कि यह संपूर्ण विश्व की जनता की समान आकांक्षा है। यह सही है कि प्रतिक्रियावादी शक्तियां बड़े देशों के अनुसरण की नीति पर चल रही हैं। लेकिन विश्व के लगभग सभी लोग, प्रगतिशील शक्तियां और जागरूक हस्तियां स्वतंत्रता की मांग कर रहे हैं। मेरी राय में हमारे पड़ोसी जापान के बारे में भी यह सही है। जापान में जनता का विशाल बहुमत, प्रगतिशील शक्तियां और अधिकतर लोकप्रिय हस्तियां, कुछ गिने-चुने प्रतिक्रियावादियों को छोड़-कर आज स्वतंत्रता पर बल दे रहे हैं, उसीकी मांग कर रहे हैं।

आपने देखा कि हमारी पार्टी की स्वतंत्रता की दिशा एक ऐसे समय अस्तित्व में आई जब सब देशों की जनता की आकांक्षा स्वतंत्रता है। इस प्रकार यह वर्त्तमान प्रवृत्तियों के पूर्णतः अनुरूप है। दूसरे शब्दों में, हालांकि हमारी पार्टी और गणतंत्र सरकार की स्वतंत्रता की दिशा का चुनाव स्वयं कोरिया की जनता ने किया था, यह

दिशा विश्व जनगण की आकांक्षाओं के अनुरूप है। अतः हम कह सकते हैं कि हम अंतर्राष्ट्रीय प्रवृत्ति के अनुसार उसी मार्ग पर चल रहे हैं जिस पर विश्व के प्रगतिशील जनगण भी चल रहे हैं।

हाल ही में अल्जीरिया में हुए तटस्थ राष्ट्रों के चतुर्थ शिखर सम्मेलन में भी यह स्पष्ट हो गया था। इस सम्मेलन में ८० या १०० से अधिक राष्ट्रों से उनके राज्याध्यक्ष या सरकार प्रमुख तथा प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस कानफरेंस में हमारे देश के प्रतिनिधि नहीं थे। फिर भी कानफरेंस ने कोरिया के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप और 'दो कोरिया' गढ़ने के षड्यंत्र की निंदा की। इसने एक प्रस्ताव पारित किया, जिसके अनुसार कोरिया के आंतरिक मामलों में हर प्रकार का विदेशी हस्तक्षेप बंद होना चाहिए और संयुक्त राष्ट्र महासभा को संयुक्त राष्ट्र के झंडे नीचे दक्षिण कोरिया पर आधिपत्य जमाने वाली विदेशी सेनाओं की वापसी और 'कोरिया के एकीकरण और पुनर्वास के लिए संयुक्त राष्ट्र आयोग' के विघटन का निर्णय लेना चाहिए। कानफरेंस ने यह भी निर्णय लिया की कोरिया के पूर्ण पुनरेकीकरण के बाद या एक ही नाम से उत्तर-दक्षिण परिसंधि की स्थापना के बाद कोरिया को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता अवश्य ही दी जाए। यह सूचना हमें अपनी पार्टी की केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के दौरान मिली और इसके द्वारा हमें और अधिक दृढ़ विश्वास हो गया है कि हमारी पार्टी की दिशा सही है और हमें और भी स्पष्ट अनुभूति हुई है कि संसार के अनेक देश हमारा समर्थन कर रहे हैं।

तटस्थ राष्ट्र ही नहीं जापान तथा अन्य अनेक देशों की जनता हमारी स्वतंत्रता की दिशा का समर्थन कर रही है। इस समर्थन और प्रोत्साहन से हमारी जनता को अपने संघर्ष की न्योचितता में और गंभीर विश्वास पैदा होता है और हमारे संघर्ष को प्रेरणा मिलती है।

जूछे विचार के आधार पर हमारी जनता एक मन और एक उद्देश्य से दृढ़तापूर्वक संगठित है। हमारे देश में जूछे विचार के आधार पर वर्षों से चली आनेवाली चाटुकारिता की प्रवृत्ति का अंत कर दिया गया है और संपूर्ण जनता की सुदृढ़ राजनीतिक-सैद्धांतिक एकता यथार्थ हो गई है। अगर हमारी पार्टी चाटुकारिता की दास बनी रहती, अन्य देशों की नीतियों का अंधानुकरण करती रहती और अपने प्रयासों से अपनी नियति का निर्माण न करती तो संपूर्ण जनता की यह राजनीतिक-सैद्धांतिक एकता प्राप्त नहीं हो पाती और न ही क्रांति और निर्माण की आज की ज्वलंत उपलब्धियां प्राप्त हो पातीं।

पार्टी की केंद्रीय समिति की हाल ही की पूर्णाधिवेशन बैठक में हमने सगर्व यह विश्लेषण किया कि तमाम कठिनाइयों के बावजूद गणतंत्र की स्थापना के २५

वर्षों के अपने प्रयाण में हमारी पार्टी को आज की महान सफलताएं इसीलिए मिलीं कि इसने अपने ही मस्तिष्क के उपयोग से, अपने ही प्रयासों द्वारा अपना मार्ग गढ़ा। हमने यह भी अनुमान लगाया कि ये महान सफलताएं इसीलिए संभव हो सकीं कि हमारी पार्टी के जूछे विचार और स्वतंत्रता, आत्म-निर्भरता और स्व-सुरक्षा की दिशा ने हमारी जनता के हृदय में घर कर लिया था और संपूर्ण पार्टी, संपूर्ण सेना और संपूर्ण जनता ने इन्हें स्वीकार करके अपने अस्तित्व का भाग बना लिया था।

आज हमारे संपूर्ण श्रमरत लोग जूछे विचार से सज्जित हैं और अपने आपको स्वामी समझते हुए अपनी पूर्ण सर्जनशीलता से अपने दायित्व पूरे करते हैं। पिछले २५ वर्षों में हमारे गणतंत्र ने ये सब सफलताएं इसलिए प्राप्त की हैं कि धनवानों ने अपना धन दिया, ज्ञानवानों ने अपना ज्ञान और कौशलवानों ने अपना कौशल। दूसरे शब्दों में, ये कठिनाइयों पर विजय पाने के हमारी जनता के पूर्ण श्रम और कौशल से किए गए संघर्ष के फल हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि केवल कुछ ही लोगों के श्रम और कौशल से हमारे गणतंत्र को इतने कम समय में शक्तिशाली, संपन्न और विकासशील समाजवादी देश में परिवर्तित करना संभव नहीं हो पाता।

केवल श्रमिकों और कृषकों ने ही नहीं, पहले के संपन्न बुद्धिजीवियों ने भी अपनी संपूर्ण बुद्धिमत्ता से गणतंत्र की संपन्नता और प्रगति के संघर्ष में भाग लिया। हमारी पार्टी की सही बुद्धिजीवी नीति की कृपा से उन पुराने बुद्धिजीवियों में से, जो हमारी क्रांतिकारी पांतों में सम्मिलित हुए, कोई भी पीछे नहीं रहा है। हमारी पार्टी और सरकार की दिशाओं और नीतियों का पालन करने के लिए उनमें से अनेक पूरी निष्ठा से अपने अंतिम क्षण तक लड़ते रहे।

हमारा गणतंत्र अपनी वर्तमान संपन्नता और प्रगति इसीलिए भोग पाया कि हमारी संपूर्ण जनता सैद्धांतिक रूप से एक थी और स्वामित्व के भाव से अपनी सरकार को मजबूत और अपने देश को धनवान और शक्तिमान बनाने के लिए काम करती रही।

संस्कृति के क्षेत्र में भी काफी प्रगति हुई है।

स्वाधीनता के तुरंत बाद हमने निरक्षरता समाप्त करने का काम आरंभ कर दिया। जब मैं उत्तर कोरिया की अस्थायी जन समिति का अध्यक्ष था, तो समिति के एजेंडा का पहला आइटम था पेंसिल समस्या। स्वाधीनता के तुरंत बाद हमने यह अपने बच्चों की शिक्षा के लिए और निरक्षरता उन्मूलन के लिए किया। लेकिन अब हम यह सोच रहे हैं कि संपूर्ण श्रमरत जनता कैसे उच्च-सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर मिडिल स्कूल स्नातक या उससे भी ऊंचा स्तर-प्राप्त करे और कम से कम एक हुनर में दक्षता पाए।

यह नहीं, हमारी पार्टी ने नए बुद्धिजीवियों की बड़ी संख्या को प्रशिक्षित

किया और साथ-साथ पुराने बुद्धिजीवियों का पुर्नशिक्षण करके उन्हें जनता की सेवा करने वाले श्रमिक बुद्धिजीवी बनाया। परिणाम यह है कि अब हमारे पास ६,००,००० से अधिक तकनीशियन तथा विशेषज्ञ हैं। पार्टी ने इनकी संख्या निकट भविष्य में १० लाख से अधिक बढ़ाने का लक्ष्य प्रस्तावित किया है और उसकी पूर्ति के लिए प्रयत्नशील है।

संस्कृति के विकास में प्राप्त इन सब सफलताओं से पूरी तरह मालूम पड़ता है कि गणतंत्र के जन्म से पिछले २५ वर्षों में हमारी पार्टी की संस्कृति-नीति कितनी सही थी और हमारे देश में सांस्कृतिक क्रांति कितनी तेजी से हो रही थी।

हमारे आर्थिक क्षेत्र ने अत्यधिक प्रगति की है।

निस्संदेह आर्थिक निर्माण में हमें बंधु देशों से सहायता मिली। पर यह मुख्य चीज नहीं थी। हमारी पार्टी आर्थिक निर्माण के लिए आंतरिक शक्तियों पर भरोसा करने की नीति पर अडिग रही।

अब हम कह सकते हैं कि हम पूर्णतः स्वतंत्र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था के निर्माण में सफल हुए हैं। न सिर्फ हमारी अर्थव्यवस्था अपने पैरों पर मजबूती से खड़ी हो सकी है बल्कि उसके पास भविष्य में और भी तीव्र गति से विकास की बुनियाद भी है। आज हमारी अर्थव्यवस्था के पास इतनी शक्ति है कि विश्व के आर्थिक उतार-चढ़ावों से प्रभावित हुए बिना वह पूर्ण विश्वास से स्वतंत्रतापूर्वक आगे बढ़ सके। इसे वास्तविकता ने सिद्ध किया है।

आजकल हम यह विचार-विमर्श कर रहे हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था का विकास और तीव्र कैसे हो। अगर हमारे आर्थिक विकास में कठिनाइयां आएंगी तो वे हमारी तीव्र प्रगति के कारण ही होंगी। अब न आर्थिक निष्क्रियता है, न मंदी। ये तो भूतकाल की चीजें हैं।

हम बड़े गर्व और आत्मविश्वास के साथ दृढ़ातापूर्वक कह सकते हैं कि गणतंत्र की स्थापना के २५ वर्षों में हमने सैद्धांतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक—सभी—क्षेत्रों में महान प्रगति की है, सफलताएं पाई हैं।

अब हमारी पार्टी सब सदस्यों और संपूर्ण जनता से अपील कर रही है कि वे वर्त्तमान सफलताओं से आत्मतुष्ट न हो जाएं, बल्कि इन्हें सुदृढ़ करने और नई प्रगति करने के लिए अनवरत संघर्ष करें।

राष्ट्र की आर्थिक बुनियाद सुदृढ़ करने के लिए और जनता की महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं के संतोष हेतु पदार्थ का गढ़ फतह करने के लिए समस्त श्रमिक जनता को सफलताओं के नशे में और आलस्य में न आकर कठोर श्रम करते रहना चाहिए। अगर हम श्रमिक जनता की सैद्धांतिक शिक्षा को सुदृढ़ नहीं करते तो बढ़ती हुई संपन्नता से वे घमंडी या ढीठ हो सकते हैं। इसलिए संपन्नता के परिणामस्वरूप श्रमिक

जनता में जो आलस्य और स्वार्थ की प्रवृत्तियां पनप सकती हैं उनसे हमें बचाव करना होगा और उन्हें 'सबके लिए एक और एक के लिए सब' नारे के अंतर्गत सामूहिक भावना से काम करने और रहने के लिए प्रेरणा देनी होगी। अतः पार्टी की केंद्रीय समिति के हाल के पूर्णाधिवेशन ने अहंकार और आलस्य की उन प्रवृत्तियों के, जो हमारे जीवन की कठिनाइयों और चिंताओं के निवारण से पनप सकती हैं, विरुद्ध सैद्धांतिक संघर्ष की आवश्यकता पर विशेष बल दिया और ऐसी प्रवृत्तियां रोकने के लिए संपूर्ण पार्टी का आवाहन किया।

आपने पूछा है कि षड्-वर्षीय योजना कैसे पूरी की जा रही है। मैं इस विषय में कुछ शब्द कहूंगा।

आज हमारे श्रमिकों और कृषकों में षड्-वर्षीय योजना को समय से पूर्व पूरा करने का विशेष उत्साह है और संपूर्ण राष्ट्र इसके लिए प्रयत्नशील है।

तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्व हमारी षड्-वर्षीय योजना के केंद्र हैं। हमारी पार्टी की केंद्रीय समिति के पिछले पूर्णाधिवेशन ने षड्-वर्षीय योजना की सफलता के लिए तकनीकी क्रांति के तीन प्रमुख दायित्वों को तीव्रता से पूर्ण करने की आवश्यकता पर सशक्त बल दिया था।

अब हम भारी और हलके श्रम का अंतर कम करने का और भारी श्रम को हलका बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। भारी और हलके श्रम के अंतर को कम करने के अपने दायित्व को शीघ्र पूरा करके और अपनी श्रमिक जनता को कमरतोड़ मेहनत से मुक्त करके ही हम अपनी षड्-वर्षीय योजना को समय से पहले पूरा कर सकते हैं।

भारी और हलके श्रम के बीच भेद को पूरी तरह मिटाना कोई आसान काम नहीं है। निकट भविष्य में इस अंतर को काफी कम करने का हमारा इरादा है। अब हमारा देश भारी और हलके काम के अंतर को कम करने में दृढ़ प्रगति कर रहा है। इस विषय में हम अभी तक बड़ी सफलताएं पा चुके हैं।

इस अंतर को कम करने और श्रमिक जनता को कमरतोड़ मेहनत से मुक्त करने में आरंभिक दायित्व है खदान उद्योग में तकनीकी नवीनताओं का प्रवेश।

उद्योग के क्षेत्र में ताप-प्रभावित काम का हमें अंत करना होगा। यहां जिसका महत्त्व है वह है उत्पादन प्रक्रिया में स्वचालन का प्रवेश और बाद में धीरे-धीरे दूर-यंत्रों की ओर प्रगति। अतः हमारी पार्टी की पांचवीं कांग्रेस ने स्वचालन के संतोषजनक प्रवेश के लिए इलेक्ट्रोनिकी के विकास को प्रमुख दायित्व बताया है।

ये सब समस्याएं साधारण नहीं हैं। पर एक एक करके हम इन सबको सुलझाने में समर्थ हैं।

तकनीकी क्रांति से हमारे दायित्वों को पूरा करना है तो हमें अध्ययन करना होगा और स्वयं कई चीज़ों का आविष्कार करना होगा। अब हम इस ओर घोर

प्रयास कर रहे हैं। यही नहीं, हमें विदेशी तकनीकों का भी सक्रिय प्रवेश करना होगा। यह आत्म-निर्भरता के विपरीत नहीं है। कुछ लोग समझते हैं कि आत्म-निर्भरता का अर्थ है हर चीज अपने आप करना। यह सही नहीं है। आत्म-निर्भरता का अर्थ है दूसरों के आश्रित रहने के बजाए अपने प्रयासों पर भरोसा करना। जिन तकनीकों का दूसरे आविष्कार और विकास कर चुके हैं, अच्छा हो कि हम उनका प्रवेश करा लें और स्वयं उनपर रिसर्च आरंभ न करें। मेरी राय में विदेशी तकनीकी को अच्छी तरह सीखना भी आत्म-निर्भरता के बराबर है। दूसरों से सीखने के बजाए अपने दरवाजे बंद रखना गलत है। हम बाहरी देशों की तकनीकी शाखाओं का निरीक्षण करें और उनकी तकनीकें सीखें तो हमारी प्रगति और तीव्र हो सकती है।

मैं समझता हूं कि षड्-वर्षीय योजना में उल्लिखित अधिकांश तालिकाएं १९७५ तक पूरी हो जाएंगी। पर अपनी तकनोलोजी के विकास के लिए हमें निरंतर प्रयास करते रहना होगा।

अब से हमें अपने भारी उद्योगों के लिए और अधिक श्रम करना होगा।

भारी उद्योग की परियोजनाओं का निर्माण शीघ्र पूरा करके हम इस क्षेत्र के दायित्वों को शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन अगर हम निर्माण को मंदा कर दें तो इन दायित्वों को पूरा करने में कुछ देर लग सकती है। इस समय हम षड्-वर्षीय योजना के अंतर्गत भारी उद्योगों के दायित्वों को १९७५ तक पूरा करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। पर मुझे डर है कि भारी उद्योग की कुछ तालिकाएं १९७६ के प्रथमार्द्ध से पहले पूरी नहीं हो पाएंगी।

फिलहाल हलके उद्योग ठीक चल रहे हैं। मैं समझता हूं कि यह उद्योग षड्-वर्षीय योजना के अपने प्रमुख लक्ष्य अगले वर्ष पूरे कर लेगा।

हमारा देश हलके उद्योगों का विकास दो दिशाओं में कर रहा है। हम केंद्रीय और स्थानीय उद्योगों का विकास कर रहे हैं। केंद्रीय उद्योगों के विकास से हमारा तात्पर्य है बड़ी उत्पादन क्षमता वाले, आधुनिक हलके उद्योगों के कारखानों को बनाना और उनका संचालन करना, और स्थानीय उद्योगों से हमारा मतलब है किसी इलाके में वहां के कच्चे माल का उपयोग करने वाले हलके उद्योग के लघु और मध्यम कार-खानों को चलाना।

षड्-वर्षीय योजना में कल्पित हलके उद्योगों के दायित्वों को हम १९७५ में पूरा कर लेंगे।

अब हमारी श्रमिक जनता षड्-वर्षीय योजना को समय से पूर्व पूरा करने के उत्साह से भरी है और कई परिस्थितियां हमारे अनुकूल हैं। पहले हमारा व्यापार केवल समाजवादी देशों से था लेकिन अब अनेक पूंजीवादी तथा नव स्वाधीन देशों से भी हमारे व्यापार संबंध हैं। विशेषतः तीसरी दुनिया के नव स्वाधीन देशों से हमारे

निकटतर व्यापार संबंध हैं।

इसके बाद हम कृषि और उद्योग में श्रम के अंतर को कम करने के लिए प्रयत्नशील हैं। हम कृषि के श्रम को उद्योगों के श्रम के निकट लाना चाहते हैं। 'हमारे देश में समाजवादी कृषि प्रश्न पर कुछ स्थापनाएं' में जिन दायित्वों को रखा गया है उन्हें पूरा करने का इस क्षेत्र में महत्त्व है।

अगले वर्ष 'हमारे देश में समाजवादी कृषि प्रश्न पर कुछ स्थापनाएं' की घोषणा की दसवीं जयंती होगी। दसवीं जयंती के अवसर पर इन स्थापनाओं के दायित्वों को पूरा करने की हम कोशिश कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि अगले वर्ष इन स्थापनाओं के केवल सैद्धांतिक क्रांति को छोड़कर लगभग शेष सभी दायित्व हम पूरे कर लेंगे।

हमें दिखाई दे रहा है कि इन स्थापनाओं द्वारा प्रस्तावित ग्राम्य तकनीकी क्रांति के सभी प्रमुख दायित्व अगले वर्ष तक लगभग पूरे हो जाएंगे।

हमारे ग्राम्य अंचल में भूमि सिंचन का काम कभी का पूरा हो चुका है और विद्युतीकरण भी बड़ी शान से किया जा चुका है। अब हम यंत्रीकरण में जुटे हैं।

स्थापनाओं के अनुसार ग्राम्य अंचल में ट्रैक्टरों की संख्या ७०,०००-८०,००० (१५ हार्स पावर इकाइयों के संदर्भ में) होनी ही चाहिए। ट्रैक्टर कारखानों के श्रमिक अगली जुलाई तक इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए संघर्षरत हैं।

हमारे देश में उपजाऊ भूमि में १५,००,००० छोंग्बो भूमि ऐसी है जहां मशीनें काम कर सकती हैं। अगर ८०,००० ट्रैक्टर बना लिए जाएं तो फी १०० छोंग्बो भूमि पर हम ५-६ ट्रैक्टर दे सकते हैं। ७०,०००-८०,००० ट्रैक्टर ग्राम्य अंचल को मुहैया करके हम उसकी यंत्रों की आवश्यकता को मूलतः पूरा कर पाएंगे।

षड्-वर्षीय योजना के अनुसार कृषियोग्य भूमि के फी १०० छोंग्बो ट्रैक्टरों की संख्या बढ़ाकर ६-७ होनी चाहिए। मैं समझता हूं यह लक्ष्य हम १९७५ तक पूरा कर पाएंगे। इन स्थापनाओं में प्रस्तावित कृषि के रासायनीकरण का दायित्व भी अगले वर्ष पूरा हो जाएगा। इन स्थापनाओं ने हर छोंग्बो भूमि के लिए एक टन से अधिक रासायनिक खाद मुहैया करने का दायित्व निर्धारित किया था। यह लक्ष्य अगले वर्ष के प्रथामार्द्ध में पूरा हो जाएगा। प्रति छोंग्बो एक टन रासायनिक खाद इतनी कम नहीं है। अगले वर्ष विभिन्न कृषि रसायनों की सप्लाई का लक्ष्य भी पूरा हो जाएगा। इस प्रकार अगले वर्ष में इन स्थापनाओं में निर्धारित ग्राम्य तकनीकी क्रांति के प्रमुख दायित्व पूरे हो जाएंगे।

अनाज उत्पादन की संभावनाएं भी बड़ी उज्ज्वल हैं। खेतिहर गांवों में हमने अभी देखा कि इस वर्ष हमारे देश को भारी फसल की आशा है। ओनचोन काउंटी जहां हम अभी होकर आए हैं कभी एक बड़ी पिछड़ी हुई काउंटी हुआ करती थी।

लेकिन अब इसका अनाज का उत्पादन प्रति वर्ष बढ़ता जा रहा है। इस काउंटी में अधिकतम अनाज ५३,००० टन तक पहुँचा था। लेकिन कहते हैं कि इस वर्ष इस काउंटी में ७०,००० टन फसल होगी। षड्-वर्षीय योजना में इस काउंटी का अनाज उत्पादन का लक्ष्य ७३,००० टन है। अगर यह काउंटी अगले वर्ष ३,००० टन अनाज और अधिक उपजा सके तो यह षड्-वर्षीय योजना पूरी कर लेगी। यह कोई बहुत भारी काम नहीं है। अगर हम छोंग्बो में थोड़ा-सा ही उत्पादन और हो तो काम चल जाएगा। इस वर्ष की उपलब्धियों पर हमारे ग्राम्य अधिकारी संतोष कर सकते हैं। इसीलिए पार्टी की केंद्रीय समिति के पिछले पूर्ण अविवेशन में हमने उन्हें आत्म-तुष्ट न होने की चेतावनी दी थी।

इसकी पूरी संभवाना है कि षड्-वर्षीय योजना के कृषि लक्ष्य अगले वर्ष पूरे हो जाएंगे। अपने समग्र रूप में भी हमारी षड्-वर्षीय योजना की प्रगति संतोष-जनक है।

इसके अलावा हम अपनी स्त्रियों को घर के कामों के भारी बोझ से मुक्ति दिलाने का संघर्ष कर रहे हैं। यह संघर्ष भी राष्ट्रव्यापी स्तर पर किया जा रहा है। विशेषतः हमारी स्त्रियां उच्च-स्तरीय सर्जनशीलता का परिचय देकर स्वयं को मेहनत से मुक्त करने के प्रयत्न कर रही हैं।

घर के भारी कामों से स्त्रियों को मुक्त करने के संघर्ष में अभी तक अनेक सफलताएं मिल चुकी हैं। कोरिया की औरतें सदियों से सिर पर घड़े लाद कर पानी लाती थीं। लेकिन अब अनेक गांवों में जल सेवा के प्रवेश से उन्हें सिर पर पानी के घड़े लाने की आवश्यकता नहीं है। गांवों में मैं बूढ़ी औरतों से बात करता हूं तो भावुकता से आंखों में आंसू भरकर वे कहती हैं कि वर्षों तक वे अपने सिरों पर पानी के घड़े ढोती रहीं पर अब मजदूर पार्टी के युग में ही उन्हें इससे मुक्ति मिली है। निस्संदेह सिरों पर घड़े लादकर लाना हमारी औरतों के लिए भारी काम था।

जल सेवा के प्रवेश से गांवों में सिर पर पानी के घड़े लादने की प्रथा तो मिटी ही, गांव वालों को पीने के लिए शुद्ध जल भी मिला। जल-सेवा के प्रवेश से कृषक बड़े प्रसन्न हैं।

स्त्रियों के भारी काम करने के अलावा हमने शिशुपालन का उनका बोझ हलका करने के उपाय किए हैं। शिशुपालन स्त्रियों के लिए भारी बोझ है। राज्य ने इस बोझ को हलका करने के लिए अनेक नर्सरी और किंडरगार्टन स्थापित किए हैं।

नर्सरी और किंडरगार्टन जाने वाले बच्चे सुबह का नाश्ता घर पर करके आते हैं, लेकिन लंच और कलेवा उन्हें मिलता है। हमारी पार्टी और सरकार द्वारा इस उत्कंठा के प्रदर्शन से स्त्रियां भावुक हो उठती हैं। वे कहती हैं कि इन सहूलियतों के कारण उन्हें अपने कामों में थकान नहीं होती।

हमारे साथियों से बात करके आपको षड्-वर्षीय योजना की बाबत और जानकारी मिल सकती है। हमें दृढ़ विश्वास है कि इस योजना को पूर्ण करने में हमें सफलता मिलेगी। षड्-वर्षीय योजना के पूरा होने पर फिर हमारे देश आइए। कार में आपने कहा था कि जनवादी जन गणतंत्र कोरिया में एक वर्ष एक युग का निर्माण करता है। षड्-वर्षीय योजना पूर्ण होने पर हमारा देश और भी बदल जाएगा।

आपने कोरिया के पुनरेकीकरण और संयुक्त राष्ट्र के बारे में पूछा है। मैं संयुक्त राष्ट्र के संदर्भ में पुनरेकीकरण की चर्चा करूंगा।

जहां तक संयुक्त राष्ट्र का संबंध है, इसका घोषणा पत्र अपने आप में बुरा नहीं है। लेकिन अभी तक संयुक्त राष्ट्र पर बड़ी शक्तियों का प्रभुत्व है; यह उनके कंट्रोल में रहा है। अतः संयुक्त राष्ट्र अपने घोषणापत्र के अनुरूप कार्य नहीं कर पाया है। संयुक्त राष्ट्र अपने घोषणा पत्र पर अमल विशेषतः इसलिए भी नहीं कर पाया कि अमरीकी साम्राज्यवादी संयुक्त राष्ट्र में राजनीतिक दांव पेंच में लगे रहते हैं और अपना डंडा चलाते रहते हैं।

लेकिन आज अनेक नव स्वाधीन और प्रगतिशील देश संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बन चुके हैं। जैसा कि मैंने कहा नवस्वाधीन राष्ट्र स्वतंत्रता की मांग करते हैं। अतः संयुक्त राष्ट्र के सदस्य राज्यों में यह मांग बढ़ रही है कि संयुक्त राष्ट्र एक ऐसा संगठन हो जो हर देश की स्वतंत्रता पक्की करे।

अपने घोषणापत्र के प्रति सच्चा होने के लिए संयुक्त राष्ट्र को ऐसा संगठन होना ही होगा जो हर बड़े छोटे देश की स्वतन्त्रता पक्की करे। और फिर भी हम यह नहीं कहते कि संयुक्त राष्ट्र की अब और आवश्यकता नहीं है। अनेक देशों ने अपनी आशाएं संयुक्त राष्ट्र से बांधी हुई हैं।

हां, अगर बड़े राष्ट्रों की गुटनीति के प्रभाव में संयुक्त राष्ट्र अपने घोषणा-पत्र के विपरीत कार्य करता रहा तो यह विश्व की जनता का विश्वास खो देगा।

अब सब देशों की जनता अमरीकी साम्राज्यवादियों की आक्रामक और नव उपनिवेशवादी नीतियों को अच्छी तरह समझती जा रही है, अतः अमरीकी साम्राज्यवाद की प्रतिष्ठा बुरी तरह हिल गई है। संयुक्त राष्ट्र में अमरीकी डंडा भी अपनी शक्ति खोता जा रहा है। आज अनेक देश दृढ़ संघर्ष कर रहे हैं और संयुक्त राष्ट्र से मांग कर रहे हैं कि वह अपने घोषणा पत्र की भावना के अनुरूप कार्य करे। मेरी राय में नव स्वतन्त्र देशों की राजनीतिक जाग्रति संयुक्त राष्ट्र की भावी कार्यविधि में निर्णायक होगी।

दक्षिण कोरियाई अधिकारी, अमरीकी साम्राज्यवाद और जापानी सरकार संयुक्त राष्ट्र में एक साथ 'दो कोरिया' के प्रवेश की चालें चलते रहे हैं। इसी-

लिए इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा के एजेंडा पर संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के प्रवेश का प्रश्न रखा गया है।

जब उत्तर और दक्षिण के बीच समझौता वार्त्ता चल रही हैं और अभी तक दोनों पक्षों में कोई समझौता नहीं हुआ है तो संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के साथ-साथ प्रवेश का प्रस्ताव उन्होंने क्यों रखा है ?

इस प्रस्ताव से अमरीकी साम्राज्यवादियों और कुछ जापानी प्रतिक्रियावादियों के असली इरादे स्पष्ट हो जाते हैं। दीर्घकाल से ये लोग कोरिया के विभाजन को स्थायी करने के षड्यंत्र रच रहे हैं। दूसरे शब्दों में कोरिया के प्रति उनकी महत्त्वाकांक्षाएं स्पष्ट हो जाती हैं।

संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के साथ-साथ प्रवेश के प्रस्ताव का एक उद्देश्य दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाओं को हटाने की समस्या पर संयुक्त राष्ट्र महासभा में बहस की पेशबंदी करना भी है। यह है मुख्य उद्देश्य जिस पर उनकी निगाह है। उन्होंने यह प्रस्ताव इस कोशिश में पेश किया कि विश्व की रुचि संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के साथ साथ प्रवेश के प्रश्न पर केंद्रित हो जाए और दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाओं को हटाने के प्रश्न पर न रहे। यह प्रस्ताव इसी उद्देश्य की प्राप्ति की चाल है। संक्षेप में इस प्रस्ताव का आधार दक्षिण कोरिया में अमरीकी सेनाओं को बनाए रखने की चाल पर है, क्योंकि उन्हें अब इसका कोई बहाना नहीं मिल पा रहा। अंतिम विश्लेषण में इस प्रस्ताव का उद्देश्य है कि संयुक्त राष्ट्र में अनेक राष्ट्रों का ध्यान दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेनाएं हटाने के प्रश्न पर और संयुक्त राष्ट्र के साइन बोर्ड के नीचे उनकी दक्षिण कोरिया में मौजूदगी पर न जाए।

अमरीकी साम्राज्यवादियों, जापानी प्रतिक्रियावादियों और दक्षिण कोरियाई कठपुतलियों को यह भी मालूम है कि वे संयुक्त राष्ट्र में एक साथ 'दो कोरिया' के प्रवेश का यथार्थ रूप नहीं दे सकते। इसलिए नहीं कर सकते कि इन दोनों में से एक प्रवेश से सहमत है, दूसरा नहीं है।

फिर भी अमरीकी साम्राज्यवादियों ने संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के साथ-साथ प्रवेश का प्रस्ताव इस विषय पर बहस मुबाहसे की कोशिश में रखा ताकि दक्षिण कोरिया से अमरीकी सेना की वापसी के प्रश्न को नजरअंदाज किया जा सके। विश्व जनता की आंखों में धूल झोंकने की यह जादूगरी है। उनकी आंखों के सामने ये धोखेबाज चालें अधिक नहीं टिक सकतीं। किसी बाजीगर की चालाकी को एकाधिक बार देखने से उसका रहस्य पूरी तरह पकड़ में आ जाता है।

इस वर्ष इस समस्या से संयुक्त राष्ट्र महासभा में सनसनी पैदा हो सकती है। जो हो, मामले का सार तत्व पहले ही प्रकाश में आ गया है।

अल्जीरिया में हुए तटस्थ राष्ट्रों के चतुर्थ शिखर सम्मेलन ने घोषणा की कि

संयुक्त राष्ट्र में कोरिया को दो नहीं एक राष्ट्र के रूप में दाखिल होना चाहिए। मेरी राय है कि इस कानफरेंस में भाग लेने वाले देश इस नतीजे पर इसलिए पहुँचे कि उन्हें संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' दाखिल करने की चाल समझ में आ गई थी।

संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' का साथ-साथ प्रवेश कोरिया की जनता के लिए कभी लाभप्रद नहीं होगा। हम कभी 'दो कोरिया' को मान्यता नहीं देंगे।

अमरीकी और जापानी प्रतिक्रियावादियों और दक्षिण कोरियाई अधिकारियों ने इस वर्ष के संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन में विचारार्थ 'दो कोरियाओं' के साथ-साथ प्रवेश का प्रस्ताव रखने पर इतना अधिक हठ इसलिए भी किया है कि वह संयुक्त राष्ट्र में पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के प्रवेश पर भी विचार करने वाली है। वे इसका लाभ उठाना चाहते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी बड़े धूर्त हैं।

पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी से हमारा मामला बिलकुल अलग है। वे दोनों विभाजन चाहते हैं। पहले जर्मनी आक्रामक राष्ट्र था। युद्ध के परिणाम स्वरूप वह दो भागों में बंट गया। एक भाग श्रमिक-कृषक राज्य बन गया, दूसरा एकाधिकार-वादी-पूंजीवादी राज्य। पूर्वी जर्मनी में श्रमिक-कृषक राज्य की मौजूदगी से अंततो-गत्वा पश्चिमी जर्मनी की एकाधिकारवादी पूंजी की शक्ति कमजोर होगी। यही नहीं पड़ोसी यूरोपीय देश भी नहीं चाहते कि संयुक्त हो कर जर्मनी फिर से सशक्त सैनिक सत्ता बन जाए। क्योंकि तब जर्मनी फिर से आक्रमक शक्ति के रूप में उभर सकता है।

लेकिन हमारा मामला बिलकुल अलग है। हमने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया। पहले हमारा देश उपनिवेश था, फिर स्वाधीन हुआ। हमारे पड़ौसी नहीं सोचते कि पुनरेकीकरण के बाद हम किसी पर आक्रमण करेंगे। न चीनी, न सोवियत यूनियन, न जापानी ही ऐसा सोचते हैं। एशियाई देशों के लिए आपस में लड़ने वाले दो कोरिया की अपेक्षा पुनरेकीकृत कोरिया अधिक लाभप्रद होगा। जापानी जनता का यही विचार है, यही विचार चीनी और सोवियत जनता का है।

यहां सबसे महत्व की बात यह है कि उत्तर और दक्षिण दोनों कोरिया की जनता अपने देश का विभाजन नहीं चाहती। कोरियावासी एक राष्ट्र हैं जिसके एकीकृत राज्य का लंबा इतिहास है। यही कारण है कि वे अपना विभाजन नहीं चाहते।

केवल दक्षिण कोरिया के मुट्ठी भर प्रतिक्रियावादी, जापान के अमरीका-समर्थक प्रतिक्रियावादी और अमरीकी साम्राज्यवादी ही हमारे देश का विभाजन चाहते हैं। अमरीकी साम्राज्यवादी ऐसा इसलिए चाहते हैं कि दक्षिण कोरिया में वे अपने सैनिक अड्डे बरकरार रख सकें।

जब राष्ट्रों का विशाल बहुमत कोरिया को पुनरेकीकृत देखना चाहता है तो

हमारे देश का विभाजन क्यों हो ? पिछले २८ वर्षों में राष्ट्रीय विभाजन से हमें काफी दुख उठाने पड़े । हम पर यह कष्ट चालू क्यों रहे ? संयुक्त राष्ट्र में 'दो कोरिया' के प्रवेश के हम पूरे संकल्प से विरोधी हैं। हमारा विश्वास है कि हमसे सहानुभूति करने वाले राष्ट्र भी इसके विरुद्ध हैं ।

अब मैं संक्षेप में आपके इस प्रश्न पर आता हूं कि परिसंघीय कोर्यो गणतंत्र की स्थापना कैसे की जाए ।

हमने परिसंघ का नाम परिसंघीय कोर्यो गणतंत्र रखने का प्रस्ताव इसलिए रखा था कि एक समय हमारी भूमि पर कोर्यो नाम से एक संयुक्त राज्य हुआ करता था । यह एक अच्छा नाम है, दोनों पक्षों को मान्य है । अगर हम परिसंघीय राज्य का नाम जनवादी जन गणतंत्र कोरिया या 'कोरिया प्रजातंत्र' रखते तो लगता कि एक पक्ष की मांग दूसरे पर थोपी जा रही है । इसी कारण हमने इसे परिसंघीय कोर्यो गणतंत्र नाम देने का प्रस्ताव किया ताकि समानता के सिद्धांत पर उत्तर और दक्षिण दोनों इसे स्वीकार कर लें ।

हमारा परिसंघ का प्रस्ताव यह है कि उत्तर और दक्षिण की वर्तमान समाज व्यवस्थाओं को यथावत् रहने देकर एक परिसंघीय राज्य की स्थापना की जाय । अतः यहां मुख्य चीज यह है कि दोनों पक्ष एक-दूसरे पर विश्वास करें और महान राष्ट्रीय एकता प्राप्त करें ।

हमारी राय में यह आवश्यक है कि पहले एक महान राष्ट्रीय कांग्रेस बुला कर विस्तृत विचार-विमर्श के द्वारा राष्ट्रीय पुनरेकीकरण की समस्याएं सुलझाई जाएं । इस कांग्रेस को उत्तर और दक्षिण के बीच सैनिक सामना और तनाव समाप्त करने के प्रश्न पर अवश्य ही विचार करना चाहिए । इस प्रश्न को सुलझाने के लिए हमारे द्वारा पहले से ही प्रस्तावित उपाय करना आवश्यक है, जैसे उत्तर और दक्षिण की सशस्त्र सेनाओं में कटौती । इससे दोनों पक्षों में परस्पर विश्वास और राष्ट्रीय मैत्री के हित में परिस्थितियां बनेंगी ।

हमारी यह भी धारणा है कि राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा अन्य सब क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण के बीच सामान्य सहयोग और विनिमय होना चाहिए।

उत्तर और दक्षिण के बीच संस्थागत भेद के बावजूद कई समस्याएं ऐसी हैं जिन पर अब हम साथ काम कर सकते हैं । दोनों पक्ष भूमिगत ससाधनों का संयुक्त उपयोग कर सकते हैं और वैज्ञानिक और तकनीकी गवेषणा के परिणामों को काम में ला सकते हैं । अन्य अनेक क्षेत्रों में सामान्य सहयोग संभव है ।

अगर विभिन्न क्षेत्रों में उत्तर और दक्षिण सर्वव्यापी सहयोग और विनिमय को यथार्थ रूप दे सकें तो इससे दोनों को एक दूसरे को समझने और विश्वास करने की परिस्थितियां बनेंगी और समय बीतने से आपसी समझ गहरी होगी । तब दोनों

पक्ष एक दूसरे की व्यवस्था को सही तरह समझ सकेंगे और इससे वह भय भी दूर हो जाएगा जो कुछ दक्षिण कोरियावासियों के मन में गणतंत्र के उत्तरी अर्द्ध भाग की समाजवादी व्यवस्था के बारे में है। यही नहीं, अगर उत्तर-दक्षिण सहयोग से सही और गलत में भेद किया जा सके, सही को प्रोत्साहन दिया जाए और गलत को खत्म किया जाए तो महान राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियां बन सकेंगी।

सदियों से एक ही संस्कृति और एक ही भाषा वाला हमारा एक राष्ट्र है। उत्तर और दक्षिण अगर एक दूसरे से सहयोग करें तो वे एक दूसरे को शीघ्र ही समझ सकेंगे।

आज हम जो भी कर रहे हैं हमारे राष्ट्र के भले के लिए है। हमने ऐसा कुछ भी नहीं किया है जो हमारे राष्ट्र के हितों के विपरीत हो। हमने कभी अपने राष्ट्रीय हित नहीं बेचे। हम हमेशा वही सब कर रहे हैं, जिससे हमारे राष्ट्र के हितों की रक्षा हो।

अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी हमसे सहयोग करें तो वे राष्ट्र के हितों को बेचे बगैर कई समस्याएं सुलझा सकते हैं। मैं एक उदाहरण देता हूं। आजकल वे विशाल मानव शक्ति का, नर्सों का, खनिकों का, निर्यात कर रहे हैं। इसके बजाए हमसे सहयोग करके वे आजीविका की अपनी समस्या हल कर सकते हैं।

दोनों पक्षों के बीच आपसी समझ के आधार पर उत्तर-दक्षिण परिसंघ का और इन विभिन्न उपायों द्वारा महान राष्ट्रीय एकता का हमारा प्रस्ताव है।

आज दक्षिण कोरिया की जनता भारी अनियमितताओं और भ्रष्टाचार के लिए अपने अपने अधिकारियों की निंदा कर रही है। दक्षिण कोरियाई अधिकारियों को डर है कि हमसे सहयोग करने पर उनके भ्रष्ट कृत्य कहीं सामने न आ जाएं। हमने बारंबार यह स्पष्ट किया है कि अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी देश और जनता के प्रति किए गए अपने अपराधों को ईमानदारी से स्वीकार कर लें और गद्दारी से बाज आएं तो उनके पुराने पाप माफ कर दिये जाएंगे। अगर वे यह वादा करें कि अब अनियमितताएं और भ्रष्टाचार नहीं करेंगे तो हम उनके पुराने कृत्यों पर विशेष ध्यान नहीं देंगे। अगर दक्षिण कोरियाई अधिकारी यह सब करते रहे तो न केवल दक्षिण कोरियाई जनता बल्कि सम्पूर्ण कोरिया की जनता निश्चय ही उनकी निंदा करेगी और दंड देगी।

परिसंघीय कार्यों गणतन्त्र की स्थापना के उपायों का ब्योरा उत्तर और दक्षिण के बीच विचार विमर्श द्वारा निश्चित किया जाएगा, अतः मैं इससे अधिक नहीं कह सकता।

उत्तर-दक्षिण संयोजन आयोग संबंधी आपके प्रश्न पर मुझे कुछ नहीं कहना

है क्योंकि प्रशासनिक कौंशिल के प्रमुख ने इस विषय में गणतन्त्र स्थापना की रजत जयंती समारोह के अवसर पर केन्द्रीय सभा में पूरा विवरण दिया है। जो विचार उन्होंने प्रकट किए वह उनके अपने नहीं बल्कि हमारी पार्टी की केन्द्रीय समिति के थे।

हमारी स्थिति यह है कि दरवाजा बंद करने के बजाए उत्तर और दक्षिण को संपर्क और संवाद के विकास को बढ़ाते रहना होगा। सारा मामला पूर्णतः दक्षिण कोरियाई अधिकारियों के रवैये पर निर्भर करता है। हमें उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करनी होगी।

अब मैं अपने देश और जापान के बीच संबंधों का जिक्र करना चाहूंगा।

जैसा कि हमने कई अवसरों पर कहा है हमारे देश और जापान के बीच और राज्य सम्बन्धों का सामान्य होना पूर्णतः जापान सरकार के रवैये पर निर्भर करता है।

फिलहाल, हमें हमारे देश और जापान के बीच राज्य संबंध सामान्य करने की विशेष चिंता नहीं है। हमारे देश और जापान के बीच जो समस्याएं हैं, सम्बन्ध सामान्य होने से वे सब नहीं सुलझने वाली हैं। हम यह नहीं कह सकते कि प्योंगयांग में जापानी दूतावास या तोक्यो में हमारा दूतावास खुलने से हमारे देश और जापान के संबंधों की सब समस्याएं सुलझ जाएंगी।

हमारे देश और जापान के संबंध सुधारने में इसका महत्त्व है कि दोनों देश पारस्परिक समझ गहरी करें और विशेषकर जापानी सरकार हमारे देश के प्रति शत्रुता पूर्ण नीति बंद करे। हमारा देश और जापान ठीक से एक दूसरे को नहीं समझते। हमारी राय में दोनों देशों को पहले एक दूसरे की बेहतर समझ होनी चाहिए।

आपने कहा कि हमारे मानसुदै कला मंडल की जापान यात्रा से दोनों देशों के बीच पारस्परिक समझ की वृद्धि में बहुत सहायता मिली है। आपकी प्रशंसा के लिए आभारी हूं।

जिन दिनों हमारा मानसुदै कला मंडल जापान में था, राजनीतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं और विभिन्न स्तर के व्यक्तियों ने हमारी जनता के प्रति अपना सक्रिय समर्थन प्रकट किया। उन्होंने हमारे कलाकारों का अपने साथियों और मित्रों जैसा स्वागत किया और देश के पुनरेकीकरण के लिए हमारी जनता के संघर्ष का समर्थन किया। इसका अर्थ है कि हमारी दोनों की जनता में बड़े मैत्री पूर्ण सम्बन्ध हैं। हमारे यहां पुरानी कहावत है : अच्छा पड़ोसी चचेरे भाई से बेहतर। शायद आप के यहां जापान में भी कोई ऐसी कहावत हो।

हमारा विश्वास है कि विभिन्न समाज व्यवस्थाओं के बावजूद हमारे देश

और जापान के बीच अच्छे पड़ोसी संबंध हो सकते हैं और उनकी जनता की मैत्री और एकता को और भी मजबूत किया जा सकता है। जापानी सरकार को आपत्ति न हो तो अब से हम मानसुदै कला मंडल जैसी अन्य जापान यात्राओं का प्रबन्ध कर सकते हैं। इससे कोरिया और जापान के बीच मैत्री संबंधों के विकास में सहायता मिलेगी।